PSALMS AND PROVERBS.

KAITHI' HINDI'.

PSALMS AND PROVERBS

IN KAITHÍ HINDÍ.

गीत ।

[FOR THE CALCUTTA AUXILIARY BIBLE SOCIETY.]

ALLAHABAD:

PRESBYTERIAN MISSION PRESS.

1845.

गीत ।

---

१ पहीला गीत ।

१ जो मनुष्य पापीयों के मत पर नहीं चलता,
और अपराधीयों के पथ पर खड़ा नहीं रहता,
और निंदकों के आसन पर नहीं बैठता, सो धन
२ है । परंतु वह परमेसर की बेवसथा में मगन है,
और उसकी बेवसथा में रात दीन धयान करता
३ है । वह जल की धारा के पास लगाये हुए पेड़
के समान होगा, जो अपनी रीतु में फलता है,
उसका पता भी नहीं मुरझावेगा ; और अपने सब
४ काम में भागमान होगा । अधरमी ऐसा नहीं,
पर वे भुसी के तुल हैं, जीसे बयार उड़ा लेजाती
५ है । इस लीये अधरमी नयाय सथान में, और
अपराधी धरमीयों की सभा में, खड़े न होंगे ।
६ कयोंकी परमेसर धरमीयों की चाल पहीचान-
ता है, परंतु अधरमीयों की चाल नसट हो
जायगी ।

दुसना गीत।

१ अनदेसी कीस लीये ऊलन कनते हैं? औान
२ लोग अननथ योनता कनते हैं?। जगत के
नाजा सामना कनते हैं, औान पनघान पनमेसन
के, औान उसके मसीह के वींनोच पनामनस कनते
३ हैं। ा आओ, हम उनके वंघनों को तोड़ डालें,
औान उन की नसमीयों को अपने पास से फेंक
४ देवें। जीसका आसन सनग पन है, सो हंसेगा
५ पनमेसन उनहें ठठों में उड़ावेगा। वुह कोप से
उन से वोलेगा, औान अपने महा कोप से उनहें
६ सतावेगा। तौसपन भी मैं ने अपने पहाड़ की
पवीतनता सैऊन पन अपने नाजा को अभीसीकत
७ कीया है। मैं नीयम को वननन कनुंगा, कीं
पनमेसन ने मुझे कहा है, कीं तु मेना पुतन, आज
८ के दीन तु मुझ से उतपंन ऊआ। मुझ से मांग,
औान मैं अनदेसीयों को तेने अघीकान में देउंगा
औान पीनथीवी के यानों खुंट तेने वस में कनुंगा।
९ तु लोहे के डंडे से उनहें तोड़ेगा, कुमहान के
वनतन की नाईं तु उनहें पटक के यकना युन
१० कनेगा। इस लीये हे नाजाओ वुघमान होओ,
औान हे पीनथीवी के नयायीयो उपदेस गनहन
११ कनो। डनते ऊए पनमेसन की सेवा कनो, औान

१२ कांपते हुए आनंद करो। पुतर को चुमो, की
वुह रीसीया न जाय, जब उसका करोध तनीक
भी भड़के, और तुम मारग से नास हो जाओ;
सब, जो उसपर भरोसा रख्ते हैं धन हैं।

३ तीसरा गीत।

दाउद का गीत जब वुह अपने बेटे अबसालम से भागा।

१ हे परमेसर, मेरे सताउ कैसे बढ़गये? और
२ बहुतेरे मेरे बीरुध उठते हैं। बहुतेरे मेरे
परान के बीषय में कहते हैं, की ईसर से अब
३ उसकी सहाय नहीं, सीलाह। पर हे परमेसर,
तु मेरी ढाल, और मेरा बीभव, और मेरे सीर
४ का उभाड़ने वाला है। मैं ने अपने सबद से
परमेसर को पुकारा, और उसने अपने पबीतर
५ पहाड़ पर से मेरी सुनी, सीलाह। मैं लेट गया,
और सो रहा, और जाग उठा, कयोंकी परमेसर
६ ने मेरी रछया की। बीरोध में दस सहसरों ने
७ मुझे घेरा है, मैं उन से न डरुंगा। हे परमेसर
उठ, हे मेरे ईसर, मुझे बचा, कयोंकी तु ने मेरे
सारे बैरीयों के गाल पर थपेड़ा मारा, तु ने
८ अधरमीयों के दांतों को तोड़ा है। मुकत

पनमेसन ही से है, तेना आसीस तेने लोगों पन
है, सीलाह।

४ चैाथा गीत।

नगीनुत के पनधान वृजनये के पास दाउद का
गीत।

१ हे मेने धनम के इसन जव मैं तुहे पुकानुं, तव
सुन, कसट से तु ने मुहे छुडाया है, दया कन के
२ मेनी पनानथना सुन। हे मनुष्यों के पुतनो मेने
वीभव को कव लों लाज से पलटोगे? औान
वीनथा से पनीत नष्य के हुठ का पीछा कनोगे?
३ सीलाह। पन जान नष्यो, की पनमेसन ने धनमी
को अपने लीये अलग कन नष्या है, जव मैं
४ उसे पुकानुंगा, पनमेसन सुनेगा। डनो, औान
पाप न कनो, युपके हो के मनही मन धयान
५ कनो, सीलाह। धनम के वल यढाओ, औान
६ पनमेसन पन भनोसा नष्यो। वहुतेने कहते हैं,
की कैान हमें कुछ भलाइ दीष्यावेगा? हे पनमे-
सन अपने सनुप की जोत हम पन उदय कन।
७ उनके आनंद औान दाष्यनस के वढ़ने के समय से
अधीक तु ने मेने मन को आनंदीत कीया है।

८ मैं चैन से लेट जाउंगा, और सो रहूंगा, क्योंकी
परमेस्र अकेला मुझे चैन से रख्ता है।

५ पांचवां गीत।

नहीलुस के परधान बजनीये के पास दाउद का
गीत।

१ हे परमेस्र मेरी बातों पर कान धर, और
२ मेरे ध्यान को सोच। हे मेरे राजा, और हे
मेरे ईस्र, मेरे रोने का सब्द सुन, क्योंकी मैं
३ तेरी परारथना करुंगा। हे परमेस्र, तु बीहान
को मेरा सब्द सुनेगा, बीहान को मैं सोंच होके
४ तेरी ओर ताकुंगा। क्योंकी तु वुह ईस्र नहीं,
जो दुसटता से परसंन हो, दुसट तेरे साथ रह
५ नहीं सकता॥ घमंडी तेरी आंखों के आगे खड़े
न रहेंगे, तु सारे कुकरमीयों से घीन करता है।
६ तु मीथ्याबादी को नास करेगा, परमेस्र बधीक
७ और छली से घीन करेगा। परंतु मैं जो हूं, सो
तेरी दया की बहुताई से, तेरे घर में आउंगा,
और तेरे डर से तेरे पवीतर मंदीर में तुझे
८ दंडवत करुंगा। हे परमेस्र मेरे बैरी के कारन
अपने धरम में मेरा अगुआ हो, मेरे आगे अपने
९ मारग को सीधा कर। क्योंकी उनके मुंह में

सयाइ नहीं, उनके मन में दुसटता है, उनका
गला प्युली समाघ है, वे अपनी जीभ से लला-
१० पतो कहते हैं। हे इसन, तु उनहें दोप्पी ठहना,
जीसतें वे अपने पनामनस से आप ही गीन जावें;
उनके अपनाधों की व्रक्रताइ में उनहें दुन कन,
११ कयोंकी वे तुह से फीन गये हैं। पन सव जो
तुह पन भनोसा नप्यते हैं, मगन नहें, वे सदा
आनंद के माने गाया कनें; इस कानन की तु उनकी
यौकसी कनता है: औान वे भी, जो तेने नाम से
१२ पीनीत नप्यते हैं, तुह से आनंदीत नहें। कयोंकी
हे पनमेसन, तु घनमी को आसीस देगा, कीनपा
की ढाल की नाइं तु कीनपा से उनहें ढांपेगा।

६ छटवां गीत।

नगीनुस के पनघान व्रजनीये के समीनीस पन
दाउद का गीत।

१ हे पनमेसन अपनी नास से मुहे मत दपट,
२ औान अपने कोप की तपन से मुहे मत ताड़। हे
पनमेसन, मुह पन दया कन, कयोंकी मैं नीनवल
ऊं, हे पनमेसन, मुहे यंगा कन, कयोंकी मेनो
३ हडी थनथनाती हैं। मेना पनान भी अती व्रया-
४ कुल है, पनंतु हे पनमेसन कव लों? हे पनमेसन,

फिर आ, मेरे प्रान को छुड़ा, अपनी दया के
५ कारन मुझे बचा। क्योंकि मौत में तेरा सम-
रन नहीं, समाध में कौन तेरा धनवाद करेगा?
६ कहरते कहरते मैं थक गया, मैं हर रात अपने
बिछौने को बहाता हूं, मैं अपने आंसुओं से अप-
७ ना पलंग भिंगाता हूं। शोक के मारे मेरी आंख
धुंधला गई, और मेरे सारे बैरियों के कारन
८ बुढ़ा गई। अरे सारे कुकरमियो मुझ से दूर
होओ, क्योंकि परमेसर ने मेरे रोने का सब्द
९ सुना है। परमेसर ने मेरी बिनती सुनी है, पर-
१० मेसर मेरी प्रार्थना ग्रहन करेगा। मेरे सारे
बैरी लजीत और अत्यंत ब्याकुल होवें, वे
फिरें, और आकस्मात लजीत होवें।

सातवां गीत।

दाऊद का सगीयुन, जो उसने परमेसर के लिये बिनयामीनी कोस के बचन के बिषय में गया।

१ हे परमेसर, मेरे ईश्वर, मैं तुझ पर भरोसा
रखता हूं, मेरे सारे सताऊ से मुझे बचा, और
२ मुझे छुड़ा। न होवे की सिंह की नाईं वुह मेरे
प्रान को फाड़े, और छोड़वैया न होते हीं वुह

३ मुझे टुकड़े टुकड़े करे। हे परमेसर, मेरे ईसर,
यदी मुझ से ऐसा हुआ हो, यदी मेरे हाथ में
४ बुराई होवे। जीसे मुझ से मेल था, यदी मैं ने
उस से बुराई की हो, (हां जो अकारन मेरा बैरी
५ था, मैं ने उसे छुड़ाया है)। तो बैरी मेरे परान
को सतावे, और लेवे, और मेरे जीवन को पीर-
थीवी पर लताड़े, और मेरी परतीसठा धुल में
६ मीलावे, सीलाह। हे परमेसर, अपने करोध में
उठ, और मेरे बैरी के कोप के मारे आप को
उभाड़, और अपनी अगया के नयाय के लीये
७ जाग। तब लोगों की मंडली तुझे घेरेगी, सो
८ उनके लीये फेर ऊंचे पर जा। परमेसर लोगों
का नयाय करेगा, हे परमेसर, मेरे धरम और
९ मेरी खराई के समान मेरा नयाय कर। दुसटों
की दुसटता मीटा डाल, परंतु धरमीयों को दीढ़
कर, कयोंकी धरमी ईसर मन और अंतःकरन
१० को जांचता है। ईसर मेरी ढाल, जो खरे मन
११ का तारक है। ईसर धरमीयों का बीचार कर-
ता है, और ईसर परतदीन दुसटों पर रीसयाता
१२ है। यदी वुह न फीरे, तो वुह अपनी तलवार
को धार करेगा, उसने अपने धनुष को चढ़ाके
१३ तैयार कीया है। उसने उसके लीये मीरतु का

हथीआन जो सोच कीआ है, उसने सताउ के
१४ वीरोध अपने बान ठहराये हैं। देखो उसे
बुराई की पीर, और नटखटी का गर्भ है, और
१५ वुह झुठ को जंता है। उसने गड़हा खोदा है,
१६ और अपने खोदे हुए गड़हे में गीरा है। उस
की नटखटी उसके सीर पर लौट पड़ेगी, और
उसके अंधेर का बेवहार उसकी खोपड़ी पर
१७ उतरेगा। परमेसर के धरम के समान मैं उसकी
सतुत करुंगा; और अती महान परमेसर का
नाम गाउंगा।

८ आठवां गीत।

गीटीस के परधान बजनये को दाउद का गीत।

१ हे परमेसर हमारे परभु सारी पीरथीवी में तेरा
नाम कैसा उतम है, जीस ने अपने बीभव को सरगों
२ से उपर सथापीत कीआ है। जीसतें बैरी और
परतीफल दायकों को चुप करावे, तु ने अपने
बैरीयों के लीये बालकों और दुधपीवकों के मुंह
३ से अपनी सतुत करवाई। जब मैं तेरी अंगुली-
ओं की कीरया सरगों को चांद और तारों को,
४ जो तु ने ठहराये हैं, सोचता हुं। तो मनुष्य
कया है, जो तु उसका चेत करे? और मनुष्य का

५ पुतन कया, जो तु उस से भेंट कने? कयोंकी तु
ने उसे दुतों से थोड़ाही छोटा कीया, औान व्रीभव
६ औान पनतीसठा का मुकुट उस पन नप्पा। अपने
हाथ के कानजों पन अनथात साने हुउ औान
७ ढ़ोान। औान व्रन पसु, औान अकास के पंछी,
औान समुंदन की मछलीयों पन, औान जो समुंदन
के पथों में से यलते हैं, तु ने उसे पनभुता दी,
औान सव्र कुछ उस के पांव तले कीया, हे मेने
पनभु पनमेसन तेना नाम साना पीनथवी में कैसा
महान है।

९ नवां गीत।

सुसलव्रव्रीन के पनधान व्रजनीये के पास दाउद का
गीत।

१ हे पनमेसन मैं अपने साने मन से तेनी सतुत
कनुंगा, मैं तेने साने आसयनज कनमों को पनगट
२ कनुंगा। मैं तुझ से आनंदीत औान मगन नहुंगा
हे अती महान, मैं तेन नाम की सतुत कनुंगा।
३ जव्र मेने व्रैनी हट गये, तव्र वे तेने आगे गोन के
४ नास होंगे। कयोंकी तु ने मेने पद को व्रीयान
कीया है, तुने सींहासन पन व्रैठ के सया व्रीयान
५ कीया हैं। तु ने अनदेसीयों को दपटा है, तु ने

दुसटों को नसट कीया है, त ने सदा के लीये
६ उनके नाम को मीटा डाला है। अने वैनी नास
हो युके हैं, तु ने नगन के नगन उजाड़ दीये
७ जीनका समनन उनके साथ जाता नहा। पनंत
पनमेसन सदा को वना नहेगा, उसने अपने सींहा-
८ सन को नयाय के लीये सीच कीया है। वुह
घनम से संसान का वीयान, और पनाइ से लोगों
९ का नयाय कने गा। पनमेसन सताये हुओं के
लीये उंया सथान भी होगा, और दुःप्प के समयों
१० के लीये पेक सनन। जो तेना नाम जानते हैं,
सो तेना भनोसा नप्पेंगे, कयोंकी हे पनमेसन तु
११ ने अपने प्पोजी को नहीं तयागा है। पनमेसन
की, जो सैहुन का नीवासी है, सतुत गाओ, उसके
१२ कानजों को लोगों के नच में वननन कनो। जव
वुह लोहु का लेप्पा लेता है, तो वुह उनहें समनन
कनता है, वुह दुःप्पी की दुहाइ को नहीं भुलता।
१३ हे पनमेसन मुझ पन दया कन तु जो मुझे मीनतु
के दुवानों से उठाता है, जो दुःप्प मैं अपने वैनी से
१४ उठाता हुं, उसे वुझ। जीसतें मैं सैहुन की वेटी
के दुवानों पन तेनी सानी सतुत को पनगट कनुं,
१५ तेनी मुकत से मैं आनंदीत होउंगा। अनदेसी उस
गड़हे में, जो उनहों ने प्पोदा था गीन गये, उस

फंदे में, जो उनहों ने छीपाया था उनहीं का पांव
१६ फंसा। परमेसर अपने नयाय से जाना जाता है,
दुसट अपनेही हाथों के कारज से फंसा है, हीगी-
१७ यून सीलाह। दुसट लोग और सारे जातीगन,
जो ईसर को भुलते हैं, नरक में डाले जायेंगे।
१८ कयोंकी कंगाल सदा भुलाया न जायगा, कंगाल
१९ की आसा सदा नसट न होगी। उठ हे परमेसर,
मनुष्य को परबल होने न दे, अनदेसीयों का
२० बीयार तेरे आगे होवे। हे परमेसर, उनहें
डरा, जीसतें जातगन अपने को मनुष्य ही जानें,
सीलाह।

१० दसवां गीत।

१ हे परमेसर, तु कयों दुर खड़ा होता है?
दुःखों के समय तु कयों आप को छीपाता है।
२ दुसट अहंकार से कंगाल को सताता है, उनहीं
३ की जुगत में उनहें फंसा। कयोंकी दुसट अपने
पराण की लालसा पर बड़ाई करता है, और
लालची को, जीस से परमेसर को घीन है, भाग-
४ मान कहता है। दुसट अपने मुंह के अहंकार से
खोज नहीं करता, ईसर उसकी सारी चींता में
५ नहीं है। उसकी चाल सदा दुःखदायक हैं, तेरे

नयाय उसकी दीनीसट से दुन हैं, वुह अपने साने
६ वैनीयें को तुछ जानता है। उसने अपने मन में
कहा है, को मैं टलाया न जाउंगा, मुह पन पोढी
७ पीढी वीपत न पड़ेगी। उसका मुंह घीकान,
औान कपट, औान छल से भना है; उसकी जीभ
८ के तले नटप्पटी औान वुनाइ हैं। वुह गांव के
ढुके के सथानें में वैठता है, वुह गुपत सथानें में
नीनदोप्प को घात कनता है, उसकी आंप्पें छीप
९ छीप के कंगाल के वीनुघ लगी हैं। वुह छीप के
सींह की नाइं अपने मांद में घात में लगा है;
कंगाल को पकड़ने के लीये ढुके में है, वुह कंगाल
१० को अपने जाल में लाके पकड़ता है। वुह दवक
वैठ के दीन हो जाता है, जीसतें कंगाल उसके
११ वलवतें से गीन जावें। उसने अपने मन में कहा,
है, की ईसन भुल गया हैं, वुह अपना मुंह छीपा-
१२ ता है, वुह कभी न देप्पेगा। हे पनमेसन उठ, हे
ईसन अपना हाथ वढा; दुःप्पी को भुल मत जा।
१३ ईसन की नींदा दुसट कयों कनता है? उसने
१४ अपने मन में कहा है, की तु लेप्पा न लेगा। तु
ने तो देप्पा हैं, कयोंकी तु अपने हाथ से पलटा
लेने को नटप्पटी औान वैन को देप्पता है, कंगाल
१५ तुह से पीलया नहता है। दुसट औान वुने की

भुजा तोड़, ऐसा की उसकी दुसटता ढुंढने से पाइ
१६ न जाय। परमेसर सनातन से सनातन लों राजा
१७ है, अनदेसी उसके देस से मीट गये। हे परमे-
सर, तु ने दीन की इछा सुनी है, तु उनके मन
को दीरढ़ करेगा; और कान धर के सुनेगा।
१८ अनाथों का, और सताये हुओं का नयाय करने
को, जीसतें संसारीक मनुप्य फेर न डरावें।

११ गयारहवां गीत।

परधान बजनये के पास दाउद का गीत।

१ मेरा भरोसा परमेसर पर है; तुम कयोंकर मेरे
पराण से कहते हो, की चीड़ीया की नाइं अपने
२ पहाड़ पर उड़ जा?। इस लीये की दुसट अपने
धनुप्य को चढ़ाते हैं, वे अपना बाण पनच पर
चढ़ाते हैं, जीसतें अंधीयारे में खरे लोगों को
३ मारें। जो नेवें नसट होवें, तो धरमी कया कर
४ सकता? परमेसर अपने पवीतर मंदीर में है,
परमेसर का सींहासन सरग पर है, उसकी आंखें
देखती हैं, उसकी पलकें मनुप्य के संतानों को
५ परखती हैं। परमेसर धरमी को जांचता है,
परंतु दुसट से, और अंधेर के प्रेमी से उसका
६ आतमा घीन करता है। दुसटों पर अंगारे,

और आग, और गंधक वुह ब्रनसावेगा; और
भयंकर आंधी उनके कटोरे का भाग होगा।
७ कयुंकी धरमी परमेसर धरम से परीत रप्पता
है, और उसका मुप प्ने लोगों को देप्पता है।

१२ ब्रानहवां गीत।

समीनीस पर परधान ब्रजनीये के पास दाउद का
गीत।

१ हे परमेसर ब्रया, कयोंकी इसनीय जन घटे
जाते हैं; और मनुप्पों के संतान में से ब्रीसवसत
२ लोग प्पीन होते हैं। वे अपने परोसी से ब्रीनथा
ब्रोलते हैं; और यापलुसी होठों, और दोहरे
३ मन से कहते हैं। सारे यापलुसी होठों को,
और उस जीभ को, जो ब्रड़ी ब्रोली ब्रोलती हैं,
४ परमेसर काट डालेगा। जीनहों ने कहा है, की
हम अपनी जीभ से जीतेंगे, हमारे होंठ हमारे
५ हैं, कौन हमारा परभु है? परमेसर कहता है,
की कंगालों के अंधेर के लीये और दरीद्रों की
ठंढी सांस के कारन मैं उठुंगा, और उसके हाथ
६ से उसे ब्रयाउंगा। परमेसर के ब्रयन पवीतर
ब्रयन हैं, मीटी की घड़ीया में ताये गये यांदी
७ की नाई सात ब्रार नीरमल कीया गया। हे

परमेसर, तुही उनकी रछा करेगा, तु उनहें
८ इस पीढ़ी से सदा व्रचावेगा। जब से तुछ लोग
उभड़े हैं, तब से दुसट चारों ओर फीरते हैं।

१३ तेरहवां गीत।

परधान बजनीए के पास दाउद का गीत।

१ हे परमेसर, कब लों तु मुझे भुलेगा? कया सना-
तन लों? कब लों तु अपना मुंह मुझ से छीपावेगा?।
२ मैं परतीदीन कब लों मन में दुःषी होके मनही
मन परामरस करुं? कब लों मेरा बैरी मुझ पर
३ उभाड़ा जायगा। हे परमेसर, मेरे इसर सोच
के मेरी मसु, मेरी आंषें उंजयाली कर, न हो
४ की मैं मौरतु की नींद में पड़ जाउं। और मेरा
बैरी कहे, की मैं ने उसे जीता है, और मेरे
५ सताउ मेरे टलाये जाने से आनंद करें। परंतु
मैं ने तेरी दया पर भरोसा रष्पा है, मेरा मन
६ तेरी मुकत से आनंदीत होगा। मैं परमेसर के
लीये गाउंगा, कयोंकी उसने दातापन से मुझ से
बेवहार कीया है।

१४ चौदहवां गीत।

परधान बजनीए के पास दाउद का गीत।

१ मुरष ने अपने मन में कहा है, की इसर नहीं;

वे सड़ गये, उनहें ने घीनोना कानज कीया है,
२ कोइ भलाइ नहीं करता। परमेसर ने सरग से
मनुष्यें के संतान पर झांका, यह देप्पने को की
३ कोइ समुझ के इसर को ढूंढता है, की नहीं। वे
सब के सब अलग हुए हैं, सब के सब सड़ गये, कोइ
४ सुकरमी नहीं, एेक भी नहीं। क्या सारे कुकर-
मीयों नें गयान नहीं, जो मेरे लोग को रोटी की
नाइं प्पाते हैं? और परमेसर का नाम नहीं लेते।
५ वे डर से डर गये, क्योंकी इसर घरमीयों के
६ मध में है। तुम ने कंगाल के परामरस को
लजाया है, इस लीये की परमेसर उसका सरन
७ है। हाय की इसराइल की मुकत सैहुन से
नीकले, जब परमेसर अपने लोगां की बंधुआइ
को फेर लावेगा, तब याकुब आनंदीत, और इस-
राइल मगन होगा।

१५ पंद्रहवां गीत।

दाउद का गीत।

१ हे परमेसर तेरे मंदीर में कैान टीकेगा?
२ तेरे पवीतर पहाड़ पर कैान रहेगा?। वुह, जो
प्परा‍इ से चलता है, और घरम कानज करता
३ है, और अपने मन से सच कहता है। वुह जो

जीभ से चुगली नहीं खाता ; और न अपने परोसी
की बुराई नहीं करता ; और अपने परोसी के
४ विरुद्ध अपवाद नहीं मानता। जिसकी आंख में
तुच्छ जन निंदित है, परंतु वुह परमेसर के डरवैयों
को प्रतिष्ठा देता है, जो अपने दुःख के लिये
५ किरिया खाता है, और नहीं पलटता। वुह
ब्याज में अपना रोकड़ नहीं देता, और निर-
दोष के विरोध अकोर नहीं लेता, जो यह करता
है, सो कभी टलाया न जायगा।

१६ सोलहवां गीत।

दाऊद का मिकताम।

१ हे ईश्वर, तू मुझे बचा, क्योंकि मैं तुझ पर
२ भरोसा रखता हूं। हे प्राण तू ने परमेसर से
कहा है, कि तू मेरा प्रभु मेरी भलाई तुझ पर
३ नहीं पहुंचती। पर पिरथिवी के साधुन और
४ उत्तमों पर, जिन से मुझे सारा आनंद है। जो
और देव को भेंट देते हैं, उनके सोक बढ़ जायेंगे,
मैं उनके लोहू पान की भेंट न चढ़ाऊंगा, और
५ अपने होंठों से उनके नाम न लेऊंगा। मेरे
अधिकार का, और मेरे कटोरे का भाग परमेसर
६ है, तू मेरे अंस का पक्ष करता है। मन भावन

सथानों में मेरे लीये नापने की रसी पड़ी है, हां
७ मेरा अधीकार सुथरा है। मैं परमेसर का धन
मानुंगा जीसने मुझे मंतर दीया, और रात के
८ समय में मेरा मन भी मुझे सीखाता है। मैं ने
परमेसर को सदा अपने आगे रखा है, कयोंकी
वह मेरे दहाने हाथ पर है, मैं टलाया न जा-
९ उंगा। इस लीये मेरा मन मगन है, और मेरा
वीभव आनंद करता है; मेरा सरीर भी भरोसे
१० से रहेगा। कयोंकी तु मेरे पराण को परलोक में
न छोड़ेगा, और अपने धरम मय को सड़ने न
११ देगा। तु मुझे जीवन का मारग दीखावेगा, तेरे
आगे आनंद की भरपूरी है, तेरे दहीने हाथ में
सनातन का वीलास है।

१७ सतरहवां गीत।

दाउद की परारथना।

१ हे परमेसर, नयाय को सुन, और मेरे रोने
पर सुरत लगा, और मेरे नीसकपट होंठों की
२ परारथना पर कान धर। मेरी अगया तेरे आगे
से नीकले, तेरी आंखें खरी वसतुन को देखती
३ हैं। तु ने मेरे मन को परखा है, तु ने रात
को मुझ से भेंट की है; तु ने मुझे जांचा है,
और कुछ न पावेगा, मैं ने ठाना है, की मैं

४ अपने मुंह से अपराध न करुंगा। मनुष्यों की
चाल के विषय में तेरे होंठों के वचन से मैं ने
५ अपने को नाश के पथों से बचा रक्खा है। अपने
पथों पर चलने में मुझे संभाल, जिसतें मेरे डग
६ टलाये न जायें। मैं ने तुझे पुकारा है, क्योंकि
तु मेरी सुनेगा, हे ईश्वर, मेरी ओर कान धर,
७ और मेरी बिनती सुन। तु जो अपने आश्रितों
को अपने दहिने हाथ से उन से बचाता है, जो
उनके बिरुद्ध उभरते हैं, अपनी अचंभित कोमल
८ दया दिखा। उन दुष्टों से, जो मुझे उजाड़ते
हैं, और मेरे प्राण के बैरियों से, जो मुझे घेरते
९ हैं। आंखों की पुतली की नाईं मुझे रख, अपने,
१० डैने तले मुझे छिपा। वे अपनी चिकनाई में ढपे
११ हैं, वे फूल फूल अपने मुंह से बोलते हैं। उन्हों
ने अब हमारे डगों में हमें घेरा है, और जिसतें
हमें गिरा देवें, वे अपनी आंखें भूमि की ओर
१२ झुकाये हैं। वे फड़वैये सिंह की नाईं हैं, और
१३ जुवा सिंह की नाईं, जो छुके में बैठे हैं। उठ,
हे परमेश्वर, उसके मुंह को रोक, उसे गिरा दे।
१४ उस दुष्ट से, जो तेरा खड्ग है, उन लोगों से,
हे परमेश्वर, जो तेरा हाथ है, संसार के लोगों से,
जिन्हों ने इसी जीवन में अपना भाग पाया है,

औान जीनका पेट तु अपने छीपे घन से भनता
है, मेने पनान को छुड़ा, वे संतान से भने पुने हैं,
औान वे अपनी व्रयी ऊइ संपत अपने व्राल व्रयो
१५ के लीये छोड़ जाने हैं। पन मैं जो ऊं, घनम में
तेना मुंह देष्पुंगा, औान जव्र मैं तेने नुप में जागुंगा,
तो तीनोपत होाउंगा।

१८ अठानहवां गीत।

पनचान व्रजनीये के पास पनमेसन के सेवक दाउद
के गीत, जीसने इस गीत के व्रयन को उस
दीन में पनमेसन से कहा, जव्र की पनमेसन ने
उसे उसके साने व्रैनीयों के हाथ से, औान
साउल के हाथ से छुड़ाया।

१ हे पनमेसन, तु मेना व्रल है, मैं तुझे पीआन
२ कनुंगा। पनमेसन मेना पहाड़, मेना गढ़, मेना
छुड़वैया, मेन इसन, मेना पनव्रत, जीसपन मैं
भनोसा नष्पुंगा, मेनी ढाल, औान मेनी मुकत का
३ सींग, मेना ऊंया व्रुजन। मैं पनमेसन की पनान-
थना कनुंगा, जो सतुत के जोग है, सो मैं अपने
४ व्रैनीयों से व्रय जाउंगा। मीनतु की उदासीयों ने
मुझे घेना, औान दुसटों के व्राढ़ने मुझे डनाया।
५ ननक की उदासीयों ने मुझे घेन लीया, मीनतु के

६ फंदों ने मुझे घेरा। मैं ने संकेत के समय में
परमेसर को पुकारा, और अपने ईसर के आगे
चीलाया, उसने मेरा सबद अपने मंदीर में से
सुना, और मेरा रोना उसके आगे उसके कानों में
७ पहुंचा। उसके कोप के मारे पीरथीवी कांप गई,
और थरथरा उठी, सारे पहाड़ जड़ मुड़ से हील
८ गये॥ उसके नथुनों से धुंआ उठा, और उसके
मुंह से आग भड़की, जीस से अंगारे धधक उठे॥
९ उसने सरगों को भी झुकाया, और उतर आया;
१० और उसके पांव तले अंधीयारा था॥ वुह करोबी
पर चढ़ा, और उड़गया, हां वुह पवन के डैनों पर
११ उड़ा॥ उसने अंधीयारे को अपना गुपत सथान
कीया; और उसके चारों ओर अंधीयारा जल, और
१२ आकास के घने मेघ उसके तंबु थे॥ उसके आगे
की चमक से घने मेघ फट कर ओले और अंगारे
१३ बन गये। परमेसर सरगों में गरजा, और अती
महान ने सबद कीया, तो ओले और अंगारे बन
१४ गये। हां उसने अपने बान छोड़े, और उनहें
छीन भीन कीया; और बीजलीयां चमकाई,
१५ और उनहें हरा दीया॥ उस समय पानीयों
की थाह दीखाई दी, और तेरे कड़कने से हे पर-
मेसर, हां तेरे नथुनों के सांस के झोंके से जगत

१६ की नेवें प्पुलगइं ॥ उसने उपन से भेज कन
मुझे पकड़ लीआ, गहीने पानीओं में से वुह मुझे
१७ प्पींच लाआ। मेने व़लवंत व़ैनी से, और जो
मुझ से व़ैन नप्पते थे, उसने मुझे छुड़ाआ; कयोंकी
१८ वे मुझ से अती व़ली थे। उनहों ने मेने व़ीपत
के दीन मुझे नोका, पनंतु पनमेसन मेना टेक था।
१९ वुह मुझे एक फैलाव सथान में भी नीकाल लाआ,
उसने मुझे छुड़ाआ; कयोंकी वुह मुझ से आनंदीत
२० था। पनमेसन ने मेने धनम के समान मुझे
पलटा दीआ, उसने मेने हाथ की पवीतनता के
२१ समान मुझे पनतीफल दीआ। कयोंकी मैं पन-
मेसन के मानग पन चला, और दुसटता से अपने
२२ ईसन से न फीना। कयोंकी उस की सानी आगआ
मेने आगे थीं, और मैं ने उसकी व़ीधीन को
२३ अपने से दुन न कीआ। मैं उसके साथ प्पनाई
से नहा, और मैं ने आप को अपनी वुनाई से
२४ व़चा नप्पा। ईस लीए पनमेसन ने मेने धनम के
समान, और उसकी आंप्पों के आगे मेने हाथ की
पवीतनता के समान मुझे पनतीफल दीआ।
२५ दयाल के साथ तु आप को दयाल दीप्पावेगा,
प्पने मनुप्प के साथ तु आप को प्पना दीप्पावेगा।
२६ पवीतन को तु अपने तई पवीतन दीप्पलावेगा;

और हठीले के साथ तु आप को हठीला दीखा-
२७ वेगा। कयोंकी तु दुखी को बचावेगा, परंतु
२८ उंची दीरीसट को नीची करेगा। तु मेरा
दीपक बारेगा, परमेसर मेरा इसर मेरे अंधयारे
२९ को उंजीयाला करेगा। कयोंकी मैं ने तुझ से एक
जथा को तोड़ा है, मैं अपने इसर से एक भीत
३० फांद गया हूं। इसर का मारग सीध है, पर-
मेसर का बचन ताया गया है, वुह अपने आसरी-
३१ तों की ढाल है। कयोंकी परमेसर को छोड़
इसर कौन है? अथवा हमारे इसर को छोड़
३२ दुसरा पहाड़ कौन है?। इसर मेरी कट दीरढ़ता
से बांधता है; और मेरा मारग सीध करता
३३ है। वुह मेरे पांव को हरनीयों का सा बनाता
है; और मुझे मेरे उंचे सथानों पर खड़ा करता
३४ है। वुह मेरे हाथों को लड़ाई सीखाता है, यहां
लों की खेड़ी का धनुख मेरी बांह से टुटता है।
३५ तु ने अपनी मुकत की ढाल जो मुझे दी है, और
तेरे दहीने हाथ ने मुझे संभाला है, और तेरी
३६ कोमलता ने मुझे बढ़ाया है। तु ने मेरे तले
मेरे डगों को बढ़ाया है, यहां लों की मेरी घुटीयां
३७ न फीसलीं। मैं ने अपने बैरीयों का पीछा
कीया है, और उनहें जा लीया, मैं पीछे न फीरा,

३८ जब लों उनहें नास न कीया। मैं ने उनहें
घायल कीया है; ऐसा की वे उठ न सके, वे मेरे
३९ पांव तले गीरे हैं। कयोंकी तु ने संगराम के
लीये मेरी कट दीरढ़ता से बांधी है, और जो मेरे
४० वीरुध उठे, तु ने उनहें झुकवाया है। तु ने मेरे
वैरीयों के गले मुझे सौंप दीये हैं, जीसतें मैं अपने
४१ वैरीयों का नास करुं। वे चीलाये, परंतु कोइ
बचवैया न था, उनहों ने परमेसर को पुकारा,
४२ परंतु उसने उनहें उतर न दीया॥ तब मैं ने
बयार के आगे की धुल की नाइं उनहें पीसा, मैं
ने मारगों की कीच की नाइं उनहें नीकाल
४३ फेंका॥ तु ने मुझे लोगों के झगड़ों से छुड़ाया है,
तु ने मुझे अनदेसीयों का अधछ कीया है, जीन
लोगों को मैं ने नहीं जाना, वे मेरी सेवा करेंगे।
४४ मेरे बीष्यय में सुनते ही वे मेरी बात मानेंगे, पर-
४५ देसीयों के बंस मुझ से दबेंगे॥ परदेसी मुरझा
४६ जायेंगे; और अपने छीपे सथानों में डरेंगे॥ पर-
मेसर जीवता है, और मेरा पहाड़ घर, मेरी
४७ मुकत का इसर महान होवे॥ इसर मेरा बैर
लेता है, और लोगों को मेरे बस में करता है।
४८ वुह मुझे मेरे वैरीयों से छुड़ाता है, हां जो मेरे
बीरुध उठते हैं, तु मुझे उन पर उभाड़ता है, तु

४९ ने मुझे अंधेरी से छुड़ाया है। इस लीये हे पर-
मेस्र, मैं अनदेसीयों में तेरा धन मानुंगा, और
लोगों के मध में तेरे नाम की स्तुत गाउंगा।
५० वुह अपने राजा का वड़ा वयाव करता है, और
अपने अभीसाकत दाउद पर, और उसके वंस पर
सनातन लों दया करता है।

१९ उंनीसवां गीत।

परधान वजनये के पास दाउद का गीत।

१ सरग ईसर की महिमा वर्नन करते हैं, और
२ आकास उसके हाथ की कीरया दीखाते हैं। दीन
दीन से वातें करता है, और रात रात को गयान
३ दीखाती है। न वोली, न वातें उनका सवद सुना
४ न जाय। सारी पीरथीवी में उनकी रेखा नीकल
गई है, और उनके वयन जगत के अंत लों; उसने
५ उन में सुरज के लीये तंवु रखा है। जो दुलहा
की नाई कोठरी से नीकलता है, और वलवंत
जन की नाई दौड़ारी में दौड़ने से आनंद करता
६ है। उसका नीकलना सरग के छुंट से है, और
उसका यकर उसके अंत लों; और उसके घाम से
७ कुछ नहीं छीपा है। परमेसर की वेवसथा सीध
होके मन को सुधारती है, परमेसर की साखी

८ सची हैं, भोलों को वुधमान कनती है। पनमे-
सन की व्रेवसथा ठीक होके मन को आनंदत
कनती है; पनमेसन की अगया सुच होके आंष्पों
९ को उंजीयाला कनती है। पनमेसन का भय
पवीतन होके सनवृदा लों ठहनता है, पनमेसन
का व्रीयान सनासन सचा, और धनम नय है।
१० वुह सोने से हां वज्ञत चोष्पे सोने से चाहने के जोग
है, और मधु से भी, और मधु छते के वुंद से भी
११ मीठा है। और उनसे तेना दास चीताया जाता
है; और उनहें पालन कनने में व्रड़ा फल है॥
१२ अपनी भुल चुकों को कौन समह सकता है? तु
१३ मुहे गुपत पापों से पवीतन कन। अपने दास को
साहस के पापों से व्रचा; उनहें मुह पन नाज कनने
मत दे, तव्र मैं सीच होउंगा, और वज्ञत अपनाध
१४ से नीनदोष्प होउंगा। हे पनमेसन तु मेना पहाड़
और मेना तनान कनता, मेने मुंह की व्रातें, और
मेने मन का धयान तेने आगे गनाह होवे।

२० व्रीसवां गीत।

पनधन व्रजनये को दाउद का गीत।

१ व्रीपत के दीन पनमेसन तेनी सुने, याकुव्र के
२ ईसन का नाम तुहे व्रढ़ावे। वुह अपने धनमधाम

से तेरी सहाय करे; श्रीर सैहन में से तुझे संभाले।
३ तेरी सारी भेंटों को समरन करे, तेरे होम के
४ बलदान को भसम करे; सीलाह। वुह तेरे मन
के समान तुझे देवे, श्रीर तेरे सारे परामरस पुरे
५ करे। हम तेरी मुकत से आनंदीत होंगे, हम
अपने ईसर के नाम पर अपने झंडे खड़े करेंगे,
६ परमेसर तेरी सारी बीनतीयां पुरी करे। अब
मैं जानता हूं, की परमेसर अपने अभीसीकत को
बचाता है, वुह अपने दहीने हाथ की मुकत के
पराक्रम से अपने पबीतर सींहासन पर से उसकी
७ सुनेगा। कीतने रथों पर, श्रीर कीतने घोड़ों
पर भरोसा रखते हैं, परंतु हम परमेसर अपने
८ ईसर के नाम को समरन करेंगे। वे झुके, श्रीर
गीर पड़े; परंतु हम उठे, श्रीर सीधे खड़े हुए।
९ हे परमेसर, बचा, जब हम पुकारें, राजा हमारी
सुने।

२१ एकीसवां गीत।

परधान बजनीये के पास दाउद का गीत।

१ हे परमेसर, तेरे बल से राजा आनंद करेगा,
श्रीर वुह तेरी मुकत पर कयाही आनंद करेगा।
२ तु ने उसके मन की इछा उसे दी है, श्रीर उसके

२ होंठों की वीनती के न नोका, सीलाह। भलाइ
के आसीसों से तु उसके आगे जाता है, तु योप्पे
४ सोने का मुकुट उसके सीन पन नप्पता है। उस
ने तुझ से जीवन याहा, ग्रोन तु ने उसे जीवन
५ की वृढ़ती सनवृदा के लोये दी। तेनी मुकत से
उसका वृड़ा वीभव है; तु ने उसके लोये पनतीसठा
६ ग्रोन महीमा नप्पी है॥ कयोंकी तु ने उसे
सनवृदा का ग्रासीस कन नप्पा है, तु ने उसे ग्रपने
७ मुप के ग्रानंद से ग्रानंदीत कीया। कयोंकी
नाजा पनमेसन पन भनोसा नप्पता है, ग्रोन ग्रती
महान की दया से वह टलाया न जायगा।
८ तेना हाथ तेने सानें वैनीयों को ढुंढ नीकालेगा;
तेना दहीना हाथ तेने वैनीयों को पकड़ लेगा।
९ तु ग्रपने कनुघ के समय उनहें ग्रगीनमय भठी की
नाइं दहकावेगा, पनमेसन उनहें ग्रपने कोप से
१० नींगल जायगा, ग्रोन ग्राग उनहें प्पा लेगी। तु
पीनथीवी पन से उनका फल, ग्रोन मनुप्पों के
११ संतानों में से उनके वंस को नसट कनेगा। कयों
की उनहों ने तेने वीनुघ वुनाइ याही, ग्रोन ऐसी
१२ वुनी यींता सोची, जो उनसे न वन पड़ेगी। जव
तु लैस होके उनके वीनोघ ग्रपना पनय यढ़ावेगा,
१३ तव तु उनसे पीठ फीनावेगा। हे पनमेसन तु

अपनेही वृल से महान हो, और हम तेरी महीमा को सतुत और वड़ाइ गावेगे।

२२ वाइसवां गीत।

अजीलेत सहान पर परधान वजनीये के पास दाउद का गीत।

१ हे मेरे इसर, हे मेरे इसर, तुने मुझे कयों छोड़ा
है? तु मेरी मुकत से और मेरे चीलाने की वातों
२ से कयों दुर है? हे मेरे इसर, मैं दीन के रोता
हुं, पर तु नहीं सुनता, और रात को मुझे कुछ
३ चैन नहीं। परंतु तु पवीतर है, जो इसराइल
४ की सतुत में वास करता है। हमारे पीतरों ने
तुझ पर भरोसा कीया, उनहों ने भरोसा कीया,
५ और तु ने उनहें छुड़ाया। उनहों ने तेरी दोहाइ दी, और छुड़ाये गये, उनहों ने तुझ पर
६ भरोसा रप्पा, और न घवराये। पर मैं कीड़ा,
और मनुप्प नहीं, मनुप्पों की नींदा, और लोगों
७ में तुछ। सव, जो मुझे देप्पते हैं, मुझ पर हंसते
हैं, वे होंठों को प्पोल प्पोल सीर हला हला कहते
८ हैं। की उस ने छुटने के लीये इसर पर भरोसा
कीया, जो वुह उस से परसन है, तो वही उसे
९ छुड़ावे। परंतु तुही मुझे गरभ से वाहर लाया,

१० मेरी माता की गोद में तु ने मुझे आशा दी। मैं
कोख में से तुझ पर डाला गया, मेरी माता के
११ गरभ से तु मेरा ईसर है। मुझ से दुर मत रह,
कयोंकी दुख आ-पहुंचा, और कोइ सहायक
१२ नहो। बहुत से बैलों ने मुझे घेरा है, बाशान के
१३ बलवंतों ने मुझे घेर रखा है। उनहों ने मुझ पर
फाड़ते, और गरजते सींह की नाईं मुंह पसारा
१४ है। मैं पानी की नाईं बहा जाता हूं, और मेरी
सारी हडीयां अलग हो चली हैं, मेरा मन मोम
१५ की नाईं मेरे हीरदय में पीघल गया। मेरा
पराक्रम ठीकरे की नाईं सुखा है, मेरी जीभ
तालु से लगी जाती है; और तु मुझे मीरतु की
१६ धुल पर लाया है। कयोंकी कुतों ने मुझे घेरा
है, दुसटों की मंडली ने मुझे घेर लीया है, उनहों
१७ ने मेरे हाथ, और मेरे पांव बेधे। मैं अपनी सारी
हडीयों को गीन सकता हूं, वे मुझे घुरके देखते
१८ हैं। वे मेरे कपड़े आपुस में बांटते हैं, और मेरे
१९ बागे पर चीठी डालते हैं। पर हे परमेसर, तु
मुझ से दुर मत हो, हे मेरे बल, मेरी सहाय के
२० लीये चटक कर। मेरे पराण को तलवार से,
२१ और मेरे पीरीय को कुते के बस से बचा। सींह
के मुंह से मुझे बचा; कयोंकी तु ने मुझे गैंडों के

२२ सींघों से व़याय़ा है। मैं अपने भाइय़ों में तेना
नाम लेउंगा, औान मंडली के मध में मैं तेनी सतुत
२३ कनुंगा। पनमेसन के डनवैय़ो तुम उसकी सतुत
कनो, हे य़ाकुव़ के साने व़ंस उसकी महीमा कनो,
२४ हे इसनाइल के साने व़ंस उस से डनो। कय़ोंकी
उसने पीड़ीत की पीड़ा को तुछ न जाना, न घीन
कीय़ा, न उसने उस से अपना मुंह फेन लीय़ा,
२५ पनंतु जव़ उसने उसे पुकाना, उसने सुना। व़ड़ी
मंडली में मैं तेनी सतुत कनुंगा, जो उस से डनते
हैं, मैं उनके आगे अपनी मनौती पुनी कनुंगा।
२६ कोमल ख़ाय़ेंगे, औान तोनीपत होवेंगे, जो पनमेसन
के खोजी हैं, सो उसकी सतुत कनेंगे, उनके मन
२७ सदा लों जीते नहेंगे। जगत के साने खुंट येत
कनके पनमेसन की ओान फीनेंगे, जातगनों के
१८ साने घनाने तेनी सेवा कनेंगे। कय़ोंकी नाज पन-
मेसन का है, औान जातगनों में वही अधछ है।
२९ पीनथीवी के साने पुसट लोग ख़ाय़ेंगे, औान सेवा
कनेंगे; सव़ जो धूल में उतनते हैं, उसके आगे
झुकेंगे, औान कोइ अपने ही पनान को जीता नहीं
३० नख सकता। एक व़ंस उसकी सेवा कनेगा, जो
३१ पनमेसन की नीज पीढ़ी में गीना जाय़गा। वे
आवेंगे, औान उन लोगों को, जो उतपंन होंगे, य़ह

कहके उसका धरम बरनन करेंगे, की उसने यह कीया है।

२३ तेइसवां गीत।

दाउद का गीत।

१ परमेसर मेरा गड़रीया है, मुझे घटती न
२ होगी। वह मुझे कोमल घास की चराइ में लीटाता
है, वुह सीथीर जल के लग मेरी अगुआइ करता
३ है। वुह मेरा परान फेर लाता है, और अपने
नाम के लीये मुझे धरम के पथों में लेजाता है।
४ हां यदी मैं मीरतु की छाया की तराइ में जाउं,
तो मुझे डर नहीं कयोंकी तु मेरे साथ है, तेरी
५ छड़ी और तेरी लाठी मुझे सांत देती है। तु
मेरे वैरीयों के आगे मेरे लीये मंछ बीछाता है,
तु ने मेरे सीर पर तेल मला, मेरा कटोरा भर
६ के छलकता है। नीसचय भलाइ और दया जी-
वन भर मेरे साथ साथ रहेंगे; और मैं परमेसर
के मंदीर में सदा लों बास करुंगा।

२४ चौबीसवां गीत॥

दाउद का गीत।

१ पीरथीवी और उसकी भरपुरी जगत, और उस

२ के सारे वासी परमेश्वर के हैं॥ कयोंकी उसने
उसको नेव समुद्रों पर रख्खी; और उसे वाढ़ों पर
३ स्थीर कीया। परमेश्वर के पहाड़ पर कौन
चढ़ेगा, और उसके पवीतर स्थान में कौन खड़ा
४ होगा? । वही जीसके हाथ सुच, और जीसका
मन पवीतर है, जीस ने अपने पराण को वीनथा
को ओर न उठाया, जीस ने छल से कीरया न
५ खाइ। वुह परमेश्वर से आसीस, और अपने
६ मुकत दाता ईश्वर से धरम पराप्त करेगा॥ यह
वुह वंस है, जो उसका खोजी है, और तेरे रुप
७ का खोजी है, हे याकुब, सीलाह। हे फाटकों,
अपने अपने सीरों को उठाओ; और हे सनातन
के दुवारो ऊंचे होओ, और महीमा का राजा
८ भीतर आवेगा। महीमा का राजा कौन है?
वुह परमेश्वर पराकरमी और सकतीमान पर-
९ मेश्वर, जो संगराम में वलवंत है। हे फाटको,
अपने अपने सीरों को उठाओ, और हे सनातन
के दुवारो उनहें उभाड़ो, और महीमा का राजा
१० भीतर आवेगा। यह महीमा का राजा कौन है?
सेनाओं का परमेश्वर; वही महीमा का राजा है,
सीलाह।

२५ पचीसवां गीत।

दाऊद का गीत॥

१ हे परमेसर मैं अपने प्रान को तेरी ओर उठाता
२ हूं॥ हे मेरे ईसर, मैं तुझ पर भरोसा रखता
हूं, मुझे लज्जित होने न दे, और मेरे बैरी को मुझ
३ पर जय पाने न दे॥ हां, जो तेरी बाट जोहते
हैं, उन्हें लज्जित होने न दे, परंतु वे, जो अकारन
४ अपराध करते हैं, सो लज्जित होवें॥ हे परमे-
सर मुझे अपने मारग दीखला, मुझे अपने पथ
५ सीखला॥ अपनी सतता में मुझे ले चल; और
मुझे सीखा, क्योंकी तु मेरी मुकत का ईसर है,
६ दीन भर मैं तेरी बाट जोहता हूं॥ हे परमे-
सर अपनी दया, और अपने कोमल प्रेम को
समरन कर, क्योंकी वे प्राचीन समय से होते
७ आये हैं॥ मेरी तरुनाई के पापों, और अपराधों
को समरन मत कर, अपनी दया के समान अपनी
भलाई के लीये हे परमेसर, मुझे समरन कर॥
८ परमेसर भला और खरा है, इस लीये वुह पापीयों
९ को मारग सीखावेगा॥ वुह नम्रों को
बीचार पर चलावेगा, और नंम्र लोगों को
१० अपने मारग सीखावेगा॥ जो परमेसर के

नीय़म, ओर साप्पी का पालन करते हैं, उनके
११ लीये उसके सारे पथ दया, और सयाइ हैं॥ हे
परमेसर अपने नाम के लीये मेरे पाप छमा कर,
१२ कयोंकी वुह बड़ा है॥ वुह कौन सा मनुष्य है,
जो परमेसर को डरता है? वुह अपने युने ऊए
१३ मारग पर उसे यलावेगा॥ उसका पराण यैन से
रहेगा, और उसका बंस पीरथीवी का अधीकारी
१४ होगा॥ परमेसर का भेद उसके डरवैयों पर है,
१५ और वुह उनहें अपना नीय़म दीप्पावेगा॥ मेरी
आंप्पें सदा परमेसर की ओर हैं, कयोंकी वही
१६ मेरे पांव फंदे से नीकालेगा॥ मेरी ओर फरो,
और मुझ पर दया कर, कयोंकी मैं अकेला और
१७ दुप्पी ऊं॥ मेरे मन के दुप्प बढ़ गये; मेरे दुप्पों
१८ में से तु मुझे छुड़ा॥ मेरे दुप्प और पीड़ा को
१९ देप्प, और मेरे सारे पापों को छमा कर॥ मेरे
बैरीयों को सोय, कयोंकी वे बऊत हैं, और अंधेर
२० के बैर से मुझ से बैर रप्पते हैं॥ मेरे पराण की
रछा कर, और मुझे छुड़ा; मुझे लजीत होने न
२१ दे, कयोंकी मैं तुझ पर भरोसा रप्पता ऊं। धरम
और प्पराइ मेरे रछक होवें, कयोंकी मैं तेरी
२२ बाट जोहता ऊं॥ हे इसर, इसराइल को उसके
सारे दुप्पों से छुड़ा॥

२६ छब्बीसवां गीत ॥

दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर मेरा बिचार कर, क्योंकि मैं
अपने धर्म से चला हूं; मैं ने परमेश्वर पर भरोसा
२ रक्खा है, मैं न बिछलुंगा ॥ हे परमेश्वर, मुझे
परख, और मुझे ताड़, मेरे मन, और अंतःकरन
३ को जांच ले ॥ क्योंकि तेरा कोमल प्रेम मेरी
आंखों के आगे है, और मैं तेरी सच्चाई में चला
४ हूं ॥ मैं बिरथा लोगों के संग नहीं बैठा हूं, और
५ कपटियों के साथ न जाउंगा ॥ कुकर्मियों की
मंडली से मैं ने बैर रक्खा है, और दुष्टों के साथ
६ न बैठुंगा ॥ मैं निर्मलता में अपने हाथ धोउंगा,
तब हे परमेश्वर, मैं तेरी बेदी की परदक्षिन
७ करुंगा ॥ जिसतें मैं धन्यबाद के शब्द से प्रचारुं,
और तेरे सारे आश्चर्ज कर्म का बर्नन
८ करुं ॥ हे परमेश्वर मैं ने तेरे निवास के घर से,
और तेरे बिभव के तंबु से प्रेम किया है ॥
९ मेरे प्रान को पापियों में, और मेरे जीवन बधी-
१० कों में मत बटोर ॥ जिनके हाथों में बुराई है,
और उनका दहिना हाथ अकोर से भरा है ॥
११ परंतु मैं जो हूं, अपनी खराई से चलुंगा, मुझे
छुड़ा, और मुझ पर दया कर, मेरा पांव समथर

सथान पन प्पड़ा है, मैं मंडलीओं में पनमेसन का
घनवाद कनुंगा॥

२७ सताइसवां गीत॥

दाउद का गीत॥

१ पनमेसन मेना उंजीयाला ओन मेनी मुकत, मैं
कीस से डनुं? पनमेसन मेने जीवन का वल है,
२ मुझे कीसका भय?॥ जव दुसट अनथात मेने
वैनी मेना मांस प्पाने को मुझ पन यढ़ आये, तो
३ ठोकन प्पाके गीन पड़े॥ यदपो सेना मेने वीनुच
छावनी कने, तो मेना मन न डनेगा, ओन यदी
मेने वीनुच संगनाम उभड़े, तो इस में मैं भनोसा
४ नप्पुंगा॥ मैं ने पनमेसन से एक वात याही है,
वही मैं ढुढुंगा, की मैं जीवन भन पनमेसन के
मंदीन में नहूं, ओन पनमेसन की सुंदनता देप्पुं
५ ओन उसके मंदीन में उसे ढुंढुं। कयोंकी वीपत
के दीन वुह मुझे अपने तंवु में छीपावेगा, अपने
डेने के आड़ में मुझे छीपावेगा; ओन मुझे पहाड़
६ पन वैठावेगा। सो अपने यानों ओन के वैनीओं
पन मेना सीन उभाड़ा जायगा, इस लीये मैं उस
के मंदीन में आनंद से वल यढ़ाउंगा, मैं गाउंगा,
७ हां मैं पनमेसन की सतुत गाउंगा। हे पनमेसन

जब मैं सब्द से पनाथना कनु, ते सुन के मुह्
८ पन दया भी कन, औान उतन दे। जब तु ने
कहा, की मेने मुंह को प्योज, तो मेना मन बोल
उठा, की हे पनमेसन मैं तेने मुंह को प्योजुंगा।
९ हे मेने मोप्थ के इसन मुह से मुंह मत छोपा;
औान अपने दास को कघनो से दुन मत कन, तु
मेनो सहाय जुआ है; मुहे तयाग मत कन, औान
१० मुहे छोड़ मत दे। जब मेनी माता पीता मुहे
११ तयागे, तब पनमेसन मुहे समेटेगा। हे पनमेसन
मुहे अपना मानग सीप्पा, औान मेने बैनीयों के
१२ कानन मुहे सीधे मानग पन चला। मेने बैनीयों
की इछा पन मुहे मत सोंप, कयोंकी झुठे साप्पी,
औान जो कनुन सांस लेते हैं, मुह पन उठे हैं।
१३ यदी जीवन की भुम में पनमेसन के अनुगीनह
देप्पने का मेना बीसवास न होता, तो मैं नीनास
१४ होजाता। पनमेसन की बाट जोह, औान हीयाव
कन; औान वुह तेने मन को बल देगा, मैं फोन
कहता ऊं, की पनमेसन की बाट जोह।

२८ अठाइसवां गीत।

दाउद का गीत।

१ मैं तुहे पुकानता ऊं, हे पनमेसन, मेने पहाड़

मुह से चुपका मत हो, न होवे की जो तु चुप हो
नहे, तो मैं गड़हे में के पड़वैये की नाइं होजाउ।
२ जव मैं तेने आगे चीलाउं, और तेने पवीतन
मंदीन की ओन अपने हाथ उठाउं, तव तु मेनी
३ वीनती का सवद सुन ले। दुसटों और कुकन-
मीयों के साथ, जो अपने पनोसीयों से कुसल की
वातें कनते हैं, पनंतु उनके मन में वुनाइ है,
४ मुझे मत खींच। उनकी कीनया के और उनकी
दुसटता के जुगत के समान उनहें पलटा दे, उनके
हाथों के कानज के समान उनहें दे, उनहें पनतो-
५ फल दे। कयोंकी वे पनमेसन के कानज और
उसके हाथों की कीनया को नहीं मानते, सो वुह
६ उनहें नसट कनेगा, और न वनावेगा। पनमेसन
धंन है, कयोंकी उसने मेनी वीनतीयों का सवद
७ सुना है। पनमेसन मेना वल और मेनी ढाल है, मेने
मन ने उस पन भनोसा कीया, और मैं सहाय
पाता हुं, सो मेना मन अतयंत आनंदीत है, मैं
८ उसकी सतुत गाउंगा। पनमेसन उनका पना-
कनम है, और वुह अपने अभीसकत के वयाव
९ का वल है। अपने लोगों को वया, और अपने
अधीकान को आसीस दे, उनहें पाल, और उनहें
सदा के लीये वढ़ा।

२९ उंतीसवां गीत।

दाउद का गीत।

१ परमेसर के लीये कहो, हे बलवंत के पुतरो कहो,
की परमेसर ही के लीये महीमा औार बल है।
२ उसके नाम की परतीसठा परमेसर को देओ;
पवीतरता की सुंदरता में परमेसर की सेवा करो।
३ परमेसर का सबद पानीयों पर है, महीमा का
ईसर गरजता है, परमेसर बड़े पानीयों पर है।
४ परमेसर का सबद बलवंत है, परमेसर का सबद
५ ऐसरय मान है। परमेसर का सबद आरज
पेड़ों को तोड़ता है, हां परमेसर लबनान के
६ आरज पेड़ों को तोड़ता है॥ वुह उनहें बछेड़े
की नाईं और लबनान, और सीरयुन को गैंड़े
७ के बचे की नाईं कुदाता है। परमेसर का सबद
८ आग की लवर को काटता हैं। परमेसर का
सबद बन को कंपाता है, परमेसर कादेस के बन
९ को कंपाता है। परमेसर का सबद हरनीयों
को पीड़ में डालता है, और जंगलों को उघाड़ता
है, उसके मंदीर में हर एक उसके वीभव की
१० बात कहता है। परमेसर बाढ़ पर बैठा है, पर-
मेसर सदा के लीये राज के सींहासन पर बैठा है।

२९ पनमेसन अपने लोगों को वृल देगा, पनमेसन अपने
लोगों को कुसल का आसीस देगा।

३० तीसवां गीत॥

दाउद के घन के सथापीत कनने का गीत, औान
गान।

१ हे पनमेसन, मैं तुहे वृड़ा कनके मानुंगा, कयोंकी
की तु ने मुहे वृढाया, औान मेने वैनी को मुह पन
२ आनंद कनने न दीया है। हे पनमेसन, मेने
दूसन, मैं ने तुहे पुकाना, औान तु ने मुहे यंगा
३ कीया है। हे पनमेसन, तु ने मेने पनान को
समाघ से उठाया है, औान तु ने मुहे जीता नप्पा
है, जीसतें मैं गड़हे में न गीनुं। हे पनमेसन के
सीघो उसका गान कनो, औान उसकी पवीतनता के
४ समनन के लीये घनवाद कनो! कयोंकी उसकी
नीस पलभन की है, औान उसकी कीनपा में जीवन
है, सांह को वृीलाप होवे, पनंतु वृीहान को गान
६ होता है। मैं ने अपनी वृढती में कहा, की मैं
७ कभी टलाया न जाउंगा॥ हे पनमेसन, तु ने
अपनी कीनपा से मेने पहाड़ को अत सथीन कीया,
तु ने अपना मुंह छीपाया, औान मैं दुप्पी हुआ॥
८ हे पनमेसन, मैं तेने आगे यीलाया, औान मैं ने

९ परमेसर की प्रार्थना की। जब मैं गड़हे में
उतरूं, तब मेरे लोहू में कया लाभ होगा? कया
धुल तेरी सतुत करेगी? कया वुह तेरी सतता
१० को बरनन करेगी? हे परमेसर सुन, श्रीर मुझ
पर दया कर, हे परमेसर, तु मेरा सहायक हो॥
११ तु ने मेरे रोने को नाचने से पलट दीया, तु ने
मेरा टाट खोल डाला है, श्रीर मेरी कट में श्रानंद
१२ का पटुका बांधा। जीसतें मेरा ऐसरज तेरीं
सतुत गावे, श्रीर चुपका न रहे; हे परमेसर मेरे
ईसर, मैं सरबदा लों तेरा धनबाद करता रहुंगा।

३१ ऐकतीसवां गीत ॥

परधान बजनीये को दाउद का गीत।

१ हे परमेसर मैं तुझ पर भरोसा रखता हुं, मुझे
कभी लज्जीत होने न दे, अपने धरम से मुझे मुकत
२ दे। अपने कान मेरी श्रोर झुका, श्रीर झट पट
मुझे छुड़ा, मुझे बचाने के लीये बल का पहाड़,
३ श्रीर आड़ का घर हो। कयोंकी तुहीं मेरा
पहाड़, श्रीर मेरा गढ़ है, सो तु अपने नाम के
४ लीये मुझे ले चल, श्रीर मेरा अगुआ हो। तु
उस जाल से मुझे नीकाल, जो उनहों ने छीप के
मेरे लीये बीछाया है, कयोंकी तुही मेरा बल है।

५ मैं अपने आतमा को तेरे हाथ में सौंपता हूं, हे
परमेसर सतता के ईसर, तु ने मुझे छुड़ाया है।
६ मैं उनसे बैर रप्पता हूं,जो झुठा बीरथा मानते हैं
७ औार मेरा भरोसा परमेसर पर है। मैं तेरी दया
पर आनंदीत, औार आलहादीत होंगा, कयोंकी
तु ने मेरे दुःप्प को बुझा है, औार तु ने मेरे पराने
८ को बीपत में पहीचाना है। औार मुझे अपने
बैरी के हाथ में बंद न कीया है, त ने फैलाव
९ सथान में मेरा पांव रप्पा है। हे परमेसर मुझ
पर दया कर, कयोंकी मैं दुप्प में हूं, मेरी आंप्प,
औार मेरे पराान, औार मेरा उदर सोक से प्पीन
१० हुऐ हैं। कयोंकी मेरा जीवन सोक से प्पीन हुऐ हैं,
औार मेरी बरस कहरने से; मेरा बल मेरे पाप के
मारे घट गया, औार मेरी हडीयां नसट हु ईं।
११ मैं अपने सारे बैरीयों में नीज करके परोसीयों
में अपनींदा हुआ,औार अपने जान पहीचानें के
लीये डर; जीनहों ने मुझे देप्पा, मुझ से बाहर
१२ भागे। मैं उस मीरतक की नाईं हूं, जो मन से
बीसराया हुआ है, मैं नसट पातर के तुल हूं।
१३ कयोंकी मैं ने बहुतों का अपबाद सुना है, जब
की उनहों ने आपुस में मेरे बीरुघ में परामरस
कीया, औार उनहों ने मेरे पराान मारने की जुकत

१४ की, तव्र यानें ओान भय़ था। पन हे पनमेसन
मैं ने तुह्ह पन भनोसा नप्पा, मैं ने कहा, की तु
१५ मेना ईसन है। मेने समय़ तेने हाथ में हैं, मुह्हे
मेने व्रैनीय़ों के हाथ से, ओान उन से, जो मुह्हे
१६ सताते हैं व्रया ले। अपने सेवक पन अपना
नप यमका, अपनी दय़ा के लीय़े मुह्हे व्रया ले।
१७ हे पनमेसन, मुह्हे लजीत होने न दे, कय़ोंकी मैं ने
तुह्हे पुकाना है, दुसट को लजीत कन, ओान वे स-
१८ माघ में युपके पड़े नहें। ह्हुठे होठों को, जीन
से घमंड की कठोनता, ओान अहंकान की व्रातें
१९ धनमीय़ों के व्रीनुध नीकलती हैं, युप कन। तु ने
अपने डनवैय़ों के लीय़े कैसी व्रड़ी कीनपा धन नप्पी
है, जो तु ने मनुप्पों के संतानों के आगे अपने
२० आसनीतों के लीय़े व्रना नप्पा है। मनुप्प के
अहंकान से तु उनहें अपने आगे के गुपत में छीपा
नप्पेगा, तुही उनहें जीभ के ह्हगड़े से अपने तंव्रु में
२१ नप्पेगा। पनमेसन धंन है, कय़ोंकी उसने दीनढ़
नगन में अपनी आसयनज कीनपा मुह्हे दीप्पलाई
२२ है। मैं उतावली से कह व्रैठा, की मैं तेने आगे
से कट गय़ा ह्रं, तीस पन भी जव्र मैं तेने आगे
यीलाय़ा, तव्र तु ने मेनी व्रीनती का सव्रद सुन
२३ लीय़ा। हे पनमेसन के संतो, उस से पनेम नप्पो,

कयोंकी परमेसर वीसवासी लोगों का रछ्यवाल है,
२४ और अहंकारीयों को वुझताइ से दंड देता है। हे
परमेसर के आसरीतो, तुम सव होयाव करो,
और वुह तुमहारे मन को दीरह करेगा।

३२ वतीसवां गीत ॥

उपदेस देने का दाउद का गीत ॥

१ जीसका अपराध छमा कीया गया, और पाप
२ ढांपा गया, सो धंन हैं। जीस पर परमेसर पाप
नहो लगाता, और जीसके मन में कपट नहीं,
३ सो धंन है। जव मैं चुप रहा, तव सारे दीन
४ मेरी हडीयां कहरते कहरते गल गइं॥ कयोंकी
तेरा हाथ रात दीन मुझ पर भारी था, मेरी
तरावट गरमी की हुराहट से पलट गइ, सीलाह।
५ मैं ने तेरे आगे अपने पाप को मान लीया, और
मैं ने अपना अधरम नहीं छीपाया; मैं ने कहा,
की मैं परमेसर के आगे अपने अपराधों को मान
लेउंगा, और तु ने मेरे पाप का अधरम छमा कीया
६ सीलाह। इसी लीये हर एेक इसरीय जन तुझे
पाने के समय में तेरी पराराथना करेगा,
नीसचय वड़े पानीयों के वाढ़ उसके पास न
७ आवेंगे। तु मेरे छीपने का सथान है, तु मुझे दुष्पों

से व़्रयावेगा, ग्रैान व़्रयाव के गान से मुहे घेनेगा,
८ सीलाह। मैं तुहे सीप्पाउंगा, ग्रैान जौस मानग
में तुहे यलना है, उपदेस कनुंगा, ग्रैान मैं ग्रपनी
९ ग्रांप्पों से तुहे मंतन देउंगा। तुम घोड़ा, ग्रथवा
प्पयन के समान मत होग्रो, जीसे समहु नहीं,
ग्रैान जीसका मुंह ढाठी ग्रैान व़्राग से व़्रंद कनने
१० पड़ता है, न होवे, की वे तुह पास ग्रावें। दुसट
पन व़्रहुत सी व़्रीपत होगी, पनंतु जीसका भनोसा
११ पनमेसन पन है, उसे दय़ा घेनेगी। हे धनमीय़ो
ग्रानंदीत होग्रो, ग्रैान पनमेसन से मगन होग्रो,
ग्रैान साने प्पने ग्रंत:कननो ग्रानंद के माने यो-
लाग्रो।

३३ तैंतीसवां गीत।

१ हे धनमीय़ो पनमेसन में ग्रानंदीत होग्रो, कय़ों-
२ की प्पनों को सतुत सजती है। व़्रीना से पनमेसन
की सतुत कनो, ग्रैान लवन ग्रैान दस तान का
३ व़्राजा व़्रजाते उसके लीय़े गाग्रो। उसके लीय़े नय़ा
गोत गाग्रो, सुघनापे से व़्रड़े सव़्रद से व़्रजाग्रो।
४ कय़ोंकी पनमेसन का व़्रयन ठीक है, ग्रैान उसके
५ साने कानज सयाइ के साथ हैं। वुह धनम ग्रैान
नय़ाय़ से पनेम कनता है, पीनथीवी उसकी दय़ा से

६ मनी ऊइ है। पनमेसन के व्रयन से सनग व्रन गये
औान उनकी सानी सेन। उसके मुंह के सांस से।
७ वुह समुंदन का जल ढेन की नाइं ऐकठे कनता है,
८ वुह गहीनायों को मंडान में घनता है। सानी
पीनथीवी पनमेसन से डनती नहे; औान संसान
९ की सानी व्रसती उसका भय माने। कयोंकी उस
ने कहा, औान हो गया, उसने अगया की, औान
१० पड़ा ऊआ। पनमेसन अनदेसीयों के पनामनस
को व्रयनथ कनता है, वुह लोगों की जुकत को
११ मीथया कन देता है। पनमेसन का मंतन सनव्रदा
लों सीथीन नहता है, उसके मन की यींता पोढ़ी
१२ से पीढ़ी लों। वे लोग घन हैं, जीनका ईसन पनमेसन
है; औान जीन लोगों को उसने अपने अघीकान
१३ के लीये युन लीया है। पनमेसन सनग पन से
देषता है, वुह मनुष्य के संतान पन दीसीट कनता
१४ है। वुह अपने नीवास सथान से पीनथीवी के साने
१५ नीवासीयों को देषता है॥ वुह उनके अंतःकनन
को ऐक सां व्रनाता है, वुह उनके साने कानजों
१६ को व्रुझता है॥ कोइ नाजा अपनी सेना को
व्रऊताइ से व्रयाया नहीं जाता; व्रीन जन व्रऊत
१७ व्रल से छुड़ाया नहीं जाता॥ व्रयाने के लीये
घोड़ा व्रीनथा है; न वुह अपने व्रड़े व्रल से कीसी

१८ को छुड़ावेगा॥ देखो, परमेश्वर की आंख उनपर
है, जो उस से डरते हैं, जो उसकी दया पर आसा
१९ रखते हैं॥ जीसतें उनके प्रानें को मीरतु से
२० छुड़ावे, और उनहें अकाल में जीता रखे। हमारा
प्रान परमेश्वर की बाट जोहता है, वही हमारा
२१ उपकार, और हमारी ढाल है॥ कयोंकी हमारा
अंतःकरन उसी से आनंदीत होगा, इस कारन
की हम ने उसके पवीतर नाम पर भरोसा कीया
२२ है॥ हे परमेश्वर, जैसी हमारी आसा, तुझ पर है,
तैसी तेरी दया हम पर होवे।

३४ चौंतालीसवां गीत॥

दाउद का गीत जब उसने अपनी चाल अबीमलक
के आगे बदल डाली, और उसने उसे खेद दीया,
और वह जाता रहा।

१ मैं हर समय में परमेश्वर का धन मानुंगा,
२ उसकी सतुत सदा मेरे मुंह में होगी। मेरा प्रान
परमेश्वर की बड़ाइ करेगा, दीन लोग सुनेंगे,
३ और आनंदीत होंगे। मेरे साथ ईसर की महीमा
४ करो, हम मील के उसके नाम को बढ़ावें॥ मैं ने
परमेश्वर को खोजा, उसने मेरी सुनी, और मेरे
५ सारे भय से मुझे छुड़ाया॥ उनहों ने उस पर

दीनीसट की, और उंजीयाले होगए, और उनके
६ मुंह लजीत न हुए ॥ यह कंगाल चीलाया, और
परमेसर ने सुना, और उसकी सारी वीपत से
७ उसे बचाया। जो परमेसर से डरते हैं, उसका
दुत उनकी चारों ओर छावनी करता है, और
८ उनहें बचाता है ॥ अहो चीख्खो, और देख्खो,
की परमेसर ; भला जीसका भरोसा उस पर है,
९ सो मनुष्य धन है ॥ हे संतो परमेसर को डरो,
कयोंकी वे, जो उसे डरते हैं, उनहें कुछ कमी
१० नहीं ॥ तरुन सींह अाहार नहोत हैं, और भुख्ख
सहते हैं ; पर वे जो परमेसर के ख्योजी हैं, उनहें
११ कीसी अछी बसतु की कमी नहीं ॥ आओ हे
बालको, मेरी सुनो, मैं तुमहें परमेसर का भय
१२ सीख्खाउंगा ॥ कौन मनुष्य जीवन को चाहता है,
और मंगल देख्खने के लीये बय की बढ़ती चाहता
१३ है ॥ तु अपनी जीभ को बुराइ से और होठों को
१४ झुठ बोलने से रोक रख्ख ॥ बुराइ से भाग, और
भलाइ कर, कुसल को ढुंढ, और उसी का पीछा
१५ कर ॥ परमेसर की आंख्खें धरमीयों पर हैं, और
१६ उसके कान उनकी दुहाइ पर ॥ परमेसर का
मुंह कुकरमी से बीरुध है, जीसतें उनका समरन
१७ पीरथीवी पर से कट जाय ॥ धरमी चीलाते हैं,

और परमेसर सुनता है, और सारे दुष्टों से उनहें
१८ छुड़ाता है॥ परमेसर युरन अंत:करनीओं के
पास है, और टुटे मन के जन को बचाता है॥
१९ धरमी पर बहुत सी बीपत है, परंतु परमेसर उन
२० सभों से उसे छुड़ाता है॥ वुह उसकी सारी हडीओं
का रछक है, उन में से एक टुटने नहीं पाती॥
२१ बुराइ दुसट को नास करेगी, और जो धरमी से
२२ बैर करते हैं, सो उजड़ जायेंगे॥ परमेसर अपने
दासों के परान को छुड़ाता है, और जीनका
भरोसा उस पर है, उन में से कोइ नास न
होगा॥

३५ पैंतीसवां गीत॥

दाउद का।

१ हे परमेसर मेरे बीवादीओं के साथ तु बीवाद
२ कर, और जो मुझ से लड़ते हैं, उनसे लड़। ढाल,
और फरी पकड़, और मेरे सहाय के लीये खड़ा
३ हो। भाला भी नीकाल, और मेरे सताउ के
बीरुध मारग रोक, मेरे परान को कह, की तेरी
४ मुकत मैं हूं। मेरे परान के गाहकों को घबरा
दे, और लजीत कर, और जो मेरी बुराइ की
५ जुगत में हैं, उनहें हटा दे, और लजीत कर। वे

पवन के आगे की भुसी की नाइं होवें, परमेसर
६ का दुत उनहें खेदे। उनका मारग अंधीयारा,
और चीकलहल होवे, और परमेसर का दुत
७ उनहें सतावे। कयोंकी उनहों ने अकारथ मेरे
लीये गड़हे में अपना जाल छीपाया, जो उनहों ने
८ अकारन मेरे पराण के लीये खोदा। उस पर
अयानक नास पड़े, और वुह अपने छीपाये हुए
जाल में आपही फंसे, और उसी नास में आप
९ पड़े॥ पर मेरा पराण परमेसर में आनंदीत होगा,
१० और वुह उसकी मुकत में मगन होगा। मेरो
सारी हडीयां कहेंगी, की हे परमेसर तेरे तुल
कौन है, जो दरीदरों को बलवान के हाथ से,
और कंगाल, और अधीन को उसके लुटेरे से
११ छुड़ाता है। झुठे साख्री उठे, जो मुझ से वुह परस
१२ करते हैं, जीनहें मैं नहीं जानता था॥ उनहों
ने मेरे पराण की टुटी के लीये भलाइ की संती
१३ मुझ से बुराइ की है। परंतु मैं जो हुं, जब वे
रोगी थे, मैं ने टाट का पहीरावा पहीना, और
ब्रत रख रख अपने पराण को दुखी कीया,
१४ और मेरी परारथना मुझी पर लौट आइ। मैं
ने अपने हीत, और भाइ की नाइं उन से बेवहार
कीया, और माता के बीलापी की नाइं मैं सोक

१५ से ढुक गया। पन वे मेनी वीपत में आनंद से
मील के एकठे ऊए, और साने नीच लोग मेने वी-
रोध वटुन गये, और मैं न जानता था, उनहों ने
१६ मुझे फाड़ा और न थमे। जेवनारों में कपटी
ठठेलुओं के साथ उनहों ने मुझ पन दांत कीच
१७ कीचाये। हे पनमेसन कवलों तु देष्पा करेगा ?
उनके वीनास से मेने पनान को, हां इसी अकेले
१८ को सींह से छुड़ा। मैं वडी मंडली में तेना घन
वाद करुंगा, मैं वहवानें में तेनी सतुत करुंगा।
१९ मेने वैनीयों को मुझ पन वीनथा, आनंदीत होने
न दे, और जो अकानथ मुझ से वैन करते हैं,
२० मुझ पन आंष्प मानने न दे। कयोंकी वे कुसल
की वात नहीं कहते, पनंतु जो देस में चैन करते
२१ हैं, वे उन से छल की जुगत करते हैं। हां उनहों
ने मेने वीरुध अपना मुंह पसान के कहा, की
२२ अहा अहा हमानी आंष्पों ने देष्पा है। हे पन-
मेसन तु ने यह देष्पा है, चुपका मत नह, हे पन-
२३ मेसन मुझ से दुन मत नह। हे मेने इसन हे मेने
पनभु मेने पद के लीये आप को उभाड़, और
२४ मेने नीपटाव के लीये जाग। हे पनमेसन मेने
इसन, अपने घनम के सनान मेना वीचान कन,
२५ और उनहें मुझ पन आनंदीत होने मत दे। वे

अपने मन में कहने न पावें, की वाह वाह हम यूह
याहते थे, उनहें कहने न दे, की हम उसे नींगल
२६ गये। जो मेरे दुप्प से आनंदीत होते हैं, उनहें
लजीत करके घवूना, जो मेरे वीरोघ फुलते हैं,
उनहें नीनादर, और लाज का पहीनावा पहीना।
२७ जो मेरे घरम से आनंद, और परसंन होते हैं,
सो आनंद के मारे ललकारें, हां वे नीत कहा
करें, की परमेसर की महीमा होवे, जो अपने
२८ सेवक की कूशली से परसंन है। और मेरी जीभ
तेरा घरम, और तेरी सतुत की यरया दीन भर
कहती रहेगी।

३६ छतीसवां गीत ॥

परघान बूजनये के पास परमेसर के सेवक दाउद
का गीत।

१ दुसट का अगया भंग करना मेरे मन में कहता
है, की उसकी आंष्पों के आगे इसर का भय नहीं।
२ कयोंकी जवलों उसके अघरम की बुराइ घीनीत
न हो वुह अपनी द्रीसट में आप को भुलाता है।
३ उसके मुंह की वातें अघरम, और छल की हैं,
उसने समझ को, और भलाइ करने को छोड़ दीया
४ है। वुह अपने बीछौने पर पड़े पड़े कुवीयार

बांधता है, वह आप कुपथ में पड़ा रहता है, वुह
५ बुराइ से घीन नहीं करता। हे परमेसर तेरी
६ दया सरग में है, और तेरी सचाइ मेघ लों। तेरा
धरम इसरीय परबतों की नाइं है, तेरे नयाय
बड़े गहीरे हैं, हे परमेसर, तु मनुष्य और पसुन
७ का रछक है। हे इसर तेरा कोमल परेम कैसा
बहुमुल है, इस लीऐ मनुष्य के संतान तेरे डैने
८ की छाया तले भरोसा करते हैं। वे तेरे घर की
चीकनाइ से संतुसट होंगे, और तु अपने सुखों
९ की नदी से उनहें पीलावेगा॥ कयोंकी जीवन
का सोता तुझ पास हैं, तेरे उंजीयाले से हम उंजी
१० याला देखेंगे॥ तु अपने गयानीयों पर अपना
कोमल परेम, और खरे मन पर अपना धरम
११ बढ़ा। घमंडीयों का पांव मेरे वीरोध न पड़े,
और दुसटों का हाथ मुझे टालने न पावे, कुकरमी
वहां गीरे ऊए हैं, वे ढकेले गये हैं, वे कभी उठ न
सकेंगे॥

३७ सैंतीसवां गीत।

दाउद का गीत।

१ कुकरमीयों के कारन तु मत कुढ, और अधर-
२ मीयों के वीरुध डाह न कर। कयोंकी वे घास

की नाइं हट से काटे जायेंगे, और हरीआली
३ की नाइं मुरझावेंगे। परमेसर पर भरोसा रख,
और भला कर, सो तू देस में बास करेगा, और
४ नीस्चय भरोसा से। परमेसर से भी आनंदीत
हुआ कर, और वुह तेरे मन की इछा तुझे देगा।
५ अपना मारग परमेसर पर छोड़ दे, उस पर भरो-
६ सा भी रख, और वही पुरा करेगा। वुह तेरे
धरम को उंजीआले की नाइं, और तेरे नयाय
७ को दो पहर दीन की नाइं परगट करेगा। पर-
मेसर के आगे चुप होके संतोस से उसकी बाट
जोह, और जो मनुष्य अपने मारग में बढ़ती पाता
है, और कुमंतरना करता है, उनके लीये मत
८ कुढ़। क्रोध को छोड़ दे; और कोप को तयाग;
और बुराइ करने को कीसी बात में मत कुढ़।
९ कयोंकी दुकरमी काटे जायेंगे, परंतु जो परमेसर
पर आसा रखते हैं, सो पीरथीवी के अधीकारी
१० होंगे। कयोंकी तनीक और फेर दुसट न होगा,
हां तु ढुंढ ढुंढ उसका सथान खोजेगा; और वुह
११ न होगा। परंतु कोमल लोग पीरथीवी के अधी-
कारी होंगे, और बहुत कुसल से मगन होंगे।
१२ दुसट धरमीओं के बीरुध जुकत बांधता है, और
१३ उस पर दांत कीचकीचाता है। परमेसर उस

पन हंसेगा, कय़ोंकी वुह उसके दीन को आते
१४ देष्पता है। कंगालों, और दीनों को गीनाने को,
और प्पने याञोय़ों को घात कनने को दुसटों ने
तलवान नीकाली है, और अपना घनुष्प प्पींया
१५ है। उनकी तलवान उनहीं के हीनदै में पैठेगी;
१६ और उनके घनुष्प टुट जाय़ेंगे। घनमी जन की
थोड़ी दुसटों के वृक्त घन से अघीक भली है।
१७ कय़ोंकी दुसटों की भुजा तोड़ी जाय़ेंगी, पनंतु
१८ पनमेसन घनमीय़ों को संभालता है। पनमेसन
प्पनों के दीनों को जानता है, और उनका अघी-
१९ कान सनवृदा लों होगा। वे कुसमय़ में लजीत
न होंगे, और अकाल के दीनों में तीनौपत नहेंगे।
२० पनंतु दुसट नसट होंगे, और पनमेसन के वैनी
मेनना की चीकनाई की नाई भोट जाय़ेंगे, वे घुआं
२१ होके जाते नहेंगे। दुसट उघान लेता है, और
भन नहीं देता, पन घनमी दय़ा कनता है, और
२२ देता है॥ कय़ोंकी उसके आसीनवादी पीनथीवी
के अघीकानी होंगे, और उसके सनापीत कट-
२३ जाय़ेंगे। उतम मनुष्प के डग को पनमेसन सोघीन
नाष्पता है, और वुह उसकी चाल से आनंदीत
२४ है। य़दपी वुह गीन जाय़, तथापी वुह सनवृथा
पड़ा न नहेगा, कय़ोंकी पनमेसन उसका हाथ

२५ थामता है। मैं तरुन था, अव्र व्रीनच ऊआ ऊं,
तीसपन भी मैं ने घनमी को कभी तयकत होते,
२६ औान उसके व्रंस को टुकड़े मांगते न देप्पा। वुह
दीन भन दयाल होके उधान देता है, औान उस
७ का व्रंस आसीसीत है। व्रनाइ से अलग हो, औान
२८ भलाइ कन, औान सदा लों व्रना नह। कयोंकी
पनमेसन नयाय से पनीत नप्पता है, औान अपने
संतों को नहीं तयागता, वे सनव्रदा लों व्रयाये
जाते हैं, पन दुसटों का व्रंस काटा जायगा।
२९ घनमी भुम के अघीकानी होंगे, औान उस में नीत
३० व्रसेंगे। घनमी का मुंह व्रुघ की व्रात कहता है,
औान उसकी जीभ से नयाय का व्रयन नीकलता
३१ है। उसके ईसन की व्रैवसथा उसके मन में है,
३२ उसका डग कभी न नपटेगा। घनमी की घात में
दुसट लगानहता है, औान उसे घात कनने याहता
३३ है। पनमेसन उसके हाथ में उसे न छोड़ेगा,
३४ औान नयाय में उसे दोप्पी न ठहनावेगा। पन-
मेसन पन ठहन, औान उसके मानग को पालन
कन, औान वुह तुझे भुम के अघीकान के लीये
व्रढ़ावेगा; जव्र दुसट काटे जायेंगे, तो तु देप्पेगा।
३५ मैं ने दुसटों का महा पनाकनमी, औान आप को
उस हने पेड़ की नाइं फैलाते देप्पा है, जो अपनी

३६ ही मीटी में उगता है। तथापी वुह ऐसा जाता
नहा, जैसा की वुह नहीं था, मैं ने उसे ढुंढा, परंतु
३७ वुह कहीं न पाया गया॥ सीध को चीनह, और
खने को देख नख, कयोंकी ऐसे का अंत कुसल है।
३८ पर अपराधी नास हो जायेंगे, दुसट का अंत नास
३९ है॥ परंतु धरमीयों की मुकत परमेसर से है,
४० दुख के समय में वुह उनका बुता है॥ परमेसर
उनकी सहाय करके उनहें छुड़ावेगा, वुह उनहें
दुसटों से छुड़ावेगा, और बचावेगा, कयोंकी उन
का भरोसा उस पर है॥

३८ अठतीसवां गीत॥

समरन कराने के लीये दाउद का गीत॥

१ हे परमेसर अपने कोध से मुझे मत दपट, और
२ अपने कोप से मुझे ताड़ना मत कर॥ कयोंकी
तेरे बान मुझ में लग रहे हैं, और तेरा हाथ
३ मुझे दबाडाता है॥ तेरी रीस के मारे मेरे देह
को चैन नहीं, और मेरे पापों के मारे मेरी हडीयों
४ में कल नहीं॥ कयोंकी मेरे अधरम मेरे सीर
पर होगये हैं; और भारी बोझ की नाई वे मेरे
५ लीये बऊत भारी हैं॥ मेरी मुरखता के कारन
६ मेरे घाव सड़ के बसाते हैं॥ मैं थका ऊं, और

झुक गया हूं, मैं दीन भर बीलाप करता हूं ॥
७ क्योंकी मेरी कट घीनीत रोग से भरी है ; और
८ मेरे देह में कल नहीं ॥ मैं नीरबल और अती
चुरन हूं, और अपने मन की बेकली के मारे
९ चीलाता हूं ॥ हे परमेसर मेरी सारी इछा तेरे
आगे है, और मेरा कहरना तुझ से छीपा नहीं ॥
१० मेरा मन हांपता है, मेरा बुता मुझ में घटता है,
और मेरी आंखों की जोत भी जाती रही ॥
११ मेरे पीरीय और मेरे मीतर मेरी चोट के कारन
मुझ से दुर खड़े हैं ; और मेरे कुटुम परे खड़े
१२ हैं ॥ मेरे प्रान के गांहक भी जाल बीछाते हैं,
और मेरे दुख के चाहक बुरी बातें कहते हैं ;
१३ और दीन भर छल की चींता करते हैं। पर
बहीरे के समान होके मैं ने न सुना, और गुंगे के
१४ समान, जो अपना मुंह नहीं खोलता ॥ यों मैं
उस मनुष्य की नाईं हुआ, जो नहीं सुनता, और
१५ जीस के मुंह में उतर नहीं ॥ हे परमेसर, मैं
तेरी बाट जोहता हूं, हे मेरे परभु ईसर, तु
१६ सुनेगा ॥ क्योंकी मैं ने कहा, की मेरी सुन, न हो
की वे मुझ पर आनंदीत होवें, और जब मेरा पांव
१७ फीसले तो वे देख के फुलें ॥ क्योंकी मैं टलने
१८ पर हूं, और मेरा सोक सदा मेरे आगे है ॥ क्यों-

को मैं अपना अघनम वृताउंगा, और अपने पाप
१९ से उदास होउंगा॥ परंतु मेरे वैरी जीते होके
वृलवंत हैं, और मेरे वैरी अकारथ वृहुत होगये॥
२० जो भलाइ को संती वुराइ करते हैं, सो मेरे वैरी
२१ हैं, कयोंकी मैं भलाइ का पीछा करता हुं॥ हे
परमेसर मुझे मत तयाग, हे मेरे इसर, मुझ से
२२ दुर मत रह। हे मेरे मुकतदाता इसर, मेरी
सहाय के लीये यटक कर।

३९ उंतालीसवां गीत।

परधान वृजनयेयदुथुन के पास दाउद का गीत।

१ मैं ने कहा, की मैं चौकसी से चलुंगा, जीसतें
जीभ से पाप न करुं, और जव लों दुसट मेरे
आगे हैं, मैं अपने मुंह पर मुंहेडी रप्पुंगा॥
२ मैं गुंगा सा चुप रहा, और भला कहने से भी
३ रह गया, और मेरा सोक उभड़ा॥ मेरा मन
मुझ में तपत था, मेरे सोचते सोचते आग भड़की,
४ तव मैं वृोल उठा॥ हे परमेसर मेरा अंत, और
मेरी वय के दीन कीतने हैं, मुझे जना, की यहां
५ मेरा समय कीतना है? देप्प तु ने मेरी वय
वीता भर की की है; और मेरा जीवन तेरे
आगे तुछ है नीसचय हर ऐक जन अपनी पुरी

६ अवसथा में सनव्रथा व्रीनथा है, सीलाह॥ नीस-
यय़ हन ऐक मनप्प सुनत की नाइं यलता फीन
ता है, नीसयय़ वे अकानथ व्रीकल होंते हैं, वुह
ढेन कनता है, पनंतु नहीं जानता की उनहें कौन
७ व्रटोनेगा। अव्र हे पनमेसन, मैं कीस की व्राट
८ जोऊं? सुहे तेनीही आसा है। मेने सानें अप-
नाधों से सुहे छुड़ा, मुनप्पों की नींदा सुहे मत कन।
९ मैं गुंगा नहा, अपना मुंह न प्पोला, कय़ोंकी तु ने
१० कीय़ा है। अपनी योट सुह से अलग कन, मैं
११ तो तेने हाथ की मान से नास ऊआ ऊं। जव्र
अधनम के लीय़े तु मनुप्प के दपट से ताड़ना
कनता है, तु उस में की व्रांछीत को गला देता है,
नीसयय़ हन ऐक मनुप्प व्रीनथा है, सीलाह॥
१२ हे पनमेसन, मेनी पनानथना सुन, और मेने नोने
पन कान धन, मेने आंसुओं से अयेत मत नह, क-
य़ोंकी मैं अपने सानें पीतनों की नाइं ऐक पनदेसी
१३ और टीकक ऊं। य़हां से न जाने से, और फेन
न नहने से आगे सुह से हाथ उठा, जीसतें मैं व्रल
पाउं।

४० यालीसवां गीत।

पनधान व्रजनीय़ें के पास दाउद का गीत।

१ पनमेसन की व्राट जोहते जोहते वुह मेनी ओन

२ छका, और मेरी दुहाई सुनी। वुह मुझे भयंकर
गड़हे से भी, और दलदल से वाहर नीकाल
लाया, और मेरे पांव पहाड़ पर रष्पे, और मेरी
३ चाल को सथीर कीया। और उसने मेरे मुंह में ऐक
नया गीत डाला, अरथात इसर को सतुत, बहुतेरे
देष्पेंगे, और डरेंगे, और परमेसर पर भरोसा करेंगे।
४ जो मनुष्य परमेसर पर भरोसा रष्पता है, और
अहंकारीयों को, और जो झुट की ओर झुकते
५ हैं, नहीं मानता, सो धन है। हे परमेसर मेरे
इसर, तेरे आसयरज करम, जो तु ने कीये हैं,
और हमारी ओर तेरी चींता वहुत हैं, वे अलग
अलग तेरे लीये गीनी नहीं जा सकतीं, जो मैं
उनहें वरनन कीया चाहुं, तो वे गीनती से परे
६ हैं। वल और भेंट की इछा तु ने नहीं की, तु
ने मेरे कान छेदे हैं, होम की भेंट और पाप की
७ भेंट को तु ने नहीं चाहा। तब मैं ने कहा, की
देष्प, मैं आता हुं, पुसतक के पीलंडी में मेरे वी-
८ ष्पय में लीष्पा है। हे मेरे इसर, मैं तेरी इछा
मानने को आनंदीत हुं, तेरी ब्रैवसथा मेरे हीर-
दे में है। वड़ी मंडली में मैं ने धरम का पर-
चारा है, देष्प, हे परमेसर, तु जानता है, की
१० मैं ने अपने होठ को नहीं रोका। मैं ने तेरे धरम

को अपने मन में नहीं छीपा नप्पा, मैं ने तेनी
सयाइ, औान तेनी मुकत को वृनन कीग्रा है, मैं
ने तेना कोमल पनेम औान तेने सत को वृडी मंड-
११ ली से न छीपाग्रा। हे पनमेसन अपनी कोमल
दया को मुझ से न नप्प छोड, तेने कोमल पनेम
१२ औान तेनी सयाइ नीत मेनी नछा कनें। क्योंकी
अगनीत वुनाइयों ने मुझे घेन लीग्रा है, मेने
अघनम ने मुझे पकडा है, प्रैसा की मैं अपनी
आंप्प उपन नहीं उठा सकता, वे मेने सीन के वालों
से भी वृकत हैं, इस लीये मेना पनान जाता है।
१३ हे पनमेश्वन मुझे वृया, हे पनमेसन सीघन मेनी
१४ सहाय कन। जो मेना जीव लेने का पीछा कनते
हैं, उनहें प्रेकठे लजीत कन, औान घवृना दे, जो
मेनी वुनाइ याहते हैं, उनहें हटा दे, औान
१५ लजीत कन। जो मुझ पन अहा अहा कनते हैं,
१६ सो अपनी लाज के पलटा से नास होवें। जो
तेने प्पोजी हैं, आनंदीत औान पनसंन होवें, औान
जो तेनी मुकत के पनेमी हैं, सो नीत कहा कनें,
१७ की पनमेसनी म हीमा होय। पनंतु मैं ते।
कंगाल औान दीन ऊं, तथापी पनमेसन मेनी यींता
कनता है, मेनी सहाय मेना छुडानेवाला तुही
१८ है। हे मेने पनमेन वीलंव मत कन।

४१ ऐकतालीसवां गीत।

प्रधान बजनये के पास दाऊद का गीत।

१ जो कंगालों की चींता करता है, सो धन है,
२ परमेसर बुराइ के दीन में उसे छुड़ावेगा। पर-
मेसर उसकी रछया करेगा, और उसे जीता
रप्पेगा, और वुह भुम पर आसीसीत होगा, और
३ तु उसके बैरी के बस में उसे न कर देगा। रोग
के बीछौने पर परमेसर उसे बल देगा, उसके
४ रोग में तु उसका बीछौना उलट पुलट करेगा। मैं ने
कहा, की हे परमेसर मुझ पर दया कर, मेरे
प्रान को चंगा कर, कयोंकी मैं ने तेरे बीरोध
५ पाप कीया हैं। मेरे बैरी मेरे बींप्पय में बुरा
कहते हैं, की वुह कब मरेगा, और उसका नाम
६ कब मीट जायगा॥ और जो वुह देप्पने को आवे,
तो मीथया बातें करता है, उसके मन में अधरम
७ भरता है, वुह बाहर जाके उसे कहता है। सब
जो मुझ से बैर रप्पते हैं, मेरे बीरोध फुसफुसाते
८ हैं, मेरी बुराइ में वे जुगत बांधते हैं। और
कहते हैं, की ऐक बुरा रोग उसे लगा है, और
९ अब जो वुह पड़ा है, फेर न उठेगा। मेरे कुसल
का जन, जीस पर मैं भरोसा करता था, जो मेरी
रोटी प्पाता था, उसने मुझ पर लात उठाइ है

१० पर हे परमेसर, तु मुझ पर दया कर, और मुझे
११ खड़ा कर, जीसतें मैं उनसे पलटा लेउं॥ इस से
मैं जानता हुं, की तु मुझ पर कीरपा करता है,
१२ की मेरे वैरी मुझ पर जय नहीं पाते। तु मेरी
खराइ में मुझे संभालता है, और सदा मुझे अपने
१३ आगे रखता है। परमेश्वर इसराइल का इसर
सनातन से सनातन लों धन है, आमीन आमीन।

४२ बयालीसवां गीत।

कोरह के संतानें के लीये परधान बजनये के
पास उपदेस करने का गीत।

१ जैसा की हरनी पानी की नालीयों के लीये
बोंबीआती है, तैसाही हे इसर, मेरा पराण तेरे
२ लीये हांपता है। मेरा पराण इसर के लीये
जीवत इसर के लीये पीयासा है, मैं इसर के आगे
३ कब पहुंचुंगा। रात दीन मेरे आंसु मेरे भोजन
हुए हैं, जब की वे परतदीन मुझे कहा करते हैं,
४ की तेरा इसर कहां है?॥ जब मैं इन बातें
को सोचता हुं, तब मैं अपना पराण उंडेलता हुं,
कयोंकी मैं मंडली के साथ गया; मैं उनके साथ
आनंद और सतुत का सबद करता हुआ अरथात
उस मंडली के साथ, जो परब रखती थी, इसर के

५ मंदीन में गया। हे मेने पनान, तु कयों झुका
जाता है ? ओन तु कयों मुझ में बेचैन है ? ईसन
पन भनोसा नख, कयोंकी नीसचय मैं उसके मुख
६ की सहाय के लीये उसकी सतुत कनुंगा। हे मेने
ईसन मेना पनान मुझ में झुका जाता है, इस लीये
यनदन की ओन हनमुनी की भुम से मीजहान
७ के पहाड़ से तुझे समनन कनुंगा॥ तेने पनीबहा
के सबद से गहीनाव गहीनाव को पुकानता है,
तेनी सानी लहनें, ओन तेने ढेव मेने सीन पन से
८ जाते नहे। दीन को पनमेसन अपनी कोमल
दया को अगया कनेगा, ओन नात को मैं उसका
गीत गाउंगा, मेनी पनानथना मेने जीवन के ईसन
९ की ओन होगी। मैं अपने पहाड़ ईसन को कहुं-
गा, कीं तु मुझे कयों भुल गया है ? मैं कयों बैनी
के अंधेन से तेने आगे बीलाप कनता चला जाता
१० हुं ? मेनी हडीयों में तलवान की नाई मेने बैनी
नींदा कनते हैं, जब लों वे पनतीदीन मुझे कहते
११ हैं, कीं तेना ईसन कहां ? । हे मेने पनान तु
कयों झुका जाता है, ओन तु कयों बेचैन है ?
ईसन पन भनोसा नख, कयोंकी मैं अब भी उस-
की सतुत कनुंगा, जो मेने मुंह का कुसल ओन
मेना ईसन है।

सैंतालीसवां गीत।

१ हे ईसर, मेरा वीयार कर, और अधरम जात
के वीरुध मेरे पद का पक्ष कर, मुझे कपटी ; और
२ अधरमी मनुष्य से छुड़ा। कय़ोंकी तु मेरे बल
का ईसर है, कय़ों तु मुझे दुर करता है ? मैं बैरी
के अंधेर के मारे कय़ों रोना यला जाता ऊं ?।
३ हाय़ अपनी जोत, और अपनी सयाई को भेज, वे
मेरी अगुआई करें, वे मुझे तेरे पवीतर पहाड़ पर
४ और तेरे तंबु में ले जावें। तब मैं ईसर की
बेदी पर अपने आनंद की मगनता के ईसर पास
जाउंगा, हे ईसर, हे मेरे ईसर, बीन बजा के मैं
५ तेरा सतुत करुंगा। हे मेरे परान तु कय़ों झुका
जाता है, और तु मुझ में कय़ों बेयैन है ? ईसर
पर भरोसा रख, कय़ोंकी अब भी मैं उसकी सतुत
करुंगा, जो मेरे मुंह का कुसल और मेरा ईसर
है।

अठतालीसवां गीत॥

कोरह के पुतरों के लीये परधान बजनये को
मसकील॥

१ हे ईसर हम ने अपने कानों से सुना, और उन
कामों को, जो तु ने उनके दीनों में, और उनसे

आगे कीये हैं हमारे पीतरों ने हम से कहा ॥
२ की तु ने अनदेसीओं को कयोंकर अपने हाथ से दुर
कीया, और उनहें जमाया, और तु ने उन लोगों
३ को दुष्प दीया, और उनहें व्राहर कीया ॥ कयोंं
की उनहों ने अपनी हीं तलवार से देस को व्रस
में न कीया, न उनकी भुजा ने उनहें व्रयाया; परंतु
तेरे दहीने हाथ ने; और तेरी भुजा ने, और तेरे
रुप की जोत ने, इस लीये की तेरी कीरपा उन
४ पर थी ॥ इसर तु मेरा राजा है, याकुव्र के
५ लीये छुटकारों की अगया कर। तुझ से हम अपने
व्रैरीयों को ठेलेंगे, जो हम पर उभडते हैं, हम
६ तेरे नाम से उनहें लताडेंगे। कयोंकी मैं अपने
धनुष्प पर भरोसा न करुंगा, न मेरी तलवार
७ मुझे व्रयावेगी। परंतु तु ने हमें हमारे व्रैरीयों से
व्रयाया है, और हमारे सतरुन को लजीत कीया
८ है। हम दीन भर इसर की व्रड़ाइ करते हैं,
और सदा तेरे नाम की सतुत करतें हैं, सीलाह।
९ परंतु तु ने हमें तयागा है, और लजीत कीया,
१० और हमारी सेनाओं के साथ नहीं जाता। तु
व्रैरी से हमें पीठ फेरवाता है, और हमारे सतरु
११ हमें लुट लेते हैं। तु ने हमें भेड़ों की नाइं उन-
का भोजन कीया है, और अनदेसीयों में हमें

१२ छीन भीन कीया है। तु अपने लोगों को वीन
धन से वेंयता है, और उनके मोल से नहीं वढ़ता
१३ है। तु हमें हमारे परोसीयों में नीदीत, और
हमारे आस पासीओं में हलका, और तुछ करता
१४ है। तु हमें अंनदेसीयों में ऐक कहावत, और
१५।१६ लोगों में सीरधुंना वनाता है। नींदक और
पाप्यंड के सवद के लीये वैरी पलटादायक के
कारन से मेरी घवराहट नीत मेरे आगे है,
१७ और मेरे मुंह की लाज ने मुझे ढांपा है। यह
सव कुछ हम पर पड़ा है, तद भी हम तुझे नहीं
भुले हैं, और न तेरी वाचा से मीथया वेवहार
१८ कीया है। हमारा मन नहीं फीरा है, और न
१९ हमारी याल तेरे मारग से फीरी। यदपी तु
ने अजगरों के सथान में हमें कुयला है, और
२० मीरतु की छाया से हमें ढांपा। यदी हम ने अप-
ने इसर के नाम को वीसराया है, अथवा उपरी
२१ देव कीं ओर हाथ फैलाया है। तो कया इसर
इसका भेद न लेगा? कयोंकी वुह मन के भेदों
२२ को जानता है। हां, तेरे लीये हम दीन भर
घात कीये जाते हैं, और घात की भेड़ गीने जाते
२३ हैं। हे परभु जाग तु कयों सोता है? उठ सदा
२४ के लीये हमें मत तयाग। तु कयों अपना मुंह

लीपाता है? श्रीर हमारे दुष्ट श्रीर श्रंधेर को क्यों
२५ बीसराता है। क्योंकी हमारा पराण धुल लों
२६ हुका है, हमारा पेट भुम से चीपका है। हमारे
सहाय के लीये उठ, श्रीर अपनी दया के कारन
हमें बचा ले।

४५ पैंतालीसवां गीत।

कोरह के पुतरों के लीये सोसानीम पर परधान
बजनीये के पास मसकील परेम का गान।

१ मेरे मन में अछा अभीपराय उबलता है, मैं
उन बातों के बीष्टय में कहता हुं, जो मैं ने राजा
के लीये कीया है; मेरी जीभ चटक लेखक की
२ लेखनी है। तु मनुष्य के संतानों से अती सुंदर
है, तेरे होठों में अनुगीरह उंडेला गया है, इसी
लीये इसर ने तुझे सदा के लीये आसीस दीया
३ है। हे सकतीमान बीरव, श्रीर महातम से
४ अपनी तलवार जांघ पर लटका। सचाइ श्रीर
कोमलता श्रीर धरम पर अपने महातम श्रीर
सफलता से चढ़; श्रीर तेरा दहीना हाथ तुझे
५ भयंकर कारज दीखावेगा। राजा के बैरीयों
के श्रंतःकरन में तेरे बान चोखे हैं, लोग तेरे
६ तले गीर जाते हैं। हे इसर, तेरा सींहासन

सनातन श्रीन सनातन के लीये है, तेना नाजदंड
७ ठीक दंड है। तु धनम से पेनेम, श्रीन दुसटता
से बैन कनता है, इसी लीये इसन ने, जो तेना
इसन है, श्रानंद की यीकनाइ से तेने संगीयों से
८ तुझे श्रधीक श्रभीसीकत कीया है। हाथी दांत
के भवनों में से बोल; श्रीन तेने पहीनावा से
श्रगन, श्रीन तज का सुगंध श्राता है, जीन से
९ उनहों ने तुझे श्रानंदीत कीया है। नाजाश्रों
की बेटीयां तेनी पनटीसठीत इसतीनीयों में हैं,
नानी उपरीन के सोने से बीभुसीत तेने दहीने
१० हाथ पन खड़ी थी। श्रो बेटी सुन ले, श्रीन सोच,
श्रीन श्रपने कान लगा, श्रपने ही लोगों, श्रीन श्रपने
११ पीता के घन को भी भुल जा। सो नाजा तेनी
सुंदनता का नीपट श्रभीलासी होगा, कयोंकी
१२ वुह तेना पनभु है, तु उसकी सेवा कन। श्रीन
भेंट के साथ सुन की बेटी श्रनथात लोगों की धन-
१३ मान तेने मुंह की बीनती कनेगा। नाजा की
पुतनी भीतन भीतन महीमा से भनी हुइ है,
१४ उसका पहीनावा सोनहला हैं। बुटे काढ़े हुए
पहीनावा में नाजा के श्रागे वुह पहुंचाइ जायगी,
उसकी संगी कुमानीयां, जो उसके पीछे पीछे जाती
१५ हैं, तुझ पास पहुंचाइ जायेंगी॥ श्रानंद होते

हुए वे परसंता से पहुंचाइ जायेंगी, वे राजा के
१९ भवन में परवेस करेंगी। तेरे पीतरों की संती
तेरे संतान होंगे, जीनहें तु सारी पीरथीवी का
अधेक्ष करे, सारी पीढ़ीयों में मैं तेरा नाम समरन
कराउंगा, इस लीये लोग सरवदा तेरी सतुत
करेंगे।

४६ छयालीसवां गीत।

कोरह के पुतरों के लीये परधान बजनीये के पास
एक गान अलामुस पर।

१　इसर हमारा सरन और बल है, और दुष्प में
२ और समय में सहायक है। यदपी पीरथीवी
टलजाय, और यदपी परबत समुंदर में डाले
३ जायें॥ और उसके पानी हड़हड़ावें, और
हलर जावें, यदपी उसके उभड़ने से परबत थर-
४ थरावें, तथापी हम न डरेंगे, सीलाह। एक नदी
है, जीसकी धारें इसर के नगर को, अरथात अती
महान के पवीतर तंबुओं को आनंदीत करती
५ हैं। इसर उसके मध में है, वुह कभी टलाया न
जायगा, इसर तड़केही उसकी सहाय करेगा॥
६ अनदेसी कोपीत हुए, राज हील गये, उसने सबद
७ कीया, पीरथीवी पीघल गइ॥ परमेसर सेनाओं

का इसन हमाने साथ है, य़ाकुव़ का इसन हमाना
८ सनन है, सीलाह॥ आओ पनमेसन के कानजों
को देष्पो, उसने पीनथीवी पन कैसी कैसी व़ी-
९ नासता की॥ वुह पीनथीवी के अंत लों लड़ाइयों
को उठा डालता है, वुह चनुप्प तोड़ता है, औान
भाले दे टुकड़े कनता है, गाड़ीयों को आग से
१० जलाता है। चीनज घनो, औान जान नप्पो, की
मैं इसन ह्रं, मैं अनदेसीयों में पनतीसठीत ह्रंगा,
११ मैं पीनथीवी पन पनतीसठीत होउंगा॥ सेनाओं का
पनमेसन हमाने साथ है, य़ाकुव़ का इसन हमाना
सनन है, सीलाह।

४७ सैंतालीसवां गीत।

कोनह के य़ेटों के लीय़े पनधान व़जनीय़े के पास
य़ेक गीत।

१ हे लोगो, तुम सव़ तालीयां व़जाओ, जय़ के
२ सव़्द से इसन की सतुत कनो। कय़ोंकी अती
महान पनमेसन भय़ंकन है, वुह सानी पीनथीवी
३ पन महानाज है॥ वुह लोगों को हमाने व़स में
४ औान देसीयों को हमाने पांव तले कनेगा॥ वुह
हमाना अधीकान, अनथात अपने पीनीय़ य़ाकुव़
की महीमा को हमाने लीय़े चुनेगा, सीलाह॥

५ इसन महासवद के साथ उठ गया है, अनथात
६ पनमेसन तुनही के सवद के साथ। इसन को
सतुत कनो, सतुत कनो, हमाने नाजा की सतुत
७ कनो, सतुत कनो। कयोंकी इसन साने जगत का
नाजा है, समुह के साथ उसकी सतुत कनो॥
८ इसन अनदेसीयों पन नाज कनता है, इसन अपने
९ पवीतन सींहासन पन वैठा है। लोगों के अधेछ
ऐकठे ऊऐ हैं, अनथात वे, जो इवनाहीम के इसन
के लोग हैं, कयोंकी पीनथीवी की ढालें इसन के
वस में हैं, वुह अतयंत पनतीसठीत ऊआ है॥

४८ अठतालीवां गीत।

कोनह के वेटां के लीये गान अेान गीत।

१ हमाने इसन के नगन में उसी के पवींतन पहाड़
पन पनमेसन महान, अेान अतयंत सतुत के जोग
२ है। सेऊन पनवत सुंदन सथान सानी पीनथीवी
का आनंद है, उतन अलंगों में महानाज का
३ नगन है। इसन उसके ऊवनों में सनन के लीये
४ वोदीत है॥ कयोंकी देष्प नाजा वटुन गये,
५ अेान ऐक साथ उतन गये॥ देष्प के वे आसयन-
६ जीत ऊऐ, वयाकुल होके वे नीकल भागे। वहां
डन अेान जनती इसतनी की पीड़ा की नाइं पीड़ा

७ ने उनहें पकड़ा॥ तु तनसीस की जहाजें को
८ पुनवी पवन से तोड़ता है। सेनाओं के परमेसन
के नगन में अनथात अपने इसन के नगन में जैसा
हमने सुना है, तैसाही देष्पा; इसन उसे सदा
९ सथीन नष्पेगा, सेलाह। हे इसन तेने मंदीन के
मध में हमने तेने कोमल पेनेम को सोया है।
१० हे इसन जैसा तेना नाम है, तैसी तेनी सतुत पीन-
थीवी के यानें ष्पुंट में है, तेना दहीना हाथ
११ धनम से भना है। तेने नयाओं के कानन सैहून
पहाड़ आनंदीत होवे यहूदा की बेटीयां आनंद
१२ करें। सैहून के आस पास फीनो, और उसकी
यानें ओन जाओ, औन उसके गुमटों को गीनो॥
१३ तुम उसके गढ़ पन अपना मन लगाओ, और
उसके भवनों को सोयो, जीसतें अगली पीढ़ीयों
१४ को कह नष्पो। कयोंकी यही इसन हमाना
सनातन का इसन है, और मीनतु लों वही हमाना
अगुआ होगा।

४९ उंयासवां गीत।

कोनह के बेटों के लीये परधान बजनीये के पास।

१।२ हे लोगो यह सुनो,जगत के सानें बासीयो। कया
छोटे, कया बड़े, कया धनी, कया कंगाल एकठे

३ कान धरो। मेरे मुंह से बुध की बातें नीक-
लेंगी, और मेरे मन का धयान समुझ का होगा।
४ मैं ऐक द्रीष्टांत की ओर अपना कान झुकाउंगा,
५ मैं अपना गुपत भेद बीना पर षोलुंगा। जब
मेरी एड़ी का अधरम आस पास से मुझे घेरेगा,
६ ऐसो बुराइ के दीनों में कीस लीये डरों। वे जो
अपने धन पर भरोसा करते हैं, और अपनी
७ संपत की बड़ताइ पर फुलते हैं। उनमें से कोइ
कीसी भांत से अपने भाइ को छुड़ा नहीं सकता,
न उसके कारन इसर को परायसयीत दे सकता।
८ कयोंकी उनके पराणें का परायसयीत बहुमुल
९ है, और सरवदा असाध है। जीसतें वुह सर-
१० बदा जीता रहे, और नास न देषे। कयोंकी
वुह बुधमान को मरते देषता है, और मुढ़
और पसुवत पराणी भी नसट होते हैं, और अप-
११ नी संपत औरों के लीये छोड़ जाते हैं। वे समुझ-
ते हैं, की हमारे धर सदा लों, और हमारे नी-
वास पीढ़ी से पीढ़ी लों सथीर रहेंगे, वे अपनी भुम
१२ पर अपना नाम रषते हैं। तथापी परतीसठीत
मनुष्य नहीं ठहरता, वुह पसुन की नाइं नास हो
१३ जाता है। उनकी याल उनकी मुरषता है, तथापी
उनके संतान उनहीं की बात से आनंदीत हैं,

१४ सोलाह। वे भेड़ों की नाईं समाघ में डाले जाते
हैं, मीरतु उनहें प्याग्रा करेगी, और प्यरे लोग
ब्रीहान को उन पर परभुता करेंगे, और परलोक
१५ में पड़े पड़े उनकी सुंदरता जाती रहेगी। परंतु
ईसर परलोक के हाथ से मेरे परान को छुड़ावेगा,
१६ कयोंकी वुह मुझे गरहन करेगा, सोलाह। जब
कोई घनमान हो जाय, अथवा उसके घर का
१७ बीभव बढ़ जाय, तो मत डर। कयोंकी वुह
मरने में कुछ साथ न ले जायगा, और उसका बी-
१८ भव उसके पीछे पीछे न उतरेगा। यदपी वुह
अपने जीते जी अपने परान को आसीस देता था;
पर जब तु अपनी भलाई करेगा, मनुष्य तेरी
१९ सतुत करेंगे। उसका परान उसके पीतरों की
पीढ़ी में मील जायगा, वे कभी उंजीयाला न दे-
२० खेंगे। परतीसठीत मनुष्य, जो असमझ है, सो
नासमान पसु की नाईं है

५० पचासवां गीत।

असाफ के लीये गीत।

१ सकतीमान ईसर परमेसर ने कहा है, और
पीरथीवी को सुरज के उदय से उसके असत लों
२ बुलाया। अतयंत सुंदरता सैहून में से ईसर

३ यमका। हमारा ईसर आवेगा, और चुपचाप
न रहेगा, एक आग उसके आगेआगे भसम करेगी,
४ और उसके आस पास बड़ा अंधीआरा होगा। वुह
उपर से सरग को और पीरथीवी को पुकारेगा,जी-
५ सतें वुह अपने लोगों का नयाय करे। मेरे संतों को
मेरे पास एकठे करो,जीनहों ने मेरे साथ बलीदान
६ से बाचा बांधी। सरग उसके धरम को परगट क-
७ रेंगे,कयोंकी ईसर नयाई है, सीलाह। हे मेरे
लोग सुन, और मैं कहुंगा, हे ईसराईल, मैं तेरे
बीरुध साछी देउंगा, मैं ईसर तेरा ईसर हुं॥
८ मैं तेरे बलीदानों अथवा तेरे होम की भेटों के
लीये तोहे मेरे आगे होने के लीये तुझे न दप-
९ टुंगा। मैं तेरे घर का बैल, और तेरी हुंड का
१० बकरा न लेउंगा। कयोंकी बन के सारे पसु, और
११ सहसर पहाड़ों के ढोर मेरे हैं। मैं पहाड़ के
सारे पंछीओं को जानता हुं, और चौगान के बन
१२ पसु मेरे हैं। जो मैं भुखा होता,तो तुझे न कह-
ता, कयोंकी जगत, और उसकी भरपुरी मेरी है॥
१३ कया मैं बैल का मांस खाउंगा, अथवा बकरों
१४ का लोहु पीउंगा? धनबाद की भेंट ईसर को
चढ़ा, और अपनी मनौतीयां अती महान के
१५ आगे पुरी कर। और बीपत के दीन मुझे पुकार

मैं तुहे छुड़ाउंगा, औान तु मेनी महीमा पनगट
१६ कनेगा। पनंतु दुसट से इसन यों कहता है, तुहे
मेनी वीचन को वननं कनने से कया काम है,
अथवा अपने मुंह में मेनी वाया कयों लेता है?॥
१७ तु तो उपदेस से घीन कनता है, औान मेने वयन
१८ को अपने पीछे डालता है। जव तु योान को
देष्पता है, तो उस में मीख जाता है; औान वे-
१९ नीयानयों का साही होता है। तु अपने मुंह
से वुनाइ की वातें कनना है, औान जीभ से छल
२० वांचता है। तु वैठ के अपने भाइ के वींनोच में
वोलता है, नु अपनी ही माता के वेटे के वीष्पय
२१ में झुठ वोलता है। तु ने यह काम कीया है,
औान मैं युपका होनहा, तु ने समझा, की मैं तुही
सा ऊं, पन मैं तुहे दपटुंगा; औास उनहें एक एक
२२ कनके तेनी आंष्पों के आगे धनुंगा। अव हे
इसन के वीसनवैयो, इसे सोचो, न हो की मैं तुमहें
टुकड़ा टुकड़ा कनुं, औान कोइ छुड़वैया न हो॥
२३ जो सतुत की भेंट देता है, सो मेनी महीमा पनगट
कनता है, औान जो सुयाल यलता है, मैं उसको
इसन की मुकत दीष्पलाउंगा॥

५१ ऐकावनवां गीत।

जब वह बैथसीबा पास गया, और नासान अबी-
सद्‌बकता उस पास आगया, पराधान बजनीये
के पास दाउद का गीत ॥

१ हे ईसर, अपने कोमल परेम से मुझ पर दया
कर, और अपनी कोमल दया की अधीकाई से
२ मेरे अपराधों को मीटा दे॥ मुझे मेरे अधरम
से सरबथा धो, और मुझे मेरे पाप से पावन कर॥
३ कयोंकी मैं अपने अपराधों को मान लेता हुं,
४ और मेरा पाप सदा मेरे आगे है॥ मैं ने केवल
तेराही अपराध कीया है, और तेरेही आगे
बुराई की है, जीसतें तु अपनी बातों में नीरदोष्य
५ और अपने बीचारों में बेलाग ठहरे॥ देष्य,
अधरम में मेरा डोल हुआ, और पाप में मेरी
६ माता ने मुझे सेवा॥ देष्य, तु अंतर में सचाई
चाहता है, और गुपत सथान में मुझे बुध जना-
७ वेगा। जुफा से मुझे पावन कर, और मैं पवीतर
होजाउंगा, मुझे धो, और मैं पाला से अधीक
८ उजला होजाउंगा। मुझे आनंद और मगनता
का संदेस सुना, जीसतें मेरी हडीयां, जीनहें तु ने
९ तोड़ा है, आनंदीत हों। मेरे पापों से अपना

मुंह छीपा, और मेरे सारे अधरम मीटा डाल।
१० हे ईसर, मुझ में ऐक पवीतर मन उतपंन कर,
११ और ऐक सथीर आतमा मुझ में डाल। मुझे
अपने आगे से मत हांक, और अपना धरमातमा
१२ मुझ से मत ले। अपनी मुकत की आनंदता मुझे
फीर दे, और अपने नीरबंध आतमा से मुझे
१३ थाम। तब अपराधीओं को मैं तेरा मारग सीष्पा-
उंगा, और पापी तेरी ओर फीराये जायेंगे।
१४ हे ईसर, मेरे मुकतदाता ईसर, मुझे हतया के पाप
से छुड़ा, और मैं अपनी जीभ से तेरे धरम के
१५ गीत गाउंगा। हे परभु मेरे होंठों को षोल,
और मेरा मुंह तेरी सतुत बरनं करेगा।
१६ कयोंकी तु बलीदान नहीं चाहता, नहीं तो मैं
देता, होम के बलीदान में तेरी आनंदीता नहीं।
१७ ईसर के बलीदान चुरन मन हैं, हे ईसर, तु टुटे
और चुरन अंतःकरन को तुछ न जानेगा॥
१८ अपनी बांछा से सैहुन का भला कर, यीरोसलीम
१९ की भीतों को बना। तब तु धरम के बलीदानों,
और होम की भेंट, और होम की पुरी भेंटों से
आनंदीत होगा; तब वे तेरी बेदी पर बैल
चढ़ावेंगे।

५२ बावनवां गीत।

जब अदुमी दोयेगने आके साउल से कहा, की दाउद अहीमलक के घर आया है, दाउद का मसकील परधान बजनीये के पास।

१ हे बलवान मनुष्य बुराइ पर तु कयों फुलता
२ है? इसर का अनुग्रीरह नीत है। तेरी जीभ छल करके चोप्पे छुरे की नाइं बुराइ की जुगत
३ करती है। तु बुराइ को भलाइ से, और झुठ बोलने को सत कहने से अधीक चाहता है,
४ सेलाह। हे छली जीभ, तु भक्षक बातें को
५ चाहती है। इसी रीत से इसर भी तुझे सदा दे मारेगा, वुह तुझे दुर करेगा, और तुझे तेरे नीवास सथान से उप्पाड़ेगा, और जीवन की भुम
६ से तुझे उप्पाड़ डालेगा, सेलाह। धरमी देष्षेंगे,
७ और डरेंगे, और उस पर हंस के कहेंगे। की देष्पो, इस जन ने इसर को अपना बल न जाना, परंतु अपने धन की अधीकाइ पर भरोसा रष्पा, और अपनी दुसटता में आप को परबल कीया।
८ परंतु इसर के मंदीर में मैं जलपाइ के हरे पेड़ की नाइं हुं, इसर की दया पर सदा भरोसा
९ रष्पता हुं। मैं सरबदा तेरी सतुत करुंगा,

क्योंकी तू ने कीया है, और तेरे नाम की वाट
जोहूंगा, क्योंकी तेरे संतों के आगे यह भला है।

५३ तीरपनवां गीत।

दाउद का मसकील महालात पर परधान वजनीये
के पास।

१ मुरुष्य ने अपने मन में कहा है, की ईसर नहीं,
वे सड़े हैं, और उनहों ने घीनीत अघरम कीया
२ है, और उन में कोइ भला नहीं करता। ईसर
ने देखने को सरग पर से मनुष्य के संतान पर
दीसीसट की, की कोइ समझवैया अथवा ईसर का
३ खोजी है॥ उन में से हर एक हट गया है, वे
सब के सब असुध हुए हैं, कोइ सुकरमी नहीं,
४ एक भी नहीं। कया कुकरमीयों में समझ नहीं?
वे मेरे लोगों को रोटी की नाइं खाते हैं, उनहों
५ ने ईसर की परारथना न की। जहां डर न था,
तहां वे बहुत डरगये; क्योंकी जो तेरे वीरुध
छावनी करते हैं, ईसर ने उनको हडीयों को छीन
भीन कीया है, तु ने उनहें लजीत कीया, क्योंकी
६ ईसर ने उनहें तुछ कीया है। सैहुन से कौन
ईसराइल को मुकत देगा, जब की ईसर अपने

लोगों की वंधुआइ के फेरेगा, ता याकुव आनं-
दीत और इसराइल मगन होगा।

५४ चैांवनवां गीत।

जव जफीमीयें ने आके साउल से कहा,कीया दा-
उद अपने तइं हमारे पास नहीं छीपाता,दाउद
का मसकील नगीनुत पर, परधान वजनये के
पास॥

१ हे इसर, अपने नाम से मुझे वया, और अपने
२ पराक्रम से मेरा नयाय कर। हे इसर, मेरी
परारथना सुन, और मेरे मुंह की वातें पर
३ कान धर। कयोंकी परदेसी मेरे वीरोध में मुझ
पर उठे हैं, और सताउ मेरे पराान के गांहक हैं,
उनहों ने इसर को अपने आगे नहीं समझा,
४ सीलाह। देखो, इसर मेरा सहायक है, परभु
५ मेरे पराान के सहायकों के साथ है। वही मेरे
वैरी को वुराइ का पलटा देगा, अपनी सचाइ से
६ उनहें नसट करेगा। हे परमेसर मैं मनमंता
तुझे वल चढ़ाउंगा, मैं तेरे नाम की सतुत करुंगा,
७ कयोंकी यह भला है। इस लीये की सारी वीपत
से तु ने मुझे वयाया है, और मेरी आंखों ने मेरे
वैरी को देखा है॥

५५ पचपनवां गीत।

दाउद का मसकील नगीनुत पर,परधान बजनीये के पास।

१ हे इसर,मेरी परारथना पर कान धर,श्रोर मेरी
२।३ बीनती से श्राप को मत छीपा। मेरी श्रोर सुरत
लगाके मेरी सुन ; बैरी के सबद के श्रोर दुसटों
के अंधेर के कारन मैं दुहाइ देके बीलाप कर
कर चीलाता ऊं, क्योंकी वे मुझ पर अधरम
४ लगाते हैं, श्रोर कोप से मुझे घीनाते हैं। मेरा
मन मुझ में अती पीड़ीत है, श्रोर मैं मीरतु के
५ भय में पड़ा ऊं॥ श्रोर डरना श्रोर थरथराना
मुझ पर श्रापड़ा, श्रोर घड़का ने मुझे ढांपा है।
६ मैं ने कहा, हाय, की कपोत के से मेरे पंष्प होते,
७ तो मैं उड़ जाता, श्रोर चैन पाता। हां, मैं तो दुर
भरमन करजाता, श्रोर जंगल में रहता,सीलाह।
८ मैं श्रांधी श्रोर झकड़ से झट बच नीकलता।
९ हे परभु, उनहें नास कर, श्रोर उनकी जीभ को
बीभाग कर, कयों की मैं ने नगर में अंधेर, श्रोर
१० झगड़ा देष्पा है। रात दीन वे उसकी भीतों पर
चलते हैं, श्रोर बुराइ श्रोर सोक उसके मघ में
११ होता रहता है। दुसटता उसके मघ में है, छल
श्रोर कपट उसके सड़कों से जाता नहीं रहता।

११ वैरी ने मेरी नीँदा न कीँ, तब मैं सहलेता, और
न मेरा घीनवैया मेरे बीरुध फुला, तब तो मैं
१३ उस से छीप रहता। परंतु तु मेरे ही पद का
जन, और मेरा अगुआ, और मेरा चींहार।
१४ जीसने परामरस को मीटाया, और ऐक साथ
१५ ईसर के मंदीर में गये। मीरतु उनहें पकड़े,
और वे हट समाघ में उतर पड़े, कयोंकी उन में
१६ और उनके नीवास में दुसटता है। मैं तो ईसर
की बीनती करुंगा, और परमेसर मुझे बचावेगा।
१७ सांझ बीहान और मचझंन को मैं पराथना करुंगा,
और चीलाउंगा, और बुह मेरा सबद सुन लेगा।
१८ मेरे बीरुघ के संगराम से उसने मेरा पराण
१९ छुड़ाया है, कयोंकी मेरे संग बहुत थे। ईसर
सुन के उनहें दुष्प देगा, अरथात बुह, जो सनातन
से सथीर है, सीलाह, कयोंकी उन पर उंच नीच
नहीं पड़ा, ईस लीये वे ईसर से नहीं डरते॥
२० उसने अपने मीलापीयों पर हाथ बढ़ाया है,
२१ उसने बाचा को असुच कीया। उसका मुंह मख्खन
सा चीकना था, पर मन में संगराम उसकी बातें
२२ तेल से भी कोमल, तथापी नंगी तलवारें। अपना
बोझ परमेसर पर डाल, और बुह तुझे संभालेगा,
२३ बुह कभी घरमी को टलाया जाने न देगा। पर

हे इस्न, तु उनहें नास के गड़हे में उतानेगा, हतयाना, औन छली मनुष्य, अपने आधे व्रय ताइं न पहुंचेंगे, पनंतु मैं तुझ पन भनोसा नष्षुंगा।

५६ छपनवां गीत॥

दाउद का मीमताम जोनातइल मनीकुकीम पन पनचान व्रजनीये के पास, जव्र फरलसतानीयों ने गाथ में उसे पकड़ा॥

१ हे इस्न, मुझ पन दया कन, कयोंकी मनुष्य
मुझे नीगला याहता है, वुह लड़ाइ कन कन पनती
२ दीन मुझे सताता है। मेने अगोनक मुझे नोगलते
हैं, कयोंकी हे अती महान व्रज्ञत हैं, जो मुझ से
३ लडते हैं॥ जव्र मैं डनता ऊं, तो मैं तुझ पन
४ भनोसा कनुंगा॥ इस्न में मैं उसके व्रयन की
सतुत कनुंगा, मेना भनोसा इस्न पन है, जो कुछ
मनुष्य मुझ से कन सकता है, मैं उस से न डनुंगा॥
५ वे पनतीदीन मेनी व्रातों को पकड़ते हैं, औन
६ सदा मेनी वुनाइ की यींता कनते हैं॥ वे एकठे
होके ढुके में नहते हैं, औन मेने डग को यीनह
नष्षते हैं, वे मेनें पनान की घात में लगे हैं॥
७ कया वे अचनम से व्रय नीकलेंगे? हे इस्न, अपने
८ कनोध से उन लोगों को गीना दे॥ तु मेने भन-

मना को गीनता है, तु मेरे आंसुओं को अपने
पातर में रख छोड़; कया यह तेरी पुसतक में नहीं?
९ जब मैं बीनती करुं, तो मेरे बैरी हटजायेंगे, मैं
१० यह जानता हुं, की इसर मेरे साथ है॥ इसर
में मैं उसके बचन की सतुत करुंगा, हां मैं पर-
११ मेसर में उसके बचन की सतुत करुंगा॥ मैं
ने इसर पर भरोसा रखा है, जो कुछ मनुष्य
१२ मुंह से कर सकता है, मैं उस से न डरुंगा॥ हे
इसर तेरी मनौती मुझ पर है, मैं तेरी सतुत
१३ करुंगा॥ कयोंकी तु ने मेरे परान को मीरतु
से बचाया है, और कीया तु मेरे पांव को गीरने
से न संभालेगा? जीसतें मैं इसर के आगे जीवन
के उंजीयाले में फीरुं।

५७ सतावनवां गीत॥

दाउद का मीकताम अलतसकीत, जब वुह कंदरा
में साउल से भागा, परधान बजनीयेके पास॥

१ मुझ पर दया कर, हे इसर, मुझ पर दया कर,
कयांकी मेरा परान तेरा भरोसा करता है, हां
जब लों की संकट टल न जाय, मैं तेरे डैनों की
२ छाया में सरन लेउंगा। मैं अती महान इसर को

पुकारुंगा, अर्थात ईश्वर को, जो मेरा उपकार
३ करता है। वुह स्वर्ग से भेजेगा, और मुझे उनकी
निंदा से, जो मुझे निंगला चाहते हैं, बचावेगा,
सीलाह ईश्वर अपनी करुणा और अपनी सच्चाई
४ को भेजेगा॥ मेरा प्राण सिंहों में है, मैं उनके
मध में लेटा हूं, जो आग पर हैं, अर्थात मनुष्य के
पुत्रों में जीनके दांत बर्छियां, और बाण, और
५ जीनकी जीभ चोखी तलवार है॥ हे ईश्वर, तु
स्वर्गों से ऊंचे महान हो, और सारी भुम पर
६ तेरा ऐश्वर्य हो। उन्हों ने मेरे डग के लीये
जाल बीछाया है, मेरा प्राण झुका हुआ है, उन-
हों ने मेरे आगे गड़हा खोदा है, जीस में वे आप
७ गीरे हैं, सीलाह॥ मेरा मन सीध है, हे ईश्वर,
मेरा मन सीध है, मैं गाउंगा, मैं स्तुत करुंगा॥
८ हे मेरे बीभव जाग, हे बीना और सुरयंग जाग,
९ मैं तड़के उठुंगा॥ हे प्रभु, मैं लोगों के मध में
तेरी स्तुत करुंगा; मैं जातगनों के बीच तेरा
१० गान करुंगा॥ क्योंकी तेरी दया स्वर्ग लों और
११ तेरी सच्चाइ मेघ लों बड़ी है॥ हे ईश्वर, तु स्वर्गों
से ऊंचे महान हो, सारी पीरथीवी से ऊंचे तेरा
ऐश्वर्य हो॥

५८ अठावनवां गीत ॥

दाऊद का भीकताम अलतसकीत पनधान व़ज-
नीये के पास ॥

१ हे मंडली,तुम नीसचय धनम की व़ातें व़ोलती
हो, हे मनुष्य के पुतनों, कया तुम प्पना व़ीयान
२ कनते हो? हां तुम मन से दुसटता कनते हो,
तुम अपने हाथों के अंचेन को पीनथीवो पन तैालते
३ हो ॥ कोप्प से दुसट फरीन गये, वे उदन से झटक के
४ हूठ व़ोलते हैं ॥ उनका व़ीप्प सनप का साव़ीप्प है,
वे उस व़हीने नाग की नाइं हैं, जो अपने कान
५ मुंदता है ॥ औान मदानी का सव़द नहीं सुनता
६ यद्पी वुह अतयंत मोहन मंतन कने ॥ हे इसन,
उन के दांत उनके मुंह में तोड़, हे पनमेसन, जुव़ा
७ सींह की दाढें तोड़डाल ॥ उनहें नीत के
व़हते पानी की नाइं पीघला, जव़ वुह व़ान को
पनच में जोड़ता है, तो उनहें टुकड़ा टुकड़ा कन ।
८ वे घोंगे की नाइं गल जावें, वे इसतनी के गनभ
९ पात के समान सुनज को न देप्पें ॥ उस से आगे
की उनकी हांडी कांटों से गनम हो, वुह व़ैांडन
की नाइं उनहें जीते जी कनोध से उड़ा देगा ॥
१० पनतीफल को देप्पते ही धनमी आनंदीत होगा,
११ वुह दुसट के लोहू से अपने चनन घोवेगा ॥ ऐसा

की मनुष्य कहेगा, की नीसयय़ धनमी के लीय़े
पनतीफल है, नो:संदेह ऐक इसन है, जो पीन-
थीवी का नय़ाय़ कनता है॥

५९ उनसठवां गीत॥

जव़ साउल ने भेज के उसे घात कनने को घन की
चैाकसी की, दाउद का अलतीसयीत मीकताम
पनधान व़जनीय़े के पास।

१ हे मेने इसन, मेने व़ैनीय़ों से मुझे छुड़ा, जो
२ मेने व़ीनोघ में उठे हैं, उनसे मुझे उभाड़॥ मुझे
कुकनमीय़ों से छुड़ा, अैान हतय़ानों से नछय़ा
३ कन॥ कय़ोंकी देष्प, वे मेने पनान के घात में
लगे हैं, पनाकनमी मेने व़ीनोघ में ऐकठे ऊऐ हैं,
हे पनमेसन, मेने कुछ पाप, अैान अपनाघ के लीय़े
४ नहीं॥ वे नीनदोष्प पन दौड़के आप को लैस
कनते हैं, मेनो सहाय़ के लीय़े जाग, अैान देष्प।
५ सो हे पनमेसन, सेनाअों के इसन, इसनाइल के
इसन, उठके सानें अनदेसीय़ों को पलटा दे, कीसी
दुसट अपनाघीय़ों पन दय़ा मत कन, सीलाह।
६ वे सांझ को फीन आते हैं, वे कुते की नाइं भुंकते
हैं, अैान नगन की चानों अोन फीनते हैं॥
७ देष्प, वे अपने मुंह से डकानते हैं, अैान उनके

होंठों में तलवारें हैं, कय़ोंकी कौन सुनता है॥
८ पर तु हे परमेसर, उन पर हंसेगा, तु सारे अन-
९ देसीय़ों को ठठों में उड़ावेगा। उसके व्रल के
कारन मैं तेरी व्राट जोहुंगा, कय़ोंकी इसर मेरा
१० उंचा सथान है॥ मेरी दय़ा का इसर मेरे आगे
होगा, इसर मुझे मेरे व्रैरीय़ों पर अपनी इछा
११ दीप्पावेगा। हे परभु हमारी ढाल उनहें घात
मत कर, न हो की मेरे लोग भुल जाय़ें, उनहें
अपने पराकरम से छींन भींन कर, और गीरा
१२ दे॥ उनके मुंह के पाप और होंठों की व्रात के
लीय़े, और हुठ और सराप कहने के लीय़े, उनहें
१३ उनके अहंकार में पकड़वा। करोघ से उनहें
नास कर, जीसतें न रहें; और उनहं जना, की
इसर य़ाकव्र में पीरथीवी के अंत लों राज करता
१४ है, सीलाह। और सांझ को उनहें फीरा, और
उनहें कुते की नाइं हुका, और नगर की चारों
१५ ओर फीरा॥ उनहें घाने के लीय़े भरमा,
और जो तीरीपत न होवें, तो उनहें चीलवा।
१६ परंतु मैं तो तेरे पराकरम का गान करुंगा, हां,
मैं व्रीहान को पुकार पुकार तेरी दय़ा के गीत
गाउंगा, कय़ोंकी मेरी व्रीपत के दीन तु मेरा व्रचाव
१७ और सरन है। हे मेरे व्रल, मैं तेरी सतुत करुं-

गा, कयेोंकी इसन मेना व्रयाव, श्रोन मेना दया
का इसन है ।

६० साठवां गीत ॥

दाब्द का मीकताम सुसानोदुत पन, पनघान व्रज-
नीये के पास उपदेस कनने के लीये, जव दुह
आनामनहनाइम से, श्रोन आनाम सोवा से
हगड़ा; जव जोआव ने लैाट के लोन की तनाइ
में व्रानह सहसन अदुमीयें को माना ॥

१ हे इसन, तु ने हमें तयागा है, तु ने हमें युन
कीया, तु उदास ऊआ है, हाय हमानी श्रोन लैाट ॥
२ तु ने पीनथीवी को कंपाया है, तु ने उसे तोड़ा है,
उसके दनानों को सुघान कयोंकी वुह हीलती है ॥
३ तु ने अपने लोगों को कठोनता दीप्पाइ है, तु ने
४ हमें आसयनज की मदीना पीलाइ है ॥ तु ने
अपने डनवैयों को प्रेक घजा दा है, की वुह सत
५ के लीये फैलाइ जाय, सीलाह ॥ जीसतें तेना
पीनीय व्रय जावे, तु अपने दहीने हाथ से व्रया ले,
६ श्रोन मेनो सुन। इसन ने अपने पवीतनता में
कहा है, की मैं आनंदीत होउंगा, मैं सप्पीम को
वीभाग कनुंगा, श्रोन सकुत की तनाइ को ना-
पुंगा। जलश्राद मेना है, श्रोन मनसा मेना,

अफरइम मेरे सीर का बल है, यहूदा मेरा
८ ब्यवस्थादायक है॥ मोआब मेरे धोने का पात्र
है, मैं अदुम पर जुता चलाउंगा, फलस्तीया तु
९ मुझ पर जय जय कर। दीरढ़ नगर में मुझे
कौन ले जायगा? अदुम लों मुझे कौन पहुंचावेगा?
१० हे ईश्वर, तु ने जो हमें तयागा, कया तु यह न
करेगा? हे ईश्वर, कया तु हमारी सेनाओं के
११ संग न चलेगा?। दुष्ट में हमारी सहाय कर,
१२ कयोंकी मनुष्य का बचाव बीरथा है। ईश्वर के
दुवारा से हम सुरता करेंगे, कयोंकी यही हमारे
बैरीयों को लताड़ेगा।

६१ एकसठवां गीत॥

परधान बजनीये के पास नगीनः दाउद का गीत।

१ हे ईश्वर, मेरा चीलाना सुन, और मेरी परार-
२ थना पर सुरत लगा॥ जब मेरा मन दबा ऊआ
है, तो मैं पीरथीवी के अंत से तुही को पुकारुंगा,
तु मुझे उस पहाड़ ताईं पहुंचा, जो मुझ से उंचा
३ है। कयोंकी तु मेरे लीये एक आड़ ऊआ है,
४ और बैरी से एक दीरढ़ गढ़। मैं तेरे तंबु में
सदा रहा करुंगा, मैं तेरे पंख के आड़ में सरन

५ लेउंगा, सीलाह। हे ईसन, तु ने मेनी मनौतीओं
को सुना है, तु ने अपने नाम के डनवैयाेां का अ-
६ धीकान मुझे दीया है। तु नाजा के दीनों में
दीन व्रढावेगा, औान उसके व्रनसों में पीढ़ी से
७ पीढ़ी की नाइं। वुह ईसन के आगे सदा व्रना
नहेगा, तु अपनी दया औान सत से उसकी नछ्ा
८ कन। सो मैं सदा तेने नाम की सतुत कनुंगा,
जीसतें पनतोदीन अपनी मनौती पुनी कनुं।

६२ व्रासठवां गीत॥

पनधान व्रजनीये यदुथुन को दाउद का गीत।

१ मेना पनान केवल ईसन की व्राट जाेहता है, मेनी
२ मुकत उस से है। वही अकेला मेना यटान औान
मेनी मुकत है, औान मेना उंया सथान, मैं टलाया
३ न जाउंगा। तुम कव्र लों ऐक मनुष्य के व्रीनोध
में व्रुनी यींता कनोगे, तुम सव्र के सव्र माने जा-
ओगे, औान झुकी ऊई भीत, औान डगमाते व्राड़े
४ की नाईं होओगे। वे केवल उसके महातव से
नीये गीनाने का पनामनस कनते हैं, वे झुठ से
आनंदीत होते हैं, वे अपने मुंह से आसीस देते
५ हैं, पनंतु मन से सनाप, सीलाह। हे मेने पनान

तु केवल ईस्वर की वाट जोह, कयोंकी मेरी आसा
६ उसी से है। वही अकेला मेरा चटान,और मेरी
मुकत, और मेरा बचाव है, सो मैं टलाया न
७ जाउंगा। मेरी मुकत और मेरा वीभव ईस्वर में
है, मेरे बल का चटान, और मेरा सरन ईस्वर
८ है। सदा उसपर भरोसा रक्खो ; हे लोगो अपने
अंतःकरन उसके आगे उंडेलो, कयोंकी ईस्वर
९ हमारे लीये सरन है, सीलाह। नीसचय तुछ
लोग बीरथा, और महान मनुष्य झुठे हैं, तुला में
१० चढ़ने से वे बासती से भी छोटे हैं। अंधेर पर
भरोसा न करो, और बटमारी से न फुलो ; जो
११ धन बढ़े, तो उसपर मन न लगाओ। ईस्वर ने एक
बार कहा, मैं ने दो बार यह सुना है, की परा-
१२ करम ईस्वर का है। और दया भी तुही से है,
हे ईस्वर, कयोंकी तु हर मनुष्य को उसके कारज के
समान पलटा देता है।

६३ तीनसठवां गीत।

दाउद का गीत जब वुह यहुदा के बन में था।

१ हे ईस्वर तु मेरा ईस्वर है, मैं तड़के तुझे ढुंढुं
गा, मेरा परान तेरे लीये पयासा है, और मेरा

शरीर थके और बीन जल के देस में तेरे लीये
२ लालसा करता है। जीसतें तेरे पराक्रम, और
तेरे वीभव को देखे, जैसा की मैं ने तुझे धरम
३ धाम में देखा है। इस लीये की तेरा कोमल
प्रेम जीवन से भला है, मेरे होंट तेरी सतुत
४ करेंगे। अपने जीवन भर तेरी सतुत करूंगा,
५ और तेरा नाम ले ले अपने हाथ उठाउंगा। मेरा
प्रान ऐसा तीरीपत होगा, जैसा चीकनाइ पर
चीकनाइ से, और मेरा मुंह आनंदीत होंठों से
६ तेरी सतुत करेगा। जब की मैं तुझे अपने बीछौने
पर समरन करता हूं, और रात के पहर पहर
७ में धयान करता हूं। कयोंकी तु मेरा सहायक
हुआ है, इसी लीये तेरे पंखों की छाया तले मैं
८ आनंद करुंगा। मेरा प्रान तेरे पीछे धाया
जाता है, तेरा दहीना हाथ, मुझे संभालता है।
९ परंतु जो मेरे प्रान को नास करने के गांहक है,
पीरथीवी के नीचे के सथानों में जाते रहेंगे।
१० तलवार से उनहें भगा, वे लोमड़ीयों के लीये एक
११ भाग होवेंगे। परंतु राजा इसर से आनंदीत
होगा, हर एक मनुष्य, जो उसकी कीरया खाता
है, बड़ाइ करेगा, परंतु झुठों का मुंह बंद कीया
जायगा।

६४ चौंसठवां गीत।

परधान बजनीये के पास दाउद का गीत।

१ हे ईसर, मेरी परारथना का सबद सुन, और
२ बैरी के डर से मेरा परान बचा। दुसटों के
गुपत मंतर और कुकरमीयों के झलर से मुझे
३ छीपा॥ जो अपनी जीभ को तलवार की नाईं
चोखी करते हैं, और कड़वी बातों के बान
४ चलाते हैं। जीसतें छीप के सीध को मारें, वे
५ अचानक उसे मारते हैं, और नहीं डरते। वे
बुरी बोली से आप को उभाड़ते हैं, वे गुपत फंदा
छीपाने का परामरस करते हैं, और कहते हैं,
६ की हमें कौन देखेगा?। वे अधरम को खोज
के नीकालते हैं, वे खोज से खोज करते हैं, उन में
से हर एक का मन और अंतर गहीरा है॥
७ परंतु ईसर उन पर बान चलावेगा, वे अचानक
८ घायल हो जायेंगे। सो वे अपनी जीभ अपने ही
९ पर लावेंगे, उनके देखवैये भागेंगे॥ और सारे
मनुष्य डरेंगे, और ईसर के कारज को बरनन
करेंगे, कयोंकी वे उसके कारजों को बुध से सम-
१० झेंगे। धरमी जन परमेसर में आनंदीत होंगे,
और उस पर भरोसा करेंगे, और सारे खरे अंतः-
करन सतुत करेंगे॥

६५ पैंसठवां गीत।

पनधान व्रजनीये के पास दाउद का गान और
गीत।

१ हे इसन, सैहून में तेने लीये सतुत ठहनती है,
२ और तेने लीये मनौती पुनी की जायगीं। हे
पनानथना के सनोता, तुह पास साने सनीन आ-
३ वेंगे। अघनम की व्रातें मुह पन पनव्रल होती
हैं, हमाने अपनाधों को तुहीं पावन कनेगा।
४ जीसे तु भावता है, और अपने पास पहुंयवाता
है, जीसतें वुह तेने आंगनों में नहे, सो धंन है,
हम तेने घन अनथात तुने पवीतन मंदीन के कुसल
५ से तीनीपत होंगे। भयंकन व्रसतुन से तु धनम
में से उतन देगा, हे हमाने मुकत दाता इसन,
पीनथीवी के साने सीवानों का, और उनका भी,
६ जो दुन समुंदन के मध में हैं, भनोसा है॥ जो
पनाकनम से कट व्रांध के अपने सामनथ से
७ पहाड़ों को दीनढ़ कनता है। जो समुंदनों के
झलन को, और उनकी लहनों के होना को, और
८ लोगों की धुम को सथीन कनता है। वे भी, जो
पीनथीवी के ष्पुंटों में व्रसते हैं, तेने यीनहों से
डनते हैं; तु सांह्र भीहान के नीकासों को आनंद
९ और पनसंन कनता है। तु सीय के पीनथीवी से

भेंट करता है, तु उसे ईस्वर की नदी से, जो जल
से परीपुरन है, अती धनी करता है, जब तु ने
उसके लोये यों सीध कीया है; तु उनके लीये
१० अंन उतपंन करता है। तु उसकी रीघारीयों
को बुहताई से सींचता है, तु उसके ढेलों को
भींगाता है, तु मेंहों से उसे गलाता है, तु उसके
११ कोंपलाने पर आसीस देता है। तु अपनी भलाई
से बरस को मुकुट पहीनाता है, और तेरे पथों से
१२ चीकनाई टपकती है। वे बन की चराई पर
टपकती हैं, छोटी पहाड़ीयां चारों ओर आनंद
१३ से गथी हैं। चराई ने झुंड़ों का पहीरावा पहीना
है, और तराई भी अंन से ढपी हैं, वे आनंद से
उछलती कुदती हैं, और चहचाहती हैं।

६६ छयासठवां गीत।

पररचान बजनीये के पास दाउद का गान और
गीत।

१ हे सारी पीरथीवी, आनंद से यीशा के ईस्वर
२ का नाम ले। पुकार के उसके नाम को परतीसठा
३ गाओ, और उसके बीभव की सतुत करो। ईस्वर
से कहो, की तेरे कारज कैसाही भयंकर हैं, तेरे
पराकरम की बुहताई से तेरे सारे बैरी तुझ से

४ दवेंगे। सानी पीनथीवी तुझे दंडवत कनेगी, श्रौन
तेना गान कनेगी, वे तेनें नाम का गान कनेंगी,
५ सीलाह। श्राश्रो, इसन के कानज को देष्पो,
की मनुष्य के पुतन के व्रीष्पय़ में उसके कानज
६ मय़ंकन हैं। उसने समुंदन को सुष्पा दीय़ा, वे
व्राढ़ में से पांव पांव यले गय़े, वहां हम उस में
७ श्रानंदीत ऊऐ। वह श्रपने पनाकनम से सदा नाज
कनता है, उसकी श्राष्पें देसोय़ों को देष्पती हैं,
८ जीसतें दंगइत श्रपने को न उभड़े, सीलाह। हे
मनुष्पो, हमाने इसन का धंनव्राद कनो, श्रौन उस
९ को सतुत का सवद सुनाश्रो। जो हमाने पनान
को जीता नष्पता है, श्रौन हमाने पांव को टलने
१० नहीं देता। हे इसन, तु ने हमें पनष्पा है, तु ने
हम को य़ों जांया है, जैसी यांदी जांयी जाती
११ है। तु हमें जाल में लाय़ा है, तु ने हमानी कट
१२ पन दुष्प नष्पा है। तु ने मनुष्पों को हमाने सीनों
पन यढाय़ा है, हम श्राग श्रौन पानी में से यले
१३ गय़े,पन तु ने हमें सींये ऊऐ में पऊंयाय़ा है। मैं
होम की भेंट लेके तेने मंदीन में जाउंगा, मैं तेने
१४ लीय़े श्रपनी मनौती पुनी कनुंगा। व्रीपत के समय़
में जो मैं ने श्रपने होंठों से नीकाला है,श्रौन श्रप-
१५ ने मुंह से माना है। मैं पुसट पुष के हो म की व्रल

मेढ़ों के सुगंध समेत तेरे लीये यढ़ाउंगा, मैं व्रक्कड़े
१६ और व्रकने यढ़ाउंगा,सीलाह। हे लोगो,जो इसन
से डनते हो,तुम सव्र आओ, सुनों, और मैं व्रननं
कनुंगा, की उसने मेने पनान से कया कया कुछ
१७ कीया। मैं अपने मुंह से उस पास यीलाया, वुह
१८ मेनी जीभ से व्रढ़ाया गया। जो मैं अपने अंतः
कनन में अधनम ठानुंगा, तो पनमेसन न सुनेगा।
१९ पन इसन ने तो नीसयय सुना,वुह मेनी पनानथना
२० के सव्रद की ओन हुका है। धंन है इसन, जीसने
मेनी पनानथना को ओन अपनी दया को मुह से
दुन न कीया।

६७ सतसठवां गीत।

पनधान व्रजनीये के पास नगीनुत पन गान अथवा
गीत॥

१ इसन हम पन दयाल होवे, और हमें आसीस
देवे, और अपने नुप को हम पन यमकावे, सी-
२ लाह॥ जीसतें तेना मानग पीनथीवी में, और
३ तेना तनान साने जातगनों में जाना जाय॥ लोग
तेनी सतुत कने, हे इसन, साने लोग तेनी सतुत
४ कनें॥ जातगन आनंदीत होवें, और आनंद के
मानें गावें, कयोंकी तु धनम से लोगों का व्रीयान

करेगा, और पीरथीवी के जातगनें की अगुआइ
५ करेगा, सीलाह॥ हे इसर, लोग तेरी सतुत
६ करें, सारे लोग तेरी सतुत करें॥ तव पीरथीवी
अपनी वृढ़ती देगी इसर हाँ हमारा इसर हमें
७ आसीस देगा॥ इसर हमें आसीस देगा; और
पीरथीवी के सारे छुंट उसे डरेंगे।

६८ अठसठवां गीत॥

परधान वृजनीए के पास दाऊद का गान, अथवा
गीत॥

१ इसर उठे, उसके वैरी छींन भींन होवें, जो उसे
घीनाते हैं, सो उसके मुंह के आगे से भागें॥
२ जैसे धुंआं हांका जाता है, तैसा उनहें हांक दे;
जैसे मोम आग के आगे पीघलता है, तैसा दुसट
३ इसर के आगे नास होवें॥ परंतु धरमी आनंदीत
होवें,और इसर के सनमुख आनंद करें,हां,आनंद
४ के मारे फुले न समावें॥ इसर का गान करो
उसके नाम की सतुत गाओ, जो सरगों पर चढ़ा
है, उसका जाह नाम ले ले उसकी महीमा करो;
५ और उसके आगे आनंद करो॥ अनाथों
का पीता, और रांड़ों का वीयारी अपने धरम
६ धाम में इसर है॥ इसर अकेले को गीरहसत

बनाता है, जो सीकरों से बंधे हुओं को वही छु-
ड़ाता है, परंतु दंगइत हुराहट में रहते हैं॥
७ हे इसर, जब तु अपने लोगों के आगे आगे
८ नीकला जब तु बन में से गया, सीलाह। पीर-
थीवी थरथराइ, और सरग भी इसर के आगे
टपके, सीना भी इसर के आगे, जो इसराइल का
९ इसर है टला॥ हे इसर, तु ने बहुताइ से बरसा
के अपने थके अधीकार को सथीर कीया।
१० तेरी मंडली उस में रही है, हे इसर, तु ने अपने
अनुग्रह में से कंगालों के लीये सोच कीया है।
११ परमेसर ने अगया दी, और परचारक की सेना
१२ बढ़ गइ॥ सेनाओं के राजा भाग भाग गये,
१३ और जो घर में रही, वुह लुट बांट लीया। यदपी
तुम हांडीओं के मध में पड़े हो, तथापी तुम चांदी
से कपोत के डैने और चोप्पें सोने से मढ़े हुए उस
१४ के पर की नाइं होओगे॥ जब सरबसामरथी ने
राजाओं को उसके लीये छींन भींन कीया, वुह
१५ सलमुन के पाले की नाइं सेत थी। इसर का पहाड़
बासान के पहाड़ सा है, बासान के पहाड़ की नाइं
१६ एक उंचा पहाड़ है। हे उंचे पहाड़ो तुम कयों
कुदका मारते हो? इसर इस पहाड़ पर रहने
चाहता है, हां, परमेसर उस में सरबदा रहेगा॥

१७ इसन के नथ वीस सहसन हैं, हां, सहसनों पन
सहसन दुत हैं, पनभु जैसा घनमचाम सोना में है,
१८ नैसा उनमें है। तु उंये पन यढ़ा है, तु वंघुआइ
को वंघुआ में ले गया है, तु ने मनुष्पों को हां,
दंगैतों के चीये भी दान पनापन कीया है, जीस तें
१९ इसन पनमेसन उनमें वसे। चंन पनभु, जो पनती-
दीन हम पन अनुगीनह का वोह घनता है, वही
२० हमाना सुकतदाता इसन है, सीलाह॥ हमाना
इसन सुकत का इसन है, औान मीनतु से नीकास
२१ पनभु इसन ही से है। पनंतु इसन अपने वैनीयों
के सीन, औान उन मनुष्पों की प्पोपड़ी के वालों
को, जो अव भी अपनाच कनता जाता है, युन
२२ कन देगा॥ पनभु ने कहा, की मैं वासान से अपने
लोगों को फेन लाउंगा, हां, मैं समुदन के गही-
२३ नाओं में से फेन लाउंगा॥ जीसतें तेना पांव
औान तेने कुतों की जीभ तेने वैनीयों के लोऊ से
२४ लाल होवें॥ हे इसन, उनहों ने तेनी यालें देप्पीं,
मेने इसन, मेने नाजा की यालें घनमचाम में
२५ देप्पीं॥ गायक आगे आगे यले, वजनीये पीछे
पीछे, औान कुआंनीयां उन में मीनदंग वजातीं
२६ जाती थीं। मंडलीयों में इसन को, औान तुम,
जो इसनाइल के सोते में से हो, पनभु को घंभ

२७ करो॥ छोटा व्रनीय़ामीन उनका अगय़ाकारी,
और य़हुदा के अधक्क अपने संगी सहीत, और
२८ जव़लुन और नफ़तालो के अधक्क वहां हैं॥ तेरे
इसर ने तेरे व्रल को अगय़ा की है, हे इसर, जो
कारज तु ने हमारे लीय़े कीय़ा है, उसे दीरढ़
२९ कर॥ य़रोसलीम के मंदीर के लीय़े राजा तेरे
३० लीय़े भेंट लावेंगे। तु नरकट के व्रन पसु को,
अरथात जातगनों के व्रछड़ों की परव्रल मंडली
को, जो यांदी के टुकड़ों को लीय़े हुए उछलती
कुदती है,दपट; जो लोग संगराम से पीरीत रप्पते
३१ हैं, उनहें छींन भींन कर। अधक्क मीसर से
आवेंगे, कोस हाली अपने हाथ इसर की ओर
३२ व्रढ़ावेंगे॥ हे पीरथीवी के राजो इसर का
गान करो, और परभु की सतुत गाओ, सीलाह।
३३ जो पहीले से सरगों के सरग पर यढ़ा है, देप्प,
वह अपना सव्रद,अपना महा सव्रद उयारता है।
३४ तुम इसर का पराकरम मानो, उसका महातम
इसराइल पर है,और उसका व्रल अकासों में है॥
३५ हे इसर, तु अपने परमधाम में भय़ंकर है,
इसराइल का इसर वुह है, जो व्रल और सामरथ
अपने लोगों को देता है, इसर धंन है।

६९ उनहत्तरवां गीत।

परधान बजनीयों को सुसनीम पर दाउद का गीत।

१ हे ईस्वर, तु मुझे बचाले, कयोंकी पानी मेरे
२ पराण लों पहुंचे हैं॥ मैं गहीरे दलदल में धसा
जाता हूं, जहां खड़ा नहीं रहा जाता, मैं पानीयों
के गहीराव में पड़ा, जहां बाढ़ मेरे उपर से जाते
३ हैं। मैं चीलाते चीलाते थक गया, मेरा गला
सुख गया, अपने ईस्वर की बाट जोहते जोहते
४ मेरी आंखें घट गई। जो अकारन मुझ से बैर
रखते हैं, सो मेरे सीर के बालों से अधीक हैं,
जो मुझे नास कीया चाहते हैं, और अकारथ
मेरे बैरी हैं, सो बली हैं; जो मैं ने नहीं लीया,
५ सो मैं ने फेर दीया। हे ईस्वर, तु मेरी मुरखता
को जानता है, और मेरी अपराधता तुझ से छीपी
६ नहीं। हे परभु सेनाओं के ईस्वर, जो तेरी बाट
जोहते हैं, मेरे कारन उनहें लजीत न होने दे,
हे इसराइल के ईस्वर, तेरे खोजी मेरे कारन हदी-
७ याने न पावें। कयोंकी तेरे लीये मैं ने नींदा
८ सही, और लाज ने मेरे मुंह को ढांपा॥ मैं अपने
भाइयों में परदेसी बना हूं, और अपनी माता
९ के बालकों में पराया हुआ हूं॥ कयोंकी तेरे

पन के जलन ने मुझे ष्पा लीया, श्रीर तेरे नींद कों
१० की नींनदा मुझ पन पडी॥ उपवास कनके मेने
११ पनान का नाना मेनी नींनदा का कानन ऊश्रा।
मैं ने टाट के अपना वसतन वनाया, श्रीन मैं
१२ उनका कहावत ऊश्रा। फराटक पन के वैठवैये
मेने वीनुध कहते हैं, श्रीन मैं पोश्रकड़ का गान
१३ ऊश्रा। पनंतु हे पनमेसन, मैं जो ऊं, मेनी पनान-
थना तेने श्रागे सुसमय में है; हे इसन, अपनी
दया की वऊताइ से अपनी मुकत की सतता से
१४ मेनी सुन ले॥ मुझे दल दल से नीकाल, श्रीन
मुझे फंसने न दे, मेने वैनीयों से श्रीन गहीने पानी-
१५ यों में से मुझे छुडा॥ पानी की वाढ मुझ पन
वढने न पावे, श्रीन गहीनाव मुझे नींगलने न पावे,
१६ गडहा मुझे अपने मुंह में वंद कनने न पावे। हे
पनमेसन, मेनी सुन ले, कयोंकी तेना कोमल पनेम
भला है, अपनी कोमल दया की वऊताइ के
१७ समान मेनी श्रीन दीनीसट कन। अपने सेवक से
अपना मुंह न छीपा, कयोंकी मैं वीपत में ऊं,
१८ मेनी सुनने को यटक कन। मेने पनान के पास
वढ़ के उसे वया, मेने वैनी के कानन मुझे वया॥
१९ तु ने मेनी नींनदा, श्रीन मेनी लजा, श्रीन मेने
अनादन को जाना है, मेने साने वैनी तेने श्रागे

२० हैं। नींदा ने मेरा मन तोड़ा है, मैं उदासी से
भरा हुं, मैं ने अपने संगी वीलापी की वाट जोही,
परंतु कोइ न था, और सांतदायकों के खोये, और
२१ न पाया। उनहों ने मुझे प्याले की संतो पीत
दीया, और पीयास में उनहों ने मुझे पीने को
२२ सीरका दीया। ऐसा कर, की उनका मंच उन-
के खीये फंदा हो, और उनकी भलाइ उनके
२३ लीये जाल होवे। उनकी आंखें अंधीयारी होवें,
जीसतें वे न देखें, और उनकी कट को नीत कंपा।
२४ अपनी जलजलाहट उन पर उंडेल, और तेरा
२५ कोपागीन उन पर पड़े। उनका भवन उजड़
जाय, और उनके तंबुओं में बसवैया न होवे।
२६ कयोंकी वे तेरे मारे हुए को सताते हैं, और तेरे
घायल कीये हुओं के सोक की बातें करते हैं।
२७ उनके अधरम पर अधरम मीला; उनहें अपने
२८ धरम में आने मत दे। उनहें जीवतों की वही से
मीटा, और धरमीयों में लीखे जाने न पावें॥
२९ कयोंकी मैं कंगाल और दुखी हुं, हे इसर, तेरी
३० मुकत मुझे उभाड़े। मैं गीत में इसर के नाम की
सतुत करुंगा, और धनवाद से उसकी महीमा
३१ करुंगा॥ परमेसर को बैल, और बछड़े से, जो सींग
और खुर रखते हैं, यह अधीक परसंन होगा।

३२ दीन लोग देख के आनंदीत होंगे, और तुम,जो
३३ इसन के खोजी हो, तुमहाना मन जीयेगा। कयों
की पनमेसन कंगालों की सुनता है, और अपने
३४ वंधुओं की नींनदा नहीं कनता। आकास, और
पीनथीवी, और समुंदन, और हनएक वसतु, जो
३५ उन में नेंगती हैं, उसको सतुत कनें॥ कयोंकी
इसन सैहुन को वयावेगा, और यहूदा के नगनों
को वनावेगा, जीसतें वे उनमें वसें, और अधीकान
३६ में नखें॥ उसके सेवकों के वंस भी उसके अधी-
कानी होंगे, और जो उसके नाम के पनेमी हैं, सो
उसमें नहा कनेंगे।

७० सतनवां गीत॥

येत कनने के लीये पनधान वजनीये के पास दाउद
का गीत।

१ हे इसन, मुझे छुड़ाने को यटक कन; हे पनमे-
२ सन, मेनी सहाय के लीये यटक कन। मेने पनान
के गांहक को लजीत कन, और हदीया, जो मेनी
वुनाइ याहते हैं, उनहें उलटा फीना दे, उनहें
३ हदीया॥ जो कहते हैं, अहा हा उनकी लाज
४ के पलटा के लीये उनहें उलटा फीना॥ जो
तेने खोजी हैं, वे सव तुझ से आनंदीत और मगन

होवें, ऐसा की जो तेरी मुकत के परेमी हैं, सो
सदा कहा करें, की ईसर की महीमा होवे॥
५ परंतु मैं कंगाल और दीन हुं, हे ईसर, हाली
मेरे पास आ, तुही मेरा सहायक और मेरा मुकत
दाता ; हे परमेसर,वीलंम न कर।

७१ एकहतरवां गीत।

१ हे परमेसर, मेरा भरोसा तुझ पर है, मुझे
२ हदीयाजाने न दे॥ अपने धरम में नीसतार
करके मुझे छुड़ा, मेरी ओर कान झुका, और मुझे
३ बचा। तु मेरे नीवास का परबत हो, जहां मैं
नीत जाया करुं ; तुहीं ने मेरी मुकत की अगया
की है, कयोंकी तु मेरा पहाड़ और मेरा गढ़ है।
४ हे मेरे ईसर, दुसट के हाथ से और अधरमी
५ और करुर के हाथ से मुझे छुड़ा॥ कयोंकी हे
परभु ईसर तु मेरी आसा, और लड़काई से मेरा
६ भरोसा है॥ कोख में से मैं तुझ से थमा हुआ
हुं, मेरी माता के उदर से तु ने मुझे नीकाला,
७ मैं नीत तेरी सतुत करुंगा॥ मैं बहुतों के
लीये एक अचंभा हुं, परंतु तु मेरा दीनढ़ सरन
८ है॥ मेरा मुंह अपनी सतुत और परतीसटा से
९ दीन भर भरा रहे। बुढ़ापे में मुझे दुर न कर,

मेरी तीरवलता के समय में मुझे मत तयाग।
१० कयोंकी मेरे वैरी मेरे वीरोध में कहते हैं, और
वे, जो मेरे पराण के घात में हैं, जुकत वांधते हैं।
११ और आपुस में कहते हैं, की ईसर ने उसे तयागा
है, सो उसे पकड़ के सताओ, कयोंकी उसका
१२ छुड़वैया कोइ नहीं। हे ईसर मुझ से दुर मत
१३ हो, हे मेरे ईसर झट मेरी सहाय कर। जो मेरे
पराण के वैरी हैं, से। हरीया के नसट होवें, जो
मेरी वुराइ याहते हैं, से। नींनदा और अनादर
१४ से ढांपे जावें। पर मैं नीत तेरा आसा रखुंगा,
१५ और तेरी सतुत कीये जाउंगा। मेरा मुंह दीन
भर तेरा धरम, और तेरी मुकत वरनन कीया
करेगा, कयोंकी मैं उनकी गींनती नहीं जानता।
१६ मैं ईसर परमेसर के पराकरम से यलुंगा, मैं
१७ केवल तेरेही धरम की यरया करुंगा। की हे
ईसर तु ने मुझे लड़काइ से सीखाया है, और
अव लों मैं तेरी आसयरज कीरया वरनन कीया
१८ करता ऊं। अव भी, वुढ़ापे और पके वाल लों;
हे ईसर, मुझे मत तयाग, जव लों की मैं तेरे वल
इस पीढ़ी पर, और तेरे पराकरम को हर ऐक
१९ अवैया पर परगट करुं। हे ईसर, तेरा धरम
अती उंया है, जीसने वड़े वड़े काम कीये; हे

२० इस्त्र, तेरे तुल कैान है ?। तु ने मुझे वड़ी वड़ी
वीपत दीखलाइ हैं, तु मुझे फेर जीलावेगा,
ग्रैार पीरथीवी के गहीरापों से मुझे फेर उठा-
२१ लेगा। तु मेरी महीमा वढ़ावेगा, ग्रैार मुझे
२२ चैादीसा से सांती देगा॥ हे मेरे इस्त्र, मैं भी
वीना वजा वजा के तेरी सतुत करुंगा, हे इस-
राइल के धरम मय, मैं सुरयंग से तेरा गान
२३ करुंगा। जव मैं तेरे ग्रागे गाउंगा, तव मेरे
होंठ ग्रैार मेरे परान, जीसे तु ने छुड़ाया, ग्रतयंत
२४ ग्रानंदीत होवेंगे॥ मेरी जीभ भी दीन भर
तेरे धरम के वीष्य में कहती रहेगी, कयोंकी
जो मेरी वुराइ याहते हैं, सो हदीया गये, ग्रैार
लजीत ज्ञए।

७२ वहत्तरवां गीत॥

सुलेमान के लीये।

१ हे इस्त्र, राजा को ग्रपना वीयान ग्रैार राज
२ पुतर को ग्रपना धरम दे। वुह तेरे लोगों का
धरम, से ग्रैार तेरे कंगालों का नयाय से वीयान
३ करेगा। पहाड़ तेरे लोगों के लीये कुसल, ग्रैार
४ पहाड़ीयां धरम पहुंयावेंगी। वुह कंगाल लोगों
का नयाय करेगा, ग्रैार दीन के संतानों को वया-

वेगा, और अंधेरीओं को टुकड़ा टुकड़ा करेगा॥
५ जब लों सुरज और यंदरमा ठहरेंगे, पीढ़ीयां
६ तुझ से डरा करेंगी। मेंह की नाईं वुह काटी
ऊई घास पर झड़ी की नाईं, जो पीरथीवी को
७ सींयती है, उतरेगा। उसके दीनें में धरमी
लहलहावेंगे, और जब लों यांद रहे, बक्रत कुसल
८ होगा। समुंदर से समुंदर ताईं, और नदी से
९ पीरथीवी के अंत ताईं, वुह परभुता करेगा। जो
बरबासी हैं, से उसके आगे झुकेंगे, और उसके
१० बैरी माटी याटेंगे। तरसीस, और टापुओं के
राजा भेंट लावेंगे, और सीबा और सीबा के
११ राजा भेंट यढ़ावेंगे। हां,सारे राजा उसके आगे
दंडवत करेंगे, सारे देसगन उसकी सेवा करेंगे।
१२ कयोंकी वुह रोने में दीन को,और कंगाल को भी,
१३ और जीनका कोई सहायक नहीं बयावेगा। वुह
दरीदर, और दीन हीन लोगों को छोड़ेगा, और
१४ अनाथों का पराान बयावेगा। वुह उनके परान
को छल और अंधेर से छुड़ावेगा, उनका लहू
१५ उसकी दीसट में बक्रसुल होगा। वुह जीयेगा,
और सीबा का सोना उसे दीया जायगा, सदा
उसकी परारथना होगी, परतो दीन उसकी सतुत
१६ की जायगी। उस समय एक मुठी भर अनाज

भुम में, अथवा पहाड़ें की चोटीयों पर गीरेंगे,
उनके फल लबनान की नाईं हरहरावेंगे, और
नगर के मनुष्य पीरथीवी के घास की नाईं लह·
१७ लहावेंगे। उसका नाम सदा रहेगा, वुह अपने
पीता का नाम चलाने के लीये पुतर की नाईं
होगा, और मनुष्य उस में आसीस पावेंगे, सारे
१८ जातगन उसे धन कहेंगे। ईसर परमेसर ईस-
राईल का ईसर, जो अकेला आसचरज कारज
१९ करता है, धंन है॥ उसका वीभवमय नाम सदा
लों धन है, सारी पीरथीवी उसके प्रेसरय से
२० भर पुर होवे, आमीन और आमीन। यसी
के बेटे दाउद की परारथना समापत है।

७३ तीहत्तरवां गीत ॥

असाफ् के लीये॥

१ नीसचय ईसर ईसराईल के लीये पवीतर अंतः
२ करनें के लीये कया ही भला है। परंतु मैं जो
हों, मेरे पांव टल ही गये, और मेरे डग रपट ही
३ गये। कयोंकी जब मैं ने दुसटों की बढ़ती देखी,
४ मैं ने सुढ़ें पर डाह कीया। कयोंकी उनके मीरतु
में कुछ पीड़ा नहीं, परंतु उनका बल पुसट है।

५ वे औान मनुष्य की नाइं दुष्प में नहीं, औान न
६ मनुष्यों की नाइं उन पन व्रीपत पड़ती। इस लीये
घमंड उनहें सीकन की नाइं घेनता है, औान अं-
७ धेन उनहे व्रसतन की नाइं छीपाता है॥ उनकी
आंष्पें भी यीकनाइ से उभनी ऊइ हैं, औान वे
८ अपनी यींता से अधीक पाते हैं॥ वे सड़े हैं,
औान दुसटाइ से अंधेन की व्रातें कहते हैं, वे घ-
९ मंड से व्रोलते हैं। वे अपने मुंह सनगों के व्रीनुघ
नष्पते हैं, औान उनकी जीभ पीनथोवी के सनव्र-
१० तन फीनती है। इस कानन उसके लाग इघन
फीन आते हैं, औान भनपुन जल उनहें नीयोड़े
११ जाते हैं। वे कहते हैं, की इसन कयोंकन जानता
है? औान कया अती महान में कुछ गयान है?
१२ देष्पो, ये अघनभी हैं, जो संसान में फलते हैं;
१३ उनका घन व्रढ़ता जाता है। नीसयय मैं ने
अपने मन को व्रीनथा सुघ कीया है, औान नीन-
१४ मलता में अपने हाथ धोये। कयोंकी दीन भन
मैं दुष्पी ऊआ ऊं, औान हन व्रीहान को मैं ताड़ा
१५ जाता था। जो मैं कऊं, की यों व्रननं कनुंगा, तो
देष्प, मैं तेने व्रालकों की पीढ़ी को उदास कनता।
१६ जव्र मैं ने इसका भेद जानने याहा, वुह मेने लोये
१७ अती कसट ऊआ॥ पन जव्र मैं ने इसन के घनम

घाम में पनवेस कीय़ा, तव़ मैं ने उनका अंत समह्रा।
१८ नीसयय़ तु ने उनहें फीसलने के सथानों में नप्पा,
१९ अेान तु उनहें नास में डालता है। वे पल मातन
में कय़ाही उजड़ गय़े, अेान वे भय़ से सनव़था
२० मीट गय़े हैं। सपन की नाइं जव़ कोइ जाग उठे;
सो हे पनभु, जव़ तु जागेगा, तु उनकी मुनत की
२१ नीनदा कनेगा। य़ों मेना मन व़य़ाकुल, अेान
२२ मेना अंतःकनन पोडीत था। मैं ऐसा मुनप्प अेान
२३ अगय़ान था, अेान तेने आगे पसु था। तथापी मैं
सनव़दा तेने ही संग ह्रं, अेान तु ने मेने दहीने
२४ हाथ को घना है। तु अपने मंतन से मेनी अगु-
आइ कनेगा, अेान उसके पीछे मुह्रे व़ीभव में
२५ पहंयावेगा! सनग में मेना कोन है? अेान
पीनथीवी में तेने तुल मेना व़ांछीत कोन है? मेना
२६ सनीन, अेान मेना मन घटा जाता है, पन इसन
मेने मन का व़ल है, अेान सदा मेना भानग है।
कय़ोंकी देप्पो, जो तुह्र से दुन हैं, सो नसट होंगे,
जो तुह्र से व़ैभीयान की अेान फीन गय़े हैं, तु
२८ ने उन सभों को नसट कीय़ा है। पनंतु इसन के
पास व़ढ़ने को मेने लीय़े भला है, मैं ने इसन
पनमेसन पन भनोसा नप्पा है, जीसतें मैं तेने सानें
कानजों को व़वनं कनों।

७४ चौहत्तरवां गीत।

उपदेस देने को असाफ़ का गीत।

१ हे इसर, तु ने सर्वदा के लीये हमें कयों
त्यागा है? तेरी चराइ की भेड़ों पर तेरी रीस
२ कयों भड़कती है?। अपनी उस मंडली को
जीसे तु ने आगे से मोल लीया है, और अपने
अधीकार की गोसटी को जीसे तु ने छुड़ाया है,
इस सैहुन पहाड़ को जीस में तु रहा है, समरन
३ कर। नीत के उजाड़ों के लीये अपना लात
उठा, सारे बैरीयों ने धरम धाम में कया कया
४ दुसटता की है। तेरी मंडली के मद्ध में तेरे
बैरी गरजते हैं, वे चीनह के लीये अपना झंडा
५ खड़ा करते हैं। घने पेड़ों पर कुलहाड़ी उठाने
६ के समान मनुष्य का गरमान था। पर अब वे
उसके खोदे हुए कारज को एक साथ कुलहाड़ी
७ और हथौड़ीयों से तोड़ते हैं। उनहों ने तेरे
धरमधाम में आग लगाइ है, उनहों ने तेरे नाम
के नीवास सथान को भूम लों असुध कीया है॥
८ उनहों ने अपने मन में कहा, की आओ, उनहें
एक साथ तोड़ देवें, उनहों ने देसों में से इसर
९ के सभा सथानों को जला दीया है॥ हम अपना

यीनह नहीं देष्पते हैं, कोइ अबीसवकता नहीं,
और हमारे मघ कोइ नहीं, जो जाने की यह
१० कब लों होगा? ॥ हे इसन, वैरी कब लों नींदा
करेगा? कया वैरी सदा तेरे नाम की अप-
११ नींदा करेगा? तु कयों अपना हाथ अर-
थात दहीना हाथ पींचता है? कांष्प से उसे
१२ नीकाल। कयोंकी इसन मेरा पराचीन राजा
है, जो पीरथीवी के मघ में मुकत के कारज
१३ करता है। तु ने अपने पराकरम से समुंदर
को फाड़ा, तु पानीयों में अजगरों के सीरों को
१४ कुचलता है। तु घरीयाल के सीर को टुकड़े
टुकड़े करता है, और उनहें बनबासीयों के
१५ भोजन के लीये दीया है। तु ने सोते को और बाढ़
को चीरा, तु ने परबल नदीयों को सुष्पा दीया।
१६ दीन तेरा और रात भी तेरी है, तु ने उंजयाला
१७ और सुरज को सीच कीया है। तु ने पीरथीवी
के सारे सीवानों को ठहराया है, और तुही ने
१८ गरमी और जाड़ा बनाया है॥ हे परमेसर उसे
समरन कर, की वैरी ने नींदा की है, और
मुढ़ लोगों ने तेरे नाम की अपनींदा की है॥
१९ अपनी पंडुकी का पराण दुसटों की मंडली के बस
म न कर, और अपनी दीन मंडली को कभी न

२० ध्रीसना। अपनी व्राया को येत कन, कय़ोंकी
पीनथीवी के अंधीय़ाने सथान कनुनता के नीवासों
२१ से पुनन हैं॥ हाय़ सताय़े ऊए को लजीत कनने
को मत लैाट, दुप्पी अैान दीन तेने नाम की सतुत
२२ कन॥ हे इसन, उठ, अैान अपने हो पद का
व्रीवाद कन, अैान समनन कन, की मुनप्प जन
२३ पनती दीन कैसी तेनी नींदा कनता है। अपने
व्रैनीय़ों के सवद को मत भुल, उनका कोलाहल,
जो तेने व्रैन में उभडते हैं, नीत व्रढता जाता है।

७५ पयहतनवां गीत।

असाफ़ का गीत, अथवा गान, अलतसयीत पन-
घान व्रजनीय़े के पास।

१ हे इसन, हम तेनी सतुत कनते हैं, हम तेनी
सतुत कनते हैं, कय़ोंकी तेने आसयनज कानज
२ तेने नाम के पास होने को पनगट कनते हैं। जव मैं
मंडली पन पनधान होउंगा, तो मैं प्पनाइ से व्री-
३ यान कनुंगा। पीनथीवी, अैान उसके साने
नीवासी मीट गय़े, मैं उस के प्पंभों को संभालता
४ ऊं, सीलाह। मैं ने मुनप्पों से कहा, की मुनप्पता
न कनो, अैान दुसटों को की सींग मत उभाड़ो।
५ अपना सींग उंया न कनो, अैान कठोन गले से

६ मत बोलो। क्योंकी बढ़ती न पुनब से न पछीम
७ से, और न दष्पीन से आती है। पनतु इसन नयाया
है, बुह प्रेक का उतानता है, और दुसने का उभाड़-
८ ता है। क्योंकी पनमेसन के हाथ में प्रेक कटोना
है, और मदीना लाल है, जो मीलावट से भना
है, और बुह उसी से उंडेलता है, पनंतु उसकी
तलछट का पीनथीवी के सानें दुसट नीचोड़ पीयेंगे।
९ पनंतु मैं सदा बननं कनंगा, और याकुब के इसन
१० की सतुत कनुंगा॥ मैं दुसटों के सानें सींग भी
काट डालुंगा, पनंतु घनमीयों के सींग बढ़ाये
जायेंगे।

७६ छहतनहवां गीत।

असाफ़ का गीत, अथवा गान, नगीनुत पन पनघान
बजनीये के पास।

१ इसन यहुदा में पनसीघ है, उसका नाम इस-
२ नाइल में महान है॥ सालीम में भी उसका तंबु
३ है; और सेहुन में उसका नीवास सथान। वहां
उसने घनुप्पो के बान, और ढाल, और तलवान,
४ और लड़ाइयां तोडी हैं। तु अहेन के पनबत
५ से अघीक बीभवमय और उतम है। हीयाइ
लुट गये, और अपनी नींद ले सीया हैं; और

व्रलवानों में से कीसी ने अपने हाथ नहो पाये हैं।
६ हे याकुव के इस्वर, तेरी दपट से रथ श्रोर घोड़े
७ व्रड़ी नींद में पड़ गये। तुही से डरा याहोये,
श्रोर जहां तु क्रोध ज्ञश्रा, ता कैान तेरे श्रागे
८ ठहर सके? तु ने स्वर्ग पर से व्रीयार सुनाया,
९ श्रोर पीरथीवी डर के मारे थम गई॥ जव इस्वर
नयाय के लीये उठा, की पीरथीवी के सारे कामलों
१० को व्रयावे, सीलाह। नीसयय मनुप्य का क्रोध
तेरी स्तुत करेगा, श्रोर तु उव्रने ज्ञए क्रोध को
११ रोक लेगा। परमेस्वर अपने इस्वर की मनैाती
मान के उसे पुरी करो, सव्र, जो उसके श्रास पास
१२ हैं, भेंट यढ़ावें। वुह अयक्षों के मन को का-
टेगा, वुह पीरथीवी के राजाश्रों के लीये भयंकर है।

७७ सतहतरवां गीत।

असाफ़ का गीत परधान व्रजनीये के पास यदुथुन को।

१ मैं इस्वर के श्रागे अपने स्व्रद से यीलाया, हां,
इस्वर के श्रागे स्व्रद से, सो उसने मेरी श्रोर कान
२ धरा। व्रीपत के दीन मैं ने इस्वर को ष्पोजा,
श्रोर मेरे हाथ रात को नीरंतर उठे रहे, श्रोर
३ मेरे प्रान ने सांत न मानी॥ मैं ने इस्वर को
समरन कीया, श्रोर व्रयाकुल ज्ञश्रा, मैं ने हाय

४ कीय़ा, और मेरा अंतःकरन दुखगय़ा, सीलाह॥ तु
मेरी आंखों को जागती रखता है, मैं ब्य़ाकुलता
५ के मारे बोल नहीं सकता। मैं ने अगीले दीनों
को और पराचीन बरसों के समय़ों को सोचा
६ है। मैं रात को अपना गान समरन करता हुं,
और अपने मनहीं मन बतीआता हुं, और मेरे
७ आतमा ने धय़ान से खोज कीय़ा। कय़ा परभु
मुझे सदा के लीय़े तय़ागेगा? और फीर मुझ
८ पर कीरपा न करेगा?॥ कय़ा उसकी दय़ा सदा
के लीय़े जाती रही, कय़ा उसकी बाचा पीढ़ी से
९ पीढ़ी लों घट गई? कय़ा अनुग्रह करने को
ईसर भुल गय़ा है? कय़ा उसने करोध से अपनी
१० कोमल दय़ा को बंद कीय़ा? मैं ने कहा, की
य़ह मेरी नीरबलता है, परंतु मैं अती महान
११ के दहीने हाथ के बरसों को चेत करुंगा॥ मैं
परमेसर के कारज को समरन करुंगा, नीसचय़
मैं तेरे पराचीन आसचरजों को समरन करुंगा।
१२ मैं तेरे सारे कारजों को भी सोचुंगा, और तेरे
१३ कारजों की चरचा करुंगा। हे ईसर, तेरा
मारग धरम धाम में है, हमारे ईसर के समान
१४ कौन ऐसा महेसर है। तु आसचरज करता
ईसर है, तु ने लोगों पर अपने बल को परगट

१५ कीया है ॥ तु ने अपने लोग याकुब और युसफ़
के संतानों को अपनी भुजा से छुड़ाया है, सीलाह।
१६ हे ईसर पानीयों ने तुझे देष्या, पानीयों ने तुझे
देष्या, वे डर गये, और गहीराव भी ब्याकुल
१७ हुऐ। मेघ जल सहीत उंडेले गये, और आकासों
१८ ने सब्द कीया, और तेरे बान उड़ नीकले। तेरे
गरजन का सब्द सरग में हुआ, बीजुलीयों ने
जगत को उंजीयारा कीया, पीरथीवी थरथरा के
१९ कांप गई। तेरा मारग समुंदर में है, और
तेरा पथ बड़े पानीयों में; तेरे पांव के चीनह
२० नहीं जाने गये। तु ने मुसा और हारुन के हाथ
से झुंड की नाई अपने लोगों की अगुवाई की।

७८ अठहतनवां गीत।

असाफ़ का मसकील

१ हे मेरे लोगो, मेरी ब्यवसथा पर कान धरो;
और मेरे मुंह की बातों को कान धर के सुनो ॥
२ मैं अपना मुंह एक द्रीसटांत में ष्योलुंगा, और
मैं पुरायीन गुपत भेदों को परगट करुंगा ॥
३ जीनहें हम ने सुना है, और जाना, और हमारे
४ पीतरों ने हम से कहा। हम उनके बालकों से
न छीपावेंगे, और परमेसर की सतुत, और उस-

का परािकरम, और उसके आसचरज कारज,
जो उसने कीये, आवैया पीढ़ी पर परगट करेंगे ।
५ कयोंकी उसने याकुब में एक वाया सीथीर की,
और इसराइल में एक वैवसथा ठहराइ, जो उस
ने हमारे पीतरों को अगया की, की वे अपने
६ वालकों को सीखावें ॥ जीसतें आवैया पीढ़ी, अर
थात, जो वालक आगे उतपंन होंगें, उनहें जानें ;
७ और वे उठके अपने वालकों को सीखावें ॥ जीस-
तें वे इसर पर अपना आसरा रखें, और इसर
के कारजों को न भुलें, परंतु उसकी अगयाओं
८ को पालन करें ॥ और अपने पीतरों की नाइं
मगरे दंगइत पीढ़ी न होवें, ऐसी पीढ़ी जीनहों ने
अपने मन को सोच न कीया, और जीनका मन
९ इसर पर दीरढ़ न था ॥ अफराइम के संतान
हथीयार वंद और धनुषधारी लड़ाइ के दीन
१० हट गये ॥ उनहों ने इसर की वाया को न माना,
और उसकी वैवसथा पर चलने को नाह कीया ॥
११ और उसके कारज को, और उसके आसचरजों
१२ को, जो उसने उनहें दीखाये थे, भुल गये ॥ उस
ने मीसर देस में, और सोआन के चौगान में
उनके पीतरों के आगे आसचरज करम कीये ॥
१३ उसने समुंदर का भाग कीया, और उनहें पार

पहुंचाया, और उसने पानीयों को ढेर की नाई
१४ खड़ा कीया ॥ दीन को भी मेघ से, और रात
भर आग की जोत से उसने उनकी अगुआइ की ॥
१५ उसने बन में परबतों को, और जैसा की महा
१६ गहीराव से उन्हें पीलाया ॥ उसने परबत में से
धारें नीकालीं, और नदी की नाई पानी बहाया ॥
१७ पर उन्हों ने उसके बीरुध अधीक पाप कर के,
उस अती महान को बन में करोध दीलाया ॥
१८ और उन्हों ने अपनी लालसा के लीये मांस मांग
१९ के, अपने मन में इसर को परप्पा ॥ हां, उन्हों
ने इसर के बीरुध कहा, और बोले, कया इसर
बन में हमारे लीये मंच सीध करसकता है?
२० देप्पो, उसने परबत को मारा, ऐसा की पानी फुट
नीकला, और धारें बह चलीं, कया वुह रोटी
भी दे सकता? और अपने लोगों के लीये मांस
२१ सीध करसकता?। सो परमेसर ने सुना, और
करोध होके याकुब में एक आग भड़काइ इस-
२२ राइल के बीरुध उसका करोध उभड़ा ॥ कयों-
की उन्हों ने इसर पर बीसवास न कीया, और
२३ उसकी मुकत पर भी भरोसा न रप्पा। यदपी
उसने उपर से मेघों को आगया की, और सरग
२४ के दुवार प्पोले ॥ और उनके प्पाने के लीये मंन

२५ व्रनसाया, श्रीन उनहें सनगोय अंन दीया। मनु-
ष्यों ने दुतों का भोजन प्याया,उसने उनहें अघा के
२६ पीलाया। उसने सनग में पुनवी पवन यलाया,
२७ श्रीन उसके व्रल से दष्षीन का पवन व्रहा। उस
ने उन पन घुल की नाइं मांस श्रीन समुंदन के
२८ वालु की नाइं पंछी व्रनसाये। श्रीन उसने उनहें
उनकी छावनी के व्रीय में श्रीन उनके व्रसाव के
२९ आस पास गीनाया॥ सो उनहों ने प्याया, श्रीन
तीनीपत कुए, कयोंकी उसने उनहें उनहों की
३० इछा दी। वे अपनी लालसा से अलग न कुए,
पनंतु जव्र की उनका भोजन उनके मुंही में था॥
३१ तव्र इसन का कनोघ उनपन आया, श्रीन उनके
पुसट लोग माने गये, श्रीन इसनाइल के तनुन
३२ लोग हुकाये गये॥ तीसपन भी फीन उनहों ने
पाप कीया, श्रीन उसके आसयनज कानजों का
३३ व्रीसवास न कीया॥ इस लीये उसने उनके दीनों
को अननथ में, श्रीन उनके व्रनसों को व्रीपत में
३४ व्रीताया॥ श्रीन जव्र उसने उनहें माना, तव्र
उनहों ने उसे ढुंढा, श्रीन फीन आये, श्रीन तड़के
३५ इसन के षोजी कुए॥ श्रीन येत कीया,की इसन
उनका पहाड़, श्रीन महेसन उनका मुकतदाता
३६ था॥ तीसपन भी उनहों ने अपने मुंह से उस से

यापलुसी की, औार अपनी जीभों से उस से झूठ
३७ बोले ॥ कयोंकी उनके मन उसकी औार ठीक न
थे, औार वे उसकी बाचा पन सीथीन न झूपे ॥
३८ पन उसने अपनी माया की अनपुनी से उनके
अघनम को छमा कीया, औार उनहें नास न कीया
हां, बानंबान उसने अपने कनोघ को नोका, औार
३९ उसने अपने सानेे कनोघ को न भड़काया ॥ कयों-
की उसने समनन कीया, की वे मनुष्य हैं, जैसे प्रेक
पवन, जो जातानहता है, औार फीन नहीं आता।
४० उनहों ने उसे बन में कइ बान कनोघ दीलाया,
४१ औार उजाड़ में उसे उदास कीया ॥ हां, वे
फीन गये, औार इसन को पनष्वा, औार इसनाइल
४२ के घनममय का सीमा बांघा ॥ उनहों ने उसके
हाथ, को औार उस दीन को, जब की उसने उनहें
४३ बैनीयों से छुड़ाया, समनन न कीया ॥ की उस
ने मीसन में कयोंकन अपने चीनह औार सोआन
४४ के चैागान में आसचनज दीष्पाये ॥ औार उनकी
नदीयों को, औार बाढ़ों को लोहु कनडाला, की वे
४५ पी न सकें ॥ उसने उनमें भांत भांत की मष्पीयां
भेजीं, जो उनहें ष्पागइं, औार मेढ़ुक, जीनहों ने
४६ उनहें नसट कीया ॥ उसने उनकी बढ़ती कीड़ों
को, औार उनका पनीसनम टीडीयों को ष्पीलाया।

४७ उसने उनके दाष्प को ओलों से, और उनके गुलर
४८ पेड़ों को पाले से नसट कीया॥ उसने उनके
ढोरों को भी ओलों को, और उनके झुंड बीजुली
४९ को सोंपा॥ उसने बुरे दुतों को भेज के उन पर
अपना महा क्रोध, और कोप, और जलजलाहट,
५० और ब्याकुलता उंडेली॥ उसने अपने क्रोध
के लीये एक मारग खोला, उसने उनके पराण
को मीरतु से न छोड़ा, परंतु उनका पराण मरी
५१ को सोंपे॥ उसने मीसर में सारे पहीलोंठे को
हाम के तंबुओं में उनके बल की स्रेसटता को
५२ मारा॥ पर अपने ही लोगों को भेड़ों की नाई
चलाया, और बन में झुंड की नाई उनकी अगु-
५३ आई की॥ और उन्हें कुसल से लेगया, ऐसा की
वे न डरे, परंतु समुंदर ने उनके बैरीयों को ढाप
५४ लीया। उसने उन्हें अपने धरमधाम के सीवाने में
पहुंचाया, अरथात इस पहाड़ पर, जीसे उसके
५५ दहीने हाथ ने मोल लीया॥ उसनें अनदेसीयों
को भी उनके आगे से दुर कीया, और रसी से
उन्हें अधीकार बांटा, और इसराइल की गोस-
५६ टीयों को उनके तंबुओं में बसाया॥ तीसपर
भी उन्हों ने अती महान इस्वर को परख्या, और
रसी दीलाया, और उसकी साख्यी का पालन

५७ न कीया। परंतु फीर गये, और अपने पीतरों
की नाईं छल कीया, और छली धनुष्य की नाईं
५८ फेर और फीर गये। क्योंकी उन्हों ने अपने
उंचे स्थानों से खीजा के उसे रीस दीलाया, और
अपनी खोदी झूई मुरतों से उस को झल दीलाया।
५९ ईस्वर यह सुन के क्रोध झुआ, और ईस्राईल से
६० अती घोन कीया॥ यहां लों की उसने सैलु के
तंबु को, जीस तंबु को उसने लोगों में खड़ा कीया
६१ था, तयागा॥ और उसने अपने बल को बंधु-
आई में, और अपने बीभव को बैरी के हाथ में
६२ सौंप दीया। उसने अपने लोगों को तलवार को
भी सौंप दीया, और अपने अधीकार से क्रोध
६३ झुआ॥ आग ने उनके तरुनों को भसम कीया,
६४ और उनकी कुंआरीयां बयाही न गईं॥ उनके
याजक तलवार से मारे गये, और उनकी रांडों
६५ ने बीलाप न कीया। तब परमेस्वर नींद से उठे
झुए जन की, और मदीरा के मारे ललकारते
६६ झुए महाबीर की नाईं जाग उठा। और उसने
अपने बैरीयों को पीछाड़ी मारा, और उसने उन्हें
६७ सदा लजीत कीया। और उसने युसफ के तंबु
को नाह कीया, और अफ़राईम की गोसटी को
६८ न चुना॥ पर यहूदा की गोसटी सैहून के पहाड़

६९ को, जो उसका पीनीय था, युन लीया॥ और
उसने अपना घनमघाम ऊंचे भवनों की नाई,
और पीनथीवी की नाई सदा के लीये उसकी
७० नेवें डालीं॥ उसने अपने सेवक दाउद को भी
युन लीया, और भेड़सालों में से उसे नीकाल
७१ लीया॥ उसने उसे गनभनी भेड़ों के पीछे से
ले लीया, की अपने लोग याकुब के वंस को, और
७२ अपने अधीकान इसनाइल को यनावे। सो उस
ने अपने मन की प्पनाइ से उनहें यनाया, और
अपने हाथों की गुनता से उनको ले आया।

७९ उनासीवां गीत।

असाफ का गीत।

१ हे इसन, अनदेसीयों ने तेने अधीकान में पनवेस
कनके तेने पवीतन मंदीन को असुच कीया, उन-
२ हों ने यीनोसलीम को ढेन ढेन कन नप्पा है॥ तेने
सेवकों की लोथों को उनहों ने आकास के पंछीयों
का, और तेने साधुन के मांस को पीनथीवी के
३ वन पसुन का आहान कीया। उनहों ने उनके
लोऊ को यनोसलीम की यानों ओन पानी की
नाई वहाया, और गाड़ने को कोइ न नहा॥
४ हम तो अपने पनोसीयों के लीये नींदीत ऊए

हैं, और अपने आस पासीयों के लीये ठठे और
५ तुछ ऊए। कब लों हे परमेसर, कया तु सदा
लों रीसीयावेगा? कया तेरा झल आग की नाई
६ सदा बरा करेगा?। अनदेसीयों पर, जीनहों
ने तुझे नहीं पहीचाना, और उन राजों पर
जीनहों ने तेरा नाम न लीया, अपना कोप उंडेल।
७ कयोंकी उनहों ने याकुब को नींगल लीया, और
८ उसके नीवास को उजाड़ दीया। हमारे पीछले
अपराधों को समरन मत कर, अपनी कोमल दया
से हमें हाली रोक, कयोंकी हम बझत घटाये
९ गये॥ हे हमारे मुकतदाता ईसर, अपने नाम की
महीमा के लीये हमारी सहाय कर, और हमें
बचा, और अपने नाम के लीये हमें हमारे पापों
१० से पवीतर कर। अनदेसी लोग कीस लीये कहें,
की उनका ईसर कहां है? अपने दासों के बहाए
ऊए लोझ का पलटा ले के, अनदेसीयों के मध में
हमारी दीनीसट के आगे आप को परगट कर॥
११ बंधुओं का कहरना तेरे आगे पझंचे, अपनी भुजा
की महीमा के समान उनहें, जो मीरतु के लीये
१२ ठहराये गये हैं, बचा ले। हे परभु हमारे परो·
सीयों की नींदा को, जीस से उनहों ने तेरी
नींदा की है, उनकी गोद में सतगुन पलटा दे॥

१९ सो हम तेरे लोग श्रोर तेरी चराई की भेड़ें
सदा तेरा धंन मानेंगे; हम पीढ़ी से पीढ़ी लों तेरी
स्तुत परगट करेंगे ॥

८० असीवां गीत ॥

सोसन नीमीदुत पर असाफ़ का गीत परधान
बजनीये के पास।

१ हे इसराइल के गड़रीये, तु जो युसफ़ को
झुंड की नाईं ले जाता है, तु जो करोबीम के मध
२ में रहता है, काल धर, श्रोर चमक ॥ अफराइम, श्रोर बनीयामीन, श्रोर मनसा के आगे
अपना बल उभार, श्रोर हमारे बचाव के लीये
३ आ ॥ हे इसर, हमें फेरीा, श्रोर अपने रुप को
४ हम पर चमका, श्रोर हम बच जायेंगे ॥ हे परमेसर, सेनाश्रों के इसर, अपने लोगों की परारथना के बीरुध कब लों तेरा धूआं उठा करेगा?
५ तु उन्हें आंसुश्रों की रोटी प्यीलाता है, श्रोर बड़ाई से आंसु पीलाता है ॥ तु हमें हमारे परो-
सीयों का झगड़ा करता है, श्रोर हमारे बैरी
७ आपुस में हंसते हैं ॥ हे सेनाश्रों के इसर, हमें
फेरीा, श्रोर अपना रुप चमका, श्रोर हम बच
८ जायेंगे। तु एक लता को मीसर से नीकाल

लाया है, तु ने अनदेसीयों को बाहर कीया, और
९ उसे लगाया है॥ तु ने उसके लीये ठीकाना कीया,
और ऐसा कीया, और उस से गहीरी जड़ पकड़
१० वाइ, और देस में फैल गइ॥ उसकी छाया से
पहाड़ ढंप गये, और उसकी डालें सुनदर आरज
११ पेड़ की नाइं हुइं। उसने अपनी डालें समुंदर
ताइं फैलाइं, और अपनी डालीयां नदी लों।
१२ तु ने उसके बाड़ को कयों तोड़ा है, यहां लों की
१३ पथीक उसे चोंथते हैं॥ बनैले सुअर उसे उजाड़ते
१४ हैं, और बन पसु उसे भछते हें। हे सेनाओं के
इसर, हम तेरी बीनती करते हैं, की लौट आ,
१५ सरग पर से झांक, और इस लता को देख। जो
दाख की बारी, जीसे तेरे दहीने हाथ ने लगाया
है, और डाली जीसे तु ने अपने लीये पोढ़ कीया।
१६ वुह आग से जलाइ गइ, और काटी गइ, वे तेरे
१७ रुप के दपट से नास होती हैं। तु अपने दहीने
हाथ के मनुष्य पर, अरथात मनुष्य के पुतर पर,
जीसे तु ने अपने लीये बली कीया, अपना हाथ
१८ धर॥ सो हम तुझ से न फीरेंगे, हमें जीला,
१९ और हम तेरा नाम लीया करेंगे॥ हे परमेसर
सेनाओं के इसर, हमें फीरा, और अपना रुप
चमका, और हम बच जायेंगे।

८१ एकासीवां गीत।

परधान बजनीये के पास गीटीथ पर आसाफ़ का।

१ हमारे बल के ईसर के लीये पुकार के गाओ,
याकुब के ईसर के लीये आनंद का सबद करो।
२ नबल के साथ तबल, और बीन लाओ, और गीत
३ गाओ। अमावस में, और हमारे ठहराये
४ हुए परबों के दीन में तुरही बजाओ। कयोंकी
यह ईसराईल के लीये बीच, और याकुब के
५ ईसर की बेवसथा थी॥ जब युसफ़ मीसर देस
के सनमुख पहुंचा, जहां मैं ने भाषा सुनी, और
न समझीं, उसने उसके लीये ईसे एक साख्नी ठह-
६ राई॥ मैं ने उसके कांधे पर से बोझ उतारा,
७ उसके हाथों को हांडीओं से छुड़ाया। तु ने बीप-
पत में पुकारा, और मैं ने तुझे छुड़ाया,मैं ने गर-
जन के गुपत सथान से तुझे उतर दीया, मैं ने
झगड़ा के पानीओं पर तुझे परखा, सीलाह।
८ हे मेरे लोगो सुनो, हे ईसराईल, जो तु मेरी
९ सुनेगा,तो मैं तेरे लीये साख्नी देउंगा। तुझ में कोई
उपरी देव न होवे, तु कीसी उपरी देव की पुजा
१० न कर॥ परमेसर तेरा ईसर मैं हुं, जो तुझे
मीसर देस से बाहर लाया, अपना मुंह फैला,

११ और मैं उसे भर देउंगा। पर मेरे लोगों ने मेरा
शब्द न सुना, और इसराइल ने मुझे न चाहा॥
१२ तब मैं ने उनहें उनके मन की भावना में छोड़
दीया, और वे अपने ही मत पर चला कीये॥
१३ हाय की मेरे लोग, मेरी सुनते, और इसराइल
१४ मेरे मारगों पर चलते। मैं हाली उनके बैरी-
यों को उनके बस में करता, और उनके बैरीयों
१५ के बीरुध अपना हाथ फेरता॥ वे जो परमेसर
से घीनाते हैं, उस से दब जाते, परंतु उनका
१६ समय सदा रहता॥ वुह उनहें गेहूं की चीक-
नाई भी षीलाता, और पहाड़ की मधु से उनहें
तीरीपत करता।

८२ बयासीवां गीत।

आसाफ का गीत।

१ ईसर बलवानों की मंडली में षड़ा है, देवों के
२ मध में वुह बीचार करता है। तुम कब लों अ-
धरम बीचार करोगे, और दुसटों का पक्ष करोगे,
३ सीलाह। कंगाल और अनाथों का बीचार करो,
४ दुषी और दीनों का नयाय करो। कंगाल और
दीन को बचाओ, दुसटों के हाथों से उनहें छुड़ाओ।

५ वे नहीं जानते, और न समझेंगे, वे अंधी-
यारे में चले जाते हैं, पीरथीवी की सारी नेवं
६ टल गई हैं॥ मैं ने तो कहा, की तुम सब देव
हो, और तुम सब के सब अती महान के पुतर हो,
७ पर तुम मनुष्यों की नाईं मरोगे, और राज पुतरों
८ में से एक की नाईं गीर जाओगे॥ हे ईसर उठ,
पीरथीवी का बीचार कर, कयोंकी तु सारे देस
गनों का अधीकारी होगा।

८३ तीरासीवां गीत॥

आसाफ़ का गान अथवा गीत॥

१ हे ईसर चुप मत हो, चुपका मत रह, और
२ हे ईसर, चैन न ले॥ कयोंकी देख, तेरे बैरी
ऊधम करते हैं, और वे,जो तुझ से डाह रखते हैं
३ सीर उठाये हैं॥ उनहों ने तेरे लोगों के बीरोध
में छल का परामरस कीया है, और तेरे छीपे
४ हुए लोगों के बीरोध में चींता करते हैं। उनहों
ने कहा है, की आओ, उनहें एक जात होने से
काट डालें, जीसतें ईसराईल का नाम समरन न
५ रहे। कयोंकी उनहों ने एक मन से परामरस
६ कीया है॥ अदुम के सारे तंबु, और ईसमाईली,

७ और गबाली, और सारे हाजरी ॥ और आ-
राब, और अमुन, और अमालक, और फलस-
तानी सूर के वासीयों समेत तेरे बीरुध मील गये
८ हैं। असूरी भी उनमें मीले हैं, वे लूत के संतान
९ के सहायक हैं ॥ उनसे ऐसा कर, जैसा की मदी-
यानीयों, और सीसरा, और याबीन से कैसन की
१० नाली पर कीया ॥ जो ईंदूर में नास हुए, और
११ पीरथीवी पर के बीसटा हुए। उनके कुलीनों को
औरेब और जेब की नाईं कर, हां, उनके
१२ सारे राजपुतर को जबह और जलमुना के। जीस
ने कहा, की आओ, ईसर के मंदीरों को अपने
१३ बस में करें ॥ हे मेरे ईसर उन्हें एक पहीये की
नाईं कर, और पवन के संमुख की भुसी की
१४ नाईं ॥ जैसा आग बन को जलाती है, और
१५ जैसा लवर पहाड़ों को जलाती है ॥ तैसा अपनी
आंधी से उन्हें सता, और अपने हुकोर से उन्हें
१६ डरा ॥ हे परमेसर उनके मुंह को लाज से भर
१७ दे, जीसतें वे तेरे नाम के खोजी होवें। वे सदा
बयाकुल होवें, और घबरा जावें, हां, वे लजीत
हो के नास होवें, जीसतें मनुष्य जानें, की केवल
जीसका नाम अदोनीय परमेसर है, वुह सारी
पीरथीवी में अत महान तुही है।

८४ चौरासीवां गीत।

कोरह के पुत्रों के लीये गीटीथ पर प्रधान
बजनीये के पास गीत॥

१ हे सेनाओं के परमेश्वर, तेरे तंबु कैसे सुंदर
२ हैं॥ मेरा प्राण परमेश्वर के आंगनों के लीये
अभीलाषी और मुर्छीत है, मेरे तन मन जीवत
३ इश्वर के लीये पुकारते हैं। हे सेनाओं के पर-
मेश्वर, मेरे राजा, और मेरे इश्वर, गौरा ने तेरी
वेदीयों में घोसला, और सुपाबीना ने अपने लीये
४ घोंता पाया, जहां वे अपने बच्चे रखें॥ धंन वे
हैं, जो तेरे मंदीर में बसते हैं, और सदा तेरी
५ स्तुत करेंगे, सीलाह। जीसका बल तुझ में है,
सो मनुष्य धंन, जीसका मन उनके मारग में है॥
६ जो बाका की तराई में से जाते हुए उसे कुआ
७ बनाते हैं, और कुंड भी मेंह से भरे हैं। वे
बढ़ते जाते हैं, और जथा से जथा को जाते हैं,
८ और इश्वर के आगे सैहुन में पहुंचते हैं॥ हे
परमेश्वर सेनाओं के इश्वर, मेरी प्रार्थना सुन,
९ हे याकुब के इश्वर, कान धर, सीलाह। हे इश्वर
हे हमारी ढाल अपने अभीसीक्त के मुंह पर
१० दीष्टी कर। क्योंकी तेरे आंगनों में एक दीन

सहस्र से भला है, अपने ईश्वर की डेवढ़ी पर
बैठना दुष्टता के तंबुओं में रहने से मुझे अधीक
११ पसंद है॥ कयोंकी ईश्वर परमेश्वर एक सुरज
और ढाल है, परमेश्वर अनुगीरह और बीभव
देगा, जो खराई से चलते हैं, उनसे वह कोई
१२ भलाई न रख्छोड़ेगा। हे सेनाओं के परमेश्वर,
धन वुह मनुष्य, जो तेरा भरोसा करता है॥

८५ पचासीवां गीत।

कोराह के पुत्रों के लीये प्रधान बजनीये के पास।

१ हे परमेश्वर, तु अपने देस पर अती प्रसंन
हूआ है, तु याकुब की बंधुआई को फेर लाया
२ है॥ तु ने अपने लोगों के अधरम को छमा कीया
है, तु ने उनके सारे पापों को ढांपा है, सीलाह॥
३ तु ने अपने सारे क्रोध को अलग कीया है, तु ने
४ अपने क्रोध को भड़कने न दीया। हे हमारे
मुकतदाता ईश्वर, हमें फीरा, और अपनी रीस
५ को हम पर से रोक॥ कया तु सदा हम पर
रीसयावेगा? कया तु सारी पीढ़ी लों अपने क्रोध
६ को बढ़ाता रहेगा? कया तु हमें फीर न जी-
लावेगा, जीसतें तेरे लोग तुझ से आनंद करें?
७ हे परमेश्वर, हमें अपनी दया दीखा, और अपनी

८ मुकत हम को दे॥ मैं सुनोंगा की परमेसर इसर
कह्या कहेगा, वुह ता अपने लोगों को और अपने
साधुन को कुसल की व्रात कहेगा, परंतु वे मुरष्पता
९ में फेर न फीरें। नीस्चय उसकी मुक्त उनके
डरवैय्रों के पास है, जीसतें महीमा हमारे देस में
१० व्रसे। दया और सयाइ ने भेट कीया, धरम
११ और कुसल ने युमा लीया है॥ सयाइ पीरथोवी
१२ से उगेगी, और धरम सरग से झांकेगा। हां,
परमेसर भलाइ देगा, और हमरा देस अपना
१३ फल देगा॥ धरम उसके आगे आगे यलेगा, और
हमारे डग को उसके मारग पर यलावेगा।

८६ छयासीवां गीत॥

दाउद की पराथना।

१ हे परमेसर, अपना कान झुका, और मेरी सुन,
२ कय्रोंकी मैं कंगाल और दीन ड़ं॥ मेरे पराण
की रछ्या कर, कय्रोंकी मैं तेरा अनुगीरहीत ड़ं,
हे मेरे इसर, तु अपने भरोसा रष्पनेवाल दास को
३ व्रया। हे मेरे परभु, मुझ पर दयाल हो, कय्रों-
४ की मैं दीन भर तुझे पुकारता ड़ं॥ अपने दास
के परांन को आनंदीत कर, कय्रोंकी हे परभु,
५ मैं अपने मन को तेरी ओर उठाता ड़ं॥ कय्रोंकी

हे परभु, तु भला है, और छमा करने को
सोच है, और सब के लीये, जो तुझे पुकारते हैं,
६ तेरी दया बहुत है। हे परमेसर, मेरी परार-
थना पर कान धर, और मेरी बीनती के सबद
७ को मान॥ मैं अपनी बीपत के दीन तुझे पुका-
८ रुंगा, कयोंकी तु मुझे उतर देगा॥ हे परभु,
देवों में तेरे तुल कोई नहीं, और तेरे कारज के
९ समान कुछ नहीं। हे परभु, सारे देसी, जीन्हें
तु ने सीरजा है, आवेंगे, और तेरे आगे दंडवत
१० करेंगे; और तेरे नाम की बड़ाई करेंगे॥ कयों-
की तु महान और आसचरज करता है, तुही
११ अकेला ईसर। हे परमेसर, मुझे अपना मारग
बता, मैं तेरी सचाई में चलुंगा, अपने नाम से
१२ डरने के लीये मेरे चीत को बटोर॥ हे परभु
मेरे ईसर, मैं अपने सारे मन से तेरी सतुत करुंगा,
और मैं सदा तेरे नाम की बड़ाई करुंगा॥
१३ कयोंकी तेरी दया मुझ पर बड़ी है, और तु ने
मेरे पराण को अती नीची समाध से छुड़ाया है॥
१४ हे ईसर, अहंकारी मुझ पर उभड़े हैं, और
भयंकर मंडलीयां मेरे पराण के पीछे पड़ी हैं,
१५ और उन्हों ने तुझे अपने आगे न समझा। परंतु
हे परभु, तु दयामय ईसर और कीरपाल और

१६ चीन है, तेरी दया, और सचाई बज़त हैं। मेरी
और फीर, और मुझ पर दया कर, अपनी सा-
मर्थ अपने दास को दे, और अपनी दासी के पुतर
१७ को बचा। मुझे भलाई का कोई चीन्ह दीखा,
जीसतें वे, जो मेरा बैर रखते हैं, देख के लज्जीत
होवें, इस कारन की हे परमेसर, तु ने मेरी सहाय
की, और मुझे चीनज दीया।

८७ सतासीवां गीत॥

कोराह के पुतरों के लीये गीत, अथवा गान।

१। २ उसकी नेव पवीतर परबतों में है। परमेसर
सैहून के फाटकों को याकुब के सारे नीवासों से
३ अधीक पसीत रखता है। हे इसर के नगर, तेरे
४ बीखे में अनोखी बातें की जाती हैं, सीलाह। मैं
उनके आगे, जो मुझे पहीचानते हैं राहाब और
बाबुल की चरचा करूंगा, देखु फलसतीया और
सुर कोस के संग, की यह वहां उतपंन ऊआ।
५ और सैहून के बीखे में कहा जायगा, की यह
और वुह जन उस में उतपंन ऊआ, और अतयंत
६ महान आप उसे सथीर करेगा। जब परमेसर
लोगों को लीखेगा, तो वुह गीनेगा, की यही उस

७ में उतपंन ऊआ था, सीलाह। जैसे गायक वैसे ही
बजनीये होंगे, मेरे सारे सोते तुझ में हैं ॥

८८ अठासीवां गीत ॥

इजराही हीमान का उपदेस देना, महालासलीअ
नुस पर कोराह के पुतरों के लीये गीत, अथवा
गान, परघान बजनीये के पास ॥

१ हे मेरे मुकतदाता इसर परमेसर, मैं ने रात
२ दीन तेरे आगे बीनती की। मेरी परारथना तेरे
आगे पऊंचे, अपने कान मेरी बीनती पर झुका।
३ कयोंकी मेरा मन बीपत से भरा है, और मेरा
४ पराण समाध के लग आ रहा है। मैं उन में
गीना गया ऊं, जो गड्हे में पड़ते हैं, मैं नीरबल
५ मनुष्य की नाइं ऊं। मीरतकों में उन मारे गयों
की नाइं ऊं, जो समाध में पड़े हैं, जीन्हें तु समरन
नहीं करता, और वे तेरे हाथ से काटे गये हैं ॥
६ तु ने मुझे अतयंत नीचे गड़हे में, अंधीयारे में,
७ गहीराओं में डाला है। तेरा कोप मुझे दबाये
डालता है, तु ने अपने सारे लहरों से मुझे दुष्य
८ दीया है, सीलाह। तु ने मेरे चीनहारों को मुझ
से दुर कीया है, तु ने उनके आगे मुझे घीनीत

कीया है, बंद होके मैं नीकल नहीं सकता॥
९ मेरी आंखें दुख के मारे बीलाप करती हैं, हे
परमेसर, मैं ने परतीदीन तुझे पुकारा है, मैं ने
१० अपने हाथ तेरी ओर फैलाये हैं। कया तु
मीरतक को अपना आसचरजीत दीखावेगा?
कया मीरतक उठके तेरी सतुत करेंगे? सीलाह।
११ कया समाध में तेरी कोमल दया, और बीनास में
१२ तेरी सचाइ का बरनन होगा? कया तेरे आस-
चरज अंधयारे में जाने जायेंगे? और तेरा
१३ धरम भुलावा के देस में? परंतु हे परमेसर, मैं
तुझे पुकारता हुं, मेरी पराथना बीहान को तुझे
१४ रोकेगी। हे परमेसर, तु कयों मेरे पराण को तयाग-
१५ ता है? और अपना मुंह मुझ से छीपाता है? मैं
दुखी होके लड़काइ से मरने पर हुं, मैं तेरे भय
१६ को सह सह के घबराता हुं। तेरे करोध की
दपट मुझ पर बीती जाती है, तेरे भय मुझे काट
१७ डालते हैं। वे पानी की नाइं दीन भर मुझे
घेरते हैं, उनहों ने एकठे मुझे
१८ घेर लीया है। पीय और मीतर को, और
मेरे चीनहारों को अंधीयारे में तु ने मुझ से दुर
कीया है॥

८९ नवासीवां गीत।

यजराही इथान का उपदेस देना।

१ मैं सदा लों परमेसर की दया को गाया करुंगा,
मैं पीढ़ी से पीढ़ी लों अपने मुंह से तेरी सचाइ
२ का संदेस देउंगा। कयोंकी मैं ने कहा है, की
दया सदा लों बनी रहेगी, तु अपनी सचाइ को
३ सरग पर सथीर करेगा। मैं ने अपने चुने हुऐ
से ऐक बाचा बांधी है, मैं ने अपने दास दाउद
४ से कीरीया खाइ है॥ मैं तेरे बंस को सदा
सथीर रखुंगा, और तेरे सींहासन को सारी पीढ़ी
५ लों ठहराउंगा, सीलाह। हे परमेसर, सरग में
तेरे आसचरजों को और सीधों की मंडली में
६ तेरी सचाइ की सतुत की जायगी॥ कयोंकी
सरग पर परमेसर के तुल कौन हो सकता है,
और बलवानों के संतान में परमेसर के तुल कौन
७ हो सकता है। इसर सीधों की सभा में अतयंत
डरने के जोग है, और उन सब का, जो उसकी
८ चारों ओर हैं परतीसठा के॥ हे परमेसर
सेनाओं के इसर, तेरे तुल कौन बलवान परमेसर
९ है, अथवा तेरे चारों पास तेरी सचाइ के॥ तु
समुंदर के हाहाकार पर परभुता करता है, जब

उसकी लहरें उठती हैं, तु उनहें सधीन करता
१० है। कीसी जुझे ऊऐ के समान तु ने नाहाव को
तोड़ के टुकड़े टुकड़े कीया, तु ने अपनी भुजा के
वल से अपने वैरीयों को छीन भीन कीया है।
११ सरग तेरे और परिथीवी भी तेरी, जगत और
१२ उसकी भरपुरी तु ने वनाइ। उतर और दछीन
को तु ने सीरजा है, ताबुर, और हरमुन तेरे
१३ नाम में आनंदीत होंगे॥ तेरा वांह वल सहीत
है, तेरा हाथ सकतीमान, तेरा दहीना हाथ उंया
१४ है। धरम और वीयाय तेरे सींहासन की दीर-
ढ़ता है, दया और सत तेरे आगे आगे जायेंगे।
१५ जो तेरे मंगल सबद को जानते हैं, सो लोग धंन
हैं, हे परमेसर, वे तेरे सरुप की जोत में चलेंगे॥
१६ तेरे नाम में वे दीन भर आनंद करेंगे, तेरे धरम
१७ में वे वढ़ाये जायेंगे॥ कयोंकी उनके वल का
वीभव तु है, और तेरी कीरपा से हमारे सींग
१८ वढ़ाये जायेंगे। कयोंकी परमेसर हमारा वचाव
है, और इसराइल का धरममय हमारा राजा
१९ है॥ तु दरसन में अपने धरमनय से यह कह-
के वोला, की मैं ने एक सामरथी पर सहाय
रख्खी है, मैं ने लोग में से एक चुने ऊऐ को
२० वढ़ाया। मैं ने अपने दास दाउद को पाया है,

मैं ने उसे अपने पवीतन तेल से अभोसीकत कीया
२१ है॥ मेना हाथ उसके साथ सथीन नहेगा, मेनी
२२ भुजा भी उसे व्रल देगी। व्रैनी उसे नीयोड़ न
सकेगा, और दुसटता का संतान उसे कलेस न देगा।
२३ और मैं उसके व्रैनीयों को उसके संतुप्प देमानुंगा,
और उसके घीनवैयों को मनी से मानुंगा॥
२४ पनंतु मेनी सयाइ और मेनी दया उसके संग
होंगी, और मेने नम से उसका सींग व्रढाया
२५ जायगा। मैं उसका हाथ भी समुंदन पन, और
२६ उसका दहीना हाथ नदीयों पन नप्पुंगा। वुह
मुझे कहेगा, की तु मेना पीता, मेना इसन, और
२७ मेनी मुकत का पनव्रत है॥ मैं भी उसे अपना
पहीलोंठा, और पीनथोवी के नाजाओं से व्रड़ा
२८ व्रनाउंगा। मैं अपनी दया सदा उसके लीये
नप्पुंगा, मेनी व्राच्या उसके साथ दीनढ़ होगी॥
२९ उसके व्रस को भी सदा लों सथीन कनुंगा, और
३० उसके सींहासन को सनग के दीन लों। जो उसके
व्रालक मेनो व्रैवसया को तयागें, और मेने नयाओं
३१ पन न चलें॥ जो वे मेनी व्रीघ को अपवीतन
कनें, और मेनी अगयाओं को पालन न कनें॥
३२ तो मैं उनके पापों को छड़ी से, और उनके अधनम
३३ का कोड़ों से पलटा लेउंगा। तथापी मैं अपने

परनेम की दया उस से व्ययनथ न करुंगा, श्रौर
३४ अपनी सच्याइ मीथया न होने देउंगा। मैं अपनी
व्राचा को भंग न करुंगा, श्रौर जो मेरे होंठ से
३५ नीकल गया, सो न व्रदलुंगा॥ मैं ने एक व्रार
अपनी पवीतनता की कीनया ष्याके कहा, कीं मैं
३६ दाउद से झुठ न व्रोलुंगा। उसका व्रंस सदा लों
नहेगा, श्रौर उसका सींहासन मेरे श्रागे सुरज की
३७ नाइं व्रना नहेगा॥ वुह चंदनमा की नाइं श्रौर
सनग में सचे साप्पी के समान सदा सथीन नहेगा,
३८ सीलाह॥ पन तु ने तो दुर कीया है, श्रौर घीन
कीया है, तु तो अपने अभीसीकत से कनोघ ऊश्रा
३९ है॥ तु ने अपने दास के नीयम को व्रयनथ कीया
है, तु ने उसके मुकुट को भुम में अपवीतन कीया
४० है॥ तु ने उसकी सानी व्राड़ों को तोड़ डाला है,
तु ने उसके दीनढ़ गढ़ों को व्रीनास कीया है॥
४१ सारे पथीक उसे लुटते हैं, वुह अपने परोसीयों
४२ के लीये एक श्रोलान है॥ तु ने उसके सतनुन
के दहीने हाथ को उंचा कीया है, तु ने उसके
४३ सारे व्रैनीयों को मगन कीया है। तु ते उसकी
तलवान की घान को भी मोड़ दीया है, श्रौर
४४ जुध में उसे ठहनने न दीया है॥ तु ने उसके
व्रभव को प्पो दीया है, श्रौर उसके सींहासन को

४५ भुम पन देमाना॥ म् ने उसकी तनुनाइ के दीनों
को ऋलप कीया है, तु ने उसे लाज से ढांपा है।
४६ हे पनमेसन, कया तु सदा अपने को छीपाये
नहेगा? कया तेना कनोघ आग की नाइं जलता
४७ नहेगा? येत कन कीं मेना समय कीतना थोड़ा
है, तु ने मनप्प को कीस लीये वयनथ वनाया है॥
४८ कैान सा मनुप्प जीता है, जो मीनतु को न देप्पे-
गा? कया वुह समाघ के हाथ से अपना पनान
४९ वयावेगा? सेलाह॥ हे पनभु, तेने अगले पनेम
की दया कहां है, जीनहों के कानन तु ने दाउद
५० से अपनी सयाइ की कीनया प्प इ। हे पनमसन
अपने दास की नींनदा को समनन कन, मैं समसत
५१ वलवानों को अपनी गोद में लीये ऊए ऊं॥ हे
पनमेसन, जीस से तेने वैनी नींनदा कनते हैं,
ओान तेने अभीसीकत के पांव के योनह का नींनदा
५२ कनते हैं॥ पनमेसन सदा घंन हो; आमीन
आमीन।

९० नव्वेवां गीत।

इसन के जन मुसा की पनानथना।

१ हे पनमेसन, पीढ़ी से पीढ़ी लों हमाना नीवास
२ सथान तुही नहा। पहाड़ के उतपंन होने के पहीले,

अथवा पीनथीवी और जगत सीनजे गये, अनथात
३ सनातन से सनातन लों तुही ईसन है॥ तु मनुष्य
को नास में फेन देता है, और कहता है, की हे
४ मनुष्य के सनातन फीनो। कयोंकी सहसन बनस
तेने आगे कल की नाईं हैं, जब बीत गया, और
५ नात के ऐक पहन की नाईं॥ तु उनहें जैसे बाढ़
से लेजाता है, वे नींद में हैं, घास की नाईं बीहान
६ को पनपते हैं। जो बीहान को लहलहाती है,
और उगती है, संचया को काटी जाती है, और
७ सुनहा जाती है॥ कयोंकी हम तेने कनोध से
नसम हो गये, और तेने कोप से बयाकुल हुऐ।
८ तु ने हमाने अधनम को अपने आगे, और हमाने
गुपत पाप अपने नुप के पनकास में नप्पा है॥
९ कयोंकी हमानी सानी बय तेने कनोध में फीन
१० गई, और हमाने बनस धयान की नाईं। हमाने
जीवन के दीन सतन बनस हैं, और यदी बल से
असी बनस हो जाय, तथापी उनका बल कलेस
और दुष्य है, कयोंकी वुह सीघन काटा जाता है,
११ और हम जाते नहते हैं। तेने कनोध का पना-
कनम कौन जानता है? जैसा तेना डन, वैसा तेना
१२ कोप है। सो हमाने दीनों को हमें गीने सीप्पा,
१३ ऐसा की हम गीयान में अपना मन लगावें। लौट,

हे परमेसर, कब लों? और अपने सेवकों के
१४ विषय में पछता। तड़के अपनी दया से हमें
तीरीपत कर, जीसतें हम अपने जीवन भर आनं-
१५ दीत और मगन रहें। दुष्प देने के दीनों के और
बुराइ देष्पने के बरसों के समान हमें आनंदीत
१६ कर। अपना कारज अपने दासों को, और
१७ अपना वीभव उनके संतानों को दीष्पला॥ और
हमारे परभु इसर की सुंदरता हम पर होवे,
और हमारे हाथों के कारजों को हम पर दीरढ़
कर, हां, तु हमारे हाथों के कारजों को दीरढ़
कर।

९१ एकानवेवां गीत।

१ जो की अती महान के गुपत सथान में वास
करता है, सो सरव सकतीमान की छाया तले
२ टीकेगा। मैं परमेसर के वीषय में कहुंगा, कीं
मेरा सरन और मेरा गढ़ और मेरा इसर, जीस
३ पर मेरा भरोसा है॥ वुह नीसचय तुझे बयाधा
४ के जाल से, और घोर मरी से मुकत देगा॥ वुह
तुझे अपने पर तले छीपावेगा, और तु उसके पंष्प
के तले भरोसा रष्पेगा, उसकी सचाइ तेरी ढाल
५ और फरी होगी। तु रात के भय से, अथवा
६ दीन के उड़ते बान से न डरेगा। और न उस

मनी से, जो अंधीयाने में यलती है, श्रोन न उस
७ नास से, जो मधयांन में उजाड़ कनता है। तेने
लग सहसन गीन आवेंगे, श्रोन दस सहसन तेने
दहीने श्रोन, पनंतु वुह तुमहाने पास न आवेगी।
८ केवल तु श्रपनी श्रांष्पों से देष्पा कनेगा, श्रोन
९ दुसटों का पनतीफल देष्पेगा। कयेंकी तु ने पन
मेसन श्रती महान मेने सनन को श्रपना नीवास
१० वनाया है। तुहू पन कोइ वीपत न पड़ेगी, श्रोन
११ कोइ मनी तेने नीवास के पास न आवेगी॥ कयोंकी
तेने सानें मानगों में तेनी नछा कनने को श्रपने
१२ दुतों को तेने लीये श्रगया कनेगा। वे तुहे श्रपने
हाथों पन उठा लेंगे, नहो की तेने पांव पथन पन
१३ लगें॥ तु सींह, श्रोन सांप पन पांव चनेगा, तु
सींह के वचे, श्रोन श्रजगन का श्रपने पांव तले कुय-
१४ लेगा। इस कानन की उसने मुझ पन पनेम नष्पा
है, मैं उसे वयाउंगा; श्रोन मैं इस लीयें उसे
१५ वढाउंगा, की उसने मेना नाम पहीयाना है। वुह
मेनी पनानथना कनेगा, श्रोन मैं उतन देउंगा,
वीपत में मैं उसके संग होउंगा, मैं उसे छुड़ाउंगा,
१६ श्रोन उसे पनतीसठा देउंगा॥ मैं उस की वय
वढा के उसे सतुसट कनुंगा; श्रोन श्रपनी मुकत
को उसे दीष्पाउंगा।

९२ व्रानवेवा गीत॥

गीत ऋथवा गान, व्रीसनाम दीन के लीये।

१ पनमेसन का घन मानना, ग्रौन ऋती महान के
२ नाम की सतुत गाना ऋला है। दस तान के व्राजे
पन, ग्रौन व्रीन, ग्रौन सुनयंग सुंदन सव्रद से
३ व्रजा व्रजा के। व्रीहान को तेने कोमल पनेम
को, ग्रौन नात को तेनी सयाइ को पनगट कनना,
४ कय्रोंकी हे पनमेसन, तु ने ऋपने कानज से सुहे
ऋानंदीत कीय्रा है, मैं तेने हाथें की कीनीय्रा से
५ मगन ऊंगा। हे पनमेसन, तेने कानज कय्रा ही
व्रड़े हैं, ग्रौन तेनी यींता ऋती गहनी हैं॥
६ पसुवत जन नहीं जानता है, ग्रौन सुनष्य उसे
७ कय्रा समुहता है। जव्र दुसट घास की नाइं उगते
हैं, ग्रौन साने कुकनमी कुमह्लाते हैं, य्रह इस
८ लीये हैं, की वे सदा नास होवें॥ पनंतु पनमेसन
९ तु सनव्रदा लों महान नहेगा। कय्रोंकी हे पनमे-
सन, देष्प, तेने व्रैनी कय्रोंकी देष्प, तेने व्रैनी नास
१० होंगे, साने कुकनमी छींन भींन होंगे। तु गैंड़े
की सींग की नाइं मेने सींग व्रढ़ावेगा, पनंतु मैं टटके
११ तेल से ऋभीसोकत होउंगा॥ पनंतु मेनी ऋांष्प
मेने व्रैनीय्रों को देष्पेंगी, ग्रौन मेने कान दुसटों
१२ को, जो मेने व्रीनोध में उठते हैं, सनेंगे। धनमी

ताल पेड़ की नाईं लहलहावेगा, और लबनान
१३ के सनो बनक्ष के समान बढ़ेगा। वे, जो परमे-
सर के घर में लगाये गये हैं, हमारे ईसर के
१४ आंगन में लहलहावेंगे। वे बुढ़ापे में फरेंगे, वे
१५ मोटे और हरे होंगे। जीसतें परगट करें, की
परमेसर मेरा परबत प्पर। है, उस में अनीत
नहीं ॥

९३ तीरानवेवां गीत।

१ परमेसर राज करता है, वुह बीभव का बसतर
पहीने ज़ुए है, परमेसर बल से वीभुसीत है, उसने
अपनी कट बांधी है, जगत भी सथीर है, की
२ वुह टलाया जा नहीं सकता ॥ तेरा सींहासन
३ तब से सथीर है, तु सनातन से है। हे परमेसर
बाढ़ उठे हैं, और बाढ़ों ने अपना सबद उठाया,
४ बाढ़ों ने अपनी लहरें उठाईं। महान परमेसर
बहुत से पानीयों के सबद से, और समुंदर की
५ बड़ी लहरों से अती सकतीमान है ॥ तेरी सा-
प्पीयां अतयंत सची हैं, हे परमेसर, सरबदा तेरे
मंदीर के लीये पवीतरता उचीत है ॥

९४ चैारानवेवां गीत।

१ हे परमेसर, बैर लेने वाले ईसर, हे बैर लेने

२ वाले ईसन, पनकास हो। हे पीनथीवी के वीं-
३ यानी उठ, ओान घमंडीयों को पलटा दे। हे
पनमेसन,दुसट कव् लों दुसट कव् लों फुला कनेंगे?
४ वे कव् लों कठोन व्यन नीकालेंगे? ओान सानें
५ कुकनमी फुला कनेंगे॥ हे पनमेसन, वे तेने
लोगों के। टुकड़ा टुकड़ा कनते हैं,ओान तेने अघी-
६ कान को दुष्प देते हैं। वे नांड को, ओान पन-
देसी को घात कनते हैं, ओान अनाथों को घात
७ कनते हैं। तथापो कहते हैं, की पनमेसन न
देष्पेगा, ओान याकुव् का ईसन यींता न कनेगा॥
८ अने पसुवत लोगो, समझो, ओान अने लुनष्पो,तुम
९ कव् वुघमान होओगे? कयों जीस ने कान
दीया, वुह न सुनेगा? जीसने आंष्पें व्नाइं, कया
१० वुह न देष्पेगा? जो अनदेसी को ताड़ना कनता
है, कया वुह सीष्पा न देगा? जो मनुष्प को गयान
११ देता है, कया वुह न जानेगा? पनमेसन मनुष्प की
१२ यींतों को जानता है, की वे मीथया हैं॥ हे पन-
मेसन, जीसे तु ताड़ना कनता है, सो मनुष्प धंन
है, ओान अपनी व्यवसथा में से उसे सीष्पाता है।
१३ जीसतें तु उसे व्रीपत के दीनों में यैन देवे, जव्
लों की दुसटों के लीये गड़हा न ष्पोदा जाय॥
१४ कयोंकी पनमेसन अपने लोगों को दुन न कनेगा,

१५ श्रौर अपने अधीकार के न तयागेगा। परंतु
धरम के लीये वीचार टपकेगा, श्रौर सारे पवरे
१६ श्रंतः करनी उसका पीछा करेंगे। मेरे लीये
दुसटों पर कौन उठेगा, मेरे लीये अधरमीयों का
१७ कौन सामना करेगा? जो परमेसर मेरा सहायक
न होता, तो तनीक था, की मेरा परान युपके में
१८ रहता। जब मैं ने कहा, की मेरा पांव फीसीलता
है, तब हे परमेसर, तेरी दया ने मुझे थाम लीया।
१९ मेरे मन की अधीकाइ की याती में तेरी सांती ने
२० मेरे परान के आनंदीत कीया। अधरम के
सींहासन, जो ब्रैवसथा के दुवारा बुराइ ठहराते
२१ हैं, तुझ से कुछ मेल है। वे धरमी के परान के बीरोध में एकठे होते हैं, श्रौर नीरदोष लोहू
२२ को दोषी ठहराते हैं॥ परंतु परमेसर मेरा
बचाव है, श्रौर मेरा इसर, मेरे सरन का पहाड़।
२३ वुह उनहीं का अधरम उनहीं पर लावेगा, श्रौर
उनकी दुसटता में उनहें काटडालेगा, हां, परमेसर
हमारा इसर उनहें काटडाले॥

९५ पंचानवेवां गीत।

१ आश्रो, हम परमेसर के लीये गावें, आश्रो हम
अपनी मुकत के पहाड़ के लीये आनंद का सबद

२ करें। आओ, हम धंनवाद करते हुए उसके
आगे जावें, और गान से आनंद का सबद करें॥
३ कयोंकी परमेसर महेसर है, और वुह सारे देवों
४ पर महाराज है। जीसके हाथ में पीरथीवी की
गहीराइयां हैं, पहाड़ों की उंचइयां भी उसी
५ की हैं। जीसका समुंदर है, और उसने उसे
बनाया, और उसी के हाथों ने सुष्पी का डौल
६ कीया॥ आओ हम दंडवत करें, और झुकें, और
७ अपने करता परमेसर के आगे घुठने टेकें। कयों-
की वुह हमारा ईसर है, और हम उसके झुंड
के लोग, और उसके हाथ की भेड़ें हैं, आज के दीन
८ जो तुम उसका सबद सुनोगे॥ तो अपने मन
को कठोर मत करो, जैसा झगड़े में और परीक्षा
९ के दीन बन में कीया। जब की तुमहारे पीतरों
ने मुझे परष्पा, और जांचा, और मेरा कारज
१० देष्पा। चालीस बरस लों मैं उस पीढ़ी से उदास
था, और मैं ने कहा, की ये वे हैं, जो अपने मन
से चूक करते हैं, और मेरे मारगों को न पहीं-
११ याना॥ उनके कारन मैं ने अपने करोध में
कीरीया खाई, की यदी वे रेरे चैन में परवेस
करें॥

९६ छयानवेवां गीत।

१ परमेसर के लीये नया गीत गाओ, सारी पीर-
२ थीवी परमेसर के लीये गावे। परमेसर का गान
करो, उसके नाम का धंन मानो, और परतीदीन
३ उसकी मुकत को परगट करो। अनदेसीयां में
उसकी महीमा का और सारे लोगों में उसके
४ आसचरजें का संदेस देउ॥ कयोंकी परमेसर
महान, और अतयंत सतुत के जोग है, सारे देव
५ से अधीक वुह भय के जोग है। कयोंकी जात-
गनें के सारे देव मुरत हैं, परंतु परमेसर ने
६ सरगों को सीरजा। परतीसटा और महीमा
उसके आगे हैं, बल और सुंदरता उसके धरम
७ धाम में॥ हे लोगो के परीवारो, परमेसर को
जानो, और पराकरम और महीमा परमेसरही
८ की जानो। परमेसर के नाम की बड़ाइ करो,
९ भेंट लेके उसके आंगनें में आओ। महीमा के
धरमधाम में परमेसर को भजो, हे सारी पीर-
१० थीवी, उसके आगे डरो। अनदेसीयों में कहो,
की परमेसर राज करता है, जगत भी सथीर
रहेगा, जीसतें वुह टलाया न जाय, वुह धरम से
११ लोगों का बीचार करेगा। सरग आनंद करें,
और पीरथीवी मगन होवे, समुंदर और उसकी

१२ अनपुनी हा हा करें ॥ खेत और जो उस में हैं,
आनंदीत होवें, तब बन के सारे पेड़ परमेसर के
१३ आगे आनंद करेंगे ॥ क्योंकी वुह आता है, वुह
पीरथीवी का नयाय करने को आता है, वुह
सचाइ से जगत का, और धरम से लोगों का
नयाय करेगा ।

९७ सतानवेवां गीत ॥

१ परमेसर राज करता है, पीरथीवी आनंदीत
२ होवे, बड़े बड़े टापु हरखीत होवें। मेघ और
अंधीयारे उस के आस पास हैं, धरम और नयाय
३ उसके सींहासन की सथीनता है ॥ एक आग
उसके आगे आगे जाती है, और उसके बैरीयों
४ को चारों ओर जलाती है। उसकी बीजुलीयों
ने जगत को उंजीयाला कीया, पीरथीवी ने देखा,
५ और थरथरा उठी ॥ पहाड़ परमेसर के आगे,
अरथात सारे जगत के परभु के आगे, मोम की
६ नाइं पीघल गये। सरग उसके धरम को परगट
करते हैं, और सारे लोग उसके बीभव को देखते
७ हैं। जो खोदी हुइ मुरतीन को पुजते हैं, और
परतीमा की बड़ाइ करते हैं, वे सब लदीया
८ जायें, सारे देवगन उसकी सेवा करो ॥ सैहुन ने

सुना, और मगन ऊइ, तेरे व्रीयाए के कारन; हे
परमेसर, यऊदा की वेटीयां आनंदीत ऊइ।
९ कयोंकी हे परमेसर, तु सारी पीरथीवी पर
महान है, तु सारे देवों से अतयंत वढ़ाया गया
१० है। हे परमेसर के परेमीयों, वुराइ से घीन
करो, वुह अपने सीधों के पराने की रछा करता
है, वही उनहें दुसटों के हाथ से छुड़ाता है।
११ घरमीयों के लीये उंजीयाला वोयागया है, और
१२ आनंदता प्यरे अंतःकरनीयों के लीये है॥ हे घर-
मीयो परमेसर से आनंदीत होओ, और उसकी
पवीतरता के समरन के लीये घंनवाद करो।

९८ अठानवेवां गीत।

१ परमेसर के लीये एक नया गीत गाओ, कयोंकी
उसने आसयरज कारज कीये हैं, उसके दहीने हाथ
२ और पवीतर भुजा ने उसे जय दीलाया है। पर-
मेसर ने अपनी मुकत को परगट कीया है,
उसने अपने घरम को अंनदेसीयों की दीसट
३ में परगट कीया है। उसने इसराइल के घराने
के लीये अपनी दया, और सचाइ को समरन
कीया हैं; पीरथीवी के सारे प्युटों ने हमारे इसर
४ की मुकत को देप्या है। हे सारी पीरथीवी पर-

मेसन के बीढ़े आनंद का सव़द कन, व़ड़ा सव़द
५ कन के आनंदीत हो, औान सतुत गा। व़ीना से
पनमेसन के बीढ़े गाओ, व़ीना से औान गान के
६ सव़द से गाओ। तुनी औान भेनी व़जाते ऊए
पनमेसन नाजा के आगे आनंद का सव़द कनो।
७ समुंदन औान उसकी भनपुनी हा हा कनें,
८ औान जगत, औान उसके नहनेवाले। व़ाढ़े तानी
व़जावें, औान पहाड़ीय़ां पनमेसन के आगे मील के
९ आनंदीत होवें॥ कय़ोंकी वुह पीनथींवी का नय़ाय़
कनने आता है, वुह घनम से जगत का औान
प्पनाइ से लोगों का नय़ाय़ कनेगा।

९९ नौंनानवेवां गीत।

१ पनमेसन नाज कनता है, लोग थनथनावें, वुह कनो-
व़ीय़ों के मघ में व़ैठा है, पीनथीवी डगमगावे।
२ पनमेसन सैऊन में महान है, औान साने लोगों से
३ व़ड़ा है। वे तेने व़ड़े, औान भय़ंकन पवीतन
४ नाम की सतुत कनें। नाजा का व़ल भी व़ीयान
से पीनीत नप्पता है, तु सयाइ को सथीन कनता
है, औान तु नय़ाय़ औान घनम य़ाकुव़ में कनता
५ है॥ पनमेसन हमाने इसन को व़ढाओ, औान
उसके यनन पन झुको, कय़ोंकी वुह पव़ीतन है

६ मुसा श्रीर हारुन उसके जाजकों में, श्रीर समुइल
उन में, जो उसके नाम लेते हैं, उनहें ने परमेसर
की परारथना की, श्रीर उसने उनहें उतर दीया।
७ वुह मेघ के थंभे में से उनसे बोला, उनहें ने उसकी
दी ऊइ, साखीग्रें श्रीर बीघ को पालन कीया॥
८ हे परमेसर हमारे इसर, तु ने उनहें उतर दीया
हे इसर, तु ने उन पर छमा कीया, यदपी तु ने
९ उनकी भावना का पलटा उनसे लीया॥ परमे-
सर हमारे इसर की बड़ाइ करो, श्रीर उसके पवी-
तर पहाड़ के आगे दंडवत करो, कयोंकी परमे-
सर हमारा इसर पवीतर है।

१०० सावां गीत।

सतुत का गीत।

१ हे सारी पीरथीवी, परमेसर के लीये आनंद का
२ सबद कर॥ आनंदता से परमेसर की सेवा कर,
३ गाते ऊए उसके आगे पऊंच। जाने, की परमे-
सर इसर है, हम ने आप को नहीं, परंतु उसी ने
हमें सीरजा, हम उसके लोग श्रीर उसकी चराइ
४ की भेड़ें हैं। धंनबाद करते ऊए उसके फाटकों
में, श्रीर सतुत करते ऊए उसके आंगनें में परवेस
करो; उसका धंन माने, उसके नाम का धंनबाद

५ करो॥ कहोंकी परमेसर भला है, उसकी दया
सदा है,श्रार उसकी सयाइ पोढ़ी से पीढ़ी लों है।

१०१ एकसैाएकवां गीत॥

दाऊद का गीत॥

१ मैं दया श्रार नयाय के वीप्पय में गाउंगा,
२ हे परमेसर,मैं तेरे श्रागे गाउंगा। मैं चैाकसी से
सोच मारग में चलुंगा, हाय तु मुह्न पास कव
श्रावेगा? मैं सोच मन से श्रपने घर में टहलुंगा॥
३ मैं श्रपनी श्रांप्पों के श्रागे वुरी वसतु को न रप्पुं-
गा, मैं भटके हुश्रों के कारज से वैर रप्पता हुं,
४ वुह मुह्न से पीलया न रहेगा। मुह्न से कुटील
श्रंतःकरन दुर होगा, मैं दुसट जन से श्रगयान
५ रहुंगा॥ जो छीप के श्रपने परोसी पर फुस
फुसाता है, मैं उसे नसट करुंगा, जो उंची दी-
रीसट श्रार श्रभीमानी मन रप्पता है, मैं उसको
न ६सहुंगा॥ मेरी श्रांप्पें पीरथीवी के वीसवसतों
पर होंगी, की वे मेरे संग रहें, जो सोच मारग में
७ चलता है, सो मेरी सेवा करेगा॥ जो छली है,
सो मेरे घर में न रहेगा, श्रार झुठा मेरे श्रागे
८ सथीर न होगा॥ मैं देस के सारे दुसटों को

सबेरे नास करुंगा, जब लों परमेसर के नगर से
सारे कुकरमीयों को काट न डालुं।

१०२ एकसौ दुसरा गीत।

दुखीया की परारथना जब वुह डबाया जाके परमेसर के आगे अपना दुख बरनन करता है।

१ हे परमेसर, मेरी परारथना सुन, और मेरा
२ रोना तेरे आगे पहुंचे। मेरे दुख में अपना मुंह
मुझ से न छीपा, मेरी ओर कान झुका, जीस दीन
३ मैं परारथना करुं, सीघर मुझे उतर दे॥ कयोंकी
की मेरे दीन धुऐं की नाईं मीट गए, और मेरी
४ हड्डीयां चुल्हे की नाईं जल गईं॥ मेरा मन
मारा गया, और घास की नाईं मुरझागया, यहां
५ लों की रोटी खाने का मुझे चेत नहीं। मेरे कराहने
के सबद से मेरी हड्डीयां मेरे मांस से सट
६ गईं। मैं बनैले गडुर के तुल हुआ, मैं अरन
७ का उल्लु बना। मैं जागता हुं, और गोरे की
८ नाईं छत पर एकेला हुं। मेरे बैरी दीन भर
मेरी नींदा करते हैं वे, जो मेरे बीरोध में
९ उनमत हैं, मेरे बीरोध में कीरया खाई है॥ मैं
रोटी की संती धुल फांकता हुं, और अपने पानी
१० में आंसु मीलाता हुं॥ तेरे जलजलाहट, और

कोप के कारन से, कयोंकी तु ने मुझे उठा लीया,
११ और दे मारा। मेरा वय छाया के समान घटता
है, और मैं हरयाली की नाइ मुरझाया हुं॥
१२ परंतु हे परमेसर, तु सदा लों वना रहेगा, और
१३ तेरा समरन पीढ़ी से पीढ़ी लों। तु उठेगा, और
सैहुन पर दया करेगा,कयोंकी उसकी कीरपा का
१४ समय,हां, उसका ठहराया समय पहुंचा है। कयों-
की तेरे सेवक उसके पथरों से मगन होते हैं, और
१५ उसकी धुल पर अनुगीरह करते हैं॥ अनदेसी
परमेसर के नाम से डरेंगे, और पीरथीवी के सारे
१६ राजा तेरी महीमा से। जव परमेसर सैहुन
को वनावेगा, तव वुह अपने ऐसरय में परगट
१७ होगा। वुह अनाथों की पराथना को वुझेगा,
और उनकी पराथना को तुछ न जानेगा॥
१८ अवैया पीढ़ी के लीये यह लीष्या जायगा, और
लोग, जो उतपंन होवेंगे, परमेसर की सतुत करेंगे।
१९ कयोंकी परमेसर ने अपने चरम धाम की उंचाइ
से झांका है, परमेसर ने सरग पर से पीरथीवी
२० पर देष्या॥ जीसतें वंधुऐ का कहरना सुने,
२१ जीसतें मीरतु के संतान को छुड़ावे। जीसतें वे
सैहुन में परमेसर का नाम परगट करें, और
२२ यीरोसलीम में उसकी सतुत करें। जव की लोग

औार नाज परमेसर की सेवा के लीये एकठे ऊए
२३ हैं॥ उसने मारग में मेरा व्रल घटादीया, और
२४ मेरी व्रय को घटाया॥ मैं ने कहा, हे मेरे ईसर,
मेरे दीनों के मघ में मुझे न उठाले, तेरे व्ररस
२५ सारी पीढ़ी लों हैं। तु ने आरंम में पीरथीवी की
नेवं डाली है, और सरग तेरे हाथों का कारज
२६ है॥ वे नास होयेंगे, परंतु तु सथीर रहेगा, हां,
वे सव व्रसतर की नाइं पुराने होजायेंगे, तु उनहें
पहीरावा की नाइं पलटडालेगा, और वे पलट
२७ जायेंगे॥ पर तु एकसां है, और तेरे व्ररसों का
२८ अंत नहीं॥ तेरे सेवकों के लड़के व्रने रहेंगे,
और उनके व्रंस तेरे आगे सथीर रहेंगे॥

१०३ एकसै तीसरा गीत।

दाउद का गीत॥

१ हे मेरे परान, परमेसर का धंन मान, और
सव, जो मुझ में हैं, उसके पवीतर नाम का धंन
२ मानें॥ हे मेरे परान, परमेसर का धंन मान,
और उसके सारे अनुग्रीरहों को मत भुल॥
३ वुह तेरे सारे अधरमों को छमा करता है, और
४ तेरे सारे रोगों को चंगा करता है। वुह तेरे
प्रान को नास से छुड़ाता है, वुह कोमल दया

और अती परेम का मुकुट तुझ पर रखता है॥
५ वुह तेरा मुंह भलाई से तीरीपत करता है, तेरी
६ तरुनाई गीध की नाईं नवीन होती है। परमे-
सर सारे सताये हुए के लीये धरम, और नीयाव
७ करता है। उसने अपने मारग मुसा को, और अपने
८ कारज इसराईल के संतानों को जनाया। परमे-
सर दयाल, और अनुगराहक, करोध में धीमा,
९ और दया में बड़ा है॥ वह सदा न ताड़ेगा, वह
१० सदा रीसयाता न रहेगा। उसने हमारे पापों
की नाईं हम से बेवहार नहीं कीया, और हमारे
११ अधरम के समान पलटा नहीं दीया॥ कयोंकी
पीरथीवी से सरग की उंचाई के समान उसके
१२ डरवैयों पर उसकी दया बड़ी है॥ जैसा पछीम
से पुरब दुर है, तैसा उसने हमारे पापों को हम
१३ से दुर कीया है। जैसा पीता अपने बालकों पर
मया करता है, तैसा परमेसर अपने डरवैयों पर
१४ मया करता है। कयोंकी वुह हमारे आकार
पहीचानता है, वुह समरन करता है, की हम
१५ धुल हैं। मनुष्य के दीन घास की नाईं हैं, वुह
१६ खेत के फुल की नाईं लहलहाता है। कयोंकी
पवन उस पर बहता है, और वुह नहीं है॥
१७।१८ और उसका सथान उसे न जानेगा॥ परंतु

पनमेसन की दया उसके डनवैयेों पन सनातन से
सनातन लों है, श्रीन जो उसके नीयम को घानन
कनते हैं, श्रीन उसकी श्चगयाश्रों को पालने के
लीये समनन कनते हैं, उसका घनम संतानों के
१९ संतानों पन है॥ पनमेसन ने सनग पन श्चपना
सींहासन सीघ कीया है, श्रीन उसका नाज सब
२० पन पनभुता कनता है॥ हे उसके दुतो ब्रल में
सामनथी, जो उसकी श्चगयाश्रों पन यलते हो,
श्रीन उसके वयन के सब्द को सुनते हो, पनमे-
२१ सन का घंन मानो। हे उसकी सानी सेनाश्रो
श्रीन उसके सेवको,जो उसकी इक्षा पन यलते हो,
२२ पनमेसन का घंन मानो। हे उसके सानेकानजो,
उसके नाज के साने सथानों में पनमेसन का घंन
मानो, हे मेने पनान,पनमेसन का घंन मान ॥

१०४ एक सैा योथा गीत ॥

१ हे मेने पनान, पनमेसन का घंन मान, हे पनमे-
सन मेने इसन, तु श्चती महान,तु पनतीसठा श्रीन
२ एसनय से ब्रोभुसीत है ॥ जो ब्रसतन की
नाइं जोत को श्रोढ़ता है, श्रीन सनगों को घुंघट
३ की नाइं फैलाता है। जो श्चपनी कोठनीयों

की कौननों को पानीयों पन नप्पता है, ग्रैान मेघों
को ग्रपना नथ वनाता, ग्रैान पवन के डैनों पन
४ चलता है ॥ जो ग्रपने दुतों को ग्रातमा, ग्रैान
ग्रपने सेवकों को ग्राग को लवन वनाता है ॥
५ जीसने पीनथीवी को उसकी नेंव के ग्राधानों पन
६ नप्पा है, की वुह कभी टलाइ न जाय़ ॥ तु ने
उसे वसतन की नाइं गहीनाव से ढांपा, ग्रैान
७ पानी पहाड़ों के उपन ठहन गय़े ॥ वे तेने दपट
से भाग गय़े, ग्रैान तेने गनजन के सवद से हट
८ जाते नहे ॥ वे पहाड़ के उपन जाते हैं, ग्रैान
तनाइ के लग उस सथान में, जीसे तु ने उनके
९ लीय़े वनाय़ा, जाते हैं ॥ तु ने ऐसा सीवाना
वांधा है, की वे उस से पान नहीं जा सकते, ग्रैान
१० पीनथीवी को फीन के ढांप नहीं लेते ॥ जो
सोतों को नीचाइ में भेजता है, जो पहाड़ों में
११ वहते हैं । वे खेत के हन ऐक पसुन को पीलाते
हैं, वनैले गदहे उनसे ग्रपनी पीय़ास मीटाते हैं ॥
१२ उनके ग्रास पास ग्राकास के पंछी वसेंगे, जो डाल
१३ डाल पन चहचहाते हैं । वुह ग्रपनी कोठनीय़ों
से पनवतों को सींचता है, ग्रैान तेने कानज के
१४ फलों से पीनथीवी तीनीपत है । पसु के लीय़े
घास, ग्रैान मनुष्य की सेवा के लीय़े हनय़ाली वही

उगाता है, जीसतें वुह उनके लीये पीनथीवी से
१५ खाहान उतपंन कने॥ औान मदीना, जो मनुष्य
के मन को मगन कनती है, औान यीकनाइ, जो
मुंह को यमकाती है, औान नोटी, जो मनुष्य के
१६ मन को व्रल देती है॥ पनमेसन के पेड़ खनयात
१७ लव्रनान के सनो, जो उसने लगाये। जीस में
पंछी घोंते व्रनाते हैं, औान व्रकुला का व्रास देव-
१८ दानु पेड़ों पन है, नस से ऊनपुन है। उंये पहाड़
व्रन व्रकनीयों के लीये, औान घनहों के लीये पनव्रत
१९ सनन है॥ वुह नीतुन के लीये यंदनमा को
ठहनाता है, औान सुनज खपना खसत होना पही-
२० यानता है। तु खंधीयाना कनता है, औान नात
२१ होती है, जीस में सानेव्रन पसु फीनते हैं। सींह
व्रये खपने खहेन के लीये गनजते हैं, औान इसन
२२ से अपना आहान ढुंढते हैं। सुनज उदय होते
ही वे एकठे होते हैं, औान अपनी अपनी मांदों
२३ में जा व्रैठते हैं। मनुष्य अपने कानज के लीये,
औान खपने पनीसनम के लीये सांझ लों व्राहन
२४ नीकलता है॥ हे पनमेसन तेनी नयना कयाही
व्रङन है, तु ने उन सभों को वुघ से व्रनाया है,
२५ पीनथीवी तेने धंन से पुनन है। यह ऐसा व्रड़ा,
औान योड़ा समुंदन है, जीस में अगनीत नेंगवैये

२६ छोटे बड़े जंतु हैं। उस में जहाज़ें चलती हैं, और
तू ने लिवियातान को उस में कलोल करने को
२७ बनाया है। ये सब तेरी ओर तकते हैं, जीसतें
२८ तू समय पर उनका आहार पहुंचावे। जो तू
उनहें देता है, सो वे लेते हैं, तू अपनी मुठी
खोलता है, तो वे उतम वसतु से तीरीपत होते
२९ हैं। तू अपना मुंह छीपाता है, वे दुखी होते हैं,
तू उनके सांस को फेर लेता है, वे मर जाते हैं,
३० और अपनी धुल में फीर जाते हैं। तू अपने
आतमा को भेजता है, वे उतपंन होते हैं, और
३१ पीरथीवी के सरुप को नवीन करता है। परमेसर
का ऐसरय सरवदा होवेगा, परमेसर अपनी कीरपा
३२ से आनंदीत होगा। वुह पीरथीवी को देखता है,
और वुह थरथराती है, वुह पहाड़ों को छुता है,
३३ और उनसे धुआं उठते हैं। मैं तो जब लों जीता
रहुंगा, तब लों परमेसर की सतुत करुंगा, मैं
जब ताइं जीता रहुंगा, परमेसर को सराहता
३४ रहुंगा। मेरा धयान उसके बीषय में कयाही
३५ मीठा है, मैं परमेसर से आनंदीत होउंगा। पापी
भुम पर से नास हो जावें, और दुसट न होवें,
हे मेरे पराण, परमेसर का धंन मान, परमेसर
की सतुत करो।

१०५ ऐक सै। पांयवां गीत।

१ पनमेसन का धंन मानो, औन उसका नाम लेओ,
औन लोगों में उसके कानजों को व्रनन कनो।
२ उसका गीत गाओ, उसकी सतुत गाओ, उसके सव्र
३ आसयनज कानजों की यनया कनो॥ उसके
पवीतन नाम की व्रड़ाइ कनो, पनमेसन के खो-
४ जाओं का मन आनंदीत होवे। पनमेसन को
औन उसके व्रल को ढूंढो, सदा उसके नुप को
५ ढुंढो। हे उसके दास इव्रनाहीम के व्रंस, औन
उसके युने ज़ुऐ य़ाकुव्र के घनाने, उसके आस-
यनज कानज, औन आसयनजों को, जो उसने
कीये हैं; औन उस के मुंह के व्रीयान का समनन
७ कनो। वही पनमेसन हमाना इसन है, औन
८ सानी पीनथीवी में उसका नय़ाय़ है। उसने अपने
नीय़म को, औन उस व्रयन को, जो उसने सह-
९ सन पीढ़ीय़ों से कहा, येत नख्खो। जो उसने इव्र-
नाहीम से कीय़ा, औन इसहाक से कीनीय़ा
१० खाइ। औन उसे उसने य़ाकुव्र को व्रैवसथा के
लीय़े, औन इसनाइल के लीय़े सनव्रदा के नीय़म
११ के कानन ठहनाके कहा॥ की मैं कीनान की
भुम तुझे देउंगा, य़ह तेने अघीकान का भाग है।
१२ जव्र की वे गीनती में थोड़े थे, हां, व्रहुत थोड़े,

१३ और उस में परदेसी थे । जब वे देस देस,
१४ और राज राज में फिरा कीये । तब उसने
कीसी को उनहें सताने न दीया, हां, उसने उनके
१५ लीये राजाओं को यों डपटा ॥ कि मेरे अभी-
सकत को मत छुओ, और मेरे भवीसदवकतों को
१६ न सताओ । और वुह उस देस पर अकाल लाया,
१७ उसने रोटी के सारे टेक को तोड़ा । उसने उन
के आगे ऐक मनुष्य, अरथात यूसफ को भेजा,
१८ जो दास होने के लीये बेचा गया । जीसके पाओं
को उनहों ने सीकरों से दुख दीया, उसका
१९ पराण लोहे में पड़ा । जब लों परमेसर का बचन
२० पूरा न हुआ, उसके बचन ने उसे परखा । राजा
ने भेज के उसे छुड़ाया, लोगों के अधक्ष ने उसे
२१ छोड़ दीया । उसने उसे अपने घर, और अपने
२२ सारे अधीकार पर परधान कीया ॥ कि उसके
अधक्षों को मनमंता बांध डाले, और उसके मंत-
२३ रीयों को बुध सीखलावे । इसराइल भी मीसर
में आया, और याकूब हाम के देस में टीका ॥
२४ और उसने अपने लोगों को बहुत बढ़ाया, और
२५ उनहें उनके बैरीयों से बलवान कीया ॥ अपने
लोगों से और अपने सेवकों से चतुराई से बेवहार
२६ करने को उसने उनके मन को फेरा ॥ उसने

अपने दास मुसा को और अपने चुने ऊए हारुन
२७ को भेजा॥ उन्होंने उनके मध में व्रयन के
चीन्ह और हाम के देस में आसचर्ज दीष्पाये।
२८ उसने अंधीआरा भेजा, सो अंधीआरा ऊआ;
२९ और वे उसके व्रयन से फीर न गये॥ उसने
उनके पानीओं को लऊ व्रनाया, और उनकी
३० मछलीओं को मार डाला। उनके देस ने उनके
राजाओं की कोठरीओं में व्रऊत से मेढ़क उपजाये।
३१ उसने अगया की, और नाना प्रकार की मष्षी-
यां, और जुंइं उनके सारे सीवानों में आइं॥
३२ उसने मेंह की संती उन्हें ओले, और उनके देस
३३ में व्रलती आग दी॥ उसने उनके दाष्प, और
गुलर पेड़ को वीनास कीया, और उनके सीवानों
३४ के पेड़ों को तोड़ डाला॥ उसने अगया की, और
३५ टीडीयां और असंष्प कीड़े नीकले। और वे उन
की भुम की सारी हरयालीयां ष्पा गइं, और
३६ उनके देस के फल भछन कर गइं। उसने उनके
देस में सारे पहीलौठों को उनके व्रल के प्रधान
३७ को मारा। और वुह उन्हें सोना चांदी सहीत
नीकाल लाया, और उनकी गोसटीयों में एक भी
३८ दुरव्रल न था। उनके नीकल जाने से मीसर
आनंदीत ऊआ, कयोंकी उनका भय उन पर पड़ा

३९ था। उसने ढांपने के लीये एक मेघ फैलाया,
४० और रात के उंजीयाले के लीये आग दी। उन्हें
ने मांगा, और वुह बटेर लाया, और उनको
४१ स्वर्गीय रोटीयों से तीरीपत कीया॥ उसने
पथर खोला, और पानी बहीयला, पानी नदी
४२ की नाईं सुखी भुम पर बहा। कयोंकी उसने
अपने पवीत्र बचन को, और अपने दास इब्रा-
४३ हीम को समरन कीया॥ वुह अपने सेवकों को
आनंद के संग, और अपने चुने हुए को गाते
४४ बजाते नीकाल लाया। उसने उन्हें अनदेसीयों
का देस दीया, उन्हें ने लोगों के परीसरम को
४५ अधीकार में पाया॥ जीसतें वे उसकी बीध को
मानें, और उसकी बेवसथा को पालें परमेस्वर का
धन मानो।

१०६ एक सौ छठवां गीत।

१ परमेस्वर की सतुत करो, परमेस्वर का धंन
मानो, कयोंकी वुह भला है, और उसकी दया
२ सदा है॥ कौन परमेस्वर के पराकरम के कारजें
को बरनन करता है? उसकी सारी सतुत कौन
३ करसता हैं? जो बीयाय को पालन करते हैं,
४ और जो नीत धरम करता है, सो धंन॥ अपने

लोगों के अनुग्रीनह से हे परमेसर मुझे समरन
५ कर, हां, मुझ से भेंट कर॥ जीसतें मैं तेरे चुने
हुओं की भलाइ देखों, और तेरे लोगों के आनंद
में आनंदीत होउं, और तेरे अधीकार के संग
६ बड़ाइ करुं॥ हम ने अपने पीतरों की नाइं पाप
कीया है, हम से अधरम हुआ है, हम ने दुसटता
७ की है॥ हमारे पीतरों ने मीसर में तेरे आस-
चरजों को न समझा उनहों ने तेरे दया की
अधीकाइ को समरन न कीया, परंतु समुंदर पर,
८ अरथात लाल समुंदर पर तुझे खीजाया। तथा-
पी उसने अपने नाम के लीये उनहें बचाया,
० जीसतें वुह अपने बड़े पराक्रम को जनावे। उस
ने लाल समुंदर को भी दपटा, और वुह सुख
गया, वुह उनहें गहीरापे में से, जैसा बन में से
१० पार ले गया। सतरु के हाथ से उसने उनहें
१२ बचाया, और बैरी के हाथों से छुड़ाया। पानीयों
ने उनके बैरीयों को ढांप लीया, उन में से ऐक
१२ भी न बचा। तब वे उसकी बातों पर बीसवास
१३ लाये, उनहों ने उसकी सतुत गाइ॥ वे झट उस
के कारजों को भुल गये, उनहों ने उसके मंतर
१४ की बाट न जोही॥ परंतु उनहों ने बन में
१५ कुइच्छा की, और बन में इसर को परख्या॥ उस

ने उनकी बांछा पुरी की; परंतु उनके पराण
१६ में दुरबलता भेजी। उन्हों ने तंबु में मुसा पर,
और परमेसर के सीध हारुन पर डाह कीया।
१७ सो पीरथीवी फटी, और दासान को नींगल गई,
१८ और अबीराम की जथा को ढांप लीया॥ और
उनकी जथा में आग बरी, उस लवर ने दुसटों को
१९ भसम कीया॥ उनहों ने होरेब में ऐक बछीया
बनाई, और ढाली ऊई मुरत के आगे दंडवत
२० की॥ इसी रीत से उनहों ने उसके ऐसरज को
ऐक बैल की मुरत से, जो घास खाता है, बदल
२१ डाला॥ वे अपने मुकतदाता इसर को जीस ने
२२ मीसर में बड़े बड़े कारज कीये, भुल गये। और
आसचरज कारज हाम के देस में, और भयंकर
२३ कारज लाल समुंदर पर। इस लीये उसने कहा,
की मैं उनहें नास करुंगा, यदी उसका चुना ऊआ
मुसा उस दरार में उसके आगे न खड़ा होता,
कीसतें उसके कोप को फेरे, न होवे, की वुह नास
२४ कर डाले। हां उनहों ने मनोरीत भुम को तुछ
जाना, वे उसके बचन पर बीसवास न लाये॥
२५ परंतु अपने तंबु में कुड़कुड़ाये, और परमेसर के
२६ सबद के सरोता न ऊऐ॥ तब उसने अपना हाथ
उनके बीरोध में उठाया, की उनहें बन में गीरा

२७ दे। श्रोर उनके वंस को भी जातगनों में गीना
२८ दे, श्रोर उनहें देसों में वीथरावे॥ वे एकठे हो
के बाश्रालपराउर से भी मील गये, श्रोर मीरतकों
२९ के बलीदान खाने लगे। यों उनहों ने श्रपनी
चालों से उसे खीजा के रीसाया, श्रोर मरी उन में
३० पैठी। उस समय में फीनहास खड़ा ऊश्रा, श्रोर
३१ उसने नयाय कीया, सो मरी थम गई। श्रोर
यह उसके लीये पीढ़ी से पीढ़ी लों सनवदा के
३२ लीये धरम गीनागया॥ उनहों ने फीर उसे
झगड़े के पानीयों पर भी रीसाया, यहां लों की
३३ उनके कारन मुसा का बुरा ऊश्रा। कयोंकी उन-
हों ने उसके श्रातमा को खीजाया, ऐसा की वह
३४ श्रपने होंठों से श्रनुचीत बोला॥ उनहों ने उन
जातगनों को जीनके बीषय में परमेसर की
३५ श्रगया ऊई, नास न कीया। परंतु श्रनदेसीयों
३६ में मील गये, श्रोर उनके कारज सीखे॥ श्रोर
उनहों ने उनकी मुरतीन की सेवा की, जो उनके
३७ लीये फंदा ऊश्रा। उनहों ने तो श्रपने बेटों
श्रोर श्रपनी बेटीयों को पीसाचों के लीये बली-
३८ दान कीया। श्रोर नीरदोख लोऊ को, श्रनथात
श्रपने बेटों श्रोर श्रपनी बेटीयों को घात कीया,
की उनहों ने उनको कीनान की मुरतीन के श्रागे

व्रत कीया, और देस लोहू से असुच हुआ॥
३९ यों वे अपने कारजों में अपवीतर हुए, और
४० अपनी अपनी भावना से वैभीचार कीया॥ तब
परमेसर का क्रोध अपने लोगों पर भड़का, ऐसा
४१ की उसने अपने अधीकार से घीन कीया॥ और
उसने उनहें अनदेसीयों के हाथ में कर दीया, सो
४२ उनके वैरीयों ने उन पर परभुता की॥ उनके
सतरुन ने भी उनहें सताया, और वे उनके हाथ
४३ के बस में होगये॥ उसने कई बार उनहें छुड़ाया,
परंतु उनहों ने अपने परामरस से उसे खीजाया,
और अपने अधरम के कारन दीन हीन हो गये।
४४ तथापी उसने उनका रोना सुनतेही उनके दुख
४५ को बुझा। उसने उनके लीये अपनी बाचा को
समरन कीया, और अपनी दया की अधीकाई
४६ के समान पछताया। उसने ऐसा कीया, की उन
सभों ने भी, जो उनहें बंधुआ करके ले गये, उन
४७ पर मया की॥ हे परमेसर हमारे ईसर, हमें
बचा, और हमें अनदेसीयों में से बटोर, जीसतें
तेरे पवीतर नाम का धंनबाद करें; और तेरी
४८ सतुत में आनंदीत होवें॥ परमेसर ईसराईल
का ईसर सनातन से सनातन लों धंन, और सारे
लोग बोलें, आमीन, परमेसर का धंनबाद करो।

१०७ एक सौ सातवां गीत।

१ पनमेसन का धंन मानो, कयोंकी वुह अचा है,
२ औान उसकी दया सदा है॥ पनमेसन के तानीत
यों कहें, जीनहें उसने वैनीयों के हाथ से छुड़ाया
३ है। औान उनहें देसों से एकठा कीया, पछीम,
४ औान पुनव, उतन, औान समुंदन से॥ वे वन में
सुने मानग में अनमते थे, औान उनहें कोइ वसाव
५ के लीये नगन न मीलता था॥ भुखे पयासे उन-
६ का पनान सुनछीत था॥ तव उनहों ने अपनी वी-
पत में पनमेसन को पकाना, उसने उनके कलेसों
७ से उनहें छुड़ाया॥ औान वुह उनहें सीधे पथ में
ले गया, जीसतें वे वसाव के नगन में पहुंचे॥
८ उसकी भलाइ के, औान मनुष्य के संतानों पन
उसके आसयनज कानजों के लीये हाय, की
मनुष्य के संतान पनमेसन की सतुत कनते।
९ कयोंकी वुह लालसीत पनानी को तीनीपत कन-
ता है, औान भुखे पनानी को संतुसट कनता है॥
१० जो दुष्य औान लोहे से वंधायमान होके अंधेन में,
११ औान मीनतु की छाया में वैठे हैं। कयोंकी वे
इसन के वचन से फीन गये, औान अती महान
१२ के मंतन को तुछ जाना। इस लीये उसने उनके
अंतःकनन को पनीसनम से घटाया, वे गीन पड़े,

१३ और कोई सहायक न था॥ तब अपनी बिपत
में उन्हों ने परमेसर को पुकारा, और उसने
१४ उन्हें उनके कलेसों से छुड़ाया। उसने उन्हें
अंधेयारे और मीरतु की छाया से बाहर नीका-
१५ ला, और उनके बंधनों को तोड़ डाला॥ उस-
की भलाई के लीये, और मनुष्य के संतानों पर
उसके आसचरज कारजों के लीये हाय, की
१६ मनुष्य परमेसर की सतुत करते॥ कयोंकी उस-
ने पीतल के फाटकों को तोड़ा है, और लोहे के
१७ अड़ंगों को काटा॥ मुरख्य लोग अपने अपराध
१८ से, और अधरम से कसटीत हैं॥ उनका पराण
हर परकार के भोजन से घीन करता है, और
वे मीरतु के फाटकों के लग आ पहुंचते हैं॥
१९ तब वे अपनी बिपत में परमेसर को पुकारते हैं,
और वुह उन्हें उनके कलेसों से छुड़ाता है॥
२० उसने अपना बचन भेज के उन्हें चंगा कीया,
२१ और उनके नासों से उन्हें छुड़ाया॥ उसकी
भलाई के लीये मनुष्य के संतानों पर, और उस
के आसचरज कारजों के लीये हाय, की मनुष्य
२२ परमेसर की सतुत करते॥ वे धंनबाद का बल
चढ़ावें, और गाते हुए उसके कारजों का बरनन
२३ करें॥ जो जहाजों में समुंदर पर जाते हैं, जो

२४ वड़े पानीयें में कानज नप्पते हैं। वे हीं पनमे-
सन के कानजें का, ग्रैान गंभीन में उसके ग्रास-
२५ यनजें का देप्पते हैं॥ कयोंकी वुह ग्रगया
कनता है, ग्रैान ग्रांघी उठाता है, जे उसकी
२६ लहनें उठाती है॥ वे सनग लें यढ़ते हैं, ग्रैान
फीन गंभीन में उतनते हैं, उनका पनान दुप्प के
२७ माने गल जाता है। वे मतवाले की नाइं डगम-
गाते फीनते हैं, उनके गयान संपुनन लोप हो
२८ गये हैं॥ तव वे ग्रपनी वीपत में पनमेसन के
पुकानते हैं, ग्रैान वुह उनके कसटें से उनहें
२९ छुड़ाता है॥ वुह ग्रांघी को सथीन कनता है,
३० ग्रैसा की उसकी लहनें थमजाती हैं॥ तव येन
मीलने के कानन वे ग्रानंदीत होते हैं, सो जीस
घाट में वे जाया याहते हैं, वुह उनहें वे पऊंया-
३१ ता है। उसकी भलाइ के लीये, ग्रैान मनुप्पें के
संतानें पन उसके ग्रासयनज कानजें के लीये
३२ हाय, की मनुप्प पनमेसन की सतुत कनते॥ लोगें
की मंडली में भी वे उसे वढ़ावें, ग्रैान पनायीनें
३३ की सभा में उसकी सतुत कनें॥ वुह नदीयें को
वन, ग्रैान पानी के सोतें को सुप्पी भुम वना-
३४ डालता है॥ वसवैये की दुसटता के कानन से
३५ वुह फलवंत देस का नोन प्पान वनाता है॥ वुह

व्रन को हीत, श्रौर सुष्वी भुम को घोते व्रनाता
३६ है। वहां वुह भुष्वों को व्रसाता है, जीसतें वे
३७ व्रसाव के लीये नगन सीघ करें। श्रौर प्वेती
करें, श्रौर दाप्पों की व्रानी लगावें, जो व्रढ़ती
३८ का फल उगावे॥ वुह उनहें भी श्रासीस देता है,
सो वे व्रज्ञत व्रढ़ जाते हैं, श्रौर उनके पसु को
३९ घटने नहीं देता। वे श्रंघेर, श्रौर व्रीपत, श्रौर
सोक के मारे दीन हीन होते हैं, श्रौर घट जाते
४० हैं। वुह श्रघकों को तुछ करता है, श्रौर श्रपथ
४१ श्रनंन में उनहें भ्रमाता है॥ तव्र वुह कंगाल
को दुष्वों से उभाड़ता है, श्रौर हुंड की नाई
४२ उसका घराना व्रनाता है। घरमी देष्वेंगे, श्रौर
श्रानंदीत होंगे, श्रौर सारा श्रघरम श्रपना मुंह
४३ व्रंद करेगा। वुघमान कौन है, जो इन व्रसतुन
का सोय करेगा? वे ही परमेसर की कोमल दया
को समहेंगे।

१०८ एक सौ श्राठवां गीत॥

दाउद का गान श्रथवा गीत॥

१ हे इसर मेरा मन लैस है, मैं श्रपने व्रीभव के
२ संग गाउंगा, श्रौर सतुत करुंगा॥ जाग हे नवल,

३ ऋोन व़ीना, मैं ऋोन को जागुंगा॥ हे पननेसन,
मैं लोगों के मघ में तेनी सतुत कनुंगा, ऋोन
४ देस गनों में तेनी सतुत गाउंगा। कय़ोंकी तेनी
दय़ा सनगों से उंयी है, ऋोन तेनी सयाइ मेघ
५ लों पऊंयती है। हे इसन, तु सनगों से उपन
व़ढ़ाय़ा जा, ऋोन तेना व़ीभव सानी पीनथीवी से
६ उपन। जीसतें तेना पीनीय़ छुड़ाय़ा जाय़,
ऋपने दहीने हाथ से व़या, ऋोन मेनी सुन।
७ इसन ने ऋपनी पवीतनता में कहा है, की मैं
ऋानंदीत होउंगा, मैं सप्पीम को व़ीभाग कनुंगा,
८ ऋोन सकुस की तनाइ को नापुंगा। गीलीय़ाद
मेना, मनसा मेना, ऋफनाय़म भी मेने सीन का
९ व़ल है, य़ऊदा मेना व़ैवसथा दाय़क। मवाव़
मेने घोने का पातन, ऋदुम पन मैं ऋपनी जुती
यलाउंगा; फलसतीय़ा पन मैं जय़ सव़द कनुंगा।
१० दीनढ़ नगन में कौन मुझे ले जाय़गा; ऋदुम में
११ मुझे कौन पऊंयावेगा? हे इसन, कय़ा तु नहीं,
जीसने हमें तय़ागा है, हे इसन, तु कय़ा हमानी
१२ सेनाऋों के संग न यलेगा? दुप्प से हमें व़या,
१३ कय़ोंकी मनुप्प की सहाय़ व़ीनथा है। इसन से
हम सुनता कनेंगे, कय़ोंकी वही हमाने व़ैनीय़ों को
नौंद डालेगा।

१०९ एक सा नैावां गीत॥

परधान बजनीये के पास दाउद का गीत।

१।२ हे मेरे सतुत के ईसर चुप मत हो। क्योंकी दुसटों और छल का मुंह मेरे बीरुध खुला
३ है, वे झुठी बातें मेरे बीरुध में कहते हैं॥ उनहों ने बैर की बातों से मुझे घेर लीया हैं, और
४ वे अकारन मुझ से लड़ते हैं। वे मेरे परेम की संती मेरे बैरी हैं, परंतु मैं पराथना करता हूं।
५ उनहों ने मेरी भलाई की संती बुरा ई और मेरे
६ परेम की संती बैर का पलटा दीया है। तु एक दुसट जन को उस पर ठहरा, और उसके दहीने
७ हाथ में सैतान को खड़ा कर॥ जब उसका बीयान कीया जावे, तो वुह दोखी ठहरे, और उस
८ की पराथना पाप होवे। उसके दीन थोड़े होवें,
९ उसका पद दुसरा लेवे। उसके संतान अनाथ,
१० और उसकी इसतीरी रांड होवे। उसके संतान नीत बहेतु होके भीख मांगें, वे उजाड़ों में ढुंढते
११ फीरें॥ उसका सब कुछ लीयोनी लेवें, और
१२ परदेसी उसके परीसरम को लुट लेवें। कोई उस पर दया न करे, उसके अनाथ संतानों पर
१३ कोई अनुग्रीनह न करे। उसके परीवार काटे

जायें, और उनका नाम अवैया पीढ़ी में मीटाया
१४ जाय॥ उसके पीतरों के अघनम परमेसर के
आगे समरन कीये जायें, और उसकी माता का पाप
१५ मीटाया न जाय। वे परमेसर के आगे नीत रहें,
जीसतें वुह उसका समरन पीरथीवी पर से
१६ काटडाले। कयोंकी उसने दया करने को समरन
न कीया, परंतु उसने दरीदर और दीन हीन
को सताया जीसतें टुटे अंतःकरन को मार डाले॥
१७ जैसा उसने सराप को याहा, तैसा उस पर आ
पड़े, और जैसा वुह आसीस से उदास रहा, तैसा
१८ वुह उस से दुर रहे॥ जैसा उसने सराप को वसतर
की नाइं पहीन लीया, तैसा वुह पानी की नाइं
उसकी अंतड़ीयों में, और तेल की नाइं उसकी
१९ हडीयों में पैठे॥ वुह उसके लीये ऐसा होवे,
जैसे वसतर, जो उसे छीपा लेता है, और जैसे
पटुका, जो सदा उसकी कट में लीपटा रहता है।
२० परमेसर की ओर से मेरे वैरीयों का, और उनका,
जो मेरे परान के वीरोध में वुरा कहते हैं, यह
२१ पलटा होगा॥ पर हे परमेसर इसर, अपने
नाम के लीये दया कर, की तेरी दया अछी है,
२१ तु मुझे छुड़ा दे। कयोंकी मैं कंगाल और दीन
२२ ऊं, और मेरा अंतःकरन मुझ में घायल है। मैं

ढलती हुई छाया की नाईं जाता रहा; मैं टीड्डी
२४ की नाईं चंचल हुं। मेरे घुठने उपवास से नीर-
बल हो गये, और मेरे मास में चीकनाई न रही।
२५ मैं उनके लीये नींनदा हुआ, वे मुझे देखते हैं,
२६ और सीर हीलाते हैं। हे परमेसर मेरे ईसर,
मेरी सहाय कर, अपनी दया के समान मुझे मुकती
२७ दे। जीसतें वे जानें, की यह तेरा हाथ है, और
२८ तुझ परमेसर ने यह कीया है। वे सराप देवें,
पर तु आसीस दे; जब वे उठें, तो लजीत हो जावें,
२९ पर तेरा सेवक आनंदीत होवे॥ मेरे बैरी को
लाज का बसतर पहीना, और उनहें घबराहट
३० की चादर उढ़ा॥ मैं अपने मुंह से परमेसर की
अतद्यंत सतुत करुंगा, मैं मंडली में उसकी सतुत
३१ करुंगा। कयोंकी वुह कंगाल के दहीने हाथ
खड़ा होगा, जीसतें उसे उसके पराण के बीया-
धीयों से छुड़ावे।

११० एक सौ दसवां गीत।

दाउद का गीत।

१ परमेसर ने मेरे परभु को कहा, की
तु मेरे दहीने हाथ बैठ, जब लों मैं तेरे बैरीयों
२ को तेरे चरन का पीढ़ा करुं॥ परमेसर बल

का नाज दंड सैहून में से भेजेगा, तु अपने वैनीयों
३ के मघ में पनभुता कन। तेने लोग तेने सामनथ
के दीन पवीतनता के सौंदनज में मन मनता वल
होंगे, औान तेनी तनुनाइ की ओास वीहान की
४ कोप्प से अधीक होगी॥ पनमेसन ने कीनीया
प्याइ है, औान वुह न पछतावेगा, की तु मलीके-
५ सीदक की पांती में सदा याजक है॥ पनभु अपने
कनोध के दीन तेने दहीने हाथ नाजाओं को दे
६ मानेगा॥ वुह अन देसीयों के मघ में वीयान
कनके लोथों से पुनन कनेगा, वुह वहुत से देसों
७ पन सीन को घायल कनेगा। वुह मानग में नाली
से पीयेगा, इसी लीये वुह सीन उठावेगा।

१११ एक सौ गयानहवां गीत॥

१ पनमेसन की सतुत कनो, मैं प्यनों की सभा
में औान मंडली में, मैं साने मन से पनमेसन की
२ सतुत कनुंगा॥ पनमेसन के कानज महान हैं,
३ जो उस से आनंदीत हैं, सो उसे ढुंढते हैं। उसका
कानज पनतीसठीत, औान ऐसनयमान है, औान
४ उसका धनम सनवदा लों नहता है। उसने अपना
आसयनज कानज समनन कनवाया है, पनमेसन
५ कीनपाल, औान दया से पनन है॥ उसने अपने

डरवैयों को भोजन दीया है, वुह अपनी बाचा
६ को सदा मन में रक्खेगा। उसने अपने कारजों
का बल अपने लोगों को दिखलाया है, जिसतें
७ वुह उन्हें अनदेसियों का अधिकार देवे॥ उस
के हाथों की क्रिया सतता, और बिचार हैं, उस
८ की सारी आज्ञा सत हैं। वे सदा और सदा के
लिये स्थिर हैं, वे सचाई और खराई से किये
९ गये हैं। उसने अपने लोगों के लिये मुकत भेजी,
अपनी बाचा को सदा के लिये आज्ञा की है,
१० उसका नाम पवित्र और भयानक है। परमे-
श्वर का भय ग्यान का आरंभ है, और जो उन्हें
मानते हैं, उनकी बुध उस पर कारज करती है,
स्तुति सदा उसी के लिये है॥

११२ एक सौ बारहवां गीत ॥

१ ईश्वर की स्तुति करो, जो परमेश्वर से डरता है,
और उसकी आज्ञाओं से अत्यंत आनंदित है,
२ सो धन्य है। उसका बंस पृथिवी पर बलवंत
३ होगा, खरों के संतान आसीसित होंगे॥ उसके
घर में धन और संपत होगी, और उसका धर्म्म
४ सदा रहता है॥ खरों के लिये अंधियारे में
उंजियाला चमकता है, वुह कृपाल, और दया से

५ पुनन श्रोन घनमी है। उतम मनुप्प अनगीनह
कनके नीन देता है, वुह अपने कानजों के व्रीयान
६ के साथ सुघानता है॥ नीसयद्य वुह कभी टखा-
७ य़ा न जाय़गा। घनमी सदा समनन कीय़ा जाय़-
गा, वुह कुसमायान से भय़ न कनेगा, उसका मन
८ दीनढ़ है, उसका भनोसा पनमेसन पन है॥ उस
का मन सथीन है, जव लों वुह अपनी इछा व्रैनी
९ पन न देप्पे वुह न डनेगा। उसने व्रीथनाय़ा है,
उसने कंगालों का दीय़ा है, उसका घनम सदा लों
नहता है, उसका सींग पनतीसठा से उठाय़ा जाय़
१० गा॥ दुसट देप्पेगा, श्रोन कुढ़ेगा, श्रोन दांत
कीड़मीड़ावेगा, श्रोन गल जाय़गा, दुसटों का
अभीलास नास होजाय़गा।

११३ एक सो तेनहवां गीत॥

१ पनमेसन की सतुत कनो, हे पनमेसन के दासो, उस
की सतुत कनो, पनमेसन के नाम की सतुत कनो।
२ पनमेसन का नाम इस घड़ी से सदा लों घंन होवे।
३ सुनज के उदय़ से लेके उसके असत लों पनमेसन
४ के नाम की सतुत होय़॥ पनमेसन सानेजात-
गनों पन महान है, श्रोन उसका एेसनय़ सनगों
५ से उपन है। पनमेसन हमाने इसन की नाइं

कैान है, जो नहने के लीये अपने को उभाड़ता
६ है॥ जो सनग अैान पीनथीवी पन द्रीनीसट कनने
७ के लीये आप को दीन कनता है॥ वुह कंगालों
को घुल में से उभाड़ता है, अैान दीन को घुन
८ पन से उठाता है॥ जीसतें वुह उसे अचक्कों के
संग अनथात अपने लोगों के अचक्कों के संग वैठावे।
९ वुह वांझ इसतनी को घन में वसाता है, जीसतें वुह
वचों की माता आनंद के संग हो, पनमेसन की
सतुत कनो।

११४ ऐक सै। यैादहवां गीत।

१ जव इसनाइल मीसन से नीकला, अैान याकुव
२ का घनानापनदेसी वोली के लोगों में से। तो
यहुदा उसका घनमघाम हुआ, अैान इसनाइल
३ उसका नाज॥ समुंदन देष्प के भागा, अैान
४ अनदन उलटी वही। पहाड़ों ने मेंढ़ों की नाइं,
अैान टीलों ने मेमना की नाइं कुदका माना।
५ हे समुंदन तुझे कया हुआ, जो तु भागा? अैान
६ हे अनदन, की तु उलटी वही? अैान कया हुआ
हे पहाड़ो, जो तुम ने मेंढ़ों की नाइं, अैान हे
टीलो तुम ने मेमना की नाइं कुदका माना है?
७ हे पीनथीवी तु पनभु के आगे, अैान याकुव के

८ इसन के आगे कांप॥ जो पनव्रत को छील व्रना-
ता है, और पथनी को पानीयों का सोता।

११५ एक सौ पंद्रहवां गीत॥

१ हे पनमेसन, हमाने लीये नहीं, हमाने लीये
नहीं, पनंतु अपनी दया के लीये, और अपनी
सचाइ के लीये, तेनेही नाम की पनतीसठा होवे।
२ अनदेसी कयों कहें; की उन का इसन कहां
३ है? पनंतु हमाना इसन तो सनग पन है, जो
४ कुछ उसने चाहा, सो कीया है॥ उनकी मुनत
मनुष्पों के हाथ की व्रनाइ ऊइ सोना चांदी हैं॥
५ वे मुंह नष्पती हैं, पन व्रोलती नहीं; वे आंष्पें
६ नष्पती हैं, पन देष्पती नहीं॥ वे कान नष्पती हैं,
पन सुनती नहीं, उनकी नाक हैं, पनंतु सुंघती
७ नहीं। वे हाथ नष्पती हैं, पन छूती नहीं, वे पाओं
नष्पती हैं, पन चलती नहीं; वे अपने गले से व्रोल
८ नहीं सकतीं॥ उनके व्रनवैये, और वे सव्र, जो
उनका भनोसा नष्पते हैं, उन हीं की नाइं हैं॥
९ हे इसनाइल, पनमेसन पन भनोसा नष्प, वही
१० उनका सहायक, और उ की ढाल है। हे हानुन
के घनाने, पनमेसन पन भनोसा नष्प, की वही
११ उनका सहायक और ढाल है। तुम, जो पनमे-

नन से डनते हो,पनमेसन पन भनोसा नप्पो, वही
१२ उनका सहाय़क, श्रौान ढाल है॥ पनमेसन ने हमें
समनन कीय़ा है, वही श्रासीस देगा, वुह इसना-
इल के घनाने पन श्रासीस देगा, वुह हानुन के
१३ घनाने को श्रासीस देगा। वुह उन को, जो पन-
मेसन से डनते हैं, छोटों व़ड़ों सहीत श्रासीस
१४ देगा। पनमेसन तुम को, श्रौान तुमहाने लड़कों
१५ को व़ढ़ाता जाय़गा॥ तुम श्राकास श्रौान पीनथीवी
के सनीसट कनता पनमेसन के श्रासीसीत होश्रो।
१६ सनग श्रनथात सनगगन पनमेसन के हैं, पनंतु
१७ उसने पीनथीवी मनुष्य के व़ंस को दी है॥ मीनतक
पनमेसन की सतुत नहीं कनते, श्रौान न वे सव़,
१८ जो समाघ में उतनते हैं। पनंतु हम इस समय़
से लेके सदा लों पनमेसन की सतुत कीय़ा कनेंगे,
पनमेसन का घंनव़ाद कनो।

११६ ऐक सौ सोलहवां गीत।

१ मैं पनमेसन से पनेम नप्पता हूं, इस कानन की
उस ने मेना, सव़द, श्रौान मेनी व़ीनतीय़ां सुनी।
२ श्रौान उसने मेनी श्रोन कान झुकाय़ा, सो जव़ लों
मैं जीता नहूंगा, उसका नाम लीये जाउंगा।
३ मीनतु के दुष्पों ने मुझे घेना, श्रौान समाघ की

पीड़ा ने मुझे पकड़ा, मैं दुखी और सोकीत हुआ।
तब मैं ने परमेसर का नाम लीया, की हे परमेसर
५ कीरपा करके मेरा पराण बचा॥ परमेसर अनु
ग्राहक और धरमी है, और हमारा ईसर
६ दयाल है। परमेसर सुधे लोगों की रछा करता
है, मैं दीन हो गया था, और उसने मेरी सहाय
७ की। हे मेरे पराण, अपने बीसराम में फीर जा,
कयोंकी परमेसर ने तुझ पर मन खोल के बैवहार
८ कीया है॥ तु ने मुझे मीरतु से, और मेरी
आंखों को आंसु से, और मेरे पाओं को फीस-
९ लने से बचाया है। जीवतों के देस में मैं पर-
१० मेसर के आगे चलुंगा। मैं बीसवास लाया, इसी
११ लीये मैं ने कहा, मुझ पर बड़ी बीपत थी। मैं
ने अपनी बयाकुलता में कहा, की सारे मनुष्य झुठे
१२ हैं॥ मैं परमेसर को उसके सारे पदारथों के
१३ लीये, जो मुझ पर हैं, कया देउं। मैं मुकत का
१४ कटोरा लेके परवेसर का नाम लेउंगा। मैं अब
उसके सारे लोगों के आगे अपनी मनौती पुरी
१५ करुंगा। परमेसर की दीरीसट में उसके साधुन
१६ की मीरतु बहुमुल है। हे परमेसर, मैं नीसचय
तेरा दास हुं, मैं तेरा दास, और तेरी दासी का
१७ पुतर, तु ने मेरे बंधन खोले। मैं तेरे आगे धंन

व्राद का व्रल यढ़ाउंगा, औान पनमेसन का नाम
१८ लेउंगा॥ मैं अभी उसके साने लोगों के आगे
अपनी मनौती पनमेसन के बोझे पुनी कनुंगा।
१९ पनमेसन के मंदीन के आंगनें में, औान तुह में हे
यीनोसलीम, तेने मघ में पनमेसन का घंनव्राद
होवे।

११७ एक सौ सतनहवां गीत।

१ हे साने जातगन पनमेसन की सतुत कनो, हे
२ साने लोगो, उसका घंन मानो॥ कयोंकी उसकी
दया हम पन व्रडत है, औान उसकी सचाइ सदा
है, पनमेसन का घंन व्राद कनो॥

११८ एक सौ अठानहवां गीत।

१ पनमेसन का घंनव्राद कनो, कयोंकी वुह भला है,
२ औान उसकी दया सदा है॥ इसनाइल अव्र कहे,
३ की उसकी दया सदा है। हानुन का घनाना
४ अव्र कहे, की उसकी दया सदा है। वे जो पनमे-
सन से डनते हैं, अव्र कहें, की उसकी दया सदा
५ है॥ मैं ने दुख में पनमेसन का नाम लीया, पन-
मेसन ने मुझे व्रीसतानीत सथान में उतन दीया॥
६ पनमेसन मेनी ओान है, मैं न डनुंगा, मनुष्य मेना
७ कया कन सकता है॥ पनमेसन मेने सहायकों में

से है, सो मैं अपने घीननाकानीओं को देष्पुंगा।
८ मनुष्य पन भनोसा कनने से पनमेसन पन भनोसा
९ कनना भला है। अधक्षों पन भनोसा कनने से
१० पनमेसन पन भनोसा कनना भला है॥ साने
जातगनों ने मुझे घेन लीआ, पनंतु मैं पनमेसन के
११ नाम से उनहें नास कनुंगा। उनहों ने ताे मुझे
घेना, उनहों ने ताे मुझे घेना; पन मैं पनमेसन के
१२ नाम से उनहें नास कनुंगा॥ उनहों ने ताे मुझे
मधुमाष्पी की नाइं घेना, वे कांटों की आग के
समान बुझ गये, कयोंकी मैं ताे पनमेसन के नाम
१३ से उनहें नास कनुंगा॥ तु ने मुझे गीनाने के
लीये अतयंत ढकेला, पनंतु पनमेसन ने मेनी सहाय
१४ की॥ पनमेसन मेना बल, औान मेना गान है,
१५ औान वही मेनी मुकत ज्ञआ। घनमीओं के तंबु
ओं में आनंद का, औान मुकत का सब्द है, पनमे-
१६ सन का दहीना हाथ सुनता कनता है। पनमेसन
का दहीना हाथ बढ़ाया गया, पनमेसन का दहीना
१७ हाथ सुनता कनता है॥ मैं न मनुंगा, पनंतु
जीउंगा, औान पनमेसन की कीनया का बनन
१८ कनुंगा। पनमेसन ने मुझ पन अती ताड़ना की,
पनंतु उसने मुझे मीनतु के बस में न कीया॥
१९ घनम के फाटक मेने लीये ष्पोलो, मैं उन में से

पनवेस कनुंगा, श्रोन पनमेसन की सतुत कनुंगा॥
२० पनमेसन का ग्रह फराटक, जीस में से घनमी भीतन
२१ जायेंगे। मैं तेनी सतुत कनुंगा, कय़ोंकी तु ने
२२ मेनी सुन ली, श्रोन तु मेनों मुकत ऊश्रा। जीस
पथन को थवइय़ों ने नीकमा ठहनाय़ा, सो कोने
२३ का सीना ऊश्रा॥ य़ह पनमेसन से है, श्रोन
२४ हमानी दीसीसट में श्रासयनज है॥ य़ह दीन
पनमेसन ने व्रनाय़ा है, हम तो उसमें श्रानंद
२५ कनेंगे, श्रोन मगन होवेंगे॥ हे पनमेसन, मैं
व्रीनती कनता ऊं, व्रया; हे पनमेसन, मैं व्रीनती
२६ कनता ऊं, भागमानी दे॥ घंन है वुह, जो पनमे-
सन के नाम से श्राता है, हम ने पनमेसन के मंदीन
२७ में से तुमहें श्रासीस दीय़ा है॥ पनमेसन वुह
ईसन है, जीसने हमें उंजीय़ाला दीख्लाय़ा है,
व्रलीदान को जगव्रेदी के सींगों लों पन नसीय़ों से
२८ व्रांधो॥ तु मेना ईसन है, मैं तेनी सतुत कनुंगा,
२९ तु मेना ईसन है, मैं तुहे व्रढ़ाउंगा। पनमेसन का
घंनव्राद कनो, कय़ोंकी वुह भला है, श्रोन उसकी
दय़ा सदा है॥

११९ ऐक सो उंनीसवां गीत।

श्रलीफ।

१ जो मानग में सीध हैं, श्रोन जो पनमेसन की

२ व्रैवसथा पन यलते हैं, सो चंन हैं ॥ जो ङसकी
साप्पीयें को घानन कनते हैं, च्यैान च्यपने साने
३ मन से ङसे ढुंढते हैं, सो चंन हैं ॥ वे च्यचनम
भी नहीं कनते, वे ङसके मानगों पन यलते हैं ।
४ तु ने घय्रान से च्यपनी च्यगय़ा पन यलने को च्यगय़ा
५ की । हाय़ की तेनी व्रींचन को पालन कनने को
६ मैं यलाय़ा जाङं । जव्र मैं तेनी सानी च्यगय़ा-
७ च्यों को मानुंगा, तव्र मैं लजीत न ङंगा ॥ जव्र
मैं तेने घनम के ौयानें को सीप्पुंगा, तव्र मैं मन
८ की प्यनाइ से तेनी सतुत कनुंगा ॥ मैं तेनी
व्रीच को पालन कनुंगा, तु मुहे सनव्रथा मत
तय़ाग ॥

व्रेत

९ तनुन मनुप्प कीस नीत से च्यपने मानग को पवीतन
कनेगा? तेने व्रयन के समान यैाकस होने से ।
१० मैं ने च्यपने साने मन से तेनी प्पोज की है, तु
११ च्यपनी च्यगय़ाच्यों से मुहे भनमने मत दे । मैं ने
तेने व्रयन को च्यपने मन में छीपाय़ा है, जीसतें
१२ मैं तेने व्रीनुच पाप न कनुं । हे पनमेसन तु घंन
१३ है, च्यपनी व्रीच मुहे सीप्पला ॥ मैं ने च्यपने
होंठें से तेने मुंह के साने नय़ाय़ को व्रननं कीय़ा ।
१४ मैं तेनी साप्पीय़ों के मानग में प्रैसा च्यानंदीत

१५ ऊआ ऊं, जैसे साने घंम से। मैं तेनी अगयाओं
पन घयान कनुंगा, औान तेने मानगों को मानुंगा।
१६ मैं तेनी ब्रीघ से संतुसट होउंगा, मैं तेने ब्रयन न
भुलुंगा।

गीमील॥

१७ अपने सेवक से मन प्यान के ब्रेवहान कन, जीसतें
१८ जीउं औान तेने ब्रयन को पालुं। मेनी आंप्पें
प्पोल, जीसतें मैं तेनी ब्रैवसथा में आसयनज
१९ कानज देप्पुं। मैं पीनथीवी पन पनदेसी ऊं,
२० अपनी अगयाओं को सुह्ह से मत छीपा। मेना
पनान हन घडी तेने नयाय की लालसा के माने
२१ फरटता है। तु ने अहंकानी सनापीतों को, जो
२२ तेनी अगयाओं से भटकते हैं, दपटा है॥ नी·
नदा औान तुछता को सुह्ह से दुन कन, कयोंकी मैं
२३ ने तेनी साप्पीयों को पालन कीया है। अघछों
ने भी ब्रैठ के मेने ब्रीनोघ कहा, पनंतु तेने सेवक
२४ ने तेनी ब्रीघ पन घयान लगाया है॥ तेनी
साप्पीयां मेना आनंद औान मंतन के जन हैं।

डालेथ।

२५ मेना पनान भुल से सटा है, तु अपने ब्रयन के
२६ समान सुह्हे जीला॥ मैं ने अपने पथ पनगट कीये,
औान तु ने मेनी सुनी है, सुह्हे अपनी ब्रीघ सीप्पला।

२७ अपनी अगया का मानग मुझे समझा, जीसतें मैं
२८ तेने आसयनज कानजों की यनया कनुं। मेना
मन उदासी के माने झुका जाता है, अपने व्रयन
२९ के समान मुझे दीनढ़ कन॥ मुझे झुठे मानग से
व्रया, और अनुगीनह से अपनी व्रैवसथा मुझे दे।
३० मैं ने सयाइ के मानग को युना है, और तेने
३१ व्रीयानों को सनमुप्प नप्पा। मैं तेनी साप्पीझों
से लवलीन हो नहा ऊं, हे पनमेसन मुझे लजीत
३२ न कन। जव्र तु मेना मन व्रढ़ावेगा, तव्र मैं तेनी
अगयाओं के मानग में दैाडुंगा।

हे।

३३ हे पनमेसन तु अपनी व्रीघ का मानग मुझे
सीप्पा, और मैं उसे अंत लों घानन कनुंगा॥
३४ मुझे समझ दे, और मैं तेनी व्रैवसथा को पालुंगा,
३५ और मैं अपने साने मन से उनहें मानुंगा। मुझे
अपनी अगयाओं के मानग में यला, कयोंकी उस से
३६ मैं आनंदीत ऊं॥ मेने मन को लालय की ओन
नहीं, पनंतु अपनी साप्पीयों की ओन झुका॥
३७ मेनी आंप्पों को व्रीनथा देप्पने से फेन दे, और
३८ अपने मानग में मुझे जीला। अपने व्रयन को
अपने सेवक के लीये सथीन कन, कयोंकी वुह तेने
३९ भय में नहता है। उस नीनदा को जीस से मैं

उनता ऊं, मुझ से दुन कन, कयोंकी तेने नयाय
४० भले हैं। देष मैं तेनी अगया का लालसीत ऊं,
अपने धनम में मुझे जोला॥

वाउ।

४१ हे पनमेसन अपनी दया, औान अपनी मुकत को
४२ अपने वयन के समान मुझ पास आने दे। सो
मैं अपने नींनदोकों को उतन देउंगा, कयोंकी मैं
४३ तेने वयन पन भनोसा नषता ऊं। औान मेनें
मुंह से सत वयन सनवथा दुन मत कन, कयोंकी
४४ तेनी अगयाओं पन मेनी आसा है। सो मैं
तेनी वैवसथा को सदा सनवदा लों पालन कनुं-
४५ गा। औान मैं नीनवंध फीनुंगा, कीयोंकी मैं
४६ तेनी अगया का षोजी ऊं। नाजाओं के आगे भी
मैं तेनी साषीयों की यनया कनुंगा, औान लजीत
४७ न होउंगा। औान तेनी अगया से आनंदीत हो-
४८ उंगा, कयोंकी मैं उन पन पनेम कनता ऊं॥ मैं
तेनी अगयाओं की ओान, जीन पन मैं ने पनेम
कीया है, अपने हाथ भी उठाउंगा, औान तेनी
वीधन का धयान कनुंगा।

जैन॥

४९ अपने सेवक के लीये उस वयन को समनन कन,

५० जीस पन तु ने मुझे आसा दीलाइ है। यह मेने
दुष्प में मेनी सांत है, कयोंकी तेने व्रयन ने मुझे
५१ जीलाया है। अहंकानीयों ने मुझे ठठे में उड़ाया
५२ है, तद भी मैं तेनी व्रैवसथा से न हटा॥ हे पन-
मेसन, मैं ने तेने पुनातन व्रीयानों को समनन
५३ कीया, और अपने को सांत दीया। उन दुसटों के
कानन, जो तेनी व्रैवसथा को तयागते हैं, घड़का
५४ ने मुझ पकड़ लीया है। मेनी जातना के घन में
५५ तेने व्रीच मेने गान ऊए है॥ हे पनमेसन, मैं ने
तेना नाम नात को समनन कीया है, और तेनी
५६ व्रैवसथा को पालन कीया है। यह मैं ने पाया,
कयोंकी मैं ने तेनी अगयाओं को पालन कीया।

प्पेत।

५७ हे पनमेसन, तु मेना भाग है, मैं ने तो कहा,
५८ की मैं तेने व्रयन को पालन कनुंगा। मैं अपने
साने मन से तेने नुप का प्पोजी ऊं, तु अपने
५९ व्रयन के समान मुझ पन दया कन॥ मैं ने अपने
मानगों को सोया, और तेनी साप्पीयों की
६० ओन यनन फेना॥ मैं ने यटक कीया, और
तेनी अगया को पालन कनने में ढील न कीं।
६१ दुसटों के जथा ने मुझे लुटा, पन मैं तेनी व्रैवसथा

६२ को भुल न गया॥ तेने धरम व्रीयान के कानन मैं
६३ आची रात का उठके तेरा धंन मानुंगा। मैं तेरे
सारे डरवैयो का संगी ऊं, और जो तेरी अगया
६४ को पालन करता ऊं। हे परमेसर, पीरथीवी
तेरी दया से पुरन है, मुहे अपनी व्रीध सीष्पला।

टेथ।

६५ हे परमेसर, अपने व्रयन के समान तु ने अपने
६६ सेवक से अछा व्रैवहार कीया है। मुहे सु व्रीयान
और गयान सीष्पा, कयोंकी मैं तेरी अगया पर
६७ व्रीसवास लाया ऊं॥ दुखी होने से आगे मैं भटक
६८ गया, पर अव्र मैं ने तेरे व्रयन को पाला है। तु
भला है, और भलाइ करता है; मुहे अपनी व्रीध
६९ सीष्पला॥ अहंकारीयो ने मुह पर हुठ व्रना
रष्पा है, पर मैं सारे मन से तेरी अगया को
७० पालन करुंगा। उन के मन पर यीकनाइ छागइ
७१ है, पर मैं तेरी व्रैवसथा से आनंदीत ऊं। भला
ऊआ, की मैं दुष्प मे पड़ा, जीसतें तेरी व्रीधीन के
७२ सीष्पुं। तेरे मुंह की व्रैवसथा मेरे लीये सहसरों
सोना यांदी से अछी है॥

जाद॥

७३ तेरे हाथों ने मुहे सीरजा, और डौल कीया

है, मुझे समझ दे, जीसतें मैं तेरी अगया सीष्युं।
७४ वे, जो तुझ से डरते हैं, मुझे देष्य के आनंद होंगे
७५ कयोंकी मैं ने तेरे व्रयन पर आसा रष्यी॥ हे
परमेसर,मुझे नीसयय है,की तेरा व्रीयार घरम
है, और तु ने उयीत से मुझे दुष्य दीया है।
७६ अपने सेवक को अपने व्रयन के समान, तेरी को-
७७ मल दया मेरी सांत के कारन होवे॥ तेरी
कोमल दया मुझ पर होवे,जीसतें मैं जाउं, कयों।
७८ की तेरी व्रैवसथा मेरी आनंदीता है॥ अहंकारी
लोग लजीत होवें, कयोंकी उनहों ने करुनता
से मुझ से व्रेवहार कीया, परंतु मैं तेरी अगया
७९ पर घयान करुंगा॥ जो तुझ से डरते हैं, और
जीनहों ने तेरी साष्यीयों को जाना है, सो मेरी
८० और फीरें॥ मेरा मन तेरे व्रीच में सीघ हो-
जाय,जीसतें मैं लजीत न होउं॥

काफ॥

८१ मेरा परान तेरी मुकत के लीये मुरछीत होता
है, परंतु मैं तेरे व्रयन पर आसा रष्यता हुं॥
८२ मेरी आंष्य तेरे व्रयन के लीये घटी जाती हैं, तु
८३ मुझे कव्र सांत देगा? कयोंकी मैं घुएं में के
कुपे की नाइं हुआ, तथापी तेरे व्रीघ को नहीं

८४ भुलता ॥ तेरे सेवक के दीन कीतने हैं ? तु कव
८५ मेरे सताउ को दंड देगा। अहंकारीयों ने,
जो तेरी व्रैवसथा का पीछा नहीं करते हैं, मेरे
८६ लीये गड़हे प्पोदे हैं ॥ तेरी सारी अगय़ा व्रीस-
वास मय़ है, वे अकारथ मुझे सताते हैं, तु मेरी
८७ सहाय़ कर। ननीक था, की वे पीरथीवी पर से
मुझे मीटाडालते, परंतु मैं ने तेरी अगय़ाओं को
८८ तय़ाग न कीय़ा ॥ अपने कोमल परेम से मुझे
जीला, सो मैं तेरे मुंह की साप्पीयों को पालन
करुंगा ॥

लामद ॥

८९ हे परमेसर, तेरा व्रयन सरग पर सदा सथीर
९० है ! तेरी सयाइ पीढ़ी से पीढ़ी लों है, की तु ने
पीरथीवी को सथीर कीय़ा, और वुह ठहरी
९१ है। वे तेरी व्रैवसथा के समान आज लों सथीर
९२ हैं, कय़ोंकी सव्र तेरे सेवक हैं। जो तेरी व्रैवसथा
मेरी आनंदता न होती, तो मैं अपनी व्रीपत में
९३ नास होजाता ॥ मैं तेरी अगय़ाओं को कभी न
भुलुंगा, कय़ोंकी तु ने उनके कारन से मुझे जीला-
९४ य़ा है ॥ मैं तेरा हुं, मुझे व्रया ले, कय़ोंकी मैं
९५ तेरी अगय़ा का प्पोजी हुं। दुसट मुझे नास करने
को घात में लगे हैं, परंतु मैं तेरी साप्पीयों को

९६ सोयुंगा॥ मैं ने सानी सीघता का अंत देप्पा,
परंतु तेरी अगय़ा अनअंत चोड़ी हैं॥

मीम।

९७ आह, मैं तेरी व्रैवसथा से कैसी परीत नप्पता ऊं
९८ साने दीन वहौ मेना चय़ान है॥ तु ने अपनी
अगय़ाओं से मुहे मेने व्रैनी से ऋी व्रुघमान कीय़ा
९९ कय़ोंकी वे सदा मेने संग हैं॥ मैं अपने साने
उपदेसकों से अघीक समह नप्पता ऊं, कय़ोंकी
१०० तेनी साप्पीय़ों पन मेना चय़ान है॥ मैं पना-
योनों से अघीक समहता ऊं, कय़ोंकी मैं तेनो
१०१ अगय़ाओं का पालन कनता ऊं॥ मैं ने हन एेक
कुमानग से अपने पांव का फेन नप्पा है, जीसतें
१०२ मैं तेने व्रयन का पालन कनुं। मैं तेने व्रीयानों
से नहीं फीना, कय़ोंकी तु ने मुहे सीप्पाय़ा है॥
१०३ तेनी व्रातें मेने तालु में मघु से ऋी मीठी हैं।
१०४ तेनी अगय़ा के कानन से मैं समह पाता
ऊं, इस लीय़े मैं हन एेक हुठे मानग से घीन
कनता ऊं।

नुन॥

१०५ तेना व्रयन मेने पांव के लीय़े दीपक आैान मेने
१०६ मानग के लीय़े उंजीय़ाला है। मैं ने कीनय़ा

प्याइ है, ग्रोन उसे पुना कनुंगा, की मैं तेने घनम
१०७ व्रीयानों को पालन कनुंगा। हे पनमेसन, मैं
अती दुष्पी ऊं, अपने व्रयन के समान मुहे जीला।
१०८ हे पनमेसन, मेने मुंह की मन मनता भेंट को
गनहन कन, ग्रोन अपने नयाय मुहे सीष्पला॥
१०९ मेना पनान सदा मेनी हथेली पन है, तथापी
११० मैं तेनी व्रैवसथा को नहीं व्रीसनता॥ दुस्टों ने
मेने लीये फंदा लगाया है, तथापी मैं तेनी अगया
१११ से न युका॥ मैं ने सनव्रदा के अधीकान की
नाइं तेनी साष्पीयों को लेलीया, कयोंकी मेना मन
११२ उन से आनंदीत है। मैं ने अपने मन को सदा
तेनी व्रीधन पन हुकाया है, जीसतें अंत लों उनहें
पालन कनुं।

सामीष्प्।

११३ मैं कुभावना को घीन कनता ऊं, पनंतु तेनी व्रैव-
११४ सथा से पनेम नष्पता ऊं॥ तु मेने छीपने का
सथान, ग्रोन मेनी ढाल है, ग्रोन मैं तेने व्रयन पन
११५ आसा नष्पता ऊं। हे कुकनमीयो, मेने पास से
दुन होग्रो, कयोंकी मैं तो अपने इसन की अगया-
११६ ग्रों को पालुंगा। अपने व्रयन के समान मुहे
संभाल, जीसतें मैं जीउं, ग्रोन मुहे मेनी आसा
११७ से लजीत न कन। मुहे थाम, ग्रोन मैं व्रयुंगा,

११८ श्रौर मैं सदा तेरी व्रीधीन के मानुंगा। तु ने
उन सभों के लताड़ा है,जीन्हें ने तेरी व्रीधीन
११९ से युक कीया, की उनका छल मीथ्या है। तु
ने पीरथीवी के सारे दुसटों के मैल की नाईं दुर
कीया, इस लीये मैं तेरी साछीयों से परीत
१२० रखता हुं। मेरा सरीर तेरे डर के मारे थर-
थराता है,श्रौर मैं तेरे नयाय से डरता हुं।

ऐन ॥

१२१ मैं ने नयाय श्रौर धरम कीया है, मुझे मेरे सताने
१२२ वाले के व्रस में न छोड़। भलाई के लीये अपने
दास का व्रीचवई हो, अहंकारी के मुझे सताने न
१२३ दे। मेरी आंखें तेरी मुकत के श्रौर तेरे धरम
१२४ के व्रचन के कारन घटी जाती हैं। अपने दास
से अपनी दया के समान व्रेवहार कर,श्रौर मुझे
१२५ अपनी व्रीध सीखा। मैं तेरा दास हुं, मुझे
समझ दे,जीसतें मैं तेरी साछीयों के पहीचानुं॥
१२६ परमेसर के कारज करने का समय है, कयोंकी
उन्हें ने तेरी व्रेवसथा के व्रीरथा कीया है।
१२७ मैं इस लीये तेरी अगयाओं के सोने से, हां,
१२८ चोखे सोने से अधीक परीत रखता हुं॥ इस
लीये मैं तेरी सारी अगयाओं के सब व्रसतों से

ठीक जानता हूं, और हर एक मीथ्या मारगों से
घीन करता हूं।

पे॥

१२९ तेरी साक्षीयां आसचरजीत हैं, इस लीये मेरा
१३० प्रान उनहें पालन करता है। तेरी बातों का
प्रवेस उंजीयाला देता है, वे सुधों को समझ देती
१३१ हैं। मैं ने अपना मुंह खोला, और हांपा, कयों-
१३२ की मैं तेरी अगयाओं का अभीलासी था। जैसा
तेरी रीतीसट अपने नाम के प्रेमीयों पर है,
१३३ तैसा मुझ पर दीसट करके दया कर। अपने
बचन में मेरे डग को चला, और कोई अधरम
१३४ मुझ पर राज करने न पावे। मनुस के सताने
से मुझे बचा, सो मैं तेरी अगयाओं को पालन
१३५ करूंगा। अपने दास पर अपने मुंह को चमका,
१३६ और मुझे अपनी बीध सीखा। पानी की नदीयां
मेरी आंखों से बहती हैं, कयोंकी वे तेरी बैवस्था
को नहीं मानते॥

साद।

१३७ हे परमेसर, तु धरमी है, और तेरे बीच
१३८ हैं। तेरी अगया की साक्षीयां धरमंतु मेरे
१३९ बीसवास मय हैं। मेरे जलन ने मेरे बचन से

उसकी नाईं आनंदीत हूं, जैसे बड़ी लुट मीलती
१६३ है॥ मैं झुठ से घीन और बैर रखता हूं, परंतु
१६४ तेरी बैवसथा से प्रीत रखता हूं॥ मैं तेरे
धरम नयाओं के कारन दीन भर में सात बार
१६५ तेरी सतुत करता हूं॥ तेरी बैवसथा के प्रे-
मीओं को बड़ा चैन है, उनके लीये कोई ठोकर
१६६ न होगी। हे परमेसर मैं ने तेरी मुकत की आसा
रखी है, और तेरी अगया के समान कीया है॥
१६७ मेरे प्रान ने तेरी साखीओं को पाला है, और
१६८ मैं उन पर अतयंत प्रेम रखता हूं॥ मैं ने
तेरी अगया, और तेरी साखीओं को पालन
कीया है, कयोंकी मेरी सारी चाल तेरे आगे हैं।

ता॥

१६९ हे परमेसर, मेरा रोना तेरे आगे पहुंचे, अपने
१७० बचन के समान मुझे समझ दे। मेरी बीनती
तेरे आगे पहुंचे, और अपने बचन के समान
१७१ मुझे छुड़ा॥ अपनी बीध मुझे सीखा, तब मेरे
१७२ होंठों से तेरी सतुत नीकलेगी। मेरी जीभ तेरे
बचन के बीखय में कहा करेगी, कयोंकी तेरी
१७३ सारी अगया धरम हैं॥ अपने हाथ से मेरी
सहाय कर, कयोंकी मैं ने तेरी अगाया को चुना

१७४ है। हे परमेसर, मैं ने तेरी मुकत की लालसा
१७५ की है, और तेरी ब्‍यवसथा मेरा आनंद है। मेरा
परान जीवे, और तेरो सतुत करेगा, और तेरे
१७६ नयाय मेरी सहाय करें॥ मैं खोइ हुइ भेड़ की
नाइं भटक गया हुं, अपने दास को ढुंढ, की मैं
तेरो आगयाओं को नहीं भुलता।

१२० एक सौ ब्‍रीसवां गीत॥

पदों का गान॥

१ अपने दुष्‍ख में मैं ने परमेसर को पुकारा, और
२ उसने मेरी सुनी। हे परमेसर, मेरे परान को
३ झुठे होंठों से, और छली जीभ से छुड़ा। हे झुठी
जीभ, तुझे कया दीया जायगा ? और तुझे कया
४ मीलेगा॥ ब्‍रीर के चोख्‍खे ब्‍रान, और जलते हुए
५ अंगारे। मुझ पर संताप है, जो मैं मीसीक में
६ और कैदार के तंबुओं में रहता हुं। मेरा
परान कुसल के ब्‍यैरीयों के संग ब्‍रहुत रहा है।
७ मैं तो कुसल चाहता हुं, परंतु जब्‍र मैं ब्‍रोलता हुं,
तो वे लड़ाइ के लीये लैस होते हैं॥

१२१ एक सौ एकीसवां गीत।

पदों का गान॥

१ मैं आंख्‍ख उठा के पहाड़ों पर दीसट करुंगा,

२ जहां से मेनी सहाय़ ञ्चाती है। मेनी सहाय़ पन-
मेसन से हैं, जीस ने सनग ञ्चैान पीनथीवी को
३ सीनजा। वुह तेना पांव टलने न देगा, वुह जो
४ तेना नष्पवाल है, न उंघेगा। देष्प, वुह, जो इस-
नाइल का नक्षक है, कभी न उंघेगा, न सोवेगा।
५ पनमेसन तेना नष्पवाल है, पनमेसन तेने दहीने
६ हाथ पन छाय़ा है,। सुनज दीन को, ञ्चैान
७ यंदनमा नात को तुझे कुछ दुष्प न देगा। पन-
मेसन सानी वुनाइय़ों से तुझे वयावेगा, वुह तेने
८ पनान को वयावेगा। पनमेसन इस समय़ से सदा
के लीय़े वाहन जाने में, ञ्चैान भीतन ञ्चाने में,
तेनी नक्षय़ा कनेगा॥

१२२ ऐक सैा वाइसवां गीत॥

दाउद के पदों का गान।

१ जव उनहोंने मुझे कहा, की ञ्चावो, पनमेसन
२ के मंदीन में जावें, मैं ञ्चानंदीत ह्रञ्चा॥ हे य़ीनो-
सलीम, हमाने पांव तेने फाटकों में सथीन होंगे।
३ य़ीनोसलीम ऐक ठोस नगन की नाइं वना ह्रञ्चा
४ है॥ जीघन वे गोसटीय़ां, ञ्चनथात पनमेसन की
गोसटीय़ां इसनाइल के साष्पी कने पनमेसन के
५ नाम का घंनवाद कनने को यढती हैं॥ कय़ोंकी

उस में न्याय के सींहासन, अरथात दाउद के
६ घराने के सींहासन धरे ड़ए हैं। यरोशलीम के
कुसल के लीये प्रारथना करो, वे, जो तुझ से प्रेम
७ रखते हैं, भागमान होंगे। तेरी भीतों के भीतर
८ कुसल, और तेरे भवनों में भाग होवे॥ मैं अपने
भाइयों और संगीयों के लीये अब कहता ड़ं,
९ तुझे कुसल होवे। परमेसर हमारे ईसर के मंदीर
के कारन, मैं तेरा मंगल ढूंढुंगा।

१२३ एक सौ तेइसवां गीत॥

पदों का गान॥

१ हे सरग बासी, मैं अपनी आंखें तेरी ओर उठा-
२ ता ड़ं॥ देख, जीस रीत से सेवक अपने सामी
के हाथ की ओर, और दासी की आंखें अपनी
सामनी के हाथों की ओर तकती रहती हैं, तैसी
हमारी आंखें परमेसर हमारे ईसर पर हैं, जब
३ लों वुह हम पर दया न करे। हे परमेसर, हम
पर दया कर, हम पर दया कर, क्योंकी हम
४ अतयंत नींदा से भरे हैं॥ सुखीयों की नींदा,
और अहंकारीयों के ठठों से हमारे प्रान
अतयंत भर गये।

१२४ एक सौ चौबीसवां गीत ॥

दाऊद के पदों का गान।

१ अब इसराइल कहे, कि जो परमेसर हमारी
२ ओर न होता ॥ जब मनुष्य हमारे बिरोध में
३ उठे। जब कि उन का क्रोध हमारे बिरोध में
भड़कता था, जो परमेसर हमारी ओर न होता,
४ तो वे हमें जीते निगल जाते। तब हमें जल
डुबा लेता, धारा हमारे पराण के ऊपर जाती।
५ अहंकारी जल हमारे पराण पर बीत जाते ॥
६ धंन परमेसर जिस ने हमें उनके दांतों का अहेर
७ होने न दिया। हमारा पराण पंछी की नाईं
बधिकों के जाल से बच निकला है, जाल टुटा,
८ और हम बच निकले ॥ हमारी सहाय परमे-
सर के नाम में है, जिस ने सरग और पिरथिवी
को सिरजा ॥

१२५ एक सौ पचीसवां गीत।

पदों का गान।

१ परमेसर के आस्रित सैहुन परबत की नाईं
२ हैं, जो अचल और सदा सथिर है। जैसा यीरो-
सलीम के आस पास परबत हैं, तैसा परमेसर
इस समय से लेके सदा लों अपने लोगों को घेरे

३ ऊए है॥ दुसटता का दंड धनमीओं के भाग पन
न पड़ेगा, न होवे, की धनमी अधनम की ओन
४ अपने हाथ व्रढावें। हे पनमेसन भलें से औन
५ प्पने अंतःकननीओं से भलाइ कन। पनंतु वे,
जो अपने टेढ़े मानगें पन चलते हैं, पनमेसन
उनहें कुकनमीओं के संग चलावेगा, पनंतु कुसल
इसनाइल के लोग्ने है॥

१२६ एक सै। छवीसवां गीत॥

पदें का गान॥

१ जव पनमेसन ने सैऊन को वंधुआइ को फीरी-
२ नाया, तव हम सपनदनसी की नाइं ऊए। तव
हमाने मुंह हंसी से, औन हमानी जीभ गान से
भन गइ, तव अनदेसीओं में चनचा ऊइ, की
३ पनमेसन ने उनसे वड़ा व्रेवहान कीया। पनमे
सन ने हमसे वड़ा व्रेवहान कीया, हम आनंदीत
४ हैं॥ हे पनमेसन, दक्खीन की धानें की नाइ
५ हमानी वंधुआइ को पलट दे। जो आंसुओं में
६ वोते हैं, सो गा गा के लवेंगे। जो वाहन जाता
है, औन नोता ऊआ, वऊमुल वीज लेजाता है, सो
नीःसंदेह आनंद कनते ऊए अपनी पुलीयां साथ
लेके फीन आवेगा॥

१२७ एक सा सताइसवां गीत।

सुलेमान के चीढ़े पदों का गान।

१ जो परमेश्वर घर न बनावे, तो बनवैया का
परीश्रम अकारथ है, जो परमेश्वर नगर की
रच्छया न करे, तो रप्पवाल का जागना बृथ्था
२ है। तुमहारा तड़के का उठना और अबेर का
सोना, और सोक की रोटीयां प्पाना बीरथा,
कयोंकी वुह अपने पयीय्र को बीस्राम देता है।
३ देप्पो, की लड़के परमेश्वर के एक अधीकार हैं,
४ और गरभ का फल उसका प्रतीफल। जैसे
बलवान मनुप्य के हाथ में बान, तैसे ही तरुनों
५ के लड़के हैं। धंन वुह मनुप्य जीस का तुन उन से
भरा है, वे लजीत न होंगे, परंतु फाटक पर
बैरीयों से बोलेंग।

१२८ एक सा अठाइसवां गीत।

पदों का गान॥

१ जो मनुप्य परमेश्वर से डरता है, और उसके
२ मारगों पर चलता है, सो धंन है। कयोंकी तु
अपने हाथों का परीश्रम प्पायेगा, तु भागमान
३ है, और तेरा भला है। तेरी पतनी फलवंत
दाप्प की नाइं होगी, जो तेरे घर के आस पास

है, तेरे व़ये तेरे मंच की यानी और अखपाड़
४ पेड़ की नाइं होंगे॥ देख्यो, जो परमेसर से
५ डरता है, वुह ऐसा आसीरवादी होगा। पर-
मेसर सैहून में से तुझे आसीस देगा, और तू
अपने जीवन भर यीरोसलोम की भलाइ देख्येगा।
६ नीसयय तू अपने व़यों के व़ये, और इसराइल
का कुसल देख्येगा।

१२९ ऐक सै। उंतीसवां गीत।

परों का गान॥

१ अव़ इसराइल व़ोले, की मेरी तरुनाइ से उन-
२ होां ने व़ारंव़ार मुझे सताया है॥ मेरी तरुनाइ
से व़ारंव़ार उनहोां ने मुझे सताया है, तद भी वे
३ मुझ पर परव़ल न हुऐ॥ हरवाहों ने मेरी पीठ
४ जोत के अपनी रीघारीयां लंव़ी कीयां। परमे-
सर घरमी है, उसने दुसटों की रसमीयों को
५ काट डाला है। सव़, जो सैहून से व़ैर रख्यते
६ हैं, लज्जीत होवें, और हटाये जावें। वे छत पर
की घास की नाइं होवें, जो व़ढ़ने से पहीले मुरझा
७ जाती है। जीस से घसीहारा अपनी मुठी नहीं
भरता, और आंटी का व़ंघवैया अपनी अंकवार
८ नहीं भरता। और वे, जो उघर से जाते हैं,

नहीं कहते, की परमेसर तुझे आसीस देवे, हम
परमेसर के नाम पर तुझे आसीस देते हैं ।

१३० एक सा तीसवां गीत ।

पदों का गान ॥

१ हे परमेसर, मैं ने गहीरापों में से तुझे पुकारा
२ है ॥ हे परभु, मेरा सबद सुन, और मेरी बीन-
३ तीयों के सबद पर कान धर । हे परमेसर, यदी
तु अधरम का लेख्खा लेवे, तो हे परभु, कौन ठहरे-
४ गा? पर तेरे पास तो छमा है, तुझ से डरा या-
५ हीये ॥ मैं परमेसर की बाट जोहता हूं, मेरा
परान उसकी बाट जोहता है, और तुझे उसके
६ बचन पर आसा है । जैसा पहरु बीहान की बाट
जोहते हैं, हां, जैसा पहरु बीहान की बाट जोहते
हैं, उस से अधीक मेरा परान परभु की बाट जो-
७ हता है ॥ हे इसराइल, परमेसर पर आसा रख्ख,
कयोंकी दया परमेसर के पास है, और मुकत की
८ बहुताइ उसके पास है । और वही इसराइल को
उसके सारे अधरम से छुड़ावेगा ।

१३१ एक सा एकतीसवां गीत ।

दाउद के पदों का गान ।

१ हे परमेसर, मेरा मन अहंकारी नहीं, और न

मेनी दीनीसट उंयी है, मैं व़डी व़ातों में और
आसयनजीत व़सतुन में पनेनन नहीं ननता।
२ नीसयय़ मैं नीत से यला, और मैं ने अपने मन को
सांत कीय़ा है, जैसे दुघ छुड़ाय़ा हुआ व़ालक
अपनी माता से होता है, हां, मेना मन दुघ छुड़ाय़े
३ हुए व़ालक की नाइं है। अव़ से सदा लों इस-
नाइल पनमेसन पन आसा नक्खे॥

१३२ ऐक सौ व़तीसवां गीत॥

पदों का गान॥

१ हे पनमेसन दाउद को, और उसके सानेे कसटों
२ को समनन कन॥ की उसने कय़ोंकन पनमेसन
की कीनय़ा खाइ, और य़ाकुव़ के पनाकनमी की
३ मनौती मानी॥ नीसयय़ मैं तो अपने घन की
छत तले न जाउंगा, और न अपनी खाट पन
४ यढ़ोंगा॥ मैं अपना आंखों को नींद न देउंगा,
५ और न औंघाइ अपनी पलकों को॥ जव़ लों की
पनमेसन के लीय़े सथान, और य़ाकुव़ के पना-
६ कनमी के लीय़े व़साव न पा लुं॥ देखो, हम ने
उसके व़ीख्य़ में अफ़नाता में सुना, और हम ने
७ उसे अनन के खेतों में पाय़ा॥ हम उसके तंव़ु-
ओं में जाय़ेंगे, और उसके पांव के पीढ़े के आगे

८ दंडवत करेंगे॥ हे परमेसर तु और तेरे परा-
९ क्रम की मंजुसा अपने चैन में उठ॥ तेरे जाजक
धरम से पहीनाये जायें, और तेरे साध आनंद से
१० ललकारें॥ अपने दास दाउद के कारन अपने
११ अभीसेकत का मुंह मत मोड़। परमेसर ने सचाई
से दाउद से कीरीया खाई है, जीस से वुह न
हटेगा, की मैं तेरे गरभ के फल में से तेरे सींहा-
१२ सन पर बैठाउंगा॥ यदी तेरे लड़के मेरी बाचा
और मेरी साखी को, जो मैं उनहें सीखाउंगा,
पालन करेंगे, तो उन के लड़के भी तेरे सींहासन
१३ पर सदा लों बैठेंगे॥ क्योंकी परमेसर ने सैहून
को चुना, और अपने नीवास के लीये चाहा॥
१४ यह सदा मेरी चैन का सथान है, मैं इस में बसुंगा
१५ क्योंकी मैं ने उसे चाहा है॥ मैं नीसचय उसके
भोजन पर आसीस देउंगा, मैं उसके कंगालों को
१६ रोटी से तरीपत करुंगा। मैं उसके जाजकों को
मुकत से पहीनाउंगा, और उसके साध आनंद
१७ के मारे ललकारेंगे॥ वहां मैं दाउद का सींग
उगाउंगा, मैं ने अपने अभीसेकत के लीये एक
१८ दीपक ठहराया है॥ और उसके बैरीयों को
लाज से पहीनाउंगा, परंतु उसका मुकुट उसी पर
लहलहावेगा॥

१३३ एक सौ तेंतीसवां गीत ॥

दाऊद के पदें का गान ॥

१ देखो भाइयों को एकठे, और एक मत से रहके
२ में कैसी अच्छी और सुन्दर बात है ॥ यह सीर
पर के बहुमूल सुगंध तेल की नाईं है, जो दाढ़ी
पर और बहके अर्थात हारुन की दाढ़ी पर
बहा, जो उसके पहीरावा के घुंट लों बह आया ॥
३ और हरमुन की ओस की नाईं, जो सैहून
के पहाड़ों पर उतरी, क्योंकी वहां परमे-
सर ने आसीस और अनंत जीवन के विषय में
आज्ञा दी ॥

१३४ एक सौ चौंतीसवां गीत ॥

पदें का गान ॥

१ हे परमेसर के सब दासो, देखो, जो रात को
परमेसर के घर में रहते हो, परमेसर का धंन
२ बाद करो ॥ धरमधाम में अपने हाथ उठाओ,
३ और परमेसर का धंनबाद करो ॥ वुह परमेसर
जीस ने सरग, और पीरथीवी को सीरजा, तुझे
सैहून में से आसीस देवे ॥

१३५ एक सो पैंतीसवां गीत ॥

१ परमेसर की सतुत करो, परमेसर के नाम की
सतुत करो, हे परमेसर के सेवको, परमेसर की
२ सतुत करो ॥ तुम, जो परमेसर के घर में, और
हमारे इसर के घर के आंगनों में खड़े रहते हो।
३ परमेसर की सतुत करो, कयोंकी परमेसर भला
है, उसके नाम की सतुत गाउ, कयोंकी सुंदर है।
४ कयोंकी परमेसर ने याकुब को अपने लीये चुना
है, और इसराइल को अपने वीसेस भंडार के
५ लीये ॥ कयोंकी मैं जानता हुं, की परमेसर महान
है, और हमारा परभु सारे देवों से स्रेसट है ॥
६ जो कुछ परमेसर ने चाहा, सो उसने सरग, और
पीरथीवी, और समुंदर, और सारे गहीरे सथा-
७ नों में कीया ॥ वही पीरथीवी के खुंटों से फुही
उठाता है, और बीजली मेंह के लीये बनाता है,
और पवन को अपने भंडारों से नीकलता है ॥
८ उसी ने मीसर के पहीलौठे मनुष्य से लेके पसु लों
९ मारे ॥ हे मीसर, तेरे मध में फरऊन पर,
और उसके सारे सेवकों पर, उसी ने लछन, और
१० आसचरज दीखलाये ॥ उसी ने बड़े बड़े जात-
११ गनों को, और पराकरमी राजाओं को ॥ असु-
रीयों के राजा सैहुन को, और बासान के राजा

उज को, और कीनान के सारे राजों को नास
१२ कीया॥ और अपने इसराइली लोगों को उनका
१३ देस अधीकार में दीया॥ हे परमेसर, तेरा नाम
सरवदा है, हे परमेसर, तेरा समरन पीढ़ी से पीढ़ी
१४ लों रहेगा॥ कयोंकी परमेसर अपने लोगों का
नयाय करेगा, और अपने दासों के बीखे पछ-
१५ ताएगा॥ अनदेसीयों की मुरत सोना, और
१६ रुपा, और मनुष्यों की कीरया हैं। वे मुंह रखती
हैं, पर बोलती नहीं, वे आंखें रखती हैं, पर
१७ देखती नहीं। वे कान रखती हैं, पर सुनती
१८ नहीं, वे तो मुंह से सांस भी नहीं लेतीं॥ जो
उनके बनवैये हैं, सो उनहीं के समान हैं, और
हर ऐक, जीसका भरोसा उन पर है, सो ऐसा ही है।
१९ हे इसराइली घराने, परमेसर का धंनवाद करो,
हे हारुन के घराने, परमेसर का धंनवाद करो।
२० हे लावी के घराने, परमेसर का धंनवाद करो, तुम
जो परमेसर से डरते हो, परमेसर का धंनवाद
करो, परमेसर सैहून में धंन है, और यीरोस-
लोम में वास करता है, परमेसर की सतुत करो।

१३६ ऐक सा छतीसवां गीत॥

१ परमेसर का धंन मानो, कयोंकी वुह भला है,

२ औन उसकी दया सनवदा है॥ इसनों के इसन
का धंन मानो, कयोंकी उसकी दया सनवदा है।
३ पनभुओं के पनभु का धंन मानो, कयोंकी उसकी
४ दया सनवदा है। उसी का, जो अकेला वड़े,
आसयनज कनता है; कयोंकी उसकी दया सनव-
५ दा है॥ उसी का जीस ने अपनी वुध से सनग
६ वनाये, कयोंकी उसकी दया सनवदा है॥ उसी
का,जीसने पीनथीवी को पानीयों के उपन फैला-
७ या, कयोंकी उसकी दया सनवदा है। उसी का
जीसने वड़ी वड़ी जोत वनाई, कयोंकी उसकी दया
८ सनवदा है। सुनज, जीस की पनभुता दीन पन
९ है,कयोंकी उसकी दया सनवदा है॥ औन चंदनमा
औन तानागन,जीनकी पनभुता नात पन है,कयों-
१० की उसकी दया सनवदा है॥ उसी का जीसने
मीसन को उसके पहीलौठों समेत माना, कयोंकी
११ उसकी दया सनवदा है॥ औन इसनाइलीयों
को उन में से नीकाल लाया,कयोंकी उसकी दया
१२ सनवदा है॥ अपने पनवल हाथ से, औन फैली
हुई भुजाओं से, कयोंकी उसकी दया सनवदा है
१३ उसीका जीसने लाल समुंदन को दो भाग कीया,
१४ कयोंकी उसकी दया सनवदा है॥ औन इसना-
इलीयों को उसके मध से पान ले गया, कयोंकी

१५ उसकी दया सनवदा है। परंतु फरजन को
उसकी सेना समेत लाल समुंदर में छोड़ डाला,
१६ कयोंकी उसकी दया सनवदा है। उसी का, जो
बनन में अपने लोगों का अगुआ ऊआ, कयोंकी
१७ उसकी दया सनवदा है॥ उसी का, जीसने वड़े
वड़े नाजाओं को मान डाला, कयोंकी उसकी दया
१८ सनवदा है। औन पनसीध नाजाओं को मान
१९ डाला, कयोंकी उसकी दया सनवदा है। अमनात
अमुनीयों के नाजा सीहुन को, कयोंकी उसकी
२० दया सनवदा है। औन वासान के नाजा उज
२१ को, कयोंकी उसकी दया सनवदा है॥ औन उन
की भुम को अधीकान में दीया, कयोंकी उसकी
२२ दया सनवदा है। अपने दास इसनाइल का
अधीकान कीया, कयोंकी उसकी दया सनवदा
२३ है। जीसने हमानी दुनदसा में हमें सननन
२४ कीया, कयोंकी उसकी दया सनवदा है॥ औन
हमें हमाने वैनीयों से छुड़ाया, कयोंकी उसकी
२५ दया सनवदा है। उसी का, जो साने सनीनों को
अहान देता है, कयोंकी उसकी दया सनवदा है।
२६ सनग के इसन का धंनवाद कनो, कयोंकी उसकी
दया सनवदा है॥

१३७ एक से सैंतीसवां गीत।

१ व्राव्रुल की नदीयों के तीर पर, जहां हम व्रैठ
गये, और सैहुन को समरन करके व्रीलाप कीया।
२ हम ने अपनी व्रीना को उसके व्रीच के नलें पर
३ टांग दीया॥ कयोंकी, जो हमें व्रंधुआ करके ले
गये, उनहों ने वहां हम से चाहा, की हम कुछ
गावें, और जीनहों ने हमें उजाड़ा, उनहों ने हम
पर हंसी की, और कहा, की सैहुन के गीतों में
४ से गाओ। हाय परदेसीयों की भुम में हम कयों-
५ कर परमेसर के गीत गावें॥ हे यीरोसलीम,
यदी मैं तुझे भुलुं, तो मेरा दहीना हाथ भुल
६ जाय। यदी मैं तुझे समरन न करुं, तो मेरी
जीभ तालु से लगजाये, और यदी मैं यीरोसलीम
७ को अपनी आनंदता से सरेसट न जानुं। हे
परमेसर, यीरोसलीम के दीन में अदुम के संता-
नें को समरन कर, जीसने कहा, की उसे उजाड़ो,
८ उसे जड़ मुल से उजाड़ो। हे व्राव्रुल की व्रेटी, जो
उजाड़े जाने पर है; धंन है, वुह, जो तेरे व्रेवहार
का, जो तु ने हम से कीया, तुझ से पलटा लेगा; धंन
वुह, जो तेरे नंहें व्रालकों को पकड़ पकड़ के पथर
पर पटके॥

१३८ ऐक सैा अठतीसवां गीत।

दाउद का गान।

१ मैं अपने सारे मन से तेरी सतुत करुंगा, देवों
२ के अगे मैं तेरी सतुत गाउंगा॥ मैं तेरे पवीतर
मंदीर की ओर दंडवत करुंगा, ओर तेरी सतता
ओर तेरे कोमल परेम के कारन तेरे नाम की
सतुत करुंगा, कयोंकी तु ने अपने वचन को
३ अपने सारे नाम से अधीक वढाया है॥ जीस
दीन मैं ने पराथना की, तव तु ने मेरी सुनी,
४ ओर वल से मेरे आतमा को वली कीया॥ हे
परमेसर, पीरथीवी के सारे राजा तेरे मुंह का
५ वचन सुन के तेरी सतुत करेंगे॥ हां वे परमे-
सर, के मारगों में गायेंगे, कयों की परमेसर का
६ ऐसरय महान है। यदपी परमेसर महान है,
तथापी वुह नमरों को चेत करता है, परंतु अहं-
७ कारीयों को दुर जानता है॥ यदपी मैं वीपतों
के मध में चलुं, तथापी तु मुझे जीलावेगा, तु मेरे
वैरीयों के करोध पर अपना हाथ वढावेगा, ओर
८ तेरा दहीना हाथ मुझे वचा लेगा। परमेसर
मेरे लीये कारज सीध करेगा, हे परमेसर, तेरी
दया सरवदा है, अपने हाथ की कीरया को
तयाग न कर॥

१३९ ऐक सो उंतालीसवां गीत।

प्रधान बजनीये के पास दाउद का गीत।

१ हे परमेसर, तु ने मुझे खोजा है, और पही-
२ चाना॥ तु मेरे बैठने और उठने को जानता
३ है, तु मेरी चींता को दुर से बुझता है। तु
ने मेरे मारग, और मेरे सयन को घेरा, और
४ मेरी सारी चालों को जानता है। कयोंकी देख
मेरी जीभ में कोइ ऐसी बात नहीं, जीसे हे पर-
५ मेसर, तु सरबथा नहीं जानता। तु ने आगे पीछे
मुझे घेरा है, और तु ने अपना हाथ मुझ पर धरा
६ है॥ ऐसा गयान मेरे लीये आसचरजीत है,
७ यह उंचा है, मैं इसे नहीं पासकता। तेरे आत-
मा से मैं कीधर जाउं? अथवा तेरे आगे से
८ कीधर भागुं? यदी मैं सरग पर चढ़ जाउं,
तो तु वहां है, यदी मैं परलोक में बीछौना बना-
९ उं, तो देख, तु वहां भी है। यदी मैं बीहान के
पंख लेके समुंदर के अंत सीवाने लों जा बसुं॥
१० तो वहां भी तेरा हाथ मुझे पहुंचावेगा, और
११ तेरा दहीना हाथ मुझे पकड़ेगा। यदी मैं कहुं,
की नीसचय अंधीयारा, मुझे छीपावेगा, रात मेरे
१२ आस पास उंजीयाली हो जायगी॥ नीसचय

अंधीयारा तुझ से अंधीयारा नहीं करसकता,
परंतु दीन की नाईं रात चमकती है, दीन रात
१३ दोनो एक सां हैं। कयोंकी तु मेरे अंतःकरन
का सामी है, तू ने मुझे माता की कोख में ढांपा॥
१४ मैं तेरी सतुत ही करुंगा, कयोंकी मैं भयंकर,
और आसचरज से बना हूं, तेरे कारज आसचरीत
१५ हैं, मेरा परान भले जानता है॥ जब की मैं
गुपत में सीरजा जाके पीरथीवी की नीचाई में
बीचीतरता से बनाया जाता था, तो मेरा ततव
१६ तुझ से छीपा न था॥ मैं अब लों अधुरा था,
और तेरी आंखें मेरे पींड को देखती थीं, जब लों
उन में से कोई न था, तब से तेरी पुसतक में लीखा
१७ हुआ था, की कौन कौन दीन बनेगा। हे ईसर,
तेरे सोच मेरे लीये कया ही बहुमुल हैं, उनका
१८ जोड़ कया ही बहुत है॥ मैं उन्हें कया गीनुं,
वे तो गीनती में बालु से अधीक हैं, जब मैं जागुं,
१९ तब भी तेरे ही पास हूं॥ हे ईसर, तु नीसचय
दुसटों को नास करेगा, सो हे घातीयो, मुझ से दुर
२० होजाओ॥ कयोंकी वे तेरे बीरुध में दुसटता की
बातें करते हैं, तेरे बैरी तो तेरा नाम अकारथ
२१ लेते हैं॥ हे परमेसर कया मैं तेरे बैरीयों से
बैर नहीं करता? कया मैं उन से, जो तेरे बीरो-

२२ घी है, उदास नहीं? मैं अतयंत वैन से उन से
वैन कनता ऊं, मैं उनहें अपना वैनी गीनता ऊं॥
२३ हे इसन, मुहे ढुंढ, ओान मेने अंत:कनन को जान,
२४ मुहे ताड़, ओान मेनी यींता को पहीयान। देष्प,
य़दी मुह में कीसी नीत की वुनाइ होवे, ता मुहे
सनातन के मानग पन लेजा॥

१४० एक सौ याळीसवां गीत॥

पनधान वजनीये के पास दाउद का गीत॥

१ हे पनमेसन, मुहे दुसट मनुष्प से छुड़ा, अंधेनी
२ जन से मुहे वया॥ जो अपने मन में वुनी यींता
३ कनते हैं, वे जुघ के लीये नीत एकठे हैं॥ उनहों
ने अपनी जीभ को सांप की नाइं योष्पी की है,
उनके होठों के नीये नागों का वीष्प है, सीलाह।
४ हे पनमेसन, दुसटों के हाथ से मेनी नछा कन,
अंधेनी मनुष्प से मुहे वया, कय़ोंकी उनहों ने
५ मेनी यालों को उलटाने को ठाना है॥ अहंका-
नीय़ों ने मेने लीये फंदे, ओान नसीयां छीपाइ हैं,
उनहों ने मानग की ओान जाल वीछाया है, उनहों
६ ने मेने लीये फंदा वीछाया है, सीलाह॥ मैं ने
पनमेसन से कहा, की तु मेना इसन है, हे पनमेसन

७ मेरी वीनतीश्रो का सवद सुन॥ हे परमेसर
परभु, मेरी मुकत के पराकरम, संगराम के दीन
८ में तु ने मेरे सीर पर आड़ कीया है। हे परमे-
सर, दुसट की इछा पुरी न कर, उसकी दुसट
जुगत के मत वढ़ा, न हा, की वे फुलें, सीलाह॥
९ जीनहों ने मुझे यारें श्रोर से घेर लीया है, उन
के हांठों की वुराइ उनहीं के सीरें पर पड़े॥
१० उन पर जलते अंगारे वरसें, वे आग में झांके
जायें, श्रार गहीरे गड़हां में, जीसतें वे फीर न
११ उठें॥ कुवकता पीरथीवी पर सथीर होने न पावें,
वुराइ अंधेरी जन को अहेर करके नास करे॥
१२ मैं जानता हूं, का परमेसर दुप्पीयों के श्रार
१३ दरीदरें के पद का पछ करेगा। नीसयय धरमी
तेरे नाम का धंन मानेंगे, श्रार पुरे लोग तेरे
आगे वसेंगे॥

१४१ ऐक सा ऐकतालीसवां गीत॥

दाउद का गीत॥

१ हे परमेसर, मैं तेरे आगे यीलाता हूं, मेरी श्रार
यटक कर, जव मैं परारथना करुं, मेरे सवद
२ पर कान धर। मेरी परारथना तेरे आगे सुगंध की
नाइ पहुंचे, श्रार मेरे हाथों का उठना सांझ के वल

३ की नाईं है॥ हे परमेसर, मेरे मुंह पर पहरु
४ बैठाव, मेरे होंठों के दुवार की रछा कर। कु-
करमीयों के संग दुसट करम करने के लीये मेरे
मन को कसी बुरी बात की ओर झुकने न दे,
और उनके सवादीत भोजन मुझे खाने न दे॥
५ धरमी कीरपा से मुझे थपड़ावे, और डपटे, उनका
सुगंध तेल मेरे सीर को न फोड़ेगा, कयोंकी तद
भी उनकी बीपतों में मेरी परारथना होगी॥
६ जब उनके नयायी पथरैले सथानों में उलटाये गये
हैं, तब वे मेरी बातें सुनेंगे, कयोंकी वे मीठी हैं॥
७ हमारी हडीयां समाध के मुंह में ऐसी बीथरी
हैं, जैसे पीरथीवी पर कोइ लकड़ी चीरता है।
८ परंतु हे परभु ईसर, मेरी आंखें तेरी ओर हैं,
मेरा भरोसा तुझ पर है, मेरे पराण को अकेला
९ मत छोड़॥ उनके बीछाये हुए जाल से, और
१० कुकरमीयों के फंदों से मुझे बचा। दुसट अपने
अपने जाल में पड़ेंगे, जब लों मैं बच जाउं॥

१४२ एक सौ बयालीसवां गीत॥

दाउद का मसकील एक परारथना॥

जब वुह खोह में था॥

१ अपने सबद से मैं परमेसर के आगे चीलाया,

२ मैं ने परमेस्वर से चीला के बीनती की॥ मैं अपना
३ दुष्प उसके आगे उंडेलुंगा॥ मैं अपना दुष्प
उसके आगे बरनन करुंगा, जब मेरा पराान मुझ में
डुब गया, तब तु ने मेरा पथ जाना, जीस मारग
में मैं चलता हूं,उनहों ने छीप के उस में मेरे लीये
४ फंदा लगाया है॥ मैं ने अपनी दहीनी ओर
ताका, और देष्पा, परंतु कोइ मनुष्य को न पाया,
जो मुझे पहीचानता, सरन मुझ से नसट हुआ,
५ कोइ मेरे पराान का पुछवैया न था॥ हे परमेस्वर,
मैं तेरे आगे चीलाया, और मैं ने कहा, की
जीवन के देस में तु मेरा सरन और भाग है॥
६ मेरे रोने पर सुरत लगा, कयोंकी मैं बहुत दुका-
यागया हूं, मेरे सताने वालों से मुझे छुड़ा, कयों-
७ कीं वे मुझ से बली हैं॥ मेरे पराान को बंदी
गीरह से छुड़ा, जीसतें मैं तेरे नाम की सतुत
करुं, धरमी मुझे घेर लेंगे,कयोंकी तु मुझ से मन
प्पोल के ब्येवहार करेगा॥

१४३ एक सो तेंतालीसवां गीत॥

दाउद का गीत।

१ हे परमेस्वर, मेरा रोना सुन, मेरी बीनतीयों
पर कान लगा, अपनी सचाइ में और अपने

२ धरम में मुझे उतर दे ॥ और अपने दास से लेखा
न ले, कयोंकी कोइ जीता परानी तेरी द्रीसट
३ में नीरदोष न ठहरेगा। कयोंकी वैरी ने मेरे
परान को सताया है, उस ने मेरे जीवन को भुम
लों माना है, उसने मुझे उनकी नाइं अंधीयारे में
४ वैठाया है, जो बहुत दीनों से मर गये हैं ॥ इस
लीये मेरा परान मुझ में डुब गया है, मेरा मन
५ मुझ में उजड़ गया है। मैं अगीले दीनों को
समरन करता हुं,मैं तेरे सारे कारजों को सोचता
हुं, मैं तेरे हाथ की रचना पर धयान करता हुं।
६ मैं अपने हाथ तेरी ओर वढाता हुं, मेरा परान
पयासी भुम की नाइं तेरा पयासा है, सीलाह।
७ हे परमेसर, झट मेरा सुन, मेरा परान घटा
जाता है, मुझ से मुंह मत छीपा, न हो, की मैं
८ उनकी नाइं होउं, जो गड़हे में गीरते हैं ॥ मुझे
सवेरे अपने परेम का अनुगीरह सुना, कयोंकी
मेरा भरोसा तुझ पर है, जीस मारग में मुझे
चला चाहीये,उस में मुझे चला,कयोंकी मैं अपना
९ परान तेरी ओर उठाता हुं ॥ हे परमेसर, मेरे
वैरीयों से मुझे छुड़ा, कयोंकी मैं ने तेरा आड़
१० पकड़ा है॥ अपनी इछा पर चलने को मुझे सीखला,
कयोंकी तु ही मेरा इसर है, तेरा उतम आतमा

११ मुझे सीधे मारग में पहुंचावे। हे परमेसर,
मुझे अपने नाम के लीये जीला, अपने धरम के
१२ लीये मेरे पराण को बीपत से छुड़ा॥ और
अपनी दया से मेरे बैरीयों का नास कर, और
जो मेरे पराण को दुष्प देते हैं, उनहें नास कर,
कयोंकी मैं तेरा सेवक हूं॥

१४४ एक सौ चौंतालीसवां गीत।

दाउद का गीत।

१ परमेसर मेरा पहाड़ धंन होवे, जो मेरे हाथों
को जुध करना, और मेरी अंगुलीयों को लड़ना
२ सीष्पलाता है। मेरी आसा और मेरा गढ़ मेरा
उंचा गुमट, और मेरा छुडाने वाला, मेरी ढ़ाल,
जीस पर मेरा भरोसा है, जो मेरे लोगों को मेरे
३ बस में करता है॥ हे परमेसर, मनुष्प कया है,
जो तु उसको सुध लेता है, और मनुष्प का पुतर
४ कौन है, जो तु उसे गीने? मनुष्प तो बयरथ
की नाइं है, और उस के दीन एक छाया की नाइं
५ हैं, जो बीतीजाती हैं। हे परमेसर, अपने सरग
को झुका, और उतर आ, पहाड़ों को छु, और

६ उनसे घुसां उठेगा ॥ ब्रीजुली गीना, औन उनहें
ब्रीथना, अपना ब्रान यला, औन उनहें नास कन ॥
७ उपन से अपना हाथ फैला, औन मुहे छुड़ा, मुहे
ब्रहुत पानीयों से औन पनदेसी संतानें के हाथ
८ से ब्रया। जीनका मुंह ब्रीनथा ब्रातें ब्रोलता है,
औन उनका दहीना हाथ झुठ का दहीना हाथ है।
९ हे ईसन, मैं तेने लीये नया गीत गाउंगा, औन
ब्रीन औन दस तान का ब्राजा ब्रजा के तेनी सतुत
१० गाउंगा। तुही है, जो नाजाओं को जय देता है,
औन अपने दास दाउद को दुष्प दायक तलवान से
११ छुड़ाता है॥ पनदेसीयों के ब्रंस के हाथों से,
जीन का मुंह ब्रीनथा ब्रातें ब्रोलता है, औन जीन
का दहीना हाथ झुठ का दहीना हाथ है, मुहे
१२ छुड़ा, औन ब्रया। जीसतें हमाने ब्रेटे अपनी
तनुनाई में पौधों की नाईं होवें, औन हमानी
ब्रेटीयां कोने के उन पथनों की नाईं हो जावें,
१३ जो सदन की नाईं प्योदे जावें ॥ जीसतें हमाने
प्यते में पुनन होके नाना पनकान के भंडान पाये-
जावें, औन हमानी भेड़ें सहसनों लाप्यों हमाने
१४ सड़कों में जनें। औन हमाने ब्रैल लदावके जोग
होवें, की कोई पैठ के उनहें ब्रेढ़ न लेजावे, औन
१५ हमाने मानगों में दुहाई न हो॥ घंन वे लोग,

जीनको यह दसा है,धंन वुह मंडली, जीसका
ईसर परमेसर है॥

१४५ एक सै पैंतालीसवां गीत।

दाउद की सतुत॥

१ हे ईसर मेरे राजा, मैं तेरी सतुत करुंगा,
२ और मैं सदा तेरे नाम का धंनवाद करुंगा। मैं
परतीदीन तेरा धंनवाद करुंगा, और सदा तेरे
३ नाम की सतुत करुंगा। परमेसर महान है, और
वुह अनयंत सतुत के जोग है, और उसकी महीं-
४ मा अपार है। एक पीढ़ी दुसरी से तेरे कारजों
की सतुत करेगी; और तेरे महत कारज को
५ बरनं करेगी। मैं तेरी महीमा की बीभव मय
परतीसठा, और तेरी आसचरज कीरया के
६ बीसय में कहुंगा॥ लोग तेरे भयंकर कारजों
की चरचा करेंगे, और मैं तेरी बड़ाई का बरनं
७ करुंगा॥ वे तेरी अनयंत भलाई का समरन
बहुताई से उचारन करेंगे, और तेरे धरम के
८ बीसय में गायेंगे। परमेसर कीरपाल, और
दया से पुरन है, और करोध करने में धीर,
९ और बड़ा दयाल है॥ परमेसर सब पर भला
है, और उसके सारे कारज पर उसकी कोमल-

१० दया है॥ हे परमेसर, तेरी सारी करीया तेरी
सतुत करेगी, और तेरे सत तेरा धंनवाद करेंगे।
११ वे तेरे राज के ऐसरय की चरचा करेंगे, और
१२ तेरे सामरथ की बातें करेंगे। जीसतें मनुष्य के
संतान पर उसकी बड़ाइ, और उसके राज का
१३ वीभव परगट होवे। तेरा राज्ञ सनातन का
राज है, और तेरी परभुता सारी पीढ़ी लों
१४ रहती है। सारे गीरवैयों को परमेसर थामता
१५ है, और झुके हुओं को उठाता है॥ सब की
आंखें तुही को ताकती हैं, और समय पर तु
१६ उनहें भोजन देता है॥ तु अपनी मुठी खोलता
है, और हर एक जीवधारी को संतुसट करता है।
१७ परमेसर अपने सारे मारगों में धरमी है, और
१८ अपने सब कारजों में दयाल है॥ जो उसे पुकारते
हैं, अरथात सब, जो सचाइ से उसका नाम लेते
१९ हैं, परमेसर उनके पास है। वुह अपने डरवैयों
की इछा पुरी करेगा, वही उनकी दुहाइ सुनेगा,
२० और उनहें बचावेगा। परमेसर अपने सारे परे-
मीयों का रछक है, परंतु वुह सारे दुसटों को
२१ नास करेगा॥ मेरा मुंह परमेसर की सतुत
करेगा, और सारे पराणी सदा उसके पवीतर नाम
का धंनवाद करें।

१४६ एक सौ छयालीसवां गीत।

१ परमेसर की स्तुति करो, हे मेरे प्रान, परमेसर
२ की स्तुति कर॥ जब लों मैं जीता रहूंगा, परमे-
सर की स्तुति करूंगा, जब लों मेरी अस्ती है,
३ मैं ईसर की स्तुति गाऊंगा॥ अध्यक्षों पर और
मनुष्य के बंस पर भरोसा न करो जिन में मुक्ति
४ नहीं॥ उसका सांस निकल जाता है, वुह अपनी
मिट्टी में फिर जाता है, उसी दिन उसकी सारी
५ चिंता नास हो जाती है। धन्य वुह जिसका उप-
कारक याकूब का ईसर है, और जिसका भरोसा
६ उसके ईसर परमेसर पर है॥ जिसने स्वर्ग, और
पिरथिवी, और समुद्र, और सब को, जो उन में
है, सिरजा; जो सदा सच्चाई की रक्षा करता है।
७ जो सताए हुओं की दुहाई सुनता है, और भूखों
को खिलाता है, परमेसर बंधुओं को छुड़ाता है॥
८ परमेसर अंधों की आंखें खोलता है, परमेसर
झुके हुओं को उठाता है, परमेसर धर्मियों से
९ प्रेम रखता है। परमेसर परदेसियों का रख-
वाल है, वुह अनाथों, और रांड़ों की सहाय
करता है, परंतु दुष्टों के मार्ग को उलट देता
१० है॥ परमेसर सनातन लों, अर्थात हे सैहून,

तेना इसन पीढ़ी से पीढ़ी लों नाज कनेगा, पनमे-
सन की सतुत कनो।

१४७ एक सो सैंतालीसवां गीत॥

१ पनमेसन की सतुत कनो, कयोंकी हमाने इसन
की सतत गाना भला, और मनोहन है, और
२ सतुत कनना सुंदन है॥ पनमेसन यीनोसलोम
की जोड़ाइ कनता है, वुह इसनाइल के नीकाले
३ हुओं को एकठा कनता है। वुह युनन अंत:कन-
नीयों को यंगा कनता है, वुह उनके सोक को
४ मीटाता है। वुह तानों की गीनती वुतलाता है,
५ और उनका नाम ले ले वुलाता है। हमाना पनभु
महान है, और महा सामनथ नप्पता है, उसकी
६ समझ अगनीत है। पनमेसन दीनों को उभाड़ता
७ है, और दुसटों को भुम पन दे मानता है। पन-
७ मेसन का धंनवाद गाओ, वीना वजा के हमाने
८ इसन की सतुत कनो। जो सनग को मेघों से
ढांपता है, जो पीनथीवी के लीये मेंह सीघ कनता
९ है, जो पहाड़ों पन घास उगाता है। जो पसुन
को और वन कौवों के वयों को, जो यीलाते
१० हैं, आहान पहुंयाता है॥ घोड़े के वल से वुह

आनंदित नहीं, और पुरुष की पिंडुलियों से
११ प्रसन्नता नहीं॥ जो उस से डरते हैं, और जो
उसकी दया के आसरित हैं, परमेसर उन से प्र-
१२ सन्न है॥ हे यिरोसलीम परमेसर की स्तुति कर,
१३ और हे सैहून, अपने ईसर की स्तुति कर। क्यों-
कि उसने तेरे फाटकों के अड़ंगों को दृढ़
किया है, और तुझ में तेरे बालकों को आशीर-
१४ बाद दिया॥ वुह तेरे सिवानों में चैन देता है,
और तुझे गेहूंओं की चिकनाई से भर देता है॥
१५ वुह अपनी आज्ञा पिरथिवी पर भेजता है, उस
१६ का बचन अत्यंत चोप्पाई से चलता है। पाला
को ऊन की नाईं देता है, वुह राख की नाईं हिम
१७ बिथराता है॥ वह अपने पाले को गरास की
नाईं भेजता है, उसके सीत के आगे कौन ठहर
१८ सकता? वुह अपना बचन भेजता है, और
उन्हें गलाता है, वुह अपने पवन चलाता है,
१९ और पानियों को बहाता है। वुह अपना बचन
याकूब पर, और अपने न्याय और अपनी बिधि
२० इसराईल पर प्रगट करता है॥ उसने किसी
देसी से ऐसा ब्यवहार न किया, और न उन्हों ने
उसके न्यायों को पहिचाना, परमेसर की स्तुति
करो॥

१४८ ऐक सै। अठतालीसवां गीत।

१ परमेश्वर की सतुत करो, सरगों पर से परमे-
श्वर की सतुत करो, उंच्यों में से उसकी सतुत करो।
२ उसके सारे दुतो, उसकी सतुत करो, उसकी
३ सारी सेनाओ, उसकी सतुत करो॥ हे सुरज, और
हे चांद, उसकी सतुत करो, हे सारे जोत के तारो,
४ उसकी सतुत करो। हे सरगों के सरग, हे पानीओ,
५ जो सरग के उपर हो, उसकी सतुत करो॥ वे
परमेश्वर के नाम की सतुत करें, कय़ोंकी उसकी
६ अगय़ा से वे सीरजे गए। उसने उनहें सनातन
के लीए़ सथीर कीय़ा है, उसने ऐक अगय़ा ठह-
७ राई है, जो टल न जाय़गी॥ हे अजगरो, और
हे गहीराओ, पीरथीवी पर से उसकी सतुत करो।
८ आग, और ओले, पाले, और कुहोरे, और बड़ी
९ आंधी, जो उसके कहने में हो॥ सब पहाड़ो, और
पहाड़ीय़ो, फलमान पेड़, और सारे सरो पेड़॥
१० पसु और सारे चैापाय़े, और कीड़े मकोड़े, और
११ उड़ने के पंछी। पीरथीवी के राजा, और सारे
लोग, और राज पुतर, और पीरथीवी के सारे
१२ नय़ाय़ी॥ तरुन, और तरुनी भी, और बीरध,
१३ और बालक॥ परमेश्वर के नाम की सतुत करें,
कय़ोंकी उसका नाम अकेला स्रेसट है, उसका

१४ ऐसनय पौनथीवो औन सनग के उपन है॥ वही
अपने लोगों के सींग को, औन अपने सानें सीधों की
सतुत को, अनथात अपने समीपी लोग इसनाइल
के संतान को वढ़ाता है, पनमेसन की सतुत कनो।

१४९ एक सौ उंयासवां गीत।

१ पनमेसन की सतुत कनो, पनमेसन के लीये नये
गीत गाओ, सीधों की सभा में उसकी सतुत कनो।
२ इसनाइल अपने सीनीसटकनता से आनंद कने,
३ सैहुन के वंस अपने नाजा से सानंद कनें॥ वे नाच
में उसका नाम ले ले के सतुत कनें, ढोल औन
४ वीना वजाते हुए उसकी सतुत गावें॥ कयोंकी
पनमेसन अपने लोगों से पनसन है, वुह दुष्पीयों
५ को अपनी मुकत से वीभुसीत कनेगा॥ सीध
लोग गौनव से आनंदीत होवें, औन अपने वीछौ-
६ नों पन पुकान के गावें॥ उनके मुंह में इसन की
वड़ी सतुत होवे, औन दोधाना खड़ग उनके हाथों
७ में॥ जीसतें अंनदेसीयों से पलटा लेवें, औन
८ लोगों को डंड देवें। औन उनके नाजाओं को
सीकनों से, औन उनके अधछों को लोहे का
९ वेड़ीयों से वाधें॥ जीसतें लीष्पा हुआ दंड उनहें

देवें, यही पनतीसठा उसके साने सीयों की है, पनमेसन की सतत करो।

१५० एक सौ पचासवां गीत।

१ पनमेसन की सतुत करो, उसके चनमचाम में इसन
की सतुत करो, उसके सामनथ के आकास में उस
२ की सतुत करो। उसके महत कानदों के लीये
उसकी सतुत करो, उसकी महीमा की उतमता के
३ समान उसकी सतुत करो। मीनदंग वजा के उस
की सतुत करो, वीना और ढोल, और पनवत
४ छेडते ऊए उसकी सतुत करो। प्यंजडी और
वांसुनी वजाते ऊए उसकी सतुत करो, सानंगी
और अनगना वजाते ऊए उसकी सतुत करो॥
५ वडे सवद की यकयकीया वजा के उस की सतुत
करो, वडे सबद के मंजीने वजा के उसकी सतुत
६ करो। हन एक सांस चानी पनमेसन की सतुत
करे, पनमेसन की सतुत करो॥

सुलेमान के दीनीसटांत॥

१ पहीला पनव्र।

१ दाउद के व्रेटे इसनाइल के नाजा सुलेमान के
२ दीनीसटांत॥ वुघ औान उपदेस जानने को औान
३ समझ की व्रातें व्रहने को। औान वुघ, औान घनम,
औान व्रीयान, औान प्पना उपदेस गनहन कनने
४ को। औान भोलों को यतुनाइ, औान तनुन को
५ गयान, औान मंतन देने को। वुघमान सुन के व्रीदया
द्रढ़ावेगा, औान समझवैया वुघ का मंतन पनापत
६ कनेगा॥ जीसतें दीनासटांत, औान उसके अनथ,
औान व्रुघमान की व्रातों को, औान उनके गुपत
७ कहावतों को समझे। पनमेसन का डन गयान
का आनंभ है, पनंतु मुढ़ लोग व्रुघ औान उपदेस
८ की नींदा कनते हैं॥ हे मेने व्रेटे, अपने पीता के

उपदेस को सुन, और अपनी माता की ब्यवस्था
९ को तयाग मत कर॥ कयोंकी वे तेरे सीर के
लीये आभुसन, और तेरे गले की सीकरें होंगे॥
१० हे मेरे बेटे, यदी पापी तुझे फुसलावें, तो मत
११ मान। यदी वे कहें, की आओ, घात के लीये
ढुके में लगें, और अकारन नीरदोस के लीये
१२ घात में लगें। समाध की नाईं उनहें जीते नील
जायें, और उनकी नाईं, जो गड़हे में गीरते हैं,
१३ समुचा नींगल जायें। हमें सब बहुमुल संपत
१४ मीलेगी, लुट से हम अपना घर भरेंगे॥ हम में
१५ मीलजा, आओ, हम सब एकही डांड़ा रखें। हे
मेरे बेटे, तु मारग में उनके साथ मत चल, उनके
१६ पथ से अपने पावों को रोके रह॥ कयोंकी उन
के पांव बुराइ पर दौड़ते हैं, और लोहू बहाने
१७ में बेग करते हैं। नीसचय पंछी की दीरीसट
१८ में जाल बीछाना बीरथा है। वे अपने लोहू के
लीये ढुके में हैं, वे अपने परान के लीये घात में
१९ हैं। धन के लोभी की चाल ऐसी हीं है, जो
२० अपने सामीयों के परान को ले लेता है॥ उतम
बुध बाहर पड़ी पुकारती है, वुह सड़कों में सबद
२१ करती है। वुह सभा सथान में और फाटकों के
नीकास में पुकारती है, नगर में वुह अपने बचन

२२ जयानती है ॥ हे भोले लोगो, कव्र लों भोले पन
से पनीत नप्पोगे, श्रोन नींदक अपनी नींदा में
आनंद कनेंगे, श्रोन मुढ़ गय़ान से वैन नप्पेंगे ?
२३ मेने दपट से फरीनो, देप्पो, मैं अपने आतमा को
तुम पन व्रहाउंगा, श्रोन अपने व्रयन तुमहें जना-
२४ उंगा ॥ इस कानन की मैं ने व्रुलाय़ा, पन तुम ने
नाह कीय़ा, मैं ने अपना हाथ व्रढ़ाय़ा, पन कीसो
२५ ने न माना। पन तुम ने मेने समसत मंतन को
२६ तुछ जाना, श्रोन मेने दपट को न माना। मैं भी
तुमहानी व्रीपत से हंसुंगा, जव्र तुम पन भय़
२७ आवेगा, मैं ठठे मानुंगा। जव्र तुमहाना भय़
उजाड़ की नाइं आवेगा, श्रोन तुमहाना व्रीनास
व्रौंडन की नाइं आ जायेगा, जव्र कसट श्रोन दुप्प
२८ तुम पन पड़ेगा ॥ तव्र वे मुहे, पुकानेंगे पनंतु मैं
उतन न देउंगा, वे मुहे तड़के ढुंढेंगे, पनंतु मुहे
२९ न पावेंगे ॥ कय़ोंकी उनहों ने गय़ान का वैन
३० न [illegible]ा, श्रोन पनमेसन का भय़ न युना ॥ उनहों
ने मेने मंतन को न माना, श्रोन उनहों ने मेनी
३१ सानी दपट की नींदा की ॥ सो वे अपनी ही
याल का फल प्पावेंगे, श्रोन अपनीही भावना से
३२ पुनन होवेंगे। कय़ोंकी भोलों का यैन उनहें
नास कनेगा, श्रोन भकुश्रों का भाग उनहें नास

३३ करेगा। परंतु जो मेरी सुनता है, सो चैन से
रहेगा, और बुराइ के भय से बचा रहेगा॥

दुसरा पत्र॥

१ हे मेरे बेटे, यदी तु मेरे बचन को मानेगा,
और मेरी आगयाओं को अपने पास छीपा रख्खेगा।
२ यहां लों की अपने कान को बुध की ओर झु-
कावे, और समझ की ओर अपना मन लगावे॥
३ हां, यदीं तु गयान के लीये पुकारेगा, और समझ
४ के लीये अपना सब्द बढ़ावेगा॥ यदी तु चांदी
की नाइं उसे ख्वोजेगा, और छीपे झुए धन की
५ नाइं उसे ढुंढेगा। तब तु परमेसर के भय को
६ समझेगा, और इसर के गयान को पावेगा। क्योंकी
की परमेसर बुध देता है, उसके मुंह से गयान
७ और समझ है॥ वुह धरमीयों के लीये चोख्वी
बुध धर रख्वता है, वुह उनके लीये, जो ख्वराइ
८ से चलते हैं, एक ढाल है॥ वुह बीचार के पथ
की रछया करता है, और अपने सीधों के मारग
९ की चौकसी करता है। तबही तु ठीक ख्वराइ
और बीचार, और धरम को, और हर एक
१० अच्छा पथ समझेगा॥ जब बुध तेरे मन में परवेस
करेगी, और गयान तेरे जीव को अच्छा लगेगा॥

११ तब सोच तेरी रक्षा करेगी, और समझ तेरी
१२ रखवाली करेगी। क्योंकी तुझे दुसट के मारग
से, और उस मनुष्य से, जो हठ की बातें करता
१३ है। उनसे, जो खराई के पथ को छोड़ देते हैं,
१४ जीसतें अंधीयारे मारगों पर चलें॥ जो बुराई
करने से आनंद होते हैं, और दुसटों के हठ से
१५ आनंद होते हैं॥ जीनकी चालें टेढ़ी हैं, और
१६ अपने पथों में तीरछे हैं, उनसे तुझे बचावे॥ की
तुझे पर इसतीरी से बचावे, उस उपरी इसतीरी से,
१७ जो अपने बचन से फुसलाती है॥ जो अपनी
जुबती के अगुआ को तयाग करती है, और
१८ अपने ईसर की बाचा को बीसरती है। क्योंकी
उसका घर मीरतु की ओर, और उसके पथ
१९ मीरतकों की ओर झुकते हैं॥ जो उस पास
जाते हैं, सो फीर नहीं आते, वे जीवन के मारगों
२० को नहीं धरते। जीसतें तु भलाई की चाल पर
२१ चले, और धरमीयों के पथों को धरे रहे। क्योंकी
देस में खरे बसेंगे, और सीध उस में बने
२१ रहेंगे। परंतु दुसट पीरथीवी पर से काट डाले
जायेंगे, और अपराधी उस से उखाड़े जायेंगे।

३ तीसरा पर्ब।

१ हे मेरे बेटे, मेरी ब्यवसथा को मत भूल, परंतु

२ तेरा मन मेरी आज्ञाओं को पालन करे। क्योंकी वे दीनों की बढ़ती, और जीवन के बरस, और
३ कुसल तुझे देंगे॥ ऐसा मत कर, की दया और सतता तुझे तयाग करें, परंतु उनहें अपने गले में लपेट, और उनहें अपने मन की पटीया पर लीष्य।
४ सो तु इसर की और मनुष्य की दीसट में कारज
५ सीध पावेगा॥ अपने सारे मन से परमेसर पर भरोसा रष्य, और अपनी समझ की ओर मत
६ झुक॥ अपने सारे मारगों में उसे मान ले, और
७ वुह तेरी चाल को सुधारेगा॥ अपनी दृष्टि में बुधमान मत हो, परमेसर से डर, और बुराई
८ से अलग हो। वुह तेरी नाभी के लीये औष्यध,
९ और तेरी हडीयों के लीये तरावट होगा। अपनी संपत में से और अपनी सारी बढ़ती के पहीले
१० फल से परमेसर की परतीसठा कर॥ सो तेरे ष्यते बहुताई से भरजायेंगे, और तेरे कोलहू
११ नई मदीरा से फुट नीकलेंगे॥ मेरे बेटे, परमेसर की ताड़ना को नींदा मत कर, और उसके
१२ दंड से थक मत जा। क्योंकी परमेसर, जीसे पीआर करता है, उसे ऐसा ताड़ना करता है, जैसा बाप अपने दुलारे बेटे को।

१३ धंन वुह मनुष्य, जीसने बुध को परापत कीया,

१४ और वुह मनुष्य, जिसने समझ को पाया। क्योंकि
कि उसका व्यापार चांदी के व्यापार से, और उसका
१५ लाभ चोखे सोने के लाभ से अच्छा है॥ वुह
लालों से बहुमूल है, और समस्त वस्तु, जिन-
की तु लालसा करसकता है, उसके तुल नहीं॥
१६ दिनों की बढ़ती उसके दहिने हाथ में, धन और
१७ प्रतिष्ठा उसके बाएं हाथ में॥ उसके मार्ग
आनंदता के मार्ग हैं, और उसके समस्त पथ
१८ कुशल के हैं। वुह उनके लिये, जो उसे ग्रहण
करते हैं, जीवन का वृक्ष है, धन वुह, जो उसे
१९ रख लेता है॥ परमेश्वर ने बुध से पृथिवी
की नेंव डाली, और समझ से स्वर्ग को स्थिर
२० किया॥ उसके ज्ञान से गहिराइयां फूट नि-
२१ कलती हैं, और मेघों से ओस टपकती है॥ मेरे
बेटे उन्हें अपनी आंखों से अलग मत होने दे,
२२ चोखी बुध, और सोच को रख रख। सो वे तेरे
प्राण के लिये जीवन और तेरे गले के लिये अनु-
२३ ग्रह होंगे। तब तु अपने मार्ग में भय से
२४ चलेगा, और तेरा पांव ठोकर न खायगा। जब
तु लेट जायगा, न डरेगा, हां, तु सो रहेगा, और
२५ तेरी नींद भी होगी। अचानक दुख से, और
दुष्टों के उजाड़ से, जब वुह आता है, मत डर।

२६ क्योंकी परमेसर तेरा भरोसा होगा, तेरे पांव
२७ को फंदे से बचावेगा। भलाई को उनके स्वामी-
यों से अलग मत रख, जब की तेरे हाथ में करने
२८ को सामर्थ होय। तेरे पास होते ही अपने
परोसी को मत कह, की जा, फीर आइयो; और
२९ मैं कल देउंगा। और अपने परोसी से बुरा
ब्यवहार मत कर, क्योंकी वुह चैन से तेरे पास
३० रहता है। कीसी मनुष्य से अकारथ मत झगड़,
३१ यदी उसने तुझ से खोटाई न की॥ अंधेरी पर
डाह मत कर, और उसके कोई मारग को मत
३२ चुन। क्योंकी कुटील से परमेसर को घीन है,
३३ परंतु उसका भेद धरमीयों पास है॥ दुष्टों के
घर पर परमेसर का स्राप, परंतु सज्जन के नीवास
३४ पर आसीस देता है। नीसचय वुह नींदकों की
नींदा करता है, परंतु वुह दीनों पर दया करता
३५ है। बुधमान बीभव के अधीकारी होंगे, परंतु
मुढों की बढ़ती लाज होगी।

४ चौथा परब्ब।

१ हे बालको, पीता के उपदेस को सुनो, और
२ समझ पर धयान करो॥ क्योंकी मैं तुम्हें अच्छा

उपदेस देता हूं, मेरी ब्यवस्था को त्याग मत
३ करो। क्योंकी मैं अपने पीता का बेटा था, और
४ अपनी माता का एकलौता लाडला। उसने भी
मुझे सीखलाया, और मुझे कहा, की मेरा बचन
तेरे मन में धरा रहे, मेरी आग्याओं को पालन
५ कर, और जीता रह॥ बुध और समझ प्राप्त
कर, मत भूल, और मेरे मुंह की बातों से मुंह
६ मत फेर। उसे त्याग मत कर, वुह तेरी रक्षा
करेगी, उसे पीआर कर, और वुह तेरी रक्षा
७ करेगी॥ बुध मुख्य बसतु है, सो तु बुध प्राप्त
कर, और अपने समसत प्राप्त में समझ प्राप्त
८ कर॥ उसे बढ़ा, वुह तुझे उभारेगी, जब तु उसे
९ गोद में लेगा, तब वुह तुझे प्रतीसठा देगी॥ वुह
तेरे सीर पर अनुग्रह का आभुषण रखेगी, वुह
१० तुझे बीभव का मुकुट देगी। मेरे बेटे, सुन, और
मेरे कहावतों को ग्रहन कर, और तेरे जीवन
११ के बरस बहुत से होंगे। मैं ने तुझे बुध का
मारग सीखाया है, मैं ने तुझे ठीक पथों में चलाया
१२ है॥ जब तु चलेगा, तेरे डग सकेत न होंगे,
१३ जब तु दौड़ेगा, तु ठोकर न खाएगा। उपदेस
को दीरढ़ता से धर रख, उसे जाने मत दे, उसे
१४ रख छोड़, क्योंकी वुह तेरा जीवन है॥ दुसटों

के पथ में मत बैठ, और बुराइ के मारग में मत
१५ जा ॥ उस से बच रह, उसके पास से मत जा,
१६ उधर से फिर जा, और निकल जा ॥ क्योंकि
जब लों वे बुराइ न कर लेवें, तब लों सोते नहीं,
और जब लों किसी को गिरा न देवें, उन्हें नींद
१७ नहीं आती। क्योंकि दुष्टता की रोटी खाते
१८ हैं, और अंधेर की मदिरा पीते हैं। परंतु सज्जन
की चाल चमकती जोत के समान है, जो मध-
१९ यान्ह लों चमकती जाती है। दुष्टों का मारग
अंधकार है, वे नहीं जानते हैं, कि किस से ठोकर
२० खाते हैं ॥ मेरे बेटे मेरी बातों पर ध्यान रख,
२१ और मेरे कहावतों पर झुक। उन्हें अपनी
दृष्टि से जाने मत दे, उन्हें अपने अंतःकरण
२१ में धारण कर। क्योंकि वे उनके लिये, जो उन्हें
प्राप्त करते हैं, जीवन और उनके सारे शरीर
२३ के लिये औषध हैं,। अपने अंतःकरण को समस्त
धारण से धारण कर, क्योंकि जीवन की धारा
२४ उसी से है ॥ मुंह की हठ को अपने से अलग
कर, और होंठों की टेढ़ाइ अपने पास से दूर
२५ रख ॥ तेरी आंखें आगे देखा करें, और तेरी
२६ पलकें तेरे साम्हने देखें। अपने पांव के पथ को
२७ तौल, सो तेरे सारे मारग ठीक किये जायेंगे। अथवा

दहीने वायें हाथ को मत मुड़,परंतु अपने पांव को
बुराइ से हटा।

५ पांचवां पत्र।

१ मेरे बेटे, मेरी बुध पर ध्यान कर, और मेरे
२ समझ की ओर अपने कान झुका॥ जीसतें तु
सोच करे, और तेरे होंठ ग्यान को धारन करें।
३ कयोंकी पर इसतीरी के होंठ से मधु का छता
टपकता है, और उसका तालु तेल से अचीक
४ चीकना है। पर उसका अंत नागदौना की नाइं
कड़ुवा है, और दोधारे खड़ग की नाइं चोखा॥
५ उसके पांव मौरतु में उतरते हैं, उसके डग नरक
६ को धारन करते हैं। न हो,की तु जीवन के पथ
को तोले, उसके मारग चलायमान हैं, तु नहीं
७ जान सकता॥ सो हे बालको, मेरी सुनो, और
८ मेरे मुंह के बचन से अलग मत होओ। अपना
मारग उस से दुर हटाओ, और उसके घर के
९ दुवार के पास मत जाओ॥ ऐसा न होवे, की तु
अपनी परतीसठा औरों को, और अपने बरस
१० करुरों को देवे॥ न होवे, की पराये लोग तेर
बल से पुरन होवें, और तेरा साना परीसरम
११ उपरी के घर में उठे। जब तेरा मांस, और तेरा

देह छीन होजाय, तव तु अंत में वीलाप करके
१२ कहे॥ हाय मैं ने उपदेस से वैर रप्पा, और
१३ मेरे मन ने तेरे दपट को नींदा की है। और
अपने उपदेसकों के सवद को न माना, और जो
मुझे उपदेस देते थे, मैं ने उनकी ओर कान न
१४ लगाये॥ मैं मंडली के मध में और सभा में
१५ कुछ कुछ छोड़ समसत वुराइ में था। अपने ही
कुंड से पानी पी, और अपने ही कुंऐ से वहता
१६ पानी॥ तेरे सोते वाहर फैलाए जावें, और
१७ नदीयों के पानी सड़कों में॥ वे अकेले तेरे ही
होवें, और कोइ पराया तेरा साथी न होवे॥
१८ तेरे सोते में आसीस होवे, और अपनी जुवावसथा
१९ की पतनी से आनंद हो॥ उसे ऐसा पीआर कर,
जैसे पीरीय हरनी और मन भाया हरनी का
गदेला, हर समय में उसके सतनों से संतुसट हो,
२० और उसके पीआर से सदा आनंदीत हो॥ और
हे मेरे वेटे, तु कीस लीये पर इसतरी से आस-
हादीत होवेगा, और उपरी को कीस लीये समे-
२१ टेगा? कयोंकी मनुप्प की चाल परमेसर की
आंप्पों के आगे है, और वुह उसकी सारी चलन
२२ को जांचता है॥ उनहीं की वुराइयां दुसटों
को पकड़ लेंगी, और वुह अपने ही पाप की डोरीयों

२२ से जकड़ा जायगा॥ वुह वीना सीष्पा से मन-
जायगा, श्रीन अपनी ऋतीं मुढ़ता में नटका फरी-
नेगा।

६ छठवां पनव॥

१ मेने वेटे, यदी तु अपने मीतन का वीयवइ ड्रश्रा
हो, यदी तु ने कीसी पनदेसी से हाथ माना हो॥
२ तो तु अपनेही मुंह की वातों से फंसगया, श्रीन
३ अपने ही मुंह की वातों से पकड़ा गया॥ मेने
वेटे अव यह कन, श्रीन आप को वया, की जव
तु अपने मीतन के हाथ में पड़ जाय, तो आप
को नमन कन, इस मांत से तु अपने मीतन
४ को वस में कनेगा॥ अपनी आंष्पों का नींद मत
५ दे, श्रीन अपनी पलकों को उंघने मत दे। अपने
को हनीन के गदेले की नाइं वयाधा के हाथ से,
श्रीन चीड़ीया के समान चीड़ीयामान के हाथ
६ से वया। हे आलसी, चीउंटी के पास जा, उसके
७ मानगों का वुझ, श्रीन वुधमान हो। जो अगुआ
८ कनोड़ा, श्रीन अगयाकानी न नष्पके। गीनीसम
में अपने लीये माेजन सीध कनती है, श्रीन लवनी
९ में अपना आहान वटोनती है। हे आलसी तु
१० कव लों सोवेगा, तु कव अपनी नींद से उठेगा। थोड़ा

सोना, और थोड़ा उंघना, और थोड़ा हाथों को
११ नींद के लिये समेट लेना। सो तेरी कंगालपन
पथिक की नाईं आवेगी, और तेरी दरिद्रता हथि-
१२ यारबंद की नाईं ॥ कुजन जन, और दुष्ट मनुष्य
१३ मुंह की हठ से चलता है। वुह अपनी आंखों
से मानता है, वुह अपने पांओं से बोलता है, वुह
१४ अपनी अंगुलियों से सिखाता है। टेढ़ाई उसके
मन में है, वुह सदा बुराई पर सोच करता है,
१५ वुह बिगाड़ फैलाता है। सो उस पर अचानक
बिपत आ पड़ेगी, वुह बिना औषध टूट जायगा।
१६ परमेश्वर इन छवों से बैर रखता है, हां, सात से
१७ उसका जीव घिन करता है ॥ अहंकारी आंख,
झूठी जीभ, और हाथ, जो निर्दोष का लोहू
१८ बहाता है। मन, जो बुरा बिचार बांधता है,
१९ पांव, जो बुराई के लिये बेग दौड़ते हैं। झूठा
साखी झूठ बोलता है, और वुह, जो भाइयों में
२० बिगाड़ बोता है। मेरे बेटे, अपने पिता की आज्ञा
को पालन कर, और अपनी माता की ब्यवस्था
२१ को त्याग मत कर ॥ उन्हें सदा अपने मन में
२२ बांध ले, और उन्हें अपने गले में लपेट ॥ जब
तू चलेगा, वुह तेरी अगुआई करेगी, जब तू
सोयेगा, वुह तेरी रक्षा करेगी, और जब तू

२३ जागेगा, वुह तुझ से बातें करेगी॥ क्योंकी
आग्या जो है, सो ऐक दीपक है, और ब्यवस्था
उंजीयाला है, और उपदेस की दपट जीवन के
२४ मारग॥ जीसतें तुझे बुरी इसतरी से, और
२५ पराइ जोरु की फुसलाहट से अलग रखे। अपने
मन में उसके रुप का इछा मत कर, और उसे
अपनी आंखों की पलकों से आप को पकड़ने मत
२६ दे। क्योंकी ब्यभीचारनी के कारन से पुरुष
टुकड़ा मांगा करता है, और ब्यभीचारनी महंग
२७ मोल परान का अहेर करती है। क्या मनुष्य
अपनी गोद में आग लेवे, और उसके कपड़े न
२८ जलें? क्या कोइ अंगारे पर चले, और उसके
२९ पांव न जलें? ऐसाही अपने परोसी की पतनी
के पास, जो कोइ जाता है, सो नीरदोष न रहे-
३० गा॥ चोरी योर अपनी भूष मीटाने के वास्ते
चोरी करके अपने परान को संतुष्ट करे, तो उस
३१ की नींदा नहीं होती। पर यदी वुह पकड़ा
जाय, तो सातगुन भर देगा, वुह अपने घर की
३२ समसत संपत देगा। जो कोइ कीसी इसतरी से
ब्यभीचार करता है, सो नीरबुध है, वुह अपने
३३ परान को नास करने के लीये करता है। वुह
घाव और नीरादर पावेगा, और उसका कलंक

३४ मीटाया न जाय ॥ की हल मनुष्य का कोप है,
३५ सो वुह पलटा के दीन न छोड़ेगा। कीसी भ्रांत
के छुड़ावा को न मानेगा, यदपी तू उसे वक्कत दान
देवे, तथापी वुह न मानेगा।

७ सातवां पत्न।

१ मेरे बेटे, मेरी बातों को धारन कर, और
२ मेरी अगयाओं को अपने पास धर रष्य ॥ मेरी
अगयाओं को धारन कर, और जीता रह ; और
मेरी बैवसथा को अपनी आंष्य की पुतली की नाइं
३ कर ॥ उनहें अपनी अंगुलीयों पर बांध, उनहें
४ अपने मन की पटरी पर लीष्य ॥ बुध को कह,
की तू मेरी बहीन, और समझ को अपना कुटुंब।
५ जीसतें वे तुझे परइसतरी से, और उस उपरी
से; जो तुझे अपनी बातों से फुसलाती है, बचा
रष्यें।

६ कयोंकी मैं ने अपने घर की ष्यीड़की के झरोष्ये
७ से देष्या। और भकुओं में और तरुनों में एक
८ असमझ को देष्या ॥ उसके घर के कोने के पास
सड़क से चलाजाता था, और वुह उसके घर की
९ ओर गया ॥ गोधुली में सांझ को बड़ी अंधीयारी
१० रात को ॥ और देष्यो, की बेसवा के पहीनावा में

११ उसे ऐक दूसतनी मोली, जो यतुन थी। अव
मानगों में और इन ऐक कोने में अगोनती है॥
१२ वुह योलाती है, और ढीठ है, उसके पांव घन में
१३ नहीं ठहनते॥ उसने उसे पकड़ा, और उसका
१४ युमा लीया, और नीनलज से उसे कहा॥ की
मेने यहां कुसल की मेंट हैं, आज के दीन मैं ने
१५ अपनी मनौतीयां पुनी की हैं। इस लीये मैं तुह
से मीलने को नीकली हूं, की जतन से तुहे ढुंढ़ूं,
१६ और तुहे पाया है॥ मैं ने अपने वीछौने को
मीसन के वुटे काढ़े हुऐ हीने वसतन से संवाना
१७ है॥ मैं ने अपने वीछौने को मुन, और ऐलवा,
१८ और दानयीनी से सुगंध कीया है॥ आव
पनातःकाल लों पनेम से मीत के उनमत होवें, आव,
१९ आपुस में पीआन से जी वहलावें॥ कयोंकी
वह भला मनुष्य तो अपने घन में नहीं, उसने दुन
२० की यातना की है। वुह ऐक थैला नोकड़ अपने
हाथ में लेगया है, और पनीवा को घन आवेगा॥
२१ सो उसने अपनी छल की वातों से उसे वस में
कीया, और अपने होंठों के फुसलाने से उसे
२२ खींया॥ वुह अयानक उसके पीछे यला जाता
है, जैसे वनदा घात होने को जाता है, अथवा
मुढ़ की नाईं, जो काठ में ठोके जाने के लीये जाता

२३ है॥ यहां लों, की वनछी उसके कलेजे के पान
होगइ, उस यीड़या के समान, जो जाल की ओन
सीघन जाती है, और नहीं जानती, की वहां उस
२४ का पनान जायगा॥ सो अव हे वालको, मेनी
सुनो, और मेने मुंह के वचन पन घयान नप्पो।
२५ अपने मन को उसके मानगों पन हुकने मत देओ,
२६ भटक कन उसके पथों में मत जाओ॥ कहोंकी
उसने वहुतों को घायल कनके गीना दीया है,हां,
२७ वहुत से सुन उस से जुहगये हैं॥ उसका घन
ननक के मानग हैं, जो मीनतु के भवनों में पहु-
यते हैं।

८ आठवां पनव॥

१ कया वुघ नहीं पुकानती, और कया समह
२ अपना सवद नहीं उठाती? वुह उंये सथानों के
उपन की योटीयों पन, और उन सथानों में, जो
सड़क के वीय में हैं, मानग पन खड़ी नहती है॥
३ वुह फाटकों पन, और नगन के पैठ पन, और
४ भीतन आने के दुवानों पन पुकानती है। की हे
लोगो, मैं तुमहें वुलाती हुं, और मनुष्य के संता-
५ नों को पुकानती हुं। हे भोलो, वुघ को समहो,
६ और हे मुनप्पो, समह का मन नप्पो। सुनो,कयों-

की मैं अच्छी अच्छी व्रातें कहूंगी, और मेरे होंठों
७ के खुलने से ठीक व्रातें नीकलेंगी। कयोंकी मेरा
मुंह सच सच कहेगा, और दुसटता से मेरे होंठों
८ को घीन है। मेरे मुंह की सारी व्रातें धरम की
९ हैं, उन में टेढ़ी तीरछी कोई व्रसतु नहीं। समझ-
वैया के लीये सव्र खुला है, और गयानी के लीये
१० सव्र ठीक। मेरे उपदेस को ग्रहन करो,रुपे को
नहीं;और गयान को चोखे सोने से अधीक चुनो।
११ कयोंकी व्रुध लाल से भी अच्छी है, और समसत
व्रसतें, जीन की लालसा की जाती है, उसके तुल
१२ हो नहीं सकतीं॥ मैं जो व्रुध हूं, चौकसी के
साथ रहती हूं, और चतुराई के भेद के गयान
१३ को परापत करती हूं॥ व्रुराई से घीन करना
परमेसर का भय है, और मैं अहंकार,और अभी-
मान, और कुमारग, और कुव्रचन से व्रैर रखती
१४ हूं। मंतर और ठीक व्रुध मेरी हैं, मैं ही समझ
१५ हूं, और सुही में व्रल है। सुझ से राजा राज
करते हैं, और राजपुतर व्रीचार करते हैं॥
१६ सुझ से परधान, और अधक्ष, और पीरथीवी के
१७ सारे नयायी परभुता करते हैं। मैं उन पर
परेम करती हूं, जो सुझ से परेम रखते हैं, और
१८ वे, जो सुझे तड़के ढुंढते हैं, मुझे पावेंगे॥ धन

ऋौन पनतीसठा हां, दौनढ़ घन ऋौन घनम मेने
१९ साथ हैं। मेना फल सोने से, हां, योप्पे सोने से,
२० ऋौन मेना कन योप्पी यांदी से ऋला है। मैं
घनम के मानग में, ऋौन व्रीयांन के पथ के मघ
२१ में लेजाती ऊं। जीसतें मैं उनहें, जो मुझे पीआन
कनते हैं संपत का ऋघीकानी कनुं, ऋौन मैं उन
२२ के ऋंडान भनदेउंगी। पनमेसन ऋपने मानग के
ऋानंभ में ऋपने पनायीन कानजों से ऋागे मुझे
२३ नप्पता था॥ मैं सनातन से सथापीत की गइ,
२४ ऋानंभ से पीनथीवी के होने से ऋागे। जव्र गहीं-
नाव न थे, मैं उतपंन ऊइ; जव्र पानी भने सोते
२५ न थे। मैं पहाड़ो के सथीन होने से पहीले, ऋौन
२६ पहाड़ीऋों से ऋागे उतपंन ऊइ॥ जव्र लों उसने
पीनथीवीं न व्रनाइ थी, न प्पुला सथान, न जगत
२७ की मीटी के सनेसट सथान। जव्र की उसने सनग
व्रनाऐ, ऋौन गहीनाव के मुंह को घेन लीया, मैं
२८ वहां थी। जव्र उसने उपन को ठहनाया, ऋौन
जव्र की उसने गहीनाव के सोतों को दीनढ़ कीया।
२९ जव्र उसने समुंदन को ऋगया दी, की पानी उसकी
ऋगया से व्राहन न जावें, जव्र उसने पीनथीवी
३० की नेंवें डालीं॥ तव्र मैं उसके पास पीनतीपालीत
के समान थी, ऋौन मैं पनती दीन ऋानंदीत थी,

३१ औन सदा उसके आगे आनंद कनती थी॥ मैं
उसकी पीनथीवी के वसाव के टुकड़े पन आनंद
कनती थी, औन मेना आनंद मनुष्प के संतान के
३२ साथ था। सो अव हे वालको, मेनी सुनो, कयों-
की, जो मेने मानग को घानन कनते हैं, सो घंन
३३ हैं। उपदेस सुनो, औन वचनान होओ, औन
३४ उसे टाल मत देओ। घंन वुह मनुप्प, जो मेनी
सुनता है, औन जो पनतीदीन मेने फाटकों पन
वाट जोहता है, औन मेने दुवानों के प्यंभ्रों पन
३५ ठहनाता है। कयोंकी जो स कीसी ने मुझे पाया,
उसने जीवन को पाया, औन पनमेसन का अनु-
३६ गीनह पनापत कनेगा॥ पनंतु जो मेना पाप
कनता है, सो अपने पनान का वैन कनता है, वे
सव, जो मुझ से वैन नप्पते हैं, मीनतु से पनेम
कनते हैं॥

९ नवां पत्रव॥

१ वुघ ने अपना घन वनाया है, उसने अपने सात
२ प्यंभ्रे गाडे हैं। उसने अपने वघनों को वघ कीया
है, उसने अपनी मदीना को मीलाया है, उसने
३ अपना मंच भी सीघ कीया है। उसने अपनी
सहेलीयों को भेजा है, वुह नगन के उंचे से उंचे
४ सथानों पुकानती है॥ जो कोइ भोला हो, सो इघन

५ फरीने, वुह असमझ को कहती है। आओ, औान
मेनी नोटीओं में से खाओ, औान मेनी मीलाइ
६ कुइ मदीना में से पीओ। मुढ़ता तयागो, औान
७ जीओ, औान समझ के मानगों में जाओ॥ जो
नींदकों को छीड़कता है, सो अपने लीये लाज
पनापत कनता है, औान जो दुसट को दपटता है,
८ सो आप ही कलंक पाता है। नींदकों को मत
छीड़क न हो, की वुह तुझ से वैन कने, वुध मान
९ को छीड़क औान वुह तुझ से पनेम नख्खेगा॥ वुध-
मान को उपदेस कन, औान वुह अधीक वुधमान
होगा, सजन को सीख्खला, औान वुह वीदया में
१० वढ़ेगा॥ पनमेसन का भय, वुध का आनंभ,
११ औान पवीतननय़ का गयान समझ है॥ कयोंकी
मुझ से तेने दीन वढ़ जायेंगे, औान तेने जीवन
१२ के वनस अधीक होंगे॥ यदी तु वुधमान होवे,
तो अपने ही लीये वुधमान होगा, यदी तु नींदा
कने,तुही अकेला सहेगा॥

१३ मुढ़ इसतीनी झगड़ालु है, भोली कुछ नहीं जान-
१४ ती। वुह अपने घन के दुवान पन, औान नगन
१५ के उंचे सथानों में पीढ़ी पन वैठी है॥ जोसतें
पथीकों को, जो अपने सीधे मानगों पन चलेजाते
१६ हैं, वुलावे॥ की जो कोइ भोला हो, सो इधन

१७ फीने, औान वुह वुघ हीन से कहती है। योनी
के पानी मोठे हैं, औान छोपी छापी नोटी अछी
१८ लगती है॥ पनंतु वुह नहीं जानता, की वहां
मौनतक हैं, औान उसके पाक्रन ननक के गही-
नापे में हैं॥

१० दसवां पत्र्व।

१ सुलेमान के दीनीसटांत, वुघमान व्रेटा पीता को
आनंदीत कनता है, पनंतु सुढ व्रेटा अपनी माता
२ की उदासी है। दुसटता के अंडान से कछ पना-
३ पत नहीं, पनंतु घनम मीनतु से छुडाता है। पन-
मेसन घनमी के पनान को भुप्प से मनने न देगा,
पनंतु वुह दुसटों को उनकी दुसटता के कानन
४ तयाग कनेगा। जो ढीने हाथ से व्रांटता है, सो
कंगाल होता है, पनंतु यालाकों का हाथ घीन
५ कनता है। जो गनीसम में व्रटोनता है, सो वुघ
मान पुतन है, पनंतु जो लवनी में सोता है, सो
६ लाज देवैया पुतन है। सजन के सीन पन आ-
सीस है, पनंतु अंधेन दुसट के मुंह को ढांपता है।
७ सजन का समनन चंन है, पनंतु दुसटों का नाम
८ सड़ जायगा। अंतःकनन का वुघमना अगया
मानेगा, पनंतु होठों का सुनप्प माना जायगा॥
९ जो प्पनाइ से यलता है, सो सयाइ से यलता

है, पनंतु जो अपने मानग को बीगाड़ता है, सो
१० पनगट हो जायगा॥ जो आंप्प से मटकाता है,
सो सोक कनाता है,पनंतु गपी मुनप्प मारा जाय-
११ गा। धनमी का मुंह जीवन का कुंआ है, पनंतु
१२ अंधेन दुसटों के मुंह को ढांपेगा। बैन झगड़ा
उठाता है, पन पनेम सारे पापों को ढांपता है॥
१३ समझवैया के होंठ में बुध पाई जाती है, पनंतु मन
१४ हीन की पीठ के लीये छड़ी है। बुधमान गयान
धन नप्पता है, मुनप्प का मुंह नास के समीप है।
१५ धन मान का धन उसका दीनढ़ नगन है, कंगालों
१६ की कंगालपन उनका नास है॥ धनमीयों का
पनीसनम जीवन के लीये है,पनंतु दुसटों का फल
१७ पाप के लीये है॥ जो उपदेस धानन कनता है,
सो जीवन के मानग पन है, पनंतु जो दपट को
१८ नहीं मानता है, सो चुक कनता है॥ जो झुठ
होंठों में बैन छीपाता है, औन जो अपबाद को
१९ उच्चानता है, सो मुनप्प है। बचन की बहुताई
में पाप की घटती नहीं है, पनंतु जो अपने होंठों
२० को नोकता है, सो बुधमान है। सजन की जीभ
चुनी हुई चांदी है, दुसट का मन थोड़े मोल का
२१ है॥ धनमीयों के होंठ बहुतों को प्पीलाते हैं,
२२ पनंतु मुनप्प लोग मनहीनता से मनते हैं। पन-

मेसन ही का आसीस घनी कनता है, औन वुह
२३ उसके साथ सोक नहीं मीलाता॥ वुनाई कनना
मुनष्य के लीय़े ठठा है, पनंतु समझवैय़ा के पास
२४ वुध है। दुसटों का भय़ उन पन पड़ेगा, पनंतु
२५ धनमीय़ों की इक्षा पुनन होगी॥ जोस नीती से
वौंडन जाता है, वैसा ही दुसट न वय़ेगा, पनंतु
२६ धनमी सनातन की नेंव हैं। जैसा दांतों के लीय़े
सीनका, औन आंखों के लीय़े धुआं ऐसा ही
आलसी अपने भेजवैय़ा के लीय़े है, जो उसे भेज-
२७ ते हैं॥ पनमेसन का भय़ वय़ को वढ़ाता है,
२८ पनंतु दुसटों के वनस घटाय़े जाय़ेंगे॥ धनमीय़ों
की आसा आनंद है, पनंतु दुसटों की आसा नास
२९ होगी। पनमेसन का मानग प्ने लोगों के लीय़े
३० वल है, पनंतु कुकनमीय़ों के लीय़े वीनास॥ धन-
मी कभी टलाय़े न जाय़ेंगे, पनंतु दुसट पीनथीवी
३१ के अधीकानी न होंगे। सजन के मुंह से वुध
नीकलती है,पनंतु टेढ़ी जीभ काट डाली जाय़ेगी।
३२ धनमी के होंठ जानते हैं,की गनाह्य के जोग कय़ा,
पनंतु दुसट का मुंह टेढ़ा है॥

११ गय़ानहवां पनव़।

१ छल की तुला पनमेसन को घीन है, पनंतु पुना

२ वृटप्पना उसको पनसंनना है। अहंकान जव्र
आता है, तव्र लजा आती है, पनंतु नम्रनता
३ के साथ वुघ है। प्पनाइ की सयाइ उनकी अगु-
आ होगी, पनंतु अपनाघोयों की टेढ़ाइ उनहें
४ नास कनेगी। कोप के दीन घन से लाभ नहीं
होता, पनंतु घनम मीनतु से छुड़ाता है॥ सीघ
५ का घनम उसके मानग को सुघानेगा, पनंतु
६ दुसट अपनी दुसटता ही से गीन पड़ेगा॥ प्पन
का घनम उनहें छुड़ावेगा, पनंतु अपनाघी नटप्पटी
७ में पकड़े जायेंगे। जव्र दुसट मनुप्प मनता है, तव्र उस
की आसा नसट होती है, और अ-सत की आसा
८ नसट होती है,॥ घनमी दुप्प से छुड़ाया जाता
है, और उसकी संती दुसत कपड़ा जाता है।
९ कपटी ननुप्प मुप्प से अपने पनोसी को नास कनता
है, पनंतु सजन गयान के दुवाना से छुड़ाया
१० जायगा। जव्र घनमीयों पन भलाइ वीतती है,
तव्र नगन आनंदीत होता है, और जव्र दुसट
११ नसट होता है, तव्र ललकाना जाता है। प्पनां
के आसीस से नगन वृढ़ाया जाता है, पनतु
१२ दुसटों के मुंह से उलटाया जाता है। जो मन
हीन है, सो पनोसी की नींदा कनता है, पनंतु
१३ समझवैया युपका नहता है। लुतड़ा ममुप्प भेद

पनगट कनता है, पनंतु जीसका व़ीस्वसत पनान
१४ है,सो व़ात छीपाता है। जहां पनामनस नहीं,तहां
लोग गीने पड़ते हैं, पनंतु मंतनीय़ों की व़ड़ताइ
१५ से व़याव है॥ जो पनदेसी का व़ीयवइ होता
है, सो पछतावेगा, श्रोन जो व़ोयवइ होने से व़ैन
१६ नप्पता है, सो नीनभय़ है। श्रनुगीनहीत इस-
तीनी पनतीसठा नप्प छोड़ती है, श्रोन व़लवंत
१७ पुनुप्प धंन को नप्प छोड़ता है॥ दय़ाल मनुप्प
श्रपने ही पनान पन भलाइ कनता है,पनंतु कठान
१८ श्रपने ही मांस को दुप्प देता है॥ दुसट छल के
कानज कनता है, पनंतु जो धनम व़ोता है, सो
१९ श्रवस पनतीफल पाय़ेगा। जैसा धनम से जीवन
है, वैसा जो व़ुनाइ का पीछा कनता है, सो श्रपने
२० ही मीनतु के लीय़े है॥ जीन का मन टेढ़ा है,
सो पनमेसन के श्रागे घीनीत हैं, पनंतु जीनकी
२१ याल प्नी है, सो उसका श्रानंद है। य़दपी
हाथ से हाथ मीले,तथापी दुसट नीनदंड न जाय़-
गा, पनंतु धनमीय़ों का व़ंस छुड़ाय़ा जाय़गा।
२२ नुपवती इसतीनी, जो लाज को छोड़ती है, सो
उस सुश्रन की नाइ है, जीसके थुथुनों में सोने की
२३ नथुनी है। धनमीय़ों की लालसा केवल भलाइ
२४ है, पनंतु दुसटों की श्रासा कनोध है॥ कोइ तो

व्रीथनाता है, तथापी व्रटोनता है, ग्रैान कोइ
उयीत से ग्रघीक नप्पछोडता है, पनंतु दनीदनता
२५ का कानन हो जाता है॥ ग्रासीस का ग्रंत:
कनन मोटा होगा, ग्रैान वुह, जो सींयता है, ग्राप
२६ भी सींयाजाग्रगा। जो ग्रंन नप्प छोडता है, उस
पन सनाप होगा, पनंतु व्रेयवैग्रा के सीन पन
२७ ग्रासीस होगा। जो ग्रतन से भलाइ ढुंढता है,
सो ग्रनुगीनह पनापत कनता है, पनंतु जो वुनाइ
२८ को ढुंढता है, वुह उसी पन ग्रावेगी। जो ग्रपने
घंन पन भनोसा नप्पता है, सो गीनपड़ेगा, पनंतु
२९ घनमी डाली की नाइं लहलहावेगा। जो ग्रपने
घनाने को सताता है, सो पवन का ग्रघीकानी
होगा; ग्रैान मुनप्प जन वुघमान ग्रंत:कनन का
३० सेवक होगा। घनमी जीवन का व्रीनछ है, ग्रैान
३१ जो पनानों को जीतता है, वुघमान है॥ देप्प,
घनमी को पीनथीवी पन पलटा दीग्रा जाग्रगा, ते।
कीतना ग्रघीक दुसट ग्रैान पातकी को।

१२ व्रानहवां पनव्र॥

१ जो कोइ उपदेस से पनेम नप्पता है, गग्रान से
पनेम नप्पता है, पनंतु जो दपट से व्रैन नप्पता
२ है, सो पसुवत है। उतम पनमेसन का ग्रनुगीनह

पाता है, परंतु दुष्ट जुगती मनुष्य को दोषी ठह-
३ रावेगा॥ दुष्टता से मनुष्य स्थिर न कीया
जायगा, परंतु धर्मीयों की जड़ टलाई न जाय-
४ गी॥ सुकर्मी इस्तीरी अपने पती के लीये मुकुट
है, परंतु जो लज्जीत करातो है, सो उसकी हड्डीयों
५ में सड़ाहट की नाईं है॥ धर्मीयों की चींता
६ ठीक है, परंतु दुष्टों के परामर्स कपट हैं। दुष्-
टों की बातें घात के लीये ढुके में रहती हैं, परंतु
७ खराई का मुंह उन्हें छुड़ावेगा॥ दुष्ट लोग
उलटाये गये हैं, और नहीं हैं, परंतु धर्मीयों
८ का घर स्थिर रहेगा॥ मनुष्य का सराहना
उसकी बुध के समान होगा, परंतु जो अंतःकरन
९ का टेढ़ा है, सो नींदीत है॥ जीसका सेवक है,
सो उस से भला है, जो अपनी प्रतीसठा करता
१० है, और रोटी का अधीन है॥ धर्मी अपने
पसुन के प्रान की चींता करता है, परंतु दुष्टों
११ की कोमल दया कठोरता है॥ जो भुम को
जोता बोया करता है, सो रोटी से तरीपत होगा,
परंतु जो तुच्छ का पीछा करता है, सो असमझ है।
१२ दुष्ट बुराई का जाल चाहता है, परंतु धर्मीयों
१३ की जड़ प्रापत देती है। होंठों के पाप से दुष्ट
बझाया जाता है, परंतु सज्जन दुःख से नीकल आवे

१४ गा ॥ अपने मुंह के अछे फरलें से मनप्य तनोपत
कीया जायगा, पनंतु मनुप्य के हाथें का पनती-
१५ फरल उसे दीया जायगा ॥ मुढ़ की याल उसकी
दीनीसट में ञलो है, पनंतु जो मंतन को मानता
१६ है, सो वृघमान है ॥ मुनप्य का कनोघ तुनंत
जाना जाता है, पनंतु यतुन लाज को ढांपता है।
१७ जो सय व्रोलता है, सो घनम को पनगट दीप्य-
१८ लाता है, पनंतु हुठा साप्पी छल देता है। कीसी
की व्रोली प्रैसी है, जैसे प्पड्ग का युभना, पनंतु
१९ वुघमान की जीभ कुसल है ॥ सयाइ के होंठ
सदा लें सथीन नहेंगे, पनंतु हुठी जीभ पल भन
२० की है ॥ कुयींतक के मन में छल है, पनंतु
२१ मेलाप के मंतनीद्रें को आनंद है ॥ सजन पन
कोइ व्रीपत न पड़ेगी, पनंतु दुसट वुनाइ से पुनन
२२ होगा ॥ हुठे होंठें से पनमेसन को घीन है,
पनंतु जो सया व्रेवहान कनते हैं, सो आनंदीत
२३ हैं। यतुन मनुप्य गयान को छीपाता है, पनंतु
२४ मुनप्पें का मन मुनप्पता पनयानता है ॥ या-
लाक का हाथ पनभुता कनेगा, पनंतु आलसी कन
२५ के व्रस में होगा। मनप्प का सोक उसे नीझड़ाता
२६ है, पनंतु सुव्रयन मगन कनता है। घनमी अपने
पनोसी से ञती भला है, पनंतु दुसटें का मानग

२७ उनहें झटकाता है। आलसी अपनी अहेन को
नहीं भुंजता, पनंतु याल्लाक मनुष्य की संपत
२८ वृङमुल है। घनम के मानग में जीवन है, श्रौन
उसके पथ में मौनतु नहीं।

१३ तेनहवां पनव।

१ वुधमान व्रेटा अपने पीता का उपदेस सुनता
२ है, पनंत् नींदक दपट को नहीं सुनता॥ मनुष्य
अपने मुंह के फरल में से अछा प्यायगा, पनंत् अप-
३ नाधीयों का पनान अंधेन॥ जो अपने मुंह को
संभालता है, सो अपने पनान की नछया कनता
है, पनंतु जो अपने होंठों को पसानता है, सो नास
४ होगा॥ आलसीयों का मन वृङत कुछ याहता
है, श्रौन कुछ नहीं पाता, पनंत् यालाकों का मन
५ पुसट होगा। घनमी जन झुठ से व्रैन नष्यता है,
पनंतु दुसट घीनोत है, श्रौन लाज को पहुंयाता
६ है॥ प्यना याली की नछा घनम कनता है,
७ पनंतु पापी को दसटता उलट देती है॥ कोइ
आप को घनी व्रनाता है, तथापी कुछ नहीं; कोइ
आप को कंगाल कनता है, तथापी व्रड़ा घनी है॥
८ मनुष्य के पनान का पनायसयीत उसी का घंन,
९ पनंतु कंगाल दपट को नहीं सुनता॥ घनमीयों

की जोत आनंद होती है, पनंत् दुसटों का दीपक
१० वुझाया जायगा। झगड़ा केवल अहंकान से उठता
११ है, पनंतु सुमंतनीत के साथ वुध है॥ अननथ से
पनापत कीया गया, धंन घट जायगा, पनंतु जो
१२ पनीसनम से वटोनता है, सो वढ़जायगा। आसा
का टालना मन को नोगी कनता है, पनंतु आसा
१३ का पुनन होना जीवन का वीनछ है॥ जो कोइ
वयन की नींदा कनता है, नास कीया जायगा,
पनंतु वुह, जो अगया से डनता है, कुसल से नहे-
१४ गा॥ गयानी का वेवहान जीवन का सोता है,
१५ जीसतें मीनतु के जाल से अलग होवे॥ अछी
समझ अनुग्रीनह देती है, पनंतु अपनाधीयों का
१६ मानग कठीन है॥ हन ऐक यतुन जन गयान
से वेवहान कनता है, पनंतु मुनष्य अपनी मुनष्यता
१७ फैलाता है॥ दुसट दुत वुनाइ में पड़ता है,
१८ पनंतु वीसवसत दुत कुसल है॥ कंगालपन अेान
लाज उसके लीये है, जो उपदेस को नहीं मानता,
पनंतु जो दपट को मानता है, सो पनतीसठा पावे
१९ गा॥ इछा का पुनन होना पनान को मीठा है,
पनंतु वुनाइ को छोड़ना मुनष्यों को घीन है॥
२० जो वुधमान के संग यलता है, सो वुधमान होगा,
२१ पनंतु मुनष्यों का संगी युनन होगा॥ वुनाइ

पापीयों के पीछे पड़ी है परंतु धरमीयों को उतम
२१ परतोफल मीलेगा॥ उतम अपने पोतों के लीये
अधीकार छोड़जाता है, परंतु पापीयों का धन
२२ धरमीयों के लीये धरा है॥ कंगाल के जोतने
बोने में बहुत सा भोजन है, परंतु कोइ तो बी-
२३ चार बीना नास होता है॥ जो अपनी छड़ी को
रोकता है, सो अपने बेटे से बैर रखता है, परंतु
जो उसे पीआर करता है, सो उसी को आगे से
२४ ताड़ना करता है। धरमी अपने परान की सं-
तुसटता के लीये खाता है, परंतु दुसट का पेट
नहीं भरता।

१४ चौदहवां पत्र।

१ हर ऐक बुधमान इसतीरी अपना घर बनाती
है, परंतु अगयान उसे अपने हाथों से ढाती है॥
२ जो अपनी खराइ से चलता है, सो परमेसर से
डरता है, परंतु कुमारगी उसकी नींदा करता है।
३ मुरखों के मुंह में घमंड की लाठी है, परंतु बुध-
४ मानों के होंठ उनकी रछया करेंगे। जहां बैल
नहीं,तहां चरनी छुछी हैं, परंतु अनाज की अधी-
५ काइ बैल के बल से है॥ बीसवसत साखी झुठ
न बोलेगा, परंतु झुठा साखी झुठ उचारन करेगा।

६ नींदक बुध की खोज करता है, और नहीं पाता,
७ परंतु गयान समझवैया के लीये सहज है॥ जब
तु गयान के होंठ नहीं देखता है, तब मनुष्य से
८ अलग होजा। चतुर की बुध यह है, की अपना
९ मारग बुझे परंतु मुढ़ की मुढ़ता कपट है॥ मुढ़
पाप को ठठा जानते हैं, परंतु धरमीयों में कीरपा
१० है। परान की कड़वाहट को परान ही जानता
है, और उपरी मनुष्य उसकी आनंदता को नहीं
११ छोड़ता॥ दुसट का घर नसट हो जाएगा, परंतु
१२ खरे का तंबु लह लहावेगा॥ एक मारग है, जो
मनुष्य को ठीक दीखलाई देता है, परंत उसका
१३ अंत मीरतु का मारग है। हंसने में भी मन
सोकीत है, और उस आनंद का अंत उदासी है।
१४ मन का हटा हुआ अपने ही मारगों से तीरीपत
१५ होजाएगा, और उतम मनुष्य आपही से। भोला
हर एक बचन को परतीत करता है, परंतु चतुर
१६ देख भाल के चलता है। बुधमान डरता है,
और बुराई से भागता है, परंतु मुरख कोपीत
१७ है, और भरोसा रखता है॥ जो सीघर क्रोध
करता है,सो मुरखता से बेवहार करता है,और
१८ दुसट जुगती से बैर है। भोले मुरखता के
अधीकारी हैं,परंतु चतुरों के सीर पर गयान का

१९ मुकुट है॥ बुरा भले के आगे झुकता है, और
२० दुष्ट धर्मियों के फाटकों के आगे। कंगाल से
उसका परोसी भी बैर रखता है, परंतु धनी के
२१ बहुत से मीत्र हैं। जो अपने परोसी की निंदा
करता है, सो पाप करता है, परंतु जो कंगाल पर
२२ दया करता है, सो धंन॥ जो बुरी युक्ति करते
हैं, क्या वे चूक नहीं करते? परंतु दया और सत्य
२३ उन पर है, जो भले जुगती हैं॥ समस्त परीश्रम
में लाभ है, परंतु होंठों की बोली से केवल दरी-
२४ द्रता है॥ बुधमान का मुकुट उनके धन हैं,
२५ परंतु मुरखों का मुरखता है। सच्चा साखी प्राण
२६ छुड़ाता है, परंतु छली झूठ बोलता है॥ परमेस्र
के डर में दीरढ़ बीसवास है, और उसके बालकों
२७ को सरन स्थान मीलेगा। परमेस्र का डर
जीवन का सोता है, जीसतें मीरतु के फंदों से
२८ अलग होवे। लोगों की बहुताई में राजा की
प्रतीसठा है, परंतु लोगों के न होने में राजपुत्रों
२९ का नास है॥ क्रोध में धीमा बड़ी समझ का है,
३० परंतु अलपमन मुरखता बढ़ाता है। सरीर का
जीवन सुध मन है, परंतु डाह हड्डीयों की सड़ाहट
३१ है। जो कंगालों पर अंधेर करता है, सो उसके
करता की निंदा करता है, परंतु जो उसकी पर-

तीसठा करता है, कंगालों पर दय़ा करता है।
३२ दुसट अपनी दुसटता में प्पदेड़ा जाता है, परंतु
३३ धरमी अपनी मोरतु में आसा रप्पता है। समझ-
वैय़ा के मन में वुध रहती है, परंतु मुढ़ का मन
३४ परगट होता है। धरम लोग को वढ़ाता है, परंतु
३५ पाप कीसी लोग के लीय़े कलंक है। वुधमान सेवक
पर राजा की कीरपा है, परंतु जो लाज दीलाता
है, उसका करोध उस पर है।

१५ पंदरहवां परव॥

१ कोमल उतर करोध के फेर देता है, परंतु कटुक
२ व्रयन करोध को उभाड़ते हैं। वुधमान की जीभ
गय़ान से ठीक व्रेवहार करती है, परंतु मुरप्पें
३ का मुंह मुरप्पता ढेकारता है॥ परमेसर की आंप्पें
४ सव्र सथानों में वुरे भले को देप्पतीय़ां हैं॥ जीभ
का यंगा करना जीवन का व्रीरछ है, परंतु उसका
५ व्रीगड़वा आतमा की टुटी है॥ मुरप्प अपने
पीता के उपदेस को तुछ जानता है, परंतु जो
६ घुरकी को मानलेता है, सो यतुर है॥ धरमी
के घर में व्रहुत धन है, परंतु दुसट की उगाहीय़ें
७ में दुप्प है। वुधमान के होंठ गय़ान फैलाते
८ हैं, परंतु मुरप्प का मन ऐसा नहीं॥ दुसट के

वृवीदान से पनमेसन को घीन है, पनंतु प्पने की
९ पनानथना उसकी पनसंनता है ॥ दुसट की याव
से पनमेसन को घीन है, पनंत जो घनम का पीछा
१० कनता है, वुह उस से पनेम नप्पता है ॥ जो मानग
को छोड़ देता है, उसके लीये दुप्प; श्रीन जो
११ दपट से वैन नप्पता है, सो मन जाएगा ॥ ननक
श्रीन नास पनमेसन के श्रागे हैं, तो मनुप्प के
१२ संतान के श्रंतःकनन कीतने श्रघीक। नींदक
उस से पनेम नहीं नप्पता, जो उसे दपटता है, न
१३ वुह वुघमान पास जाएगा ॥ मगन मन नुप को
श्रानंद कनता है, पनंतु मन के सोक से मन टुट
१४ जाता है ॥ समझवैद्धा का मन गय्यान को प्पोजता
है, पनंतु मुनप्पों का मुंह सुनप्पता श्राहान कनता
१५ है। दुप्पी के जीवन के दीन दुप्प हैं, पनंतु जीसका
१६ मन मगन है, उसके लीये सदा जेवनान है। पन-
मेसन का भय उस से भला है, की वड़ा भंडान
१७ हंहट के साथ। साग पात का भोजन पनेम के साथ
उस से भला है, की पला हुश्रा वनदा वैन के
१८ साथ ॥ कनोघी मनुप्प झगड़ा उभाड़ता है, पनंतु
जो कनोघ में घीमा है, सो झगड़े को घीमा कनता
१९ है। श्रालसी का मानग कांटों का वाड़ा है, पनंतु
२० घनमीयों का मानग चौनस वना है ॥ वुघमान

लड़का पीता को आनंद कनता है, पनंतु मुनष्य
२१ अपनी माता की नींदा कनता है॥ मुढ़ता नीन-
जीव के लीये आनंद है, पनंतु समझवैया मनुष्य
२२ प्पनाइ से यलता है। व्रीना पनामनस से ठानी
ऊइ, व्रीनथा होती हैं, पनंतु मंतनीयों की व्रक्त-
२३ ताइ से वे दीनढ़ होती हैं। मनुष्य अपने मुंह के
उतन से आनंदीत होता है, औन समय पन की
२४ व्रात कैसी अच्छी है। जीवन का मानग वुधमान
के लीयें उंया है, जीसतें वुह नीये ननक से नीकल
२५ जाय॥ पनमेसन घमंडीयों का घन ढादेगा,
पनंत वह नांड़ों के सीवाने को सथीन कनेगा॥
२६ दुसटों की यींता से पनमेसन को घीन है, पनंतु
२७ पावन की व्रात पवीतनता है। जो लाभ की
लालय कनता है, सो अपने घनाने को दुष्प देता
है, पनंतु जो अंकोन से वैन नष्पता है, सोइ जायेगा।
२८ घनमी का मन उतन देने को सोयता है, पनंतु
२९ दुसटों का मुंह व्रनी व्रातें उगलता है। पनमेसन
दुसटों से दुन है, पनंतु वुह घनमीयों की पनान-
३० थना सुनता है। आंष्पों की जोत मन को आनंद
कनती है, औन सुसंदेस हडीयों को पुसट कनता
३१ है॥ जो कान जीवन की झीड़की सुनता है, सो
३२ वुधमानों में नहता है। जो उपदेस को नह

मानता, सो अपने ही पराण की निंदा करता है;
परंतु जो दपट को मानता है, सो जीव रष्पता
३३ है। परमेसर का भय वुघ का उपदेस है, और
परतीसठा के आगे दीनताई है।

१६ सोलहवां पर्व्व।

१ मनुष्य के मन का सोच करना और उसकी
२ जीभ का उतर परमेसर की ओर से है। मनुष्य
की सारी चालें अपनी आंष्पों के आगे पवीतर
३ हैं; परंतु परमेसर मन को तालता है। अपने
समसत कारज परमेसर को सोंप, और तेरी
४ चीनता सथीर हो जायेंगी। परमेसर ने सब्
कुछ अपने लीये व्नाया है, हां, दुसटों को भी
५ व्नाई के दीन के लीये। हर एक अहकारी
से परमेसर को घीन है, यद्पी हाथ हाथ में
६ मीले, तथापी व्ह नीरदोष्प न ठहरेगा। दया
और सत से व्राई दुर होती है, और परमेसर
७ के भय से व्राई से अलग होते हैं। जव्
मनुष्प की चाल परमेसर को अछी लगती है,
तव् व्ह उसके व्ैरी को भी उस से मेल करता
८ है। थोड़ा सा, जो धरम के साथ हो व्ज्ञत
उगाहीयों से, जो वीना धरम की होवें, अछा

९ है। मनुष्य का मन अपना मानग ठहनाता है ;
पनंत पनमेसन उसके डग को सुघानता है।
१० दैव्र व्रयन नाजा के होंठों में है, श्रीन उसका
११ मुंह नयाय़ में अपनाघ नहीं कनता। घनी
तौल, श्रीन तुला पनमेसन के हैं, थैली के साने
१२ व्रटघ्ने उसके कानज हैं। दुसटता के कनने
से नाजाओं को घीन है, कय़ोंकी सींहासन घनम
१३ से दीनढ होता है। घनमी होंठ नाजाओं को
पनसंन हैं, श्रीन जो ठीक व्रोलता है, वे उस से
१४ पनेम नघ्ते हैं। नाजा के कनोघ मीनतु के
दुत हैं, पनंत व्रुघमान उसे घीमा कनेगा।
१५ नाजा के नुप के जीत में जीवन है, श्रीन उसकी
१६ कीनपा पीछले मेंह की नाई है। व्रुघ को
पनापत कनना सोने से कीतना भला है ; श्रीन
सलुझ को पनापत कनना नुपे से कीतना भला
१७ है। घने का नाज मानग व्रुनाई से नीकल
जाना है, जो अपने मानग को चौकस नघ्ता है,
१८ सो अपने पनान की नछा कनता है। नास से
पहले अहंकान, श्रीन गीन पड़ने से आगे मन का
१९ घमंड है। दीनों के साथ दीन होना उस से
अछा है, की अहंकानीय़ों के साथ लुट व्रांटना।
२० जो व्रुघ के साथ व्रात समझता है, सो भलाई

पावेगा, और जो परमेश्वर पर भरोसा रखता
२१ है, सो धन्य है। बुधमान चतुर कहलावेगा,
२२ और होंठ की मीठाई बिद्या बढ़ाती है। समझ-
वैयों के लिये समझ जीवन का सोता है; परन्तु
२३ मुरखों का उपदेस मुरखता है। बुधमान का
अंतःकरन उसे बुधमान करता है, और उसके
२४ होंठों को बिद्या देता है। मन भावन बातें
मधु के छते के समान प्रान को मीठी लगती हैं,
२५ और हडीयों के लिये चैन हैं। एक मारग
है, जो मनुष्य को ठीक लगता है; परंतु उसका
२६ अंत मीरतु का मारग है। परीसरमी का प्रान
अपने लीये परीसरम करता है, क्योंकि उसका
२७ मुंह उसके आगे झुकता है। बीखयाली मनुष्य
बुराई को खोद के निकालता है, और उसके
२८ होंठों में जलती आग की नाईं है। करूर
मनुष्य झगड़ा उठाया करता है, और फुसफुसहा
२९ मीतरों में बीभाग करता है। अंधेरी मनुष्य
अपने परोसी को फुसलाता है, और उसे उस
३० मारग से ले जाता है, जो भला नहीं। वुह
आंखें मुंदता है, जीसतें टेढ़ी बात की जुकती
करे, और होंठ हीलाके बुराई के खोढ़े जाता
३१ है। उजला सीर बीभव का मुकट है, यदी

३२ घनम के मानग में पाया जाय। कनोघ में घीमा
सामनथी से भला है, और जो अपने मन को
३३ वस में नष्पता है, सो नगन के लेवैये से। यीठी
गोद में डाली गइ, पनंतु उसका ठीकाना लगाना
पनमेसन से है।

१७ सतनहवां पनव।

१ नुष्पा गनास यैन के साथ और भी भला है,
२ कीं घन भना वलीदान हगड़े के साथ। वुघ-
मान सेवक उस पुतन पन पनभ़ुता कनेगा, जो
लज्जीत कनता है, और भाइयों में अघीकान
३ का भाग पावेगा। यांदी के लीये घनीया, और
सोने के लीये भठीं, पनंतु पनमेसन अंतःकननों
४ को जांयता है। कुकनमी हुठे होंठों को मान-
ता है, और हुठा कुवयन का सनोता होता है।
५ जो कंगाल को यीढ़ाता है, सो उसके कनता को
कलंक लगाता है, जो औनों की वीपत से आन-
नदीत होता हैं, सो नीनदोष्पी न ठहनेगा।
६ वालकों के वालक वीनघों के लुकुट हैं, और
७ वालकों का वीभव उनके पीता के। होंठों की
सोभा मुनष्प को नहीं सजती, कीतना अघीक
८ हुठे होंठ नाज पुतनों को। जो दान नष्पता

है, सो उस की आंखों में अनुग्रह का मन है,
९ जहां कहीं वुह फिरता है, फलता है। जो
अपराध को छिपाता है, सो प्रेम का खोजी
है; परंतु जो बात को दुहराता है, सो मित्रों
१० में बिभाग करता है। एक झिड़की बुधमान
को अधिक चिताती है, कि सौ मार मूर्ख को।
११ दुष्ट केवल दंगा का खोजी है, सो उस पर
१२ कठोर दूत भेजा जायगा। उस भालु से जिसके
छौने चुराये गये हैं, भेंट करना मनुष्य को उस
से भला है, कि मूर्ख से उसकी मूर्खता में।
१३ जो भलाई की संती बुराई करता है, बुराई
१४ उसके घर से अलग न होगी। झगड़े का आरंभ
जैसे पानी का छोड़ना है, इस लिये छेड़ने से
१५ आगे झगड़े से हाथ उठा। जो दुष्ट को निर-
दोष और जो सुजन को दोषी ठहराता है,
१६ दोनों के दोनों परमेश्वर से घिनित हैं। मूर्ख
के हाथ में बुध पाने का दाम किस लिये है,
१७ उसका मन तो कुछ नहीं। मित्र सदा प्रेम
करता है, और भाई बिपत के लिये उतपन्न
१८ हुआ है। निरबुद्ध मनुष्य हाथ मारता है,
और अपने मित्र के आगे बिचवई होता है।
१९ जो झगड़े से प्रीत रखता है, सो अपराध से

पनीत नप्पता है, जो अपने फाटक को उभाड़ता
२० है, सो नास को ढुंढता है। जीस के मन में
हठ है, सो भलाइ पनापत नहीं कनता, और जो
टेढ़ी जीभ नप्पता है, सो वुनाइ में पड़ता है।
२१ जो मुनप्य उतपंन कनता है, सो अपने ही सोक
के लीये कनता है, और मुनप्य के पीता को
२२ आनंद नहीं। आनंदीत मन औप्पध की नाइं
भला कनता है, पनंतु टुटा मन हडाीयों को
२३ सुप्पाता है। दुसट मनुप्य गोद में घुस लेता है,
२४ की नयाय को फेन देवे। समझवैये के आगे
वुध है, पनंतु मुनप्य की आंप्पें पीनथीवी के सीवानें
२५ लों हैं। मुढ़ पुतन अपने पीता के लीये सोक
है, और अपनी जननी के लीये कड़वाहट।
२६ सजन को दंड देना और कुअनों को जाथानघ
के लीये मानना भला नहीं, गयानी संभाल के
२७ वोलता है, समझवैया सीतल मन है। मुनप्य
भी जव वुह चुपका नहता है, वुधमान गीना
जाता है, और समझवैया अपने होंठों को वंद
कन नप्पता है।

१८ अठानहवां पनव्व।

१ जो आप को अलग कनता है, सो अपनी इच्छा

के समान ढुंढता है, और हर एक कारज में
२ छेड़ता है। मूर्ख को समझ नहीं भावती, परन्तु
३ जिसतें उसका मन आप को परगट करे। जब
दुष्ट आता है, तब निन्दा भी आती है, और
४ दुर्गती के साथ अपजस आता है। मनुष्य के
मुंह की बातें गहिरे जल हैं, और बुध का सोता
५ बहता नाला है। धर्मी को न्याय में पलटने
६ को दुष्ट का पक्ष करना अच्छा नहीं। मूर्ख
के होंठ बिवाद में पैठते हैं, और उसका मुंह
७ थपेड़ा मांगता है। मूर्ख का मुंह उसका बिनाश
८ है, और उसके होंठ उसके प्राण के फंदे। फुस
फुसहा की बातें घाव की नाईं हैं, और वे
९ अंतःकरन लों पैठ जाती हैं। जो अपने कारज
में आलसी है, सो बिनाश उठान करवैये का
१० भाई है। परमेश्वर का नाम एक दृढ़ गढ़
११ है, धर्मी उस में दौड़ के बच रहता है। धनी
मनुष्य का धन उस का दृढ़ नगर और उसकी
१२ समझ एक ऊंची भीत की नाईं है। बिनाश के
आगे मनुष्य का मन फूलता है, और प्रतिष्ठा
१३ के आगे दीनताई है। जो बात सुने बिन
कह बैठता है, उसके लिये मूर्खता और लाज
१४ है। मनुष्य का प्राण उसकी निर्बलता को

संभालेगा, पनंतु टुटे मन को कौन सह सकता
१५ है। यतुन का मन गयान पनापत कनता है,
१६ और वुध मान का कान गयान ढुंढता है। मनुष्य
का दान उसके लीये ठीकाना कनलेता है, और
१७ उसे महजनों पास पहुंचाता है। जो अपने ही
पद में पहीला है, सो ठीक जाना जाता है, पनतु
१८ उसका पनोसी आके उसे जांचता है। चीठी
डालना झगड़ों को मीटा देता है, और वलवानों
१९ को अलग कनता है। उदास भाइ को मीला-
लेना और भी कठीन है, की दानइ नगन को
लेवे, और उनके झगड़े गढ़ के अड़ंगे की नाइं
२० हैं। मनुष्य का पेट उसके मुंह के फलों से
तोनीपत होता है, और अपने होंठों की वढ़ती
२१ से संतुसट होता है। जीवन और मनन जीभ
के वस में हैं, और जो उस से पनीत नष्पते हैं,
२२ उसका फल प्यायेंगे। जो पतनी को पनापत
कनता है, सो उतम वसतु पनापत कनता है,
२३ और पनमेसन से अनुगीनह पाता है। कंगाल
वीनती कीया कनता है, पनंतु घनी कड़ा उतन
२४ देता है। मनुष्य के मीतन को चयीत है, की
मीतनता दीष्पावे, और एक मीतन ऐसा है, जो
भाइ से अधीक सटा नहता है।

१९ उंनीसवां पनव्र।

१ जो कंगाल अपनी सयाई में यलता है, सो
उस से अछा है, जो टेढ़े होंठ से यलता है, औान
२ मुढ़ है। पनान का अगयान नहना भी अछा
नहीं, औान जो पांव से व्रेग कनता है, सो पाप
३ कनता है। मनुष्य की मुनष्पता उसके मानग
व्रीगाड़ती है, औान उसका मन पनमेसन से
४ उदास होता है। घन व्रहुत सा मीतन व्रनाता
है, पनंतु कंगाल अपने मीतन से अलग कीया-
५ गया है। हुठा साष्पी नीनदोष्प न ठहनेगा,
६ औान मीथया व्रादी न व्रयेगा। व्रहुत से लोग
नाज पुतनों की दया के लीये व्रीनती कनेंगे,
७ औान हन एक मनुष्य दाता का मीतन है। कंगाल
के तो साने भाई उसका व्रैन नष्पते हैं, सो
कीतना अधीक उसके मीतन दुन जाते हैं, वुह
गीड़गीड़ा के पीछा कनता है, पनंतु वे नहीं
८ मानते। जो वुध को पनापत कना है, सो अपने
पनान को पीयान कनता है, जो समझ नष्पता है;
९ सो भलाई पावेगा। हुठा साष्पी का दंड न
छुटेगा, औान मीथया व्रादी नास होजायगा।
१० आनंदता मुनष्प को नहीं सजती, औान कीतना
११ अधीक की सेवक कुअंन पन नाज कने। मनुष्प

की यतुनाइ उसके कनोध को टालती है, औन
अपनाध में न जाने में उसकी पनतीसटा है।
१२ नाजा का कोप सींह के गनजने की नाइं है,
पनंतु उसका कीनपा घास पन की ओस की नाइं
१३ है। मुढ़ पुतन अपने पीता की बीपत है, औन
पतनी का झगड़ा नगड़ा नीत का टपकना है।
१४ घन औन धन पीतनों का अधीकान औन बुध-
१५ वती पतनी पनमेसन से मीलती है। आलस
भानी नींद में डाल देता है, औन आलसी
१६ पनानी भुष्पा मनेगा। जो आगया को पालन
कनता है, सो अपने पनान की नछया कनता है,
औन जो अपनी चाल को तुछ जानता है, सो
१७ माना जायगा। जो कंगाल पन दया कनता है,
सो पनमेसन को उधान देता है, औन उसका
१८ कीया हुआ उसे फेन दीया जायगा। आसा
नहते ही अपने बेटे को ताड़ना दीये जा, औन
१९ उसके नोने पन मया मत कन। अत कोपीत
मनुष्य दंड हो पावेगा, कयोंकी यदी तु उसे छोड़े,
२० तो तुझे फेन फेन देने पड़ेगा। मंतन को सुन
औन उपदेस को गनहन कन, जीसतें अंत में
२१ तु बुधमान होवे। मनुष्य के मन में बहुत सी
जुगती है, तथापी पनमेसन का मंतन ठहनेगा।

२२ मनुष्य की इछा उसकी दया है, औन झुठे से
२३ कंगाल अछा है। पनमेसन का भय जीवन के
लाये है, औन जोस में वुह है, सो नीसयीनत
नहेगा, पनंतु वुनाइ उसके पास न आवेगी।
२४ आलसी अपने हाथ गोद में छीपाता है, औन
इतना न कनेगा, की उसे अपने मुंह लों लावे।
२५ ठठेलु को थपनाव औन भोला यतुन होजायगा,
औन समझवैये को दपट औन वुह गयान को
२६ समझेगा। जो अपने पीता को छीन कनता
है, औन अपनी माता को घदेड़ता हैं, सो पुतन
२७ लाज दीलाता है, औन कलंक लाता है। हे
मेने वेटे ऐसे उपदेस को मत मान, जो गयान की
२८ वातों से फीनाता है। झुठा साछी नयायी की
नीनदा कनता है, औन दुसट का मुंह वुनाइ
२९ नीगलता नहता है। ठठेलु के लीये दंड की
आगया धनी है, औन मुनष्यों की पीठ के लीये
कोड़े।

२० वीसवां पनव्र।

१ मदीना ठठेलु है, औन मद कोपीत औन जीस
कीसी ने इन से छल पाया है, सो वुधीमान नहीं
२ है। नाजा का भय सींह के गनजने के समान है,

जो कोई उसे रिसिआता है, सो अपने प्राण का
३ घातक है। मनुष्य को प्रतिष्ठा झगड़े से रुक
जाने में है; परंतु हर एक मूढ़ छेड़ा करेगा।
४ आलसी मनुष्य जाड़े के मारे न जोतेगा, इस कारण
वुह लवनी में भीख मांगेगा, और न पावेगा।
५ मनुष्य के मन का मंत्र गहिरे जल के समान है;
६ परंतु समुझवैया मनुष्य उसे खींचेगा। बहुत मनुष्य
अपनी अपनी भलाई प्रचारेगा; परंतु विश्वस्त
७ मनुष्य को कौन पा सकता है। सज्जन मनुष्य अपनी
खराई पर चलता है, उसके पीछे उसके बालक
८ धन्य हैं। राजा जो न्याय के सिंहासन पर बैठता
है, सो सारी बुराई को अपनी आंखों से दूर कर-
९ ता है। कौन कह सकता, कि मैं ने अपने मन को
पावन किया है, मैं अपने पाप से पवित्र हूं
१० बटखरा पर बटखरा, और तौल पर तौल, दोनों
११ के दोनों परमेश्वर को घिन हैं। बालक भी
अपनी चाल से जाना जाता है, चाहे उसके
१२ कार्य पावन अथवा अपावन होवें। सुनने का
कान, और देखने की आंखें, परमेश्वर ने दोनों
१३ को बनाया है। बहुत नींद से प्रीति मत कर,
न होवे कि कंगालपना तुझ पर आजावे, अपनी
आंखें खोल, और तू रोटी से तृप्त होगा।

१४ गांहक कहता है, की कुछ नहीं कुछ नहीं; परंतु
जब वुह चल नीकलता है, तब बड़ाई करता है।
१५ सोना है, और बहुत से मन हैं; परंतु गयान
१६ के होंठ बहुमुल गहने हैं। जो उपरी के लीये
बीचवई होवे, उसका कपड़ा ले और उपरी
१७ इसतरी के लीये उस से बंधक ले। छल की
रोटी मनुष्य को मीठी लगती है, परंतु पीछे
१८ उसका मुंह कंकरों से भर जाता है। हर एक
कारज परामरस से सथीर होता है, और स
१९ मंतर से जुध कर। जो लुतरे की नाईं फीरा
करता है, सो अपने भेदों को परगट करता है,
इस कारन जो अपने होंठों से फुसलाता है,
२० उसे मत छेड़। जो कोई अपने पीता अथवा
अपनी माता को सराप देता है, उसका दीपक
२१ महांधकार में बुताया जायगा। आरंभ में
सीघरता से अधीकार परापत कीया गया, परंतु
२२ उसका अंत न फलेगा। मत कह, की मैं बुराई
का पलटा लेउंगा, परंतु परमेसर पर ठहर वही
२३ तुझे बचावेगा। नाना बटखरों में परमेसर
को घीन है, और छल की तुला कुछ अछी नहीं।
२४ मनुष्य की चाल परमेसर से है, फेर मनुष्य
२५ कयोंकर अपनी चाल को समझ सके। मनुष्य

को फंदा है, की पवीतन व्रसतु को भक्षन कने,
२६ श्रीन मनौती के पीछे पुछा कने। वुधमान
नाजा दुसटों को छींन भींन कनता है, श्रीन उन
२७ पन पहीया फीनवाता है। मनुष्य का आतमा
पनमेसन का दीपक है, जो मनुष्य के श्रोदन के
२८ अंत को ढुंढा कनता है। दया श्रीन सत नाजा
की नछा कनते हैं, श्रीन उसका सींहासन दया
२९ से उभाड़ा ज़ुश्रा है। तनुन मनुष्यों का वीभव
उनका व्रल है, पनंतु व्रौनधों की सोभा उनके
३० उजले वाल। जैसा की घाव की नीलाइ वुनाइ
को दुन कनने का श्रोष्पद है वैसा मान श्रोदन
के अंतों को सुध कनता है।

२१ एकीसवां पनव्र।

१ नाजा का मन पनमेसन के हाथ में है, वुह
उसे नदीश्रों के जल की नाइ जीधन याहता
२ है, उधन फेनता है। मनुष्य की हन एक याल
अपनी दीनीसट में ठीक है, पनंतु पनमेसन मन
३ को जांयता है। नयाय, श्रीन वीयान कनना
पनमेसन को व्रलीदान से अधीक पनसंनता है।
४ उंची दीनीसट, श्रीन अभीमानी मन, श्रीन
५ दुसटों का जोतना पाप है। याकाकों की यींता

केवल वृक्रताइ के लीये है, पनंतु हन ऐक, जो
६ वृग है, केवल कंगालता के लीये। हुठी वृोली
से खंडान पनापत कनना ऐक वीनथा है, जोसे
७ मीनतु का प्योजी इघन उघन टानता है। दुसटों
को उनकी वृटमानी ढाहेगी, कयोंकी उनहों ने
८ ग़ीयान को न नाना। मनुष्य के मानग टेढ़े,
औान तींनक्के हैं, पनंतु जो पवीतन है, उसका
९ कानज ठीक है। घन के कोठे के ऐक कोने में
नहना, हगड़ालु इसतनी के साथ फैलाव सथान
१० में नहने से अछा है। दुसट का पनान वुनाइ
याहता उसका पनोसी उसकी दीनीसट में कीनपा
११ नहीं पाता। जव्र नोनदक दंड पाता है, तव्र
भोला वुघमान होता है, औान जव्र वुघमान
उपदेस पाता है, तव्र वुह समझ पनापत कनता
१२ है। घनमी मनुष्य वुघ से दुसट के घन को सोय-
ता है, पनंतु पनमेसन दुसटता के कानन से उनहें
१३ गीना देता है। जो कंगाल के नोने से अपने
कान मुंदता है, वुह आप भी नोवेगा, पनंतु
१४ उसका नोना सुना न जायगा। गुपत दान
कनोघ को घीमा कनता है, औान गोद में पनती-
१५ फल देना महा कोप को ढंडा कनता है। सजन
के नयाय में आननद है, पनंतु कुमानगीयों के

१६ शीघ्र नास है। जो मनुष्य समझ के मारग से
भटकता है, सो मीरतकों की मंडली में पड़ा
१७ रहेगा। जो खीला से परीत रप्पता है, सो
कंगाल होगा जो मदीरा और चीकनाइ से
१८ मन लगाता है, सो घनी न होगा। घरमीयों
की संती दुसट, और अपराघीओं की संती प्परे
१९ पलटा दीए जांयेंगे। अरन में रहना, और
भी भला है, की झगड़ालु, और करोघी इसतरी
२० के साथ। अछे भंडार और तेल बुघमानों के
नीवास में हैं, परंतु मुरप्प मनुष्य उसे उड़ा
२१ डालेगा। जो घरम और दया का पीछा करता
है, सो जीवन और घरम और परतीसठा पाता
२२ है। बुघमान मनुष्य सामरथी के नगर पर
चढ़ जाता है, और उसके भरोसे के बल को
२३ ढा देता है। जो अपने मुंह और अपनी जीभ
को बस में रप्पता है अपने पराण को दुप्प से
२४ बचाता है। अहंकारी, और अभीमानी नीन-
दक उसका नाम है, जो अहंकार और करोघ
२५ से कारज करता है। आलसी की इछा उसे
बघन करती है, कयोंकी उसके हाथ परीसरम
२६ को नाह करते हैं। बुह दीन भर अतयंत
लालच करता है, परंतु घरमी दान करता है,

२७ और नहीं रख छोड़ता। दुसटों का बलीदान
घीनीत है, कीतना अधीक जब की वुह दुसटता
२८ से लाता है। झूठा साख्यी नास होवेगा, परंतु
२९ जो जन सुन लेता है, सो नीत बोला करता है।
दुसट मनुष्य अपने मुंह को भी कठोर करता है,
३० परंतु खरा अपने मारग को सोचता है। कोई
बुध कोई समझ, और कोई परामरस परमेसर के
३१ आगे न ठहरेगा। संगराम के दीन के लीये
घोड़ा सीध है, परंतु जय परमेसर से है।

२२ बाइसवां परब।

१ सुभ नाम बड़े धन से अधीक चुने जाने के
२ जोग है, और कीरपा सोने रुपे से अधीक। धन-
मान, और कंगाल एकठे मीलते हैं, परमेसर
३ उन सभों का करता है। बुराई को आगे से
देखके चतुर आप को छीपाता है, परंतु भोले
लोग उसले बढ़े जाते हैं, और दंड पाते हैं।
४ दीनताई का फल, और परमेसर का भय धन
५ और परतीसठा, और जीवन है। हठीले के
मारग में कांटे, और जाल हैं, जो अपने परान
की रछ्या करता है, सो उनसे दुर रहेगा।
६ जीस मारग में बालक को चला, चाहीये उसमें

उसे चला, और जब बुढ़ा हुआ, वुह उस से
७ न फिरेगा। कंगाल पर धन मान प्रभुता
करता है, और उधारनीक धनिक का सेवक है।
८ जो बुराई बोता है, सो बिरथा लवेगा, और
वुह अपने क्रोध की छड़ी से नाश होजायगा।
९ जिस की आंखें अच्छी हैं, सो आसीस पावेगा,
क्योंकि वुह अपनी रोटी में से कंगालों को देता
१० है। निंदकों को निकाल देओ, और झगड़ा
मिट जायगा, हां, झगड़ा और कलंक जाते
११ रहेंगे। जो मन की पवित्रताई से प्रेम रखता
है, और होंठों में अनुग्रह रखता है, राजा
१२ उसका मित्र होगा। परमेश्वर की आंखें ग्यान
की रक्षा करती हैं, और वुह अपराधियों के
१३ बेवहार को उलट देता है। आलसी कहता है,
कि बाहर सिंह है, मैं गलियों में फाड़ा जा-
१४ उंगा। पराई इस्त्री का मुंह एक गहिरा
गड़हा है, जिस से परमेश्वर घिन करता है, वही
१५ उसमें गिरता है। बालक के मन में मूढ़ता
बंधी हुई है, परंतु ताड़ना की छड़ी उसे उसमें
१६ से दूर करेगी। जो कंगाल पर अंधेर करता है,
और जो धनी को देता है, निश्चय दरिद्र
१७ होगा। अपने कान को झुका, और बुधमानों

के व्रयन सुन, और मेरे गयान से अपना मन
१८ लगा। कयोंकी यह अछी व्रात है, की तु उनहें
अपने हीरदय में धारन करे, और उस से अवीक
१९ वे तेरे होठां में सजेंगे। जीसतें तेरा भरोसा
परमेसर पर होवे, मैं ने आज के दीन तुहे
२० जताया, तुझी भरोसा रप्प। कया मैं ने तुहे
अछे अछे गयान, और परामरस नहीं लीप्पे।
२१ जीसतें मैं सची व्रातें का नीसयय तुमहें जनाओं
की तु उनके उतर में जीनहें ने तुहे भेजा है,
२२ सची व्रातें का उतर देसके। इस कारन कंगाल
से मत छुरा, की वुह कंगाल है, और फाटक में
२३ दुप्पी को मत सता। कयोंकी परमेसर उनके
पद का व्रीवाद करेगा, और उनके पराने को
२४ लुटेगा, जीनहें ने उनको लुटा। करोधी मनुप्प
से मीतरता मत कर, और अती कोपीत के साथ
२५ मत जा। नहो की तु उसकी चालें सीप्पे, और
२६ अपने पराने को फंदे में फंसावे। तु उन में
मत हो, जो हाथ मारते हैं; अथवा उन में जो
२७ रीन के कारन व्रीयवइ होते हैं। यदी तुह
पास कुछ भर देने को न हो, तो कीस वाये
२८ तेरे नीचे का व्रीछौना छींच ले जावे। पुरानें
सीवाने को, जो तेरे पीतरों ने व्रांधे हैं, मत

२९ तोड़। तु कीसी को अपने काम में याखाक
देप्पाता है, दुह राजाओं के आगे प्पड़ा होगा,
तुछ जन के आगे प्पड़ा न होगा।

२३ तेइसवां पनव।

१ जव् तु आगया कानी के साथ भोजन पन वैठ,
२ योकसी से सोय, की तेने आगे कया है। यदी
३ तु पेटु है, तो अपने गले पन छुनी लगा। उसके
सवादीत भोजन की लालय मत कन कयोंकी
४ वुह छल का भोजन है। घनी होने के लीये
पनीसनम मत कन, अपनी ही वुघ से थम जा।
५ कया तु अपनी आंप्पें उस पन दौड़ावेगा, जो
नहीं है, कयोंकी घंन नीसयय अपने लीये परंप्प
वनाता, और गीघ की नाइं आकास की ओन
६ उड़ जाता हे। कुदीनीसट की नोटी मत प्पा,
और उसके सवादीत भोजनों की लालसा मत
७ कन। कयोंकी जैसा वुह अपने मन में योंता
कनता है, वुह वैसाही है, वुह तुहे कहता है,
प्पा, और पी, पनंतु उसका मन तेनी ओन नहीं।
८ गनास, जो तू ने प्पाया है, उसे उछला देगा,
९ और अपनी मीठी वातें गवांयेगा। मुढ़ के कानों
में अपनी वातें मत कह, कयोंकी वुह तेने वयन

१० की वृध की सीमा को मत टाल, और अनाथों के खेत में
सीवानों को मत टाल, और अनाथों के खेत में
११ मत पैठ। क्योंकी उनका मुकत दाता सामर्थी
है, वुह तुझ से उनके पद का व्रीवाद करेगा।
१२ उपदेस से अपना मन लगा, और गय़ान की
१३ व्रातों पर कान धर। व्रालक से ताड़ना अलग
मत रख, क्योंकी जदी तु उसे छड़ी मारेगा,
१४ वुह मर न जायगा। तु उसे छड़ी मारेगा, और
१५ नरक से उसके प्रान को व्रचावेगा। मेरे व्रेटे
य़दी तेरा मन व्रुधमान होवे, तो मैं हीं आनंदीत
१६ होय़गा। और जव्र तेरे होंठों से सची व्रातें
नीकलेंगी, तव्र मेरा हीरदय़ आनंदीत होगा।
१७ तेरा मन पापीय़ों से डाह करने न पावे, परतु
१८ तु सारे दीन परमेसर से डरता रह। क्योंकी
नीसचय़ आगे एक परतोफल है, और तेरी
१९ आसा घट न जाय़गा। मेरे व्रेटे तु सुन, और
व्रुधमान हो, और मारग में अपने मन को
२० चला। तु मदपों में और उन में, जो व्रहुताइ
२१ से मांस खाते हैं, मत जा। क्योंकी मदप,
और पेटु कंगाल होजाय़ेंगे, और नोंद चीथड़े
२२ पहीनाय़ेगी। अपने जनम दाता पीता की व्रात
सुन, और जव्र तेरी माता व्रीरध होवे, उसकी

२३ नोंदा मत कर। सयाइ को मोल ले, श्रीर मत
२४ वेय, वुध श्रीर उपदेस, श्रीर समझ भी। घरमी
का पीता श्रतयंत आनंदीत होगा, श्रीर जो
वुधमान उतपंन करता है, उस से आनंद
२५ पावेगा। तेरो माता पीता श्रानंद होंगे, श्रीर
२६ जो तुझे जनी, सो श्रानंदीत होगी। मेरे वेटे
श्रपना मन मुझे दे, श्रीर तेरी श्रांष्पें मेरे मारगों
२७ को सोच करें। क्योंकी वेसवा एक गहीरी
ष्पांइ है, श्रीर उपरी इसतरी सकेत गड़हा है।
२८ वुह वटमार की नाइं घात में लगी है, श्रीर
२९ मनुष्पों में अपराघों को वढ़ाती है। कीस पर
संताप है? कीस पर सोक है? कौन झगड़े में
पड़ता है? कीस को वकवाद है? श्रीर कीसको
घाव श्रकारन है? श्रीर कीस की श्रांष्पें लाल
३० हैं?। वे, जो मदीरा के पास श्रवेर लों ठहरते
हैं, वे जो मीली हुइ मदीरा की ष्पोज में रहते
३१ हैं। जव मदीरा लाल होवे, श्रीर उसका रंग
कटोरे में देष्प पड़े, श्रीर जव वुह श्रच्छी भांत से
३२ हीलता है, तव उसे मत ताक। श्रंत को वुह
नाग के समान काटती है, श्रीर नागीन की नाइं
३३ डंसती है। तेरी श्र ष्पें पराइ इसतीरीयों को
देष्पेंगी, श्रीर तेरा मन श्रनुचीत वातें नीका-

३४ होगा। नीसचै तु उसके समान होजायगा, जो
समुंद्र के मध में पड़ा रहता है, अथवा उसकी
नाईं, जो गुनरष्या कीं चोटी पर लेटाता है।
३५ तु कहेगा, की उनहें ने मुझे मारा, मैं तो रोगी
न हुआ, उनहों ने मुझे मारा, मैंने न जाना, मैं
कब उठुंगा मैं फीर उसे ष्योजुंगा।

२४ चौबीसवां पत्र।

१ बुरे मनुष्यों से डाह मत कर, और उनकी
२ संगत की चाह मत रष्य। कयोंकी उनके मन
बीनास का सोच करते हैं, और उनके होंठ
३ बुराइ बोलते हैं। बुध से घर उठाया जाता
है, और समझ से वुह दीरट़ कीया जाता है।
४ और गान से कोठरीयां बहुमुल, और सुंदर
५ धन से भर जायेंगी। बुधमान मनुष्य बली है,
६ हां, गयानी मनुष्य बल बढ़ाता है। कयांकी
बुध के मंतर से तु अपना जुध करेगा, और
७ मंतरीयां की बहुताइ से बचाव है। बुध मुर-
ष्यों के लीये अती उंची है, वुह फाटक पर अपना
८ मुंह न ष्योलेगी। जो बुराइ की चीनता करता
९ है, सो बीगाड़ु जन कहलायेगा। मुरष्ता की
चीनता पाप है, और ठठेलु से मनुष्यों को घीन

१० है। यदी तु वीपत के दीन सुनछत हो जावे
११ तो तेना वल थोड़ा है। यदी तु मीनत के
पींयेगयों को, और उनहें, जो माने जाने पन
१२ हैं, वया न ले। यदी तु कहे, की देषो, हम
जानते न थे, तो कया वुह जो अनतःकनन को
जांयता है, यह नहीं सोयता, और जो तेने
पनान का नछक है, सो कया नहीं जानता, और
कया मनुष्य को उसके कानज क समान पलटा न
१३ देगा। मेने वेटे त मधु षा, इस कानन की वुह
अछा है, और मधु का छता, जो तेने तालु में
१४ मीठा है। सो वुध का गयान तेने पनान को
होगा, जव तु उसे पावे, उसका पनतीफल होगा,
१५ और तेनी आसा वीनथा न होगी। हे दुसट घनमी
के नीवास की घात में मत लग उसके येन के
१६ सथान को मत लुट। कयोंकी सजन सात वान
गीनता है, और फीन उठता है, पनंतु दुसट
१७ वुनाइ में गीन जांयेंगे। जव तेना वेनी गीन
पड़े, आनंदीत मत हो, और जव वुह ठोकन
१८ खाय, तेना मन मगन न होने पावे। न हो, कीं पन-
मेसन देषे, और उसकी दीनीसट में वुना लगे,
१९ और अपना कनोघ उस पन से उठा लेवे। दुसट
की संगत मत कन, और दुसटों पन डाह मत

२० कन। कय़ोंकी वुने को सुफल न मीलेगा, औान
२१ दुसटें का दीपक वुहाय़ा जाय़गा। मेने वेटे तु
पननेसन से, औान नाजा से डन, औान असथीनें
२२ को मत छेड़। कय़ोंकी उनकी वीपत अयानक
आपड़ेगी, औान उन दोनें के वीनास को कैान
२३ जानता है। वुधमान के य़े भी हैं, नय़ाय़ में
२४ ननुप्यतव पन दीनीसट कनना भला नहीं। जो
दुसट को कहता है, की तु धनमी है, लोग उस
पन सनाप देंगे, औान जातगन उस से धीन
२५ कनेंगे। पनंतु जो उनहें दपटते हैं, उनके लीय़े
आनंदीत होंगे, औान उन पन अछा आसीस
२६ होगा। जो ठीक उतन देता है, उसके होंठ चुमे
२७ जाय़ेंगे। वाहन में अपना कानज सीध कन,
औान अपने लीय़े प्येत में उसे ठीक कन, उसके
२८ पीछे अपना घन वना। अपने पनोसी पन अका
नन साप्पी मत हो, औान अपने होंठें से मत-
२९ छल। मत कह, की मैं उस से ऐसा कनुंगा,
जैसा की उसने मुझ से कीय़ा, मैं मनुप्य को उसके
३० काम के समान पलटा देउंगा। मैं आलसी क
प्येत के पास से, औान असमझ के दाप्पकी व्रटीका
३१ के पास से गय़ा। औान देप्पो, कांटों से छा नहा
था, औान उंट कटाने से उसे ढांप लीय़े थे, औान

३२ उसकी पथर की भीत टुटी ऊइ। तब मैं ने देष्या
ओर संमझ गया, उस पर दृष्टीसट की, ओर
३३ उपदेस पाया। थोड़ा सोना, ओर थोड़ा उंघना
३४ ओर सोने के लीये हाथ को समेटना। सो तेरी
दरीदरता पथीक की नाईं, ओर तेरी बालसा
ढथइत मनुष्य के समान आवेगी।

२५ पचीसवां परब।

१ ये भी सुलेमान के दृष्टांत जीनहें यहूदा
२ के राजा हीजकीया के लोगों ने उतारा। बात
को छीपाना इस्वर का वीभव है, परंतु राजा की
३ परटीसठा बात को षोज लेने में है। सरग
उंचाइ में, ओर पीरथीवी नीचाइ में राजाओं
४ के मन का भेद नहीं मीलता। रुपे का मैल
छांट डाल, ओर रसायनो के लीये एक पातर
५ नीकल आवेगा। दुसट को राजा के पास से दुर
कर, तब उसका सींहासन धरम से दीरढ होगा।
६ राजा के आगे अपना वीभव मत दीष्या, ओर
७ महानों के सथान पर षड़ा मत हो। कयोंकी
भला है, की तुझे कहाजाय, उपर आओ, की तु
कुअंर के आगे जीसे तु ने देष्या है, घटायाजाय।
८ झगड़ने को सीघर मत जा न हो की अंत में कया

९ करे, जब तेरा परोसी तुझे लज्जीत करे। तु
अपने परोसी से अपने पद का ब्रीवाद कर ले, और
१० गुप्त को दुसरे पर परगट न कर। न हो की
सुनवैया तुझे लज्जीत करे, और तेरा अपजस
११ कीसी रीत से न मीटे। जुन पर ब्रचन कहना
सोने के आला के समान, जो चांदी के चीतर पर
१२ हो। जैसा सोने की बाली और चोखे सोने का
गहना, वैसेही बुधमान घुड़कवैया अधीन कान
१३ पर। जैसे पाले का सीत लवनी में वैसेही ब्रीस-
वसत दुत अपने भेजवैयों के लीये है, कयोंकी
१४ बुह अपने सामीयों के मन को उभाड़ता है। जो
कोइ झुठाइ के दान पर अपनी बड़ाइ करता है,
१५ ब्रीन मेंह के मेघ, और पवन के समान है। बड़े
धीरज से कुंअर मान लेता है, और कोमल जीभ
१६ हडी को तोड़ती है। कया तुने मधु पाया तु
इतनाही खा, जीतना तेरे लीये बस है, न होवे
१७ की तु अधीक खा जाय, और उगल डाले। अपने
परोसी के घर में कधी कधी जा, न हो की बुह
१८ तुझ से अघाजाएगा, और तुझ से बैर रखे। जो
मनुष्य अपने परोसी पर झुठी साखी देता है, सो
१९ लठ और एक खडग और चोखा बान है। दुख
में अबीसवसत मनुष्य का भरोसा रखना टुट

२० दांत, और उखड़े हुए पाओं के समान है। जैसा
जो जाड़े में वस्तर लेता है, और जवखार पर
सीरका वैसा राग गाना सोकीत मन के आगे।
२१ यदी तेरा वैरी भुखा होवे, उसे रोटी खाने को
दे, जदी वुह पीयासा होवे, उसे पानी पीने को
२२ दे। कयोंकी तु उसके सीर पर आग के अंगारों
का ढेर करेगा, और परमेसर तुझे परतीफल
२३ देगा। जीस रीत से उतरहीया पवन मेंह लाता
है, वैसा चैाग्राइ जीभ करोाधीत रुप को लाती है।
२४ छत के एक कोने में रहना, और भों भला है, की
२५ झगड़ालु इसतरी के साथ चैाड़े घर में। जैसे
पोयासे के लीये ढंडा पानी वैसा मंगल समाचार
२६ दुर देस से। धरमी मनुष्य का दुसट के आगे
झुकना ऐसा है, जैसे गोहड़ाना हुआ सोता
२७ अथवा गदला धारा। जैसा बहुत मधु खाना,
अछा नहीं वैसा अपना बीभव ढुंढना ठीक नहीं।
२८ जो अपने परान को बस में नहीं रखता, सो एक
नगर के समान है, जो गोराहुआ बीन भीत
का हो।

२६ छबीसवां परब।

१ जैसा तपन में पाला, और लवनी में मेंह, वैसा
२ मुरख को परतीसठा नहीं सजती। जैसे चीड़यों

का भनमना, श्रैान सुपाव्ीना का उड़तेफरीनना
३ वैसा सनाप अकानथ न आवेगा। घोड़ के लीये
कोड़ा, श्रैान हद्हे के लीये ढाठी, श्रैान तुनष्प
४ की पीठ के लीये छड़ी। सुनष्प को उसकी सुनष्पता
के समान उतन मत दे, नहो की तु भी उसके
५ समान हो जाय। सुनष्प को उसकी सुनष्पता के
सनान उतन दे, नहो की वुह अपनी दीनीसट में
६ वुधमान होवे। जो तुनष्प के हाथ से संदेस
भेजता है, सो पांव काटता है, श्रैान अंधेन पीता
७ है। लगड़े की टांग उठी नहती हैं, सो तुनष्पों
८ के मुंह में दीनीसटांत प्रैसा ही है। जैसे कोइ मन
को पथन की ढेन में नष्पे सुनष्प को पनतीसठा
९ देना प्रैसा ही है। जैसा कांटा मदयप के हाथ में
गड़ जाता है, वैसा सुनष्पों के सुंह में दीनीसटांत
१० है। सव् का सीनीसट कनता महान है, वुह लुनष्पों
श्रैान अपनाधीयों देनों को पनतीफरल देता
११ है। जैसा कुता अपने छांट को फरीन जाता है,
वैसा सुनष्प अपनी सुनष्पता फरीन फरीन पनगट
१२ कनता है। तु देष्पता है, की मनुष्प अपनी
दीनीसट में वुधमान है, सुनष्प की आसा, श्रैान
१३ भी है, की उस की। आलसी कहता है, की
१४ मानग में सोंह है, सोंह गलीयों में है। जैसा

दवान अपनी युत पन फीनता है, वैसा आलसी
१५ अपने व्रोक्षैने पन। आलसी अपना हाथ गोद
में छीपाता है, और उसे मुंह में फेन लाना व्रड़ा
१६ दुष्प है। आलसी अपनी समझ में सात मनुष्यों
से, जो व्रीचान ला सकते हैं, आप को अधीक
१७ व्रुधमान जानता है। जो यल नीकलने में औनों
के झगड़े से छेड़ता है, सो ऐसा है, जैसा कोइ कुते
१८ का कान धन लेता है। जैसा व्रौड़हा, जो लवन
१९ को और व्रान और मीनतु को फेंकता है। जो
मनुष्य अपने पनोसी को छल दे कन कहता है, की
२० मैंने तो ठठा कीया सो ऐसाही है। इंधन व्रीना
आग व्रुझ जाती है, वैसे जहां लुतड़ा नहीं तहां
२१ झगड़ा मीट जाता है। जैसा अंगानों पन कोइले
और आग पन इंधन वैसा झगड़ालु मनुष्य झगड़ा
२२ उठाने में। लुतड़े की व्रातें घाओं की नाइं हैं,
२३ जो पेट के अंतनों में पहुंयता हैं। जलते होंठ
और दुसट मन यांदी के मैल से ढंपे हुए ठीकने
२४ के समान। जो व्रैन नप्पता है, सो होंठों से
जाना हुआ है, और मन में छल नप्पछोड़ता है।
२५ जव्र वह अनुगीनह का सव्द कनता है, उसकी
पनतीत मत कन, कयोंकी उसके मन में सात घीन
२६ हैं। जीसका डाह गुपत में छीपा है, उसकी

२७ दुसटता मंडली के आगे दीखाइ जायगी। जो
गड़हा खोदता है, सो उस में गीरेगा, और जो
पथर ढुलकाता है, वुह पलट के उसी पर पड़ेगा।
२८ जो झुठी जीभ से दुखीत है, उस से वुह डाह
रखती है, और लुतरा का मुंह बीनास करता है।

२७ सताइसवां पत्र।

१ कल की बड़ाइ आज मत कर, कयोंकी तु नहीं
२ जानता की दीन भर में कया होगा। दुसरा
मनुष्य तेरी बड़ाइ करे, तेराही मुंह तेरेही होंठ
३ नहीं। पथर भारी है, और बालु गरु, परंतु
४ मुढ़ का कोप दोनों से भाराहै। क्रोध क्रुर
है, और रोस उमड़ती है, परतु कौन है, जो डाह
५ के आगे ठहर सके। परगट झीड़की गुपत परेम
६ से उतम है। सनेही के घाव बीस्वसत हैं, परंतु
७ बैरी के चुमा छली हैं। अघाया मन मधु को
लताड़ता है, परंतु भुखे पराणी के लीये हरएक
८ कड़वी बसतु मीठी है। जो मनुष्य अपने सथान
से भरमता है, वुह चीड़ीया के समान है, जो
९ अपने खोंते से भरमती है। सुगंध तेल मन को
आनंदीत करता है, वैसा मनुष्य के लीये उसके
१० मीतर की मीठाइ परान के मंतर से है। अपने

मीतन श्चैान श्चपने पीता के मीतन को तयाग मत
कन, श्चैान श्चपने वीपत कं दीन भाइ के घन मत
जा, कयोंकी समीप का पनोसी दुन के भाइ से
११ श्चछा है। मेने वेटे वुघमान हो, श्चैान मेने मन
को श्चानंद कन जीसतें मैं उसे जो मुहे श्चोनाहना
१२ देता है, उतन दे सकुं। यतुन श्चागे से वुनाइ
को देप्पता है, श्चैान श्चाप को छीपाता है, पनंतु
१३ भोले वढ़े जाके दंड पाते हैं। जो पनदेसी का
वीयवइ होवे तु उसके कपड़े लेले, श्चैान उस से
१४ जो पनदेसी इसतनी का हो वंधक मांग ले। जो
वीहान को उठके श्चपने मीतन को वड़े सवद से
श्चासीस देता है, सो उसके लाये ऐक सनाप गीना
१५ जायगा। हड़ी के दीन का सदा टपकना, श्चैान
१६ हगड़ालु इसतनी दोनों ऐक हैं। जो उसे छीपाता
है, सो पवन को छीपाता है, श्चथवा दहीने हाथ
१७ का सुगंघ, जो श्चाप को पनगट कनता है। जैसा
लोहा लोहे को याप्पा कनता है, वैसा मनुप्य
१८ श्चपने मीतन के नुप को याप्पा कनताहै। जो
गुलन के वीनछ की नछा कनता है, सो उसका
फल प्पायगा, उसी नीत से, जो श्चपने सामी की
१९ सेवा में नहता है, सो पनतीसठा पावेगा। जैसा
पानी में मुंह मुंह के समान वैसा मनुप्य का मन

२० मनुप्य के समान। ननक अैान नास नहीं ञनते
२१ वैसा मनुप्य की आंप्यें तीनीपत नहीं होतीं। जीस
नीत से यांदी के लाय़े चडोहा अैान सोने के
लोय़े भठी है, उसी नीत से ननुप्य की व्रडाइ
२२ मनुप्य के लीय़े। य़द्पी तु मुढ़ का गोऊं के साथ
अेाप्पली में डाल कें मुसल से कुटे तथापी उसकी
२३ मुढ़ता उस से दुन न होगी। अपने हुंडों की
दसा के जानने में जतन कन, अैान अपने ढोनों
२४ पन मन लगा। कय़ोंकी व्रल सदा नहीं नहता,
२५ अैान कय़ा मुकुट पीढ़ी से पीढ़ी लों। पुआल,
अैान कोमल घास दीप्पाइ देती है, अैान पहाडों
२६ के सागपात व्रटोने जाते हैं। मेमने तेने पहीनावा के लाय़े हैं, अैान व्रकनी तेने प्येत के माल
२७ हैं। अैान व्रकनीय़ों का दुघ तेने प्याने के लाेय़े,
अैान तेने घनाने के लीय़े, अैान तेनी लैांडीय़ां
की जावका के लीय़े।

२८ अठाइसवां पनव्र।

१ दुसट भागता है, जव्र कोइ उनका पीछा नहीं
कनता, पनंतु घनमी सींह के समान साहसी है।
२ देस के अपनाघ के कानन व्रऊत से कुअन हैं,
पनंतु समहवैय़ा, अैान व्रुघमान से वुह व्रढ़ाय़ा

३ जाएगा। जो कंगाल कंगाल को सताता है, सो
४ वीना अंन के वौछाड़ को नाइं है। जो वैवसथा
को तयाग करते हैं, सो दुसटों को सतुत करते
हैं, परंतु वैवसथा के पालक उनसे वीवाद करते
५ हैं। बुरे मनुष्य नयाय को नहीं समझते, पर जो
परमेस्वर के खोजी हैं, सो सब कुछ समझते हैं।
६ जो अपने मारगों से भटका ऊआ है, सो यदपी
धनी होय, तथापी वुह कंगाल, जो अपनी खराई
७ पर चलता है, उस से भला है। जो वैवसथा को
पालन करता है, सो वुधमान पुत्र है, परत जो
खाउ को खीलाता है, सो अपने पीता को लजीत
८ करता है। जो वयाज, और अधरम से अपनी
संपती को बढ़ाता है, सो उसके लीये जो कंगालों
९ पर दया करेगा, बटोरता है। जो वैवसथा के
सामहने से अपने कान को फेर देता है, उसकी
१० पारथना घीनीत है। जो धरमी को भटका के
बुरे मारग पर चलाता है, सो अपने गड़हे में
आप गीरेगा, परंतु खरा अछी वसतु का अधी-
११ कारी होगा। धनी मनुष्य अपनी दीसट में
बुधमान है, परंतु कंगाल, जो बुधमान है उसे
१२ पहीचान लेता है। जब धरमी आनंद करता
है, तब बड़ा वीभव है, परंतु जब दुसट उभड़ते

१३ हैं, तब मनुष्य का छोप होता है। जो अपने
पापों को ढांपता हैं, सो भाग्यमान न होगा, परंतु
जो उन्हें मान लेता है, और उसे छोड़ता है, सो
१४ दया पावेगा। धंन है, वुह जन जो सदा डरा
करता है, परंतु जो अपने मन को कठोर करता
१५ है, सो बुराई में गीरेगा। जैसा गरजता हुआ
सींह और भरमता हुआ रींछ वैसाही दुसट
१६ आगया कारी कंगालों पर है। असन्ह राजा
भी महा अंधेरी है, परंतु जो लोभ से बैर रखता
१७ है, सो अपनी बय बढ़ावेगा। जो मनुष्य अंधेर
से कीसी को घात करता है, सो भाग के गड़हे में
१८ गीरेगा, उसे कोइ न रोकेगा। जो खराइ से
चलता है, सो बच जायगा परंतु जो कुचाली है,
१९ सो आकसमात गीर पड़ेगा। जो अपनी भुम
जोता बाया करता है, सो बहुत भोजन परापत
करेगा, परंतु जो बीरथा लोगों का पीछा करता
२० है, सो कंगालपन से पुरन होगा। बीसवसत
मनुष्य आसीसों से उभड़ेगा, परंतु जो धनी होने
के लीये उतावली करता है, नीरदंड न जायगा।
२१ मनुष्यों का पछ करना अछा नहीं, कयोंकी ऐसा
२२ मनुष्य रोटी के टुकड़े के लीये पाप करेगा। जो
बुरी आंख रखता है, सो धनी होने को उतावली

करता है, और नहीं सोयता की वीपत उस पर
२३ आपड़ेगी। जो मनुष्य को दपटता है, सो आगे
को उस से अधीक अनुगीरह पावेगा, जो अपनी
२४ जीभ से फुसलाता है। जो अपनी माता अथवा
पीता को लुटता है, और कहता है, की यह अप-
२५ राध नहीं, सो वीनासक का संगी है। जीसके
मन में घमंड है, सो झगड़ा उभाड़ता है, परंतु
जीसका भरोसा परमेसर पर है, सो पुसट कीया
२६ जायगा। जो अपने मन पर भरोसा रखता है,
सो मुरष्य है, परंतु जो वुध से यलता है, सोइ
२७ छुड़ाया जायगा। जो कंगालों को देता है, उस-
को घटी न होगी परंतु जो आंखें छीपाता है,
२८ वहुत सराप पावेगा। जव दुसट उभड़ते हैं, तव
मनुष्य आप को छीपाते फीरते हैं, परंतु जव वे
नसट होते हैं, तव धरमी वढ़ते हैं।

२९ उंतीसवां परव।

१ दपटा हुआ मनुष्य, जो अपने गले को कठोर
करता है, सो वीना औषद आकसमात मारा
२ जायगा। जव धरमी वढ़ते हैं, तव लोग आनं-
दीत होते हैं, परंतु जव दुसट पराभुता करता है,
३ तव लोग सोक करते हैं। जो वुध से प्रेम रखता

है, सो अपने पीता को मगन कनता है, पर्नंतु जो
व्रेसवा की संगत कनता है, सो अपनी संपत उठा-
४ ता है। नाजा नय़ाय़ से देस को सथीन कनता
५ है, पर्नंतु भेंटों का जन उसे खोता है। जो
मनुष्य अपने पनोसी से यापलुसी कनता है, सो
६ उसके पांव के लीये जाल व्रीछाता है। दुसट
मनुष्य के अपनाघ में प्रेक जाल है, पनंतु घनमी
७ गाता है, औान मगन होता है। घनमी मनुष्य
कंगालों के पद को व्रुहता है, पनंतु दुसट जानने
८ को याेनता नहीं कनता। नीनदक नगन में
आग लगाता है, पनंतु व्रुघमान कनोघ को फेन
९ देते हैं। य़दी व्रुघमान मुनष्य से झगड़े, याहे
१० कोप कने, याहे हंसे, तो चैन नहीं। घातक ष्यने
से व्रैन नष्यते हैं, पनंतु सज्जन उसका पनान ढुंढते
११ हैं। मुनष्य अपना साना मन उयानता है,
१२ पनतु व्रुघमान आगे के लीये नोकता है। य़दी
अगय़ाकानी झुठ को सुना कने, तो उसके समसत
१३ सेवक दुसट हैं। कंगाल, औान व्रय़ाज गनाहक
प्रेकठ होते हैं, पनमेसन उन दोनों की आंष्वें
१४ उंजाय़ाला कनता है। जो नाजा घनम से कंगा-
लों का नय़ाय़ कनता है, उसका सींहासन सदा
१५ सथीन नहेगा। छड़ी, औान दपट व्रुघ देती है,

पनंतु छोड़ा ज़ुआ वालक अपनी माता को लज्जीत
१६ कनता है। जव दुस्ट वढ़जाते हैं, तव अपनाध
वढ़ता है, पनंतु धनमी लोग उनका पतन देष्पेंगे।
१७ अपने वेटे को ताड़ना कन, और वुह तुझे चैन
देगा, हां, वुह तेने आतमा को आनंदीत कनेगा।
१८ जहां दनसन नहीं, तहां लोग नस्ट होते हैं,
पनंतु जो वैवसथा को पालन कनता है, सो धंन
१९ है। सेवक वचन से ताड़ना न पावेगा, कयोंकी
२० यदपी वुह समझे, तथापी वुह उतन न देगा। तु
देष्पता है, की मनुष्य सीघन से वोलता है, मुनष्य
२१ से उस से अधीक आसा है। जो लड़काई से
अपने सेवक को सुकुआनी से पालता है, अंत को
२२ वुह उसका वेटा वनेगा। कनोधी मनुष्य झगड़ा
उभाड़ता है, और कोपीत मनुष्य अपनाध में
२३ घाट नहीं। मनुष्य का अहंकान उसे नीचे कने-
२४ गा, पनंतु पननीसठा दीनातमा को संभालेगी। जो
चोन का साझी है, सो अपनेही पनान का वैनी है
वुह सनाप सुनता है, और उसे पनगट नहीं
२५ कनता। मनुष्य का डन जाल लाता है, पनंतु
जो पनमेसन पन भनोसा नष्पता है, सो उभाड़ा-
२६ जायगा। वज़ुत हैं, जो आगया कानीको नुप
ढुंढते हैं, पनंतु मनुष्य का नयाय पनमेसन से है।

२७ अघनमी मनुप्प घनमीयों के लीये घीन है, ओान
प्पना दुसटों के लीये घोन।

३० तीसवां पनव्र।

१ याकीह के व्रेटे आजुन के व्रयन अनथात
जवीस व्रानी, जो उसने प्रेतीयाल अनथात प्रेती-
२ याल, ओान युकाल से कही। नीसचय मैं हन
प्रेक मनुप्प से अघीक पसुवत ऊं, ओान मनुप्प कीसी
३ व्रुघ मुह्ट में नहों। मैं ने न व्रुघ सीप्पी, न घन-
४ मीयों की पहीयान पनापत की। कौन सनग
पन उठगया अथवा उतना, कीसने पवन को अपनी
मुठी में प्रेकठा कीया, कीसने पानीयों को व्रसतन में
व्रांघा, कीसने पीनथीवी के साने सीवानें को दीनढ़
कीया? यदी तु कह सके, उसका नाम कया, ओान
५ उसके व्रेटे का नाम कया। ईसन का हन प्रेक व्रयन
सुघ कीया गया है, जीनका भनोसा उस पन है,
६ वुह उनके लीये ढाल है। तु उसके व्रयन में
मत मीला, न हो की वुह तुह्टे दपटे, ओान तु ह्ठा
७ ठहने। मैं ने तुह्ट से दो व्रात याही है, सो जीते
८ जी मुह्ट से अलग मत नप्प। व्रीनथा ओान ह्ठ
को मुह्ट से अलग कन, ओान मुह्टे न कंगालपन दे
९ न घंन दे, सेनी दसा के जोग मुह्टे भोजन दे। न

होवे की मैं तोनीपत हो नाउं, श्रीन हठ वोल के
कहूं, की इसन कौन, अथवा कंगाल होके योनी
कनं, श्रीन अपने इसन का नाम अकानय लेउं।
१० अपनी जीभ से सेवक को उसके सामी के आगे
दुष्प मत दे, न हो की वह तुझे सनाप दे, श्रीन
११ तु दोष्पी ठहने। एक पीढ़ी ऐसी है, जो अपने
पीता को सनाप देती है, श्रीन अपनी माता को
१२ धंन नहीं कहती। एक पीढ़ अपने ही द्रीनीसट
में पवीतन है, पनंतु अपनी मलीनता से धोइ नहीं
१३ गइ। एक पीढ़ी है, हाय उसकी श्रांष्पें उभड़ी
१४ ऊइ हैं, श्रीन उसकी पलकें उठी ऊइ है। एक
पीढ़ी ऐसी है, जीसके दांत ष्पडग हैं, श्रीन दाढ़ें
छुनीयां जीसतें कंगालों को पीनथीवी पन से, श्रीन
१५ दनीद्रनों को मनुष्यों में से भछन कने। जैंसीया
जोंक की दो वेटीयां हैं, जो दे दे पुकानतीयां हैं,
तीन हैं, जो कभी तीनीपत नहीं होतीं, यान नहीं
१६ कहतीं की वस। समाधी, श्रीन वांझ श्रीन पीन-
थीवी, जो जल से पुनन नहीं, श्रीन श्राग नहीं
१७ कहती है, को वस। श्रांष्पें जो पीता को यीढ़ाती
है, श्रीन अपनी माता को माननी तुछ जानती है,
वनैले कौए उसे नीकाल लेंगे, श्रीन गीध के यींग-
१८ ने उसे ष्पा लेंगे। मेने लीये तीन अती अयमीत

१९ हैं, यान जोनहें मैं नहीं जानत। गीध का
मानग आकास में, औान सांप की याल यटान पन,
औान समुंद्न के मघ में जहाज़ की याल, औान
२० मनुष्य की याल कनया के साथ। व्रेभीयाननी
का मानग ऐसा है, की वुह प्याती है, औान अपना
मुंह पोंछती है, औान कहती है, कया मैं ने कुछ
२१ दुसटता की। तीन के बीय़े पीनथीवी दुप्यीन है,
२२ हां, यान का भान उठा नहीं सकती। सेवक के
बीय़े जव्र वुह नाज कनता है, औान मुढ़ से जव्र
२३ वुह भोजन सेतीनोपत है। नीनलज से जव्र वुह
व्रीय़ाहो जावे, औान दासी से, जो अपनी सामनी
२४ की अघीकाननी होवे। यान हैं, जो पीनथीवी
२५ पन छोटी हैं, पनंतु अती वुघमान हैं। यीउंटी
व्रलवान नहीं, तथापी वे अपने बीय़े भोजन तपन
२६ में व्रटोनती हैं। प्यनहा नीनव्रल है, तथापी
२७ पहाड़ीय़ों में अपनी मांद व्रनाता हैं। टीडी के
नाजा नहीं, तथापी वे ऐकठी होके नीकलती हैं।
२८ औान मकड़ी, जो अपने पांओं से पकड़ती है, औान
२९ नाजाओ के भवनें में है। तीन हैं, जो सुनीत
से यलती हैं, हां, यान की याल सुंदन है।
३० सींह, जो पसुन में पनव्रल है, औान कीसी के
३१ सामहने से फीनता नहीं। अहेनी कुता, औान

व्रकना स्री, श्रीन नाजा जीसके व्रीनोघ में उठना
३२ नहीं। यदी तु ने मुढ़ता से श्राप को उभाड़ा,
श्रथवा यदी तु ने व्रुनी यीनता की, ते हाथ श्रपने
३३ मुंह पन न य। नीसयय दुघ मथने से माष्पन
नीकलता है, श्रीन नाक मनोड़ने से लोहु नीकल
ता है, वैसा कोप को छोड़ने से झगड़ा उठता है।

३१ एकतीसवां पनव्र।

१ लमुइल नाजा के व्रयन भवीस व्रानी, जो उस-
२ की माता ने उसे सीष्पाइ। कया मेने व्रेटे, श्रीन
मेने कोष्प के व्रेटे, श्रीन कीया मेनी मनोतीयों के
३ व्रेटे, श्रपना व्रल इसतीनयों को मत दे, श्रीन
श्रपनी याल उसे जो नाजाश्रों को नसट कनता
४ है। नाजाश्रों को हे लमुइल नाजाश्रों को मद-
पान कनना ठीक नहीं, श्रीन तीष्पा पान नाजपुत-
५ नों को नहीं। न होवे, की वे पींवें, श्रीन व्रैवसथा
को भुलजांयें, श्रीन दुष्पीत के समसत पुतन के
६ नयाय को पलट डालें। तीष्पा पान उसे देश्रो,
जो नास होने पन है, श्रीन दाष्पनस उनहें जीनका
७ मन उदास है। वे उसे पीयें श्रीन श्रपनी कंगाल-
पन भुल जांयें, श्रीन श्रपनी व्रीपत को फीन यत
८ न कनें। श्रपना मुंह गुंगे के लीये ष्पोल, उनके

समसत पुतन के पद के लीये जो नास होने पन
९ हैं। अपना मुंह खोल के धनम नयाय़ कन,
और दीन और कंगालों के पद के लीये वीवाद
१० कन। धनमी इसतनी को कौन पा सकता है,
११ कयोंकी उसका मोल लालों से अधीक है। उसके
पती का मन चैन से उसको पनतीत करता है,
१२ यहां लों की वुह लुट का अधीन न होगा। वुह
अपने जीवन भन उस से भलाइ कनेगी, बुनाइ
१३ नहीं। वुह उन और सन ढूंढती है, और अपने
१४ हाथों से वांछा के साथ कानज कनती है। वुह
वैपानीयों के जहाजों के समान है, वुह अपना
१५ भोजन दुन से ले आती है। वुह नात नहते
ऊठे उठती है, और अपने घनाने को भोजन
देती है, और अपनी कंनयाओं को भाग देती
१६ है। वुह ऐक खेत सोयती है, और उसे लेलेती
है, और अपने हाथों के फल से दाख की वाटीका
१७ लगाती है। वुह अपनी कटी को कसती है,
१८ और अपनी भुजाओं को पोढ़ कनती है। वुह
समझती है, की मेना वैपान भला है, नात को
१९ उसका दीपक नहीं वुझता। वुह तकले पन अपने
हाथ यलाती है, और उसके हाथ अटेनन पकड़ते
२० हैं। वुह कंगालों की ओन अपना हाथ वढ़ाती

है, हां, वुह अपने हाथ अघोनों की श्रोन फैलाती
२१ है। वुह अपने घनानों के लीये पाला से नहीं
डनती है, कयोंकी उसके समसत घनाने दोहने
२२ वसतन पहीने हैं। वुह अपने लीये वूटा काढ़े
ऊए का श्रोढ़ना वनाती है, उसका वसतन पाटंवन
२३ श्रोन वेंजनी है। तव उसका पती फाटकों में
देस के पनायीनों के संग वैठता है, तव वुह
२४ पनसीघ है। वुह हीना कपड़ा वनाती है, श्रोन
वेंयती है, श्रोन कटीवंघ वैपानयों को सेंापती
२५ है। वल, श्रोन पनतीसठा उसका पहीनावा है,
२६ श्रोन आगे को आनंदीत होगी। वुह अपना मुंह
वुघ से पोलती है, उसकी जीभ में दया की वेव-
२७ सथा है। वुह अपने घनाने की याल को अछी
नीती से देखती है, श्रोन आलस की नोटी नहीं
२८ पाती। उसके वालक उठते हैं, श्रोन उसे घन
कहते हैं, श्रोन उसका पती उसे सनाहता है।
२९ वऊतेनी वेटीयों ने घन पनापत कीया, पनंतु तु
३० सव से उतम है। कीनपा छली है, श्रोन सुंदनता
वीनया, पनंतु वुह इसतीनी जो पनमेसन से डनती
३१ है सनाही जायगी। उसे उसके हाथों का फल
देश्रो श्रोन उसी के कानज फाटकों में उसे सनाहें।